Resource: अनुवाद गाइड (एसआरवी)

Familiarization, Internalization, Articulation (FIA) Translation Guide © 2023 SRV Partners Released under CC BY-SA 4.0 license. Familiarization, Internalization, Articulation (FIA) Translation Guide has been adapted in the following languages Tok Pisin, عربي, Français, हिंदी, Bahasa Indonesia, Português, Русский, Español, Kiswahili, 简体中文 from Familiarization, Internalization, Articulation (FIA) © 2023 SRV Partners Released under CC BY-SA 4.0 license by Mission Mutual

अनुवाद गाइड (एसआरवी)

LUK

लूका 1:1–4, लूका 1:1–4, लूका 1:5–25, लूका 1:5–25, लूका 1:26–38, लूका 1:26–38, लूका 1:39–56, लूका 1:39–56, लूका 1:57–80, लूका 1:57–80, लूका 2:1–21, लूका 2:1–21, लूका 2:22–40, लूका 2:22–40, लूका 2:41–52, लूका 2:41–52, लूका 3:1–14, लूका 3:1–14, लूका 3:15–22, लूका 3:15–22, लूका 3:23–38, लूका 3:23–38, लूका 4:1–13, लूका 4:1–13, लूका 4:14–30, लूका 4:14–30, लूका 4:31–44, लूका 4:31–44, लूका 5:1–11, लूका 5:1–11, लूका 5:12–16, लूका 5:12–16, लूका 5:17–26, लूका 5:17–26, लूका 5:27–39, लूका 5:27–39, लूका 6:1–11, लूका 6:1–11, लूका 6:12–16, लूका 6:12–16, लूका 6:17–19, लूका 6:17–19, लूका 6:20–26, लूका 6:20–26, लूका 6:27–36, लूका 6:27–36, लूका 6:37–42, लूका 6:37–42, लूका 6:43–49, लूका 6:43–49, लूका 7:1–10, लूका 7:1–10, लूका 7:11–17, लूका 7:11–17, लूका 7:18–35, लूका 7:18–35, लूका 7:36–8:3, लूका 7:36–8:3, लूका 8:4–15, लूका 8:4–15, लूका 8:16–18, लूका 8:16–18, लूका 8:19–21, लूका 8:19–21, लूका 8:22–25, लूका 8:22–25, लूका 8:26–39, लूका 8:26–39, लूका 8:40–56, लूका 8:40–56, लूका 9:1–17, लूका 9:1–17, लूका 9:18–27, लूका 9:18–27, लूका 9:28–36, लूका 9:28–36, लूका 9:37–45, लूका 9:37–45, लूका 9:46–62, लूका 9:46–62, लूका 10:1–16, लूका 10:1–16, लूका 10:17–24, लूका 10:17–24, लूका 10:25–37, लूका 10:25–37, लूका 10:38–42, लूका 10:38–42, लूका 11:1–13, लूका 11:1–13, लूका 11:14–32, लूका 11:14–32

लूका 1:1–4

सुनना और मनन करना

लूका 1:1–4 सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे यह कथा सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 1:1–4

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

जो भी घटनाएं घटित हुई होती हैं, उसके विषय में लूका थियुफिलुस को लिखना चाहते हैं। हालांकि थियुफिलुस को जो कुछ हुआ है उसके बारे में पता है, लूका यह बात सुनिश्चित करना चाहते हैं कि उनकी जानकारी पूरी है। लूका थियुफिलुस को "सबसे सम्मानित" या "सबसे उत्कृष्ट" कहते हैं क्योंकि संभवत: वे एक उच्च स्थिति वाले महत्वपूर्ण व्यक्ति थे जो अन्य कई लोगों को प्रभावित कर सकते थे।

- आपकी संस्कृति में प्रभावशाली लोगों की क्या विशिष्टताएं होती हैं?

हालांकि लूका को कई ऐसे लोगों का पता है जो पहले ही इन्हीं घटनाओं के बारे में लिख चुके हैं, लेकिन जो कुछ हुआ उसके विषय में वे सर्वोत्तम तरीके से लिखना चाहते हैं। लूका चाहते हैं कि थियुफिलुस घटित हुई बातों के विषय में निश्चित हों।

- आपकी संस्कृति में लोग अतीत में घटित घटनाओं को सामान्य रूप से किस तरह याद करते हैं?
- किसी घटना के बारे में समाचार सुनने के लिए वे किस तरह के लोगों को सुनते हैं?

लूका चाहते हैं कि उनके पाठक इस बात पर भरोसा करें कि उनकी कहानी सच है, और इसे सिद्ध करने के लिए वे इस बात का उल्लेख करते हैं कि यह एक सटीक विवरण है। उस समय में सटीक होने का मतलब कालक्रमबद्ध विधि से घटित घटनाओं का विवरण देना होता था।

- आपकी संस्कृति में लोग कैसे पहचान करते हैं कि कोई कथा एक सत्यकथन है या एक अफसाना (काल्पनिक कथा, चुटकुला, दंतकथा, आदि)?

लूका यह सुनिश्चित करते हैं कि सभी को पता चले कि उन्होंने शुरू से ही सभी घटनाओं की सावधानीपूर्वक जांच की है। वे इन घटनाओं को एक इतिहासकार के रूप में लिखना चाहते हैं जो सटीकता प्रदान करता है।

वे हमें बताते हैं कि वे जो कुछ भी लिख रहे हैं वह ऐसे साक्षियों द्वारा आगे कहा गया है जिनकी आंखें पवित्र आत्मा के माध्यम से परमेश्वर के कार्य द्वारा खोल दी गई हैं। लूका इन लोगों को प्रत्यक्षदर्शी कहते हैं।

- आपकी संस्कृति में लोग ऐतिहासिक घटनाओं के एक भरोसेमंद कथाकार की पहचान कैसे करते हैं?

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 1:1–4

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले शब्दों में सुनें।

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य बनाने में समूह की मदद करेंगे। आप कथा के दृश्यों, माहौल और कथा का चरित्र गढ़ने में समूह की मदद करेंगे।

इस कथा में दो दृश्य हैं।

पहला दृश्य: कई लोगों ने घटित हुई सभी घटनाओं के बारे में लिखा है। यीशु के करीबी अनुयायी इन घटनाओं के साक्षी थे और जो कुछ उन्होंने देखा था उसे वे फिर से वर्णित कर रहे थे।

दूसरा दृश्य: सावधानीपूर्वक जांच के बाद लूका, उच्च प्रतिष्ठा वाले थियुफिलुस के लिए सभी वृत्तांतो को एक क्रमबद्ध तरीके से संकलित करने का फैसला करते हैं। लूका यह वृत्तांत लिखते हैं ताकि थियुफिलुस, उन्हें पहले से ही ज्ञात सत्य के विषय में निश्चित हो सकें।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- उच्च प्रतिष्ठा वाले व्यक्ति थियुफिलुस
- पुस्तक के लेखक, लूका
- यीशु के शिष्य, प्रत्यक्षदर्शी
- कई लोग, जिन्होंने यीशु के बारे में विवरण संकलित किए हैं।

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल का इस्तेमाल करे।

यह आवश्यक नहीं है कि कई लोगों के उल्लेख का तात्पर्य बड़ी संख्या में लोगों से हो। लूका जानते हैं कि ऐसे अन्य लोग भी हैं जिन्होंने उसी कहानी को बताया था जो यह सिद्ध कर सके कि उनका काम सच था। ये सभी लेखन यीशु के सबसे करीबी अनुयायियों के विवरणों या कथनों पर आधारित हैं, जो उन घटनाओं के प्रत्यक्ष वर्णन दे सकते थे जिनके बारे में लूका लिख रहे थे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि लूका इस पुस्तक को एक इतिहासकार के अंदाज में लिखते हैं ताकि वे इसकी सटीकता पर बल दे सकें। लूका थियुफिलुस को सबसे सम्मानित कहते हैं, यह उनकी उच्च प्रतिष्ठा पर ज़ोर देने के लिए था। थियुफिलुस पहले से ही यीशु के बारे में जानते थे और उन्होंने यीशु के बारे में कथानक सुने थे। लेकिन लूका यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि थियुफिलुस की जानकारी सटीक और क्रमबद्ध हो।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 1:1–4

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कथा में दो दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- उच्च प्रतिष्ठा वाले व्यक्ति थियुफिलुस
- पुस्तक के लेखक, लूका
- यीशु के शिष्य, प्रत्यक्षदर्शी
- कई लोग, जिन्होंने यीशु के वृत्तांतों को संकलित किया है।

मण्डली से कहानी को दो बार अभिनीत करवाएं। पहले मण्डली से बिना रुके कहानी का अभिनय कराएं। मण्डली

जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है और उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब टीम कथा को पहली बार पेश करती है, कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

प्रत्यक्षदर्शियों अर्थात् यीशु के सबसे करीबी अनुयायियों द्वारा बताए गए घटनाक्रम के ब्यौरे को किस तरह "कई लोगों" ने लिखा था, उसका अभिनय मण्डली द्वारा किया जाए, ऐसा सुनिश्चित करें।

जब लूका इस क्रमबद्ध वृत्तांत को लिखने का निर्णय करते हैं, तो वे सूत्रों और अन्य लेखनों की सावधानीपूर्वक जांच करते हैं। उन्हें यकीन है कि वे एक ऐसा सटीक वृत्तांत बताएंगे जो घटनाओं के घटित होने के क्रम का सिलसिलेवार अनुसरण करता हो। वे ऐसा इसलिए करते हैं ताकि थियुफिलुस उनके पास पहले से ही मौजूद जानकारी के बारे में निश्चिंत हो सकें।

दूसरी बार जब टीम इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

हो चुकी घटनाओं के बारे में कई लोग लिख रहे हैं। उनमें से कुछ लोग यीशु के सर्वप्रथम अनुयायियों से सुन कर इस वृत्तांत को जानते हैं। **अभिनय को बंद करें।** लेखकों से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" ऐसी बातें सुनने की आशा करें, "एक ध्येयकार्य पर हूं," "उम्मीद है कि लोग यीशु के बारे में जानेंगे," "सावधान हूं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

थियुफिलुस एक महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं जो सत्य को जानते हैं। लूका चाहते हैं कि थियुफिलुस सत्य के बारे में निश्चिंत हों। ऐसा करने के लिए लूका घटनाओं के वृत्तांत के सूत्रों की तलाश कर रहे हैं। वे थियुफिलुस को देने के लिए शोध करके सब कुछ संकलित करते हैं। **अभिनय को बंद करें।** थियुफिलुस की भूमिका निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" सुनें "सम्मानित," "प्रतीक्षारत," "उत्सुक।" अभिनेता लूका से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" "सुनें "सिद्ध," "चिंतामुक्त," "आशापूर्ण।"

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 1:1–4

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

कई लोगों ने परमेश्वर के लोगों के बीच हाल ही में हुई सभी बातों का विवरण लिखा है। जब लूका यह उल्लेख करते हैं कि "**हमारे बीच जो घटनाएं पूरी हुई हैं**" तो वे इस बात पर चर्चा कर रहे होते हैं कि किस तरह परमेश्वर ने उद्धारकर्ता के बारे में अपनी वाचा रखी है और भविष्यद्वक्ताओं द्वारा कही गई सभी बातें पूर्ण हो चुकी हैं।

लूका अपनी कथा, "**प्रत्यक्षदर्शियों और वचन के सेवकों**" के विवरणों का इस्तेमाल करके बताते हैं। इसका मतलब है कि उन्होंने यीशु के साथियों से बातचीत की थी; ये साथी उनके करीबी अनुयायी थे जो उनके साथ गलील से लगाकर यीशु के पुनरूत्थान के बाद प्रकटन तक उनके साथ रहे थे।

लूका थियुफिलुस को बताते हैं कि उन्होंने शुरू से ही सभी बातों पर बहुत सावधानीपूर्वक शोध किया है और उन्होंने उसका एक सटीक विवरण लिखने का फैसला किया है। वे थियुफिलुस को "**सबसे उत्कृष्ट**" कहते हैं क्योंकि वे एक अत्यधिक महत्वपूर्ण व्यक्ति थे जो बहुत से लोगों के प्रभारी थे। लूका जानते हैं कि थियुफिलुस का प्रभाव कई लोगों पर है, इसलिए वे चाहते हैं कि उन्हें यीशु के बारे में जो कुछ सिखाया गया था उसकी सच्चाई के बारे में वे निश्चिंत हों।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो।

समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 1:1–4

Audio Content

webm zip (1710878 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (2971957 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 1:5–25

सुनना और मनन करना

लूका 1:5–25 सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे यह कथा सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 1:5–25

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

लूका पाठकों को यह बताते हुए अपनी कहानी शुरू करते हैं कि यीशु के जन्म से पहले क्या हुआ था। प्रभु का एक दूत जकर्याह से कहता है कि उनकी पत्नी को एक पुत्र होगा जो प्रभु का मार्ग तैयार करेगा। परमेश्वर उनके लोगों के प्रति अपने वचन को पूरा करते हैं और एक असंभव गर्भावस्था को संभव बनाकर अपना सामर्थ्य दिखाते हैं।

लूका की कहानी परमेश्वर के विशेष लोगों - यहूदियों के बारे में है। वे मिस्र में 400 साल तक गुलामी में रहे थे, लेकिन परमेश्वर ने उन्हें केवल उनके लिए एक विशेष भूमि पर ले गए। मार्ग में उन्होंने उन्हें कुछ कानून दिए। ये कानून एक विशेष बक्से में थे जहां परमेश्वर की उपस्थिति निवास करती थी। यहूदियों ने उस बक्से के लिए एक तम्बू (देवालय) का निर्माण किया और बाद में उन्होंने मंदिर नाम एक विशेष भवन का निर्माण किया। वे उस बक्से को मंदिर में रखते थे और मंदिर में परमेश्वर की पूजा करते थे। यह वह घर था जहां परमेश्वर उनके लोगों के बीच रहते थे। पहला मंदिर तब नष्ट हो गया जब एक शत्रु सेना ने उनपर विजय प्राप्त की। बाद में एक अन्य शत्रु सेना, रोमी लोगों ने यहूदियों पर विजय प्राप्त की। उन्होंने एक यहूदी राजा, राजा हेरोदेस को नियुक्त किया। हेरोदेस मंदिर का पुनर्निर्माण करना चाहते थे। मंदिर का निर्माण एक विशिष्ट तरीके से किया गया था ताकि लोग परमेश्वर की पूजा कर सकें और विशेष याजक परमेश्वर के लिए बलिदान ला सकें।

जकर्याह उन याजकों में से एक थे और उनकी पत्नी इलीशिबा थीं। उनके बच्चे नहीं हो सकते थे। यहूदी संस्कृति में एक विवाहित स्त्री को बांझ होना शर्मिंदगी का कारण होता था क्योंकि बच्चों को आशीष माना जाता था।

अपनी मण्डली के साथ चर्चा करें कि ऐसी विवाहित महिलाएं जिनके बच्चे नहीं हो सकते हैं उन्हें आपकी संस्कृति में किस तरह देखा जाता है। क्या बांझ होना शर्मिंदगी या निराशा लाता है? यदि ऐसा है, तो क्यों ऐसा है?

जकर्याह मंदिर में परमेश्वर को धूप चढ़ाने का अपना कर्तव्य निभाने के लिए प्रवेश करते थे। मंदिर के इस विशेष हिस्से में केवल कुछ याजकों को ही प्रवेश करने की अनुमति थी। लोग परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए मंदिर प्रांगण में बाहर ही रहते थे। मंदिर का अभिन्यास देखने से हमें यह समझने में बेहतर मदद मिल सकती है कि हर कोई कहां खड़ा होता था।

यह इंगित करने के लिए कि यह कहानी कहां घटित होती है और लोग किस स्थान पर खड़े थे, मंदिर के अभिन्यास और गर्भगृह दोनों ही के चित्रों को दिखाएं।

परमेश्वर द्वारा नियुक्त किए गए याजक ही एकमात्र ऐसे थे जो मंदिर में सेवा करते थे और लोगों के बलिदान प्रभु के लिए प्रस्तुत करते थे। यहूदियों का मानना था कि परमेश्वर उपस्थित थे और मंदिर में रहते थे। जकर्याह "परमेश्वर के समक्ष" थे क्योंकि वे परमेश्वर की स्वयं की उपस्थिति में काम करने वाले एक याजक थे। [लोग मंदिर के उस हिस्से में प्रवेश नहीं कर सकते थे जहां धूप की वेदी होती है। केवल याजकगण - ऐसे लोग जो परमेश्वर के द्वारा इस विशेष उद्देश्य के लिए अलग से नियुक्त थे - उन्हें मंदिर के उस हिस्से में जाने की अनुमति थी।]{.mark}

यह तय करने के लिए कि कौन धूप चढ़ाएगा, याजक पर्ची या वस्तु डालकर पारी निकालते थे। पर्ची डालना या पांसे फेंकना निर्णय लेने का एक ऐसा तरीका होता था जो मानव तर्क या विकल्पों पर आधारित नहीं होता था। लोग कुछ वस्तुओं (या चिट्ठियों या पर्चियों या पांसों को), फेंक कर या उनमें से उठाकर, निर्णय लेने के लिए इस्तेमाल करते थे। हमें नहीं पता कि उन्होंने इस कहानी में किन तरह की वस्तुओं का इस्तेमाल किया था लेकिन संभव है कि वे छोटे पत्थर रहे होंगे। कभी-कभी वे कागज की चिट्ठियों पर नाम लिखते थे और उन्हें एक बर्तन में डाल कर उसमें से एक नाम निकालते थे। जिस याजक का पत्थर एक विशेष तरह से गिरता था या जिसके नाम का चुनाव पहले होता था, उसे ही चयनित माना जाता था। इस भेंट के लिए जकर्याह को चुना गया था। परमेश्वर ने उन्हें यह भेंट करने के लिए सीधे ही चुना था।

[लोगों की प्रार्थनाओं के प्रतीक के लिए पुजारी परमेश्वर को धूप का चढ़ावा देते थे।]{.mark} याजकगण मीठे गंध वाले मसाले जलाते थे जो विशेष रूप से परमेश्वर को धूप की वेदी पर चढ़ाने के लिए बनाए जाते थे। जब जकर्याह धूप जला रहे थे तब लोग बाहर इस्राएल के देश के उद्धार के लिए प्रार्थना कर रहे थे। परमेश्वर उनकी प्रार्थनाओं का जवाब देते हैं। वे न केवल जकर्याह को एक पुत्र की प्रतिज्ञा करते हैं बल्कि वे जकर्याह से यह भी कहते हैं कि उनका पुत्र उस प्रभु के आने का मार्ग तैयार करेगा जो शांति और न्याय लाएगा। उनका पुत्र यह कार्य लोगों को प्रायश्चित करने का या परमेश्वर के प्रति उनके अवज्ञा से फिरने का कह कर करेगा, ताकि वे उनके साथ एक सही संबंध रख सकें। इसका मतलब है कि यूहन्ना लोगों को स्वयं परमेश्वर द्वारा उनकी प्रार्थनाओं का जवाब देने के लिए तैयार करेंगे।

धूप की वेदी कैसी दिखती है और यह मंदिर के अंदर कहां स्थित थी, उसकी एक तस्वीर दिखाएं।

जब स्वर्गदूत जकर्याह से यह कहते हैं कि उनके पुत्र का नाम यूहन्ना रखा जाएगा, तो यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि उसे एक आज्ञा के रूप में दिया गया है। यह यहूदी संस्कृति के विपरीत था क्योंकि आम तौर पर पिता बच्चों के नाम तय करते थे। यह तथ्य कि परमेश्वर ने उनका नाम दिया और उन्होंने उन्हें आज्ञा दी कि वे किण्वित पेय का सेवन न करें, यह यहूदियों के लिए स्पष्ट संकेत रहे होंगे कि वे एक विशेष तरीके से परमेश्वर के लिए समर्पित थे।

अपनी टीम के साथ चर्चा करें कि आपकी संस्कृति में बच्चों का नाम किस तरह रखा जाता है। क्या नाम कोई विशेष महत्व उसी तरह रखते हैं, जिस तरह वे यहूदियों के लिए रखते हैं। यूहन्ना नाम का मतलब है "प्रभु कृपालु हैं।" अगर आप यह महसूस करते हैं कि यह एक बेहतर अनुवाद है तो आपकी टीम यूहन्ना नाम के बजाय इस अर्थ का उपयोग करना चुन सकती है।

यहूदी लोग एलिय्याह की भविष्यवाणी के पूरा होने की तब से ही प्रतीक्षा कर रहे थे जब से भविष्यद्वक्ता मलाकी ने कहा था कि एलिय्याह वापस आएंगे। इसका मतलब है कि कोई ऐसा आने वाला है जो एलिय्याह के समान है जिसका मतलब है कि वे इस्राएल के लोगों को यह दिखाएंगे, कि वे अपने मन और इच्छाओं के साथ फिर से परमेश्वर का अनुसरण और आज्ञापालन किस तरह करें। इसलिए जब स्वर्गदूत कहते हैं कि यूहन्ना "एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ्य वाले एक मनुष्य" होंगे तो यह एक और ऐसी भविष्यवाणी थी जो परमेश्वर द्वारा पूरी की जा रही थी।

जब जकर्याह को संदेह होता है कि उनकी पत्नी उनकी उम्र के कारण क्या गर्भवती हो पाएगी तो स्वर्गदूत उन्हें बताते हैं कि जब तक उनके वचन सच नहीं होंगे तब तक जकर्याह मौन रहेंगे। वे जकर्याह से कहते हैं कि जो कुछ उन्होंने कहा था वह परमेश्वर के समयानुसार संभव होगा। तो जकर्याह मंदिर छोड़ देते हैं और बाहर के लोग चकित थे कि इतने समय तक अंदर रहे। वे उनके चाल-ढाल द्वारा यह बता सकते थे कि उन्हें दिव्य-दर्शन हुआ होगा। बोलने में असमर्थ जकर्याह अपनी साप्ताहिक सेवा के बाद अपने घर लौट आते हैं।

कुछ समय के बाद इलीशिबा गर्भवती हो जाती है। वे अपने घर के अंदर एक शांत जीवन जीती हैं और यहूदी प्रथानुसार उनकी गर्भावस्था के पहले पांच महीनों तक वे सार्वजनिक रूप से बाहर नहीं जाती हैं। वे कहती हैं कि परमेश्वर ने उन्हें

एक बच्चा देकर उनके प्रति अनुकंपा की है। उन्हें अब बच्चा नहीं होने की शर्म महसूस नहीं करनी होगी।

यह कहानी पुराने नियम से नए नियम में पारगमन करती है। शुरुआत में हम देख सकते हैं कि यहूदी मंदिर में धूप चढ़ाकर परमेश्वर की व्यवस्था का पालन कर रहे थे। कहानी के अंत तक आते हुए हम देखते हैं कि परमेश्वर लोगों को उनके पास वापस लाने का रास्ता तैयार कर रहे हैं ताकि वे सचमुच अपने लोगों पर शासन कर सकें। केवल यहूदी लोगों के लिए ही नहीं बल्कि सभी देशों के लिए उद्धार लाकर मसीहा उनकी प्रार्थनाओं का जवाब होगा।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 1:5–25

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य बनाने में समूह की मदद करेंगे। आप कहानी के दृश्यों, विन्यास और पात्रों को परिभाषित करने में समूह की मदद करेंगे।

इस कहानी में पांच दृश्य हैं।

पहला दृश्य: यह दृश्य कालावधि का परिचय देता है और जकर्याह और उनकी पत्नी इलीशिबा का वर्णन करता है। जकर्याह एक याजक हैं और उनकी पत्नी इलीशिबा, को संतान नहीं हो पा रही है।

दूसरा दृश्य: दूसरे दृश्य में जकर्याह मंदिर में धूप जलाने के लिए जाते हैं जिस समय लोग प्रार्थना के बाहर खड़े होते हैं।

तीसरा दृश्य: जब वे मंदिर में होते हैं तो एक स्वर्गदूत जकर्याह को प्रकट होता है। स्वर्गदूत जकर्याह से कहते हैं कि उनकी पत्नी को एक पुत्र होगा। जब जकर्याह इसके होने की निश्चितता के बारे एक संकेत मांगते हैं, तो स्वर्गदूत उन्हें कहते हैं कि वे उनके पुत्र जन्म तक बात नहीं कर पाएंगे।

चौथा दृश्य: जकर्याह मंदिर से निकलते हैं और वे कुछ बोल नहीं पाते। जकर्याह अपने हाथ के इशारों का इस्तेमाल लोगों को यह बताने के लिए करते हैं कि उन्हें एक दिव्यदर्शन हुआ था। अपनी सप्ताह भर की सेवा समाप्त करने के बाद वे घर वापस आते हैं।

पांचवां दृश्य: इलीशिबा गर्भवती हो जाती है और यहूदी प्रथा का पालन करते हुए पांच महीने तक एकांतवास में जाती है। इलीशिबा परमेश्वर की उनके प्रति अनुकंपा को पहचानती है।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यहूदा के राजा, हेरोदेस
- जकर्याह
- इलीशिबा
- प्रभु के स्वर्गदूत, जिब्राईल
- बाहर इंतजार कर रहे लोग

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल का इस्तेमाल करे।

घटनाएं कालक्रम में कहां हो रही हैं, इसे दर्शाने के लिए यहूदा के राजा हेरोदेस का उल्लेख किया गया है। हेरोदेस को उन रोमियों ने नियुक्त किया था जिनका उस क्षेत्र पर अधिराज्य था।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि इस कहानी की कार्रवाई मंदिर के केंद्रीय भवन में होती है, जो यहूदियों के सबसे महत्वपूर्ण स्थानों में से एक है, वह स्थान जहां परमेश्वर याजक से बातचीत करने के लिए अवतरित होंगे। मंदिर के इस हिस्से में केवल याजकों को ही प्रवेश करने की अनुमति थी।

जकर्याह को यहूदी याजक के रूप में वर्णित करना और उनकी और उनकी पत्नी इलीशिबा की वृद्धावस्था पर जोर देना महत्वपूर्ण है, जिनके संतान उत्पन्न नहीं हो पा रही थी। ये दोनों ही ऐसे परिवारों के हैं जो याजक बनने के लिए समर्पित हैं।

जकर्याह को परमेश्वर की सेवा के लिए धूप का चढ़ावा करना अपेक्षित था क्योंकि उस विशिष्ट प्रकार्य के लिए उनके नाम की पर्ची निकली थी। जब वे भेंट चढ़ा रहे थे तब बाहर प्रार्थना करने वाले लोगों का एक बड़ा समूह

"तब प्रभु का स्वर्गदूत धूप चढ़ावे के स्थान के **दाहिनी ओर** प्रकट हुआ।" दाहिनी ओर प्रतिष्ठा के स्थान को दर्शाता है, यह इस बात पर बल देता है कि स्वर्गदूत महत्वपूर्ण थे। परिणामस्वरूप जकर्याह एक बड़ा भय महसूस करते हैं।

स्वर्गदूत जकर्याह से कहते हैं कि अब भय करने की आवश्यकता नहीं है और उनकी प्रार्थना न केवल सुनी गई है बल्कि स्वीकार भी कर दी गई है। तब स्वर्गदूत निश्चितता के साथ यह व्यक्त करते हैं कि उनकी पत्नी उन्हें एक पुत्र प्रदान करेंगी और उन्हें बताता है कि उसका नाम क्या होगा। स्वर्गदूत यह भी बताते हैं कि वे कितने हर्षपूर्ण रहेंगे और वे कभी भी दाखरस को नहीं छूएंगे। अंत में स्वर्गदूत उन्हें बताते हैं कि किस तरह उनके पुत्र भी उसी आत्मा के प्रभाव में होंगे जिसके प्रभाव में एलिय्याह थे।

चूंकि जकर्याह और उनकी पत्नी बूढ़े हो चुके थे, अत: जैसा स्वर्गदूत ने कहा वह होगा इस बारे में जकर्याह एक संकेत मांगते हैं। तब स्वर्गदूत उन्हें उनका नाम, उनका दर्जा बताते हैं और यह भी कि उनका ध्येय परमेश्वर से इस शुभ समाचार

को उनके पास लाना है। इस बात पर विश्वास नहीं करने के लिए जकर्याह का परिणाम यह है कि वे बच्चे के जन्म तक कुछ बोल नहीं पाएंगे। स्वर्गदूत उन्हें आश्वासन देते हैं कि जो वचन दिए गए हैं वे पूर्ण होंगे।

लोग बाहर यह सोचते हुए इंतजार कर रहे थे कि उन्हें इतना समय क्यों लग रहा है। जब जकर्याह बाहर निकलते हैं, तो वे संकेतों के माध्यम से यह समझाने की कोशिश करते हैं कि क्या हुआ था। लोग समझ जाते हैं कि उन्हें अंदर रहते हुए किसी तरह का दिव्य दर्शन प्राप्त हुआ होगा। जब उनकी नियुक्त सेवा का सप्ताह समाप्त हो गया तो जकर्याह अपने घर लौट आए।

पिछली घटनाओं के कुछ समय बाद इलीशिबा गर्भवती हो जाती है और वे यह पहचानती हैं कि उनके बांझपन के कलंक को दूर करके परमेश्वर ने उन कितनी अनुकंपा की थी।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 1:5–25

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी में पांच दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यहूदा के राजा, हेरोदेस
- जकर्याह , यहूदी याजक
- जकर्याह की पत्नी, इलीशिबा
- प्रभु के स्वर्गदूत, जिब्राइल
- बाहर इंतजार कर रहे लोग

मण्डली से कहानी को दो बार अभिनीत करवाएं। पहले मण्डली से बिना रुके कहानी का अभिनय कराएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है और उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

यह सुनिश्चित करें कि मण्डली जकर्याह का वर्णन एक यहूदी याजक के रूप में करती है जो इलीशिबा से विवाहित है। याद रखें कि दोनों ही बूढ़े थे और यहूदियों की कानून और व्यवस्था के प्रति आज्ञाकारी हैं, लेकिन उनके कोई बच्चे नहीं थे क्योंकि इलीशिबा गर्भ धारण नहीं कर पा रही थी।

जब जकर्याह मंदिर में जाते हैं क्योंकि उन्हें उनके दल (या याजकों के विभाग) ने पर्ची डालकर चुना था और वे अपने कर्तव्यनिर्वाह के लिए उपस्थित थे। वृतांत का यह क्रम भ्रम पैदा कर सकता है क्योंकि यह जकर्याह के मंदिर में जाने के बाद पर्ची डालकर उनके चुने जाने का उल्लेख करता है।

मण्डली अभिनय करते समय कहानी के घटनाक्रम को पुन:व्यवस्थित करना चाह सकती है ताकि जो हुआ उसे वह अधिक सटिकता से प्रतिबिंबित कर सके। जकर्याह का दल उनके साप्ताहिक कार्यभार के दौरान सेवा कर रहा था और यहूदी परंपरा के अनुसार उन्होंने पर्ची डाली जिसमें जकर्याह को मंदिर में जाकर धूप जलाने के लिए चुना गया था।

दूसरी बार जब टीम इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

जकर्याह और इलीशिबा का राजा हेरोदेस के समय में जीवनकाल का, उनका यहूदियों की व्यवस्था का पालन करने का, लेकिन संतान न होने का क्योंकि वे गर्भ धारण नहीं कर सकती, इस सभी का अभिनय करें। **अभिनय को बंद करें।** इलीशिबा का किरदार निभाने वाली फनकारा से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रही हैं?" ऐसी बातें सुनने के लिए तैयार रहें, "उदास," "शर्मिंदा," "बहिष्कृत," "परित्यक्त," "खिन्न," "हतोत्साहित," "नाकाफी," अभिनय फिर से शुरू करें।

जकर्याह को धूप जलाकर मंदिर में परमेश्वर की सेवा करने के लिए पर्ची द्वारा चुना जाता है, और बाकी हर कोई बाहर प्रार्थना कर रहा होता है। जब जकर्याह धूप जला रहे होते हैं, तब प्रभु का एक स्वर्गदूत धूप की वेदी के दाहिनी ओर प्रकट होकर उन्हें दिखाई देता है। यह घटना अविश्वसनीय रूप से प्रभावशाली रही होगी क्योंकि जकर्याह यह जानते थे कि केवल याजक उस स्थान में प्रवेश कर सकते थे और क्योंकि दाहिनी ओर प्रतिष्ठा का स्थान होता था इसलिए स्वर्गदूत बहुत महत्वपूर्ण रहे होंगे। **अभिनय को बंद करें।** जकर्याह का पात्र अदा करने वाले अदाकार से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" ऐसा कुछ सुनें, जैसे, "भयभीत हूं," "सम्मानित महसूस करता हूं," "उत्सुक हूं," "श्रद्धापूर्ण विस्मय में हूं," "आश्चर्यचकित हूं," अभिनय को फिर से शुरू करें।

स्वर्गदूत जकर्याह को यह शुभ समाचार लाते हैं कि उनके एक पुत्र होगा, यह बताते हुए कि उनका नाम क्या होगा। स्वर्गदूत जकर्याह को बताते हैं कि उनका पुत्र क्या काम करेगा, उसके लिए क्या चीज़ें वर्जित हैं, और यह भी कि उनमें एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ्य होगा। **अभिनय को बंद करें।** जकर्याह का पात्र अदा करने वाले अदाकार से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" (आप अंदर क्या सोच रहे हैं/कह रहे हैं?) ऐसा कुछ सुनें, "पशोपेश में हूं," "यह खबर क्या है?" "क्या मैं सही सुन रहा हूं?" "ऐसा कैसे हो सकता है," "श्रद्धापूर्ण विस्मय में हूं," "आश्चर्यचकित हूं," अभिनय को फिर से शुरू करें।

तब जकर्याह स्वर्गदूत से पूछते हैं कि जो कुछ बताया गया था वह कैसे होगा क्योंकि वे और उनकी पत्नी संतान उत्पत्ति की आयु पार कर चुके हैं। स्वर्गदूत अपना नाम और पदवी बताते हैं और जकर्याह को उनके अविश्वास का परिणाम बताते हैं कि जब तक बच्चा उत्पन्न नहीं होता तब तक वे बात नहीं कर पाएंगे। इस तरह स्वर्गदूत बताते हैं कि जो कुछ कहा गया था वह होगा। **अभिनय को बंद करें।** जकर्याह का पात्र अदा करने वाले अदाकार से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" (आप अंदर क्या सोच रहे हैं/कह रहे हैं?) सुनो "प्रभु के स्वर्गदूत पर मैं कैसे संदेह कर सकता हूं?" "मुझे बहुत खेद है, प्रभु!" "मुझ पर हाय," "प्रभु मेरे अविश्वास को दूर करें," अभिनय को फिर से शुरू करें।

लोग मंदिर के प्रांगण में बाहर इंतजार कर रहे होते हैं। वे सोच रहे होते हैं कि उन्हें इतनी देर क्यों लग रही है। जब जकर्याह बाहर निकलते हैं, तो वे कुछ बोल नहीं पाते लेकिन जो कुछ हुआ उसे वे संकेतों के माध्यम से बताते हैं। लोगों का सबसे श्रेष्ठ अनुमान यह है कि उन्हें पवित्रस्थान में एक दिव्य दर्शन हुआ था।

अभिनय को बंद करें। इंतजार कर रहे लोगों का किरदार निभा रहे फनकारों से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" (आप अंदर क्या सोच रहे हैं/कह रहे हैं?) ऐसा कुछ सुनें कि, "आखिरकार," "वे जीवित हैं," "डरे हुए हैं," "जिज्ञासु हैं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

इलीशिबा गर्भवती हो जाती है और पांच महीने तक एकांतवास में रहती हैं। वह परमेश्वर की प्रशंसा करती हैं कि उन्हें पुत्र देकर उन्होंने उनका तिरस्कार दूर कर दिया। **अभिनय को बंद करें।** प्रतीक्षारत इलीशिबा का किरदार अदा करने वाली अदाकारा से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रही हैं?" (आप अंदर क्या सोच रहे हैं/कह रहे हैं?) ऐसा कुछ सुनें कि, "खुश हूं," "धन्य हूं," "परमेश्वर कभी मुझे भूले नहीं," "वे निष्ठावान हैं," "वे असंभव को भी संभव कर सकते हैं।"

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 1:5–25

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

लूका हमें उनके विशेष लोग - यहूदियों की कहानी बताते हैं। यद्यपि उन पर रोमवासियों द्वारा विजय प्राप्त की गई थी, फिर भी वे मंदिर नाम के एक विशेष स्थान पर परमेश्वर की पूजा करते थे। यह कहानी तब होती है जब **हेरोदेस महान यहूदा के राजा थे।** राजा हेरोदेस एक यहूदी थे जिन्हें रोमियों ने यहूदा पर शासन करने के लिए चुना था। उन्होंने 37–4 ईसा पूर्व तक यह कार्य किया था।

यहूदी याजकों को विशेष रूप से मंदिर में प्रवेश करने, परमेश्वर के लोगों के लिए बलिदान करने और परमेश्वर के साथ मिलने के लिए चुना गया था। **अबिय्याह के समुदाय के जकर्याह** उन याजकों में से एक थे और वर्ष से दो सप्ताह तक अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते थे। इब्रानी में जकर्याह का मतलब है "यहोवा याद रखते हैं।" जकर्याह **हारून के वंश की इलीशिबा** से विवाहित थे। वे हारून की वंशज, यानी "एक याजक की पुत्री" थीं। इसका मतलब केवल यही है कि वे भी याजकों के एक परिवार से थीं। यहूदी संस्कृति में जकर्याह जैसे याजकों का इस्राएली समुदाय की कुंवारियों से विवाह करना अपेक्षित होता था, लेकिन एक याजक की पुत्री से विवाह करने को प्राथमिकता दी जाती थी।

जकर्याह और इलीशिबा अपना जीवन इस तरह से निर्वाह करते थे जो **परमेश्वर के दृष्टिकोण में धर्मी** हो। यूनानी शब्द *dikaios* ("सच्चा" या "धार्मिक") किसी ऐसे व्यक्ति को संदर्भित करता है जो परमेश्वर की इच्छा और उनके नियम के प्रति आज्ञाकारिता में रहता और कार्य करता है। इसका मतलब है कि जकर्याह और इलीशिबा दोनों जो याजक समुदाय के हिस्से थे, वे परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते थे। परमेश्वर एक न्यायाधीश के रूप में कार्य करते हैं और उन्हें "धर्मी" के रूप में देखते हैं। **प्रभु की आज्ञा और नियम** उन कानूनों से संदर्भ रखता है जो परमे**श्वर** ने उनके लोगों को उनका अनुसरण और आज्ञा पालन करने के लिए दिए थे। परमेश्वर ने मूसा के माध्यम से उनके लोगों को उस समय कानून प्रदान किए थे जब उन्होंने उन्हें उनकी उंगली से शिला पर लेखित किया था। जो कोई भी सभी कानूनों का पालन करता था उसे परमेश्वर के समक्ष दोषहीन माना जाता था। यद्यपि जकर्याह और इलीशिबा परमेश्वर के समक्ष धर्मी जीवन जीते थे, फिर भी इलीशिबा के संतान नहीं हो रही थी।

इसलिए जकर्याह **परमेश्वर** की एक याजक के रूप में सेवा कर रहे थे। यहूदी संस्कृति में याजक परमेश्वर और मनुष्य के बीच मध्यस्थ होकर परमेश्वर की सेवा करते थे। वे मंदिर में लोगों की ओर से परमेश्वर के लिए कई तरह के बलिदान चढ़ाते थे। वे एक वर्ष से दो सप्ताह तक अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते थे। जकर्याह **प्रभु के मंदिर** में सेवा कर रहे थे। मंदिर यरूशलेम के शहर यहूदा के क्षेत्र में स्थित था। जब पद *9* में मंदिर शब्द का इस्तेमाल किया जाता है, तो यह मंदिर भवन के सबसे पवित्र स्थानों में से एक को दर्शाता है, न कि सम्पूर्ण मंदिर को। यह एक विशेष स्थान होता था जहां याजक परमेश्वर के साथ मुलाकात करते और लोगों के लिए बलिदान चढ़ाते थे।

अगर आपने पहले से ही ऐसा नहीं किया है तो मंदिर का विन्यास कैसा लगता होगा इसकी तस्वीर अनुवादकों को दिखाएं। उस स्थान के लिए आप किस शब्द का उपयोग करेंगे जहां यहूदी याजक लोगों के लिए बलिदान चढ़ाते थे और परमेश्वर के साथ मुलाकात करते थे। इस शब्द को अपने अनुवाद के पूरी तरह से सुसंगत रखना सुनिश्चित करें।

अनुवादकों को श्रेष्ठतम शब्द का चयन करने में मदद के लिए आप यह सवाल पूछ सकते हैं कि "आपकी भाषा में "कलीसिया" और "मंदिर" में क्या अंतर है?"

जकर्याह मंदिर के गर्भगृह में उनके अपने चुनाव से नहीं बल्कि याजकों द्वारा चिट्ठी डालकर चुने जाने के कारण सेवाकार्य कर रहे थे। **चिट्ठी डालना** एक परंपरा थी [जिससे याजक यह तय करते थे कि धूप का चढ़ावा कौन चढ़ाएगा। वह निर्णय लेने का एक ऐसा तरीका होता था जो मानव तर्क या विकल्पों पर आधारित नहीं होता था। लोग कुछ वस्तुओं (या चिट्ठियों या पर्चियों या पांसों को), फेंक कर या उनमें से उठाकर, निर्णय लेने के लिए इस्तेमाल करते थे। हमें नहीं पता कि वे किस तरह की वस्तुओं का उपयोग करते थे, परंतु वे छोटे पत्थर हो सकते हैं। कभी-कभी वे कागज की चिट्ठियों पर नाम लिखते थे और उन्हें एक बर्तन में डाल कर उसमें से एक नाम निकालते थे। जिस याजक का पत्थर एक विशेष तरह से गिरता था या जिसके नाम का चुनाव पहले होता था, उसे ही चयनित माना जाता था।]{.mark} कुछ भाषाओं में इस जानकारी को स्पष्ट करना सहायक हो सकता है। [इस घटना में जकर्याह का चयन होता है। परमेश्वर उन्हें धूप का चढ़ावा चढ़ाने के लिए सीधे चुनते हैं।]{.mark}

जकर्याह **गर्भगृह** में, यानी मंदिर के सबसे आंतरिक हिस्से में प्रवेश करते हैं, जहां न सिर्फ परमेश्वर से मिलने बल्कि परमेश्वर के लोगों के निमित्त बलिदान चढ़ाने के लिए केवल कुछ ही याजक जा सकते थे। गर्भगृह में पवित्र स्थान और परम पवित्र स्थान होता था जहां परमेश्वर की आज्ञाओं के साथ याजक एक विशेष पेटी रखते थे। जब जकर्याह **धूप** की वेदी पर परमेश्वर के लिए धूप या मीठी सुगन्ध वाली बूटियों का चढ़ावा परमेश्वर को चढ़ा रहे होते हैं तो एक स्वर्गदूत प्रकट होता है।

प्रभु का स्वर्गदूत विशिष्ट रूप से परमेश्वर द्वारा भेजे गए एक [स्वर्ग]{.mark}दूत को संदर्भित करता है। फ़रिश्ता एक अलौकिक और आध्यात्मिक दूत होता है, जो परमेश्वर का संदेशवाहक भी होता है। स्वर्गदूत मानव रूप में मनुष्यों को दिखते हैं, वे यीशु जितने सामर्थ्यशाली नहीं हैं और वे अक्सर एक विशिष्ट संदेश के सां, या एक विशिष्ट काम करने के लिए आते हैं। अगर आपकी भाषा में स्वर्गदूत के लिए ऐसा कोई शब्द नहीं है, जिसे को अन्यजाति समझ पाए तो आप इसे परमेश्वर के/से संदेशवाहक, परमेश्वर के प्रतिनिधि या परमेश्वर के दूत के रूप में कर सकते हैं। हालाँकि सावधान रहें, क्योंकि नबी शब्द से भी ये ही अर्थ प्रकट होते हैं। आपको "परमेश्वर के संदेशवाहक" के अपने वर्णन में आत्मा को शामिल करने की आवश्यकता हो सकती है।

जब लूका **प्रभु** कहते हैं, तो इसका अनुवाद स्वामी, सर्वप्रमुख, या मालिक के रूप में किया जा सकता है। सतही स्तर पर यह किसी सम्मानित व्यक्ति को 'सर' कह कर संबोधित करने जैसी एक उपाधि है। यह किसी ऐसे को संदर्भित करता है जिसके पास किसी जन या किसी वस्तु पर अधिकार होता है।

स्वर्गदूत जकर्याह से कहते हैं कि वे डरे नहीं, और उन्हें यह खुशखबर बताते हैं कि उनकी पत्नी यूहन्ना नाम के एक को जन्म देने वाली है। स्वर्गदूत तब जकर्याह से कहते हैं कि उनका पुत्र कौन होगा और वह क्या करेगा। उनके संदेश का एक हिस्सा यह है कि यूहन्ना बाकी सब से अलग होंगे और **उन्हें कभी दाखरस या अन्य मदिरा पेयों को नहीं छूना चाहिए।** इस आज्ञा को यहूदियों द्वारा गिनती 6:1–4 में दिए गए नासरत के कानून के एक हिस्से के रूप में पहचाना गया होगा। जो कोई उसका अनुसरण करता था वह दूसरों को संभवत: दिखा रहा होता था कि वे एक विशेष तरह से परमेश्वर के प्रति समर्पित थे।

स्वर्गदूत यह भी कहते हैं कि यूहन्ना **पवित्र आत्मा से परिपूर्ण** होंगे। हिब्रू शब्द रुआह आत्मा का भौतिक अर्थ "वायु" या "श्वास" हो सकता है। इसका मतलब 'शक्ति' या 'अधिकार' भी हो सकता है जो परमेश्वर किसी को असाधारण कार्य करने के लिए देता है। परमेश्वर लोगों को उपहार देते हैं जब ईश्वर की आत्मा (या परमेश्वर की आत्मा) किसी में (या किसी पर) आती है। परमेश्वर की आत्मा लोगों को कुछ करने के लिए सक्षम बनाती है। उदाहरण के लिए, किसी व्यक्ति को परमेश्वर के किसी संदेश को किसी ओर को पहुंचाने को कहा जा सकता है। अक्सर परमेश्वर का आत्मा व्यक्ति को निर्देश देती है या उस व्यक्ति को ठीक से बताती है कि उसे क्या करना है। परमेश्वर की आत्मा से भरा व्यक्ति अन्य लोगों को या किसी अन्य व्यक्ति को परमेश्वर से आया संदेश देता है। परमेश्वर की आत्मा के सामर्थ्य से आया हुआ संदेश सच होता था और उसकी सच्चाई प्रत्यक्ष होती थी। जिस व्यक्ति में परमेश्वर की आत्मा होती है उसमें दिव्य ज्ञान और अधिकार (विशेष रूप से राजा और भविष्यद्वक्ताओं में) होता है। नए नियम में पवित्र की अवधारणा उन लोगों या वस्तुओं को संदर्भित करती है, जो परमेश्वर की है, या उनके लिए अर्पित हैं या जो उनके समान हैं। इसलिए यूहन्ना परमेश्वर के संबद्ध और परमेश्वर की आत्मा से परिपूर्ण होने वाले थे। परमेश्वर उन्हें इस्राएल के लोगों तक ले जाने के लिए एक विशेष संदेश देने वाले थे और परमेश्वर की आत्मा उन्हें जो कुछ करने की जरूरत थी उसे करने का सामर्थ्य देने वाली थी।

स्वर्गदूत भी जकर्याह से यह कहते हैं कि उनके पुत्र **में एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ्य** होगा।

यहूदी लोग एलिय्याह की भविष्यवाणी के पूरा होने की तब से ही प्रतीक्षा कर रहे थे जब से भविष्यद्वक्ता मलाकी ने कहा था कि एलिय्याह वापस आएंगे। यह भविष्यवाणी किसी ऐसे व्यक्ति को संदर्भित करता है जो आने वाला है, जो चरित्र और सामर्थ्य में एलिय्याह की तरह होगा, और जो लोगों के दिलों को परमेश्वर की ओर फिराएगा। इसका मतलब यह नहीं है कि एलिय्याह की व्यक्तिगत आत्मा यूहन्ना में वापस आ जाएगी। जब स्वर्गदूत कहते हैं कि यूहन्ना **प्रभु के आने के लिए लोगों को तैयार** करेंगे, तो इसका अनुवाद प्रभु के आगमन के लिए *तैयार करना* भी किया जा सकता है। यह

वाक्यांश यूहन्ना के समग्र उद्देश्य, जो एक अग्रदूत के रूप में प्रभु के आगे जाना था, को संदर्भित करता है। यूहन्ना का उद्देश्य लोगों को पाप करना बंद करने के बारे में बताना और समझदारी और धार्मिकता के साथ जीवन जीने के लिए उनके परिवारों के साथ सामंजस्य स्थापित करना था।

जब जकर्याह स्वर्गदूत के वचनों पर संदेह करते हैं, तो स्वर्गदूत (जिसका अनुवाद संदेशवाहक भी होता है) यह घोषणा करते हैं कि वे कौन हैं। वे कहते हैं कि उनका नाम **जिब्राईल** है और वे परमेश्वर के उपस्थिति में खड़े होते हैं। स्वर्गदूत जकर्याह के अविश्वास के प्रति एक दो टूक जवाब के रूप में उनके नाम और पदवी का उल्लेख करते हैं। यहूदी समुदाय में जिब्राईल प्रसिद्ध थे क्योंकि भविष्यकथन लेखन में उनका उल्लेख होता था। जिब्राईल ने यह कहकर अपने अधिकार पर बल दिया कि उन्हें परमेश्वर ने उनके संदेश को पहुंचाने के लिए भेजा है। यह कहना कि वे परमेश्वर की उपस्थिति में खड़े होते हैं, उनकी महत्ता परमेश्वर के एक सेवक के रूप में दर्शाता है, जिसका अर्थ होता है कि वे नियमित रूप से या सदैव परमेश्वर के पास उनकी सेवा करने के लिए तत्पर रहते थे।

उनके अविश्वास के कारण जिब्राईल ने जकर्याह से कहा कि जब तक उनका पुत्र उत्पन्न नहीं होता तब तक वे कुछ बोल नहीं पाएंगे। वे कहते हैं कि परमेश्वर के समय अनुसार जो कुछ उन्होंने कहा है वह सब सच होगा। उसके बाद जकर्याह मंदिर से निकलते हैं। जब वे कुछ बोल नहीं पाते और जो हुआ था उसे संकेतों के माध्यम से बताने की कोशिश करते हैं, तो लोग समझ जाते हैं कि उन्हें दिव्य दर्शन हुआ होगा। दिव्य दर्शन एक अतिप्राकृतिक अनुभव को संदर्भित करते हैं, जिसमें जागी अवस्था में किसी व्यक्ति को दिव्य प्रकटीकरण दिया जाता है, जबकि स्वप्न वे होते जो परमेश्वर लोगों को उनकी निद्रावस्था में दिखाते हैं। यदि आपकी भाषा में केवल दिव्य दर्शन और स्वप्न के लिए एक ही शब्द हो, तो आप यह निर्दिष्ट करना चाहेंगे कि जब परमेश्वर से संदेश प्राप्त हुआ तब वह व्यक्ति जाग रहा था या सो रहा था।

जकर्याह **मंदिर में अपनी सेवा के सप्ताह का** समापन करते हैं। एक यहूदी याजक के रूप में जकर्याह ने मंदिर में वर्ष के दो सप्ताह लोगों की ओर से बलिदान और चढ़ावा चढ़ाने के लिए सेवा की होगी। उसके बाद वे घर लौट आए। कुछ समय के बाद जैसा स्वर्गदूत ने कहा था, उसी तरह इलीशिबा गर्भवती होती हैं। जब उन्हें पता चलता है कि वे गर्भवती हैं, तो इलीशि**बा पांच महीने के एकांतवास** में चली जाती हैं। इसका बुनियादी अर्थ है कि उन्होंने खुद को गुप्त रखा या एक शांत निजी जीवन व्यतीत किया, हालांकि पाठ इस बात को स्पष्ट नहीं करता कि ऐसा क्यों किया गया। यह सावधानी रखें कि इसका अनुवाद शर्मिंदगी के कारण या कुछ गलत करने के कारण छुपना न करें। इलीशिबा यह व्यक्त करती हैं कि संतान उत्पन्न न कर पाने के अपमान को दूर करने के लिए परमेश्वर ने उन पर अनुकंपा की है।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 1:5–25

Audio Content

webm zip (5297704 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (9170571 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 1:26–38

सुनना और मनन करना

लूका 1:26–38 सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे यह कथा सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

स्टेज सेट करना

लूका 1:26–38

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

लूका *1:26–38*

यह असंभव गर्भाधान के बारे में एक दूसरी कहानी है जिसे लूका बताते हैं। लूका दोनों गर्भावस्था के आसपास की घटनाओं की अति-समानता को दिखाकर दोनों कहानियों को जोड़ते हैं। यह कहानी इलीशिबा के छठे महीने के गर्भावस्था के दौरान शुरू होती है जब परमेश्वर स्वर्गदूत जिब्राईल को एक अन्य संदेश के साथ भेजते हैं। इस बार यह संदेश इलीशिबा की एक रिश्तेदार मरियम के लिए है। मरियम नासरत नामक एक शहर में रहती थीं।

यहूदी नासरत के छोटे शहर में वास करते थे जो गलील के क्षेत्र में था, लेकिन वे अपने ही लोगों की घृणा के पात्र थे। परमेश्वर अपने स्वर्गदूत जिब्राईल को वहां भेजने का फैसला करते थे। यशायाह भविष्यद्वक्ता के माध्यम से यहूदी जानते थे कि प्रतिज्ञा किए गए जिनकी वे प्रतीक्षा कर रहे थे, वे गलील से ही होंगे। उस काल में वह क्षेत्र तब भी रोमियों द्वारा नियंत्रित था।

अनुवादकों को दिखाएँ कि गलील का क्षेत्र और नासरत नगर इस्राएल के मानचित्र पर कहां स्थित हैं।

इसलिए जिब्राईल मरियम नाम की एक युवती के समक्ष प्रकट होते हैं। मरियम एक कुंवारी थीं, वे पहले किसी व्यक्ति के साथ कभी नहीं सोईं थीं। उनकी यूसुफ नाम के एक व्यक्ति के साथ सगाई हुई थी।

यहूदी संस्कृति में मनुष्य और स्त्री के माता-पिता द्वारा विवाह की व्यवस्था की जाती थी। महिलाओं का विवाह 12 वर्ष की छोटी उम्र में भी हो सकता था। सगाई कानूनी रूप से बाध्यकारी होती थीं और एक वर्ष तक मान्य होती थीं। इस वर्ष के दौरान मरियम और उनकी संपत्ति पहले से ही यूसुफ की हो जाती थी। यदि इस दौरान वे यूसुफ के प्रति बेवफ़ाई करती तो यहूदियों ने इसे व्यभिचार माना होता।

अपनी मण्डली के साथ बात करें। आपकी संस्कृति में एक पुरुष और स्त्री जो विवाह के लिए सगाई करते हैं, उनके लिए क्या नियम हैं?

यूसुफ राजा दाऊद के परिवार से थे। यह इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यहूदी भविष्यद्वक्ता यशायाह ने कहा था कि राजा दाऊद का एक वंशज परमेश्वर की जनता पर सदा शासन करेगा। जिब्राईल उस स्थान के भीतर प्रकट होते हैं जहां मरियम होती हैं। वे उनका अभिवादन करते हैं और उन्हें बताते हैं कि वे परमेश्वर का उन पर बहुत अनुग्रह है। वे कहते हैं कि परमेश्वर उनके साथ हैं। इससे मरियम परेशान हो जाती हैं। उनकी संस्कृति में महिलाओं को इतने सम्मान के साथ संबोधित किया जाना सामान्य नहीं था। जिब्राईल कहते हैं कि परमेश्वर ने उन पर अनुग्रह किया है और उनके एक पुत्र होगा। एक कुंवारी कन्या के लिए परमेश्वर द्वारा पुत्र की प्रतिज्ञा यहूदियों के लिए महत्वपूर्ण होती थी। यह यशायाह से उद्धारकर्ता के बारे में एक और भविष्यवाणी को पूरा करता है - कि वे एक कुंवारी को उत्पन्न होंगे। जिस तरह परमेश्वर ने जकर्याह के साथ किया था, ठीक उसी तरह परमेश्वर जिब्राईल के माध्यम से मरियम को पुत्र का नाम देते हैं। उनका नाम

यीशु होगा, जिसका मतलब है "यहोवा बचाते हैं" यहोवा इब्रानी में परमेश्वर का व्यक्तिगत नाम है। जिब्राईल तब बताते हैं कि यीशु कौन होंगे।

यहां रुकें और एक अनुवाद दल के रूप में चर्चा करें: क्या आपकी संस्कृति में नामों का अर्थ होता है? बच्चों के नाम कैसे चुने जाते हैं?

जिब्राईल कहते हैं कि यीशु परम प्रधान के पुत्र होंगे। इसका मतलब है कि वे जन्म से ही "परमेश्वर के पुत्र" होंगे। जब राजा दाऊद इस्राएल पर शासन करते थे, तब परमेश्वर ने उन्हें यह वचन दिया था कि उनके वंशज सदा के लिए सिंहासन पर रहेंगे। जब जिब्राईल कहते हैं कि परमेश्वर दाऊद की गद्दी यीशु को देंगे, तो वे कह रहे हैं कि उनका राज्य सदा तक बना रहेगा। यह हमें बताता है कि यीशु ही यहूदी लोगों के उद्धारक होंगे और वे याकूब के वंशजों पर सदा के लिए शासन करेंगे। याकूब यहूदी लोगों के लिए एक महत्वपर्ण पूर्वज थे। परमेश्वर ने याकूब का नाम बदल कर इस्राएल रखा था। यीशु के समय के सभी यहूदी लोग याकूब के 12 पुत्रों के वंशज थे। यही कारण है कि इस्राएल के 12 कबीलें हैं।

जकर्याह की तरह ही मरियम स्वर्गदूत के संदेश पर सवाल उठाते हुए पूछती हैं कि यह किस प्रकार संभव होगा चूंकि वे एक कुंवारी हैं। जिब्राईल उन्हें कहते हैं कि पवित्र आत्मा का अवतरण उन पर होगा और वे गर्भवती होंगी। इस पर जोर देना सुनिश्चित करें कि इसका अर्थ हैं वे पवित्र आत्मा के सामर्थ्य से गर्भवती होंगी न कि लोगों की मदद से। यह वाक्यांश "अवतरण" पहले उपयोग किए गए वाक्यांश के समान है जब परमेश्वर की उपस्थिति एक बादल पर उपासना के प्राचीन यहूदी स्थान, पवित्र तम्बू पर "उतरती" या "छाती" है। परमेश्वर की सामर्थ्य मरियम पर ठहरेगी ताकि वे परमेश्वर के पुत्र को उत्पन्न करें। यीशु "पवित्र" या अलग होंगे क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र हैं।

जिब्राईल मरियम को इलीशिबा की गर्भावस्था का शुभ समाचार बताते हैं। वे यह बताते हैं कि परमेश्वर ने किसी तरह पहले ही उनकी रिश्तेदार के लिए एक असंभव गर्भावस्था को संभव बनाया है। वे उन्हें यह कहते हुए आश्वासन देते हैं कि परमेश्वर के सभी वचन सामर्थ्यशाली हैं। मरियम विनम्रतापूर्वक स्वीकार करती हैं कि परमेश्वर ने उन्हें जो कुछ बताया है वह सच होगा और जिब्राईल लौट जाते हैं।

यह कथा बताती है कि गलील के निवासी होने, दाऊद के वंशज होने और एक कुंवारी से जन्म लेने की यहूदी भविष्यवाणी को पूरा करने के कारण यीशु ही उद्धारकर्ता थे।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 1:26–38

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य बनाने में समूह की मदद करेंगे। आप कथा के दृश्यों, माहौल और कथा का चरित्र गढ़ने में समूह की मदद करेंगे।

इस कथा में दो दृश्य हैं।

पहला दृश्य: इलीशिबा छह महीने की गर्भवती होती हैं जब परमेश्वर जिब्राईल को युवा, कुमारी मरियम से बात करने के लिए भेजते हैं। जब वे यह बताते हैं कि उन्हें अत्यधिक कृपापात्र माना गया है, तो मरियम परेशान हो जाती हैं।

दूसरा दृश्य: मरियम पशोपेश में होती हैं। जिब्राईल मरियम से कहते हैं कि पवित्र आत्मा के माध्यम से उन्हें एक पुत्र होगा, जिसका नाम यीशु होगा। जिब्राईल मरियम को कहते हैं उनकी रिश्तेदार इलीशिबा पहले से ही गर्भवती हैं और यह भी कि परमेश्वर का वचन कभी नाकाम नहीं होता। मरियम विनम्रतापूर्वक उनकी चमत्कारी गर्भावस्था को स्वीकार कर लेती हैं और जिब्राईल चले जाते हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- जिब्राईल
- परमेश्वर
- मरियम
- यूसुफ
- इलीशिबा

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल का इस्तेमाल करे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि जिब्राईल वही स्वर्गदूत हैं जिन्होंने जकर्याह को कहा था कि उनकी पत्नी इलीशिबा गर्भवती होंगी।

अभिनय के प्रारंभ में यह दिखाना सुनिश्चित करें कि इलीशिबा पहले से ही गर्भवती हैं। जब इलीशिबा को गर्भधारण किए हुए छः महीने हो जाते हैं तब परमेश्वर स्वर्गदूत जिब्राईल को कुंवारी मरियम के पास भेजते हैं। मरियम गलील क्षेत्र के एक नगर नासरत में रहती हैं। उनकी एक ऐसे व्यक्ति के साथ सगाई हुई हैं जो राजा दाऊद के वंशज हैं। जिब्राईल उनका यह कह कर अभिवादन करते हैं कि उन पर परमेश्वर का अनुग्रह हुआ है।

मरियम स्वर्गदूत के संदेश को समझने की कोशिश करते हुए उलझन में पड़ती हैं। प्रत्युत्तर में, स्वर्गदूत उन्हें कहते हैं कि वे डरें नहीं और यीशु नामक जिस पुत्र को वे जन्म देने वाली हैं, उसकी योजना का उन पर खुलासा करते हैं।

मरियम कहती हैं कि वे एक कुंवारी हैं और पूछती हैं कि किस तरह ये बातें संभव होंगी। स्वर्गदूत उन्हें बताते हैं कि परम

प्रधान के पवित्र आत्मा के माध्यम से व्यक्त सामर्थ्य से ऐसा होगा।

स्वर्गदूत उन्हें यह भी कहते हैं कि वृद्धावस्था के बावजूद उनकी रिश्तेदार इलीशिबा गर्भवती हैं और इसका मतलब है कि परमेश्वर का वचन कभी असफल नहीं होता है।

सुनिश्चित करें कि आपका अर्थ ऐसा न हो कि मरियम की स्वीकृति के कारण ही उनका गर्भधारण होता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि यह परमेश्वर की इच्छा ही है जो इन बातों को घटित करती हैं। जब मरियम कहती हैं कि "सब कुछ ..सच हो जाए" तो वे परमेश्वर की इच्छा को स्वीकार कर रही होती हैं।

मरियम घोषणा करती हैं कि वे प्रभु की एक सेवक हैं और स्वर्गदूत ने उनके बारे में जो कुछ कहा उसे स्वीकार करती हैं।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 1:26–38

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कथा में दो दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- परमेश्वर
- जिब्राईल
- मरियम
- यूसुफ
- इलीशिबा

मण्डली से कहानी को दो बार अभिनीत करवाएं। पहले मण्डली से बिना रुके कहानी का अभिनय कराएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है और उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

यह सुनिश्चित करें कि मण्डली इलीशिबा के छ: मास की गर्भवती होने का और साथ ही युवा मरियम का युसुफ के विवाह प्रतिज्ञा में होने का अभिनय करे। यह अभिनय करें कि यूसुफ राजा दाऊद के वंशज हैं।

यह सुनिश्चित करें कि स्वर्गदूत जिब्राईल का पात्र जो भी अभिनेता निभाता है, वह मरियम के लिए उसी समान संदेशवाहक का अभिनय करे, जैसे कि वे जकर्याह और मरियम दोनों को प्रकट हुए थे।

लूका *1:26–38*

संभव है कि अभिनय करते समय मण्डली कहानी के घटनाक्रम को पुर्नव्यवस्थित करे ताकि वास्तव में जो कुछ हुआ उसे अधिक सटीकता के साथ प्रतिबिंबित किया जा सके, इलीशिबा छ: महीने की गर्भवती हैं, और विवाह के लिए मरियम की यूसुफ (जो राजा दाऊद के वंशज हैं) के साथ सगाई हुई है। ये दोनों घटनाएं एक ही समय में घटित हो रही हैं, इसे अभिनय में परिलक्षित किया जाना चाहिए।

दूसरी बार जब टीम इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

इलीशिबा के गर्भवती रहने का और मरियम की यूसुफ के साथ सगाई में रहने का अभिनय करें। **अभिनय को बंद करें।** मरियम का किरदार अदा करने वाली अभिनेत्री से पूछें, "आप कैसा महसूस करती हैं?" यह सुनें कि "प्रसन्न हूं," "जिज्ञासु हूं," "मैं घबराई हुई हूं," "विवाहित जीवन के प्रति आशान्वित हूं," अभिनय को फिर से शुरू करें।

तब स्वर्गदूत जिब्राईल मरियम को प्रकट हुए। **अभिनय को बंद करें।** मरियम का पात्र निभाने वाली अभिनेत्री से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रही हैं?" यह सुनें कि "मुझे डर लग रहा है," "मुझे समझ नहीं आता," "क्या मैं सो रही हूं?" "क्या यह वास्तविक है?" अभिनय को फिर से शुरू करें।

स्वर्गदूत उन्हें कहते हैं, "...प्रभु का अनुग्रह आप पर हुआ है, प्रभु आपके साथ हैं।" **अभिनय को बंद करें।** मरियम का किरदार निभाने वाली अभिनेत्री से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रही हैं?" यह सुनें कि "मुझ पर अनुग्रह क्यों हुआ है," "बहुत सम्मानित महसूस कर रही हूं," क्या स्वर्गदूत वास्तव में मुझ से बात कर रहे हैं?" "मुझे डर लग रह है," अभिनय को फिर से शुरू करें।

स्वर्गदूत ने जो कहा उस विषय में अचरज करते हुए मरियम उलझन में पड़ती हैं। तब स्वर्गदूत उन्हें कहते हैं कि वे भयभीत न हों और उन्हें परमेश्वर की दृष्टि में अनुग्रह प्राप्त हुआ है। वे उन्हें बताते हैं कि वे गर्भवती होंगी और यीशु नाम के एक पुत्र को जन्म देंगी। उनके लिए परमेश्वर की सभी योजनाओं को वे बताते हैं और यह भी कि उनका राज्य कभी समाप्त नहीं होगा। **अभिनय को बंद करें।** मरियम का किरदार निभाने वाली अभिनेत्री से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रही हैं?" यह सुनें कि "मैं अभिभूत हूं," "मैं उलझन में हूं," "ये सब मैं ग्रहण कर रही हूं," "मेरी तो अभी तक शादी ही नहीं हुई है।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

मरियम स्वर्गदूत से पूछती हैं, "यह कैसे हो सकता है? मैं तो एक कुंवारी हूं।" तब स्वर्गदूत ने यह स्पष्ट किया कि यह पवित्र आत्मा के माध्यम से परमेश्वर की सामर्थ्य से ऐसा होगा। साथ ही स्वर्गदूत यह भी बताते हैं कि उनका पुत्र पवित्र होगा और उन्हें परमेश्वर का पुत्र माना जाएगा। **अभिनय को बंद करें।** मरियम का किरदार निभाने वाली अभिनेत्री से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रही हैं?" ऐसा कुछ सुनें, "मैं प्रभावित हूं," "मैं विनयपूर्ण महसूस करती हूं," "मैं और भी ज़्यादा पशोपेश

में हूं," "मैं इसके लिए तैयार नहीं हूं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

स्वर्गदूत उन्हें यह बताना जारी रखते हैं कि उनकी रिश्तेदार इलीशिबा पहले से ही परमेश्वर की सामर्थ्य से गर्भवती हुई हैं, जिससे यह पता चलता है कि परमेश्वर का वचन कभी विफल नहीं होता है। **अभिनय को बंद करें।** मरियम का किरदार निभाने वाली अभिनेत्री से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रही हैं?" ऐसा कुछ सुनें कि, "मैं उत्साहित हूं," "इलीशिबा की कहानी सुनने को उत्सुक हूं," "मैं आभारी हूं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

मरियम कहती हैं, "मैं प्रभु की सेवक हूं। मेरे बारे में आपने जो कुछ कहा है वह सच हो।", तब स्वर्गदूत वहां से चले जाते हैं। **अभिनय को बंद करें।** मरियम का किरदार निभाने वाली अभिनेत्री से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रही हैं?" ऐसा सुनें, "मैं श्रद्धायुक्त आदर में हूं," "लेकिन मैं विवाहित नहीं हूं," "यूसुफ क्या कहेंगे?" "क्या मुझे शर्मिंदगी महसूस होनी चाहिए?"

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 1:26–38

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

परमेश्वर स्वर्गदूत जिब्राईल को एक अन्य संदेश के साथ भेजते हैं, केवल इस बार वह मरियम नामक युवती के लिए है। स्वर्गदूत का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने लूका के अन्य हिस्सों में इसका अनुवाद किया है। मरियम **नासरत** में रहती थीं, जो गलील के क्षेत्र के दक्षिणी मैदानों पर स्थित एक छोटा शहर था। इसके निवासियों की संख्या शायद कुछ सौ ही रही होगी। **गलील** इस्राएल के उत्तरी हिस्से में एक जिले या प्रांत का नाम था।

अगर आपने पहले से ही ऐसा नहीं किया है, तो अनुवादकों को इस्राएल के मानचित्र पर गलील क्षेत्र और नासरत नगर कहां स्थित है यह दिखाएं।

मरियम **एक कुंवारी** थीं। यह शब्द एक ऐसी युवा लड़की को संदर्भित करता है जिसने अभी तक विवाह नहीं किया था और जिसने किसी पुरुष के साथ कभी यौन संबंध नहीं रखा था। यहूदी संस्कृति में 12 वर्ष जैसी छोटी उम्र को ही विवाह करने की सामान्य आयु माना जाता होगा। उनकी दाऊद **के वंशज, यूसुफ** नामक व्यक्ति से सगाई हुई थी। लूका द्वारा युसुफ को राजा दाऊद के वंशज के रूप में उल्लेखित करना यीशु को शाही वंश से जोड़ने का एक तरीका है। **राजा दाऊद** इस्राएल के दूसरे राजा थे, जिन्होंने 40 वर्षों तक शासन किया था। उन्हें "स्वयं परमेश्वर का हृदयानुकूल व्यक्ति" माना जाता है। जब राजा दाऊद परमेश्वर के लिए मंदिर बनाना चाहते थे, तो परमेश्वर ने उन्हें बताया कि वे दाऊद के लिए एक घर बनाएंगे। "दाऊद के लिए घर" बनाने का संदर्भ उन्हें ऐसे वंशजों की एक ऐसी पंक्ति प्रदान करना है जो इस्राएल पर सदा शासन करेगी। दाऊद के प्रति परमेश्वर के वचन आने वाले उद्धारकर्ता - यीशु की ओर इशारा करते थे। चूंकि यूसुफ यीशु के कानूनी "पिता" थे, इससे यह पता चलता है कि किस तरह विस्तार के माध्यम से यीशु "दाऊद के पुत्र" थे।

जब जिब्राईल मरियम का अभिवादन करते हैं, तो वे उन्हें बताते हैं कि उन **पर परमेश्वर का अनुग्रह हुआ** है। यह शब्द विन्यास महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे ऐसा पता चलता है कि यह परमेश्वर स्वयं थे जिन्होंने मरियम को चुना था। इसमें इस बात पर बल दिया गया है कि परमेश्वर विशेष पुरुषों और महिलाओं पर अनुग्रह करते हैं और यह किसी व्यक्ति की योग्यता पर आधारित नहीं है। मरियम परमेश्वर की अनुग्रह का पात्र बनीं क्योंकि उन्होंने उन्हें प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता की मां बनने के लिए चुना था।

मरियम उनके अभिवादन से **उलझन में** पड़ीं। उनके जैसे किसी के लिए इतना सम्मानपूर्ण अभिवादन पाना असामान्य रहा होगा। यहूदियों के लिए महिलाओं को इस तरह से संबोधित किए जाने की कोई प्रथा नहीं थी। इस अभिवादन से यह पता चलता है कि उन्हें परमेश्वर की सेवा के लिए चुना जा रहा था। जिब्राईल उन्हें बताते हैं कि परमेश्वर उन्हें एक पुत्र देने जा रहे हैं और उनका नाम **यीशु** होगा। यीशु का मतलब है "यहोवा बचाते हैं" या "परमेश्वर बचाते हैं"। वे वही प्रतिज्ञा किए हुए उद्धारकर्ता थे, जिनका यहूदियों को इंतज़ार था। स्वर्गदूत मरियम से कहते हैं कि उन्हें **परम प्रधान का पुत्र** माना जाएगा। यह शब्द विन्यास "परमेश्वर के पुत्र" के वाक्यांश के सदृश है। परम प्रधान परमेश्वर के लिए एक पुराने नियम का एक नाम है क्योंकि वे सर्वोच्च हैं और स्वर्ग में हैं। इसे इस तरह अनुवाद करना आसान हो सकता है कि "परम प्रधान परमेश्वर उन्हें उनका पुत्र कहेंगे।"

जिब्राईल कहते हैं कि परमेश्वर **उन्हें उनके पिता दाऊद का सिंहासन देंगे।** यह शब्द विन्यास दर्शाता है कि चूंकि यीशु राजा दाऊद के वशंज हैं इसलिए वे शाही उद्धारकर्ता होंगे। सिंहासन के कई अर्थ होते हैं। इसका मतलब केवल यह नहीं है कि यीशु इस्राएल पर उसी तरह शासन करेंगे जिस तरह राजा दाऊद ने किया था, लेकिन इसका मतलब अधिकार भी है। पिता दाऊद का अनुवाद पूर्वज दाऊद के रूप में किया जा सकता है।

मरियम पूछती हैं कि चूंकि वे एक कुंवारी हैं, इसलिए ऐसा कैसे होगा। जिब्राईल उन्हें कहते हैं कि **पवित्र आत्मा आप पर अवतरित होगी।** इस शब्द विन्यास पर ध्यान से विचार किया जाना चाहिए ताकि उनका अर्थ आत्मिक आधिपत्य या यौन संबंध न हो। आपकी भाषा में जो भी स्थायन प्रयोग किया जाए उससे यह पता चलना चाहिए कि बच्चे का गर्भधारण परमेश्वर की उपस्थिति की सामर्थ्य के माध्यम से हुआ था न कि मानव

कार्यों के माध्यम से। पवित्र आत्मा या परमेश्वर की सामर्थ, मरियम पर ठहरेगी और वे परमेश्वर के पुत्र को धारण करेंगी। पवित्र आत्मा का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने लूका के अन्य भागों में इसका अनुवाद किया था।

जब जिब्राईल कहते हैं कि बच्चा **पवित्र** होगा, तो यह शब्द किसी ऐसी बात को संदर्भित करता है जिसे परमेश्वर के एक विशेष उद्देश्य के लिए अलग रखा गया है। जब पवित्र स्वयं परमेश्वर को संदर्भित करता है, तो यह दर्शाता है कि वे उनकी सृष्टि से न्यारे हैं, और वे नैतिक रूप से परिपूर्ण हैं। यह उनकी माहात्म्य और सामर्थ्य को को संदर्भित करता है।

यदि आपके श्रोता पवित्र शब्द की पूर्ण परिभाषा को नहीं समझ पाते हैं, तो आप अपने अनुवाद में एक संक्षिप्त विवरण शामिल करना चुन सकते हैं।

यीशु न केवल पवित्र होंगे बल्कि उन्हें **परमेश्वर का पुत्र** माना जाएगा। यह वाक्यांश परमेश्वर के साथ यीशु के विशेष संबंध को दर्शाता है। वे पुत्र हैं और परमेश्वर उनके पिता हैं। यह स्पष्ट किया जाना चाहिए कि यीशु किसी स्त्री के साथ परमेश्वर के शारीरिक मिलन का परिणाम नहीं थे।

जिब्राईल मरियम को यह अच्छी खबर बताते हैं कि उनकी रिश्तेदार इलीशिबा जिनके बच्चे नहीं हो सकते थे, अब छह महीने की गर्भवती है। वे इस बात पर बल देते हैं कि परमेश्वर के साथ कुछ भी असंभव कैसे नहीं है। मरियम विनम्रतापूर्वक उनके लिए परमेश्वर के संदेश को स्वीकार करती हैं और खुद **को प्रभु की सेवक कहती हैं।** इसका अनुवाद यह हो सकता है कि वे परमेश्वर की सेवा के लिए और तत्पर हैं। सुनिश्चित करें कि इसे बाध्यकारी सेवा के रूप में नहीं देखा जाए। उसके बाद स्वर्गदूत चले जाते हैं।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 1:26–38

Audio Content

webm zip (3361459 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (5852479 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका *1:39–56*

लूका 1:39–56

सुनना और मनन करना

लूका 1:39–56 सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे यह कथा सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 1:39–56

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

लूका यीशु के जीवन का उनका वृतांत घटनाओं के अनुक्रम में बताना निरंतर रखते हैं। यह कहानी नासरत की मरियम के साथ ठीक उसके बाद शुरू होती है जब उन्हें परमेश्वर के संदेशवाहक जिब्राईल से संदेश प्राप्त होता है। मरियम अपनी वयशुदा रिश्तेदार इलीशिबा को देखने की जल्दी में थीं क्योंकि जिब्राईल ने उन्हें बताया था कि वे अब बांझ नहीं बल्कि गर्भवती थीं। मरियम उनकी यात्रा के लिए तैयारी करती हैं और कुछ दिन बाद इलीशिबा से मिलने के लिए कूच करती हैं। नासरत से यहूदा के पहाड़ी देश की यात्रा 100–150 किलोमीटर या 70–100 मील के बीच थी। इसमें उन्हें तीन से पांच दिन लगते होंगे जो इस बात पर निर्भर करता था कि वे पैदल जा रही थीं या किसी गधे की सवारी पर।

अपनी अनुवाद टीम को एक ऐसा नक्शा दिखाएं, जो नासरत से यहूदिया के मार्ग का विवरण देता हो, ताकि को जो दूरी तय करनी थी उसका बेहतर दृश्य हो।

मरियम उस शहर - यहूदा के पहाड़ी देश में पहुंचती हैं जहां इलीशिबा और जकर्याह रहते हैं। वे घर में प्रवेश करती हैं और इलीशिबा को नमस्कार करती हैं। यहूदी संस्कृति में युवा व्यक्ति अपने से बड़ों को हमेशा पहले अभिवादन करते थे। इलीशिबा याजकों के एक परिवार से थीं। वे उम्र में और स्थिति दोनों में ही उच्च थीं। मरियम की आवाज सुनते ही, इलीशिबा की संतान उनके गर्भ में जोरों से हरकत करती है। तब इलीशिबा पवित्र आत्मा से परिपूर्ण जाती हैं उनसे उन्हें मरियम से बात करने के लिए विशेष अंतर्दृष्टि मिलती है। इसे इस तरह से व्यक्त किया जाना सुनिश्चित करें जिससे यह पता चले कि इलीशिबा को इन बातों की जानकारी स्वयं से नहीं वरन् केवल पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन से हुई होंगी।

यदि गर्भ में से कुछ बोलना ऐसा कुछ है जो आपकी संस्कृति में संवेदनशील हो, तो आप "उनके भीतर के बच्चे" के रूप में भी इसका अनुवाद कर सकते हैं।

एक ज़ोर की आवाज में वे रोमांचित होकर मरियम से कहती हैं कि वे किसी अन्य महिला से अधिक धन्य हैं और परमेश्वर ने उनके बच्चे पर विशेष अनुग्रह किया है। पवित्र आत्मा से इलीशिबा को यह उजागर होता है कि मरियम की संतान वह प्रतिज्ञा किए हुए उद्धारकर्ता हैं जिसका वे इंतजार कर रहे थे। एक बार फिर यह कुछ ऐसा नहीं है जो इलीशिबा ने स्वयं ही जाना होगा। इलीशिबा चकित और विनम्र होकर पूछती हैं कि उन्हें इतना सम्मानित क्यों किया गया है कि प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता की मां उनसे मिलने आई हैं। तब इलीशिबा मरियम से कहती हैं कि उनकी संतान मरियम की आवाज सुनने के कारण इतनी खुश हुई की उनके भीतर जोरों से उछल पड़ी। इलीशिबा मरियम से कहती हैं कि क्योंकि उन्होंने विश्वास किया इसलिए वे धन्य हैं। इलीशिबा इस बात की ज़िक्र कर रही हैं कि किस तरह मरियम ने जिब्राईल ने उनसे जो कुछ कहा उस पर विश्वास किया और उसे स्वीकार किया।

तब मरियम इलीशिबा को प्रत्युत्तर में उन पर और इस्राएल के उनके लोगों पर परमेश्वर के अनुग्रह की प्रशंसा करती हैं।

अपनी टीम से पूछें, क्या उनके पास किसी तरह के गीत या कविता जैसी कलात्मक अभिव्यक्तियां हैं। एक गीत और कविता में क्या अंतर होता है? प्रत्येक के लिए किस तरह की भाषा का इस्तेमाल किया जाता है। क्या वे वास्तविकता में हुई घटनाओं के लिए गाते या कविता पाठ करते हैं, या केवल अवास्तविक घटनाओं के लिए ही ऐसा करते हैं? क्या यह गीत एक कविता के रूप में बेहतर व्यक्त किया जा सकता है?

मरियम कहती हैं कि उनकी आत्मा उनके उद्धार करने वाले परमेश्वर से आनन्दित होती है। उनके एक निम्न स्थिति से होते हुए भी उन्हें प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता की मां बनने के लिए चुन कर उनपर अनुकंपा करने के लिए वे उनकी स्तुति करती हैं। यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि निम्न या दीन स्थिति का मतलब है कि उन्होंने यह पहचान लिया था कि वे महत्वपूर्ण नहीं हैं। वे सिर्फ एक मामूली छोटी लड़की थीं। इसका अनुवाद करना सुनिश्चित करें कि यह उनके प्रति परमेश्वर की कृपा के कारण है कि आने वाली पीढ़ियां उन्हें धन्य कहेंगी और उनके द्वारा व्यक्तिगत रूप से की गई किसी बात के कारण नहीं। मरियम कहती हैं कि परमेश्वर उन पर कृपा करते हैं जो उनका भय मानते हैं। इसका मतलब यह नहीं है

कि लोग उनसे डरते हैं। इसका मतलब है कि वे परमेश्वर का सम्मान करते हैं और उनके प्रति समर्पित होते हैं। मरियम कहती हैं कि जब लोग परमेश्वर का आदर करते हैं तो परमेश्वर हर किसी पर और उनके बच्चों के बच्चों पर भी दया करते हैं। मरियम केवल अतीत के लिए ही नहीं बल्कि उनके तब तक अजन्मी संतान, प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता के माध्यम से परमेश्वर जो कुछ करेंगे, उसके लिए भी उनकी स्तुति करती हैं।

उनके पूर्वजों के प्रति मरियम का संदर्भ महत्वपूर्ण है। परमेश्वर की प्रजा का नाम याकूब के नाम पर रखा गया था, जिन्हें इस्राएल भी कहा जाता था। अब्राहम उनके पूर्वज थे। परमेश्वर ने उनके लोगों से वादा किया था कि वे उनकी हमेशा मदद करेंगे। मरियम कह रही हैं कि उन्होंने प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता को भेजकर उन पर अनुकंपा की।

आपकी संस्कृति मरियम या परमेश्वर की मां को किस तरह देखती है? यह कहानी हमें बताती है कि मरियम को परमेश्वर से आशीष मिली थी। परमेश्वर ने उनकी अनुग्रह किया और अनुकंपा दिखाई। आप अपनी संस्कृति में इस तरह की अन्य कहानियों को कैसे कहते हैं?

नासरत में अपने घर लौटने से पहले मरियम इलीशिबा के साथ तीन महीने गुजारती हैं। क्योंकि मरियम के आने से पहले इलीशिबा पहले ही छह महीने की गर्भवती थीं इसलिए यह संभव है कि वे इलीशिबा के बच्चे के जन्म वहां रहीं।

इस अंश से यह पता चलता है कि इलीशिबा और मरियम ने यह पहचाना कि उन दोनों के चमत्कारी गर्भधारण के माध्यम से परमेश्वर उनके वचनों को पूरा कर रहे और इस्राएल की प्रार्थनाओं का जवाब दे रहे थे।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 1:39–56

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य बनाने में समूह की मदद करेंगे। आप कथा के दृश्यों, माहौल और कथा का चरित्र गढ़ने में समूह की मदद करेंगे।

इस कहानी के चार दृश्य हैं।

पहला दृश्य: मरियम शीघ्रतापूर्वक जकर्याह के घर जाती हैं और इलीशिबा को नमस्कार करती हैं।

दूसरा दृश्य: इलीशिबा का बच्चा मरियम की आवाज का स्वर सुनकर जोरों से उछलता है। पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर वे मरियम को आशीर्वाद देती हैं और जो कुछ हुआ उसे समझाती हैं।

तीसरा दृश्य: परमेश्वर ने उनके लिए जो कुछ किया उसके लिए मरियम उनकी स्तुति करती हैं उसके बाद परमेश्वर ने उनके इस्राएली लोगों के लिए जो कुछ किया उसका स्मरण मरियम करती हैं।

चौथा दृश्य: मरियम इलीशिबा के साथ घर वापस जाने से पहले तीन महीने तक रहीं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- इलीशिबा
- इलीशिबा के गर्भ में उनका बच्चा
- मरियम

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल का इस्तेमाल करे।

मरियम इलीशिबा से मिलने जाती हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि स्वर्गदूत द्वारा इलीशिबा की गर्भावस्था के बारे में उन्हें बताने के कुछ दिन बाद मरियम वहां से जाती हैं। इस यात्रा से उन्हें तीन से पांच दिन तक का समय लगा होगा।

जब मरियम इलीशिबा के घर पहुंचती हैं, तो प्रथानुसार वे इलीशिबा को पहले नमस्कार करती हैं। उसके बाद इलीशिबा के अंदर का बच्चा उनके भीतर से उछलता है।

इलीशिबा के अंदर के बच्चे की ज़ोरदार हरकत उनके अंदर उसकी सामान्य हरकतों से बहुत अलग थी।

इसके बाद इलीशिबा मरियम से कहती हैं कि वे सभी महिलाओं से अधिक धन्य हैं, और इलीशिबा उन्हें बताती हैं कि उन्हें प्रभु की माता मरियम से मिलने में सम्मानित महसूस करती हैं।

इलीशिबा जो कुछ कहती हैं, वह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने का परिणाम है। और कोई ऐसा रास्ता नहीं है जिससे वे मरियम के बच्चे के बारे में या मरियम द्वारा प्रभु के वचनों पर विश्वास करने के बारे में जान सकें।

मरियम प्रभु के लिए एक गीत गाकर इसका जवाब देती हैं, जो परमेश्वर उनके माध्यम से कर रहे थे।

मरियम के जवाब में सर्वप्रथम तो परमेश्वर उनके जीवन में जो कर रहे हैं, उसकी मान्यता है। मरियम यह स्पष्ट करती हैं कि समाज में उनकी स्थिति बहुत निम्न है, लेकिन साथ ही परमेश्वर ने उनके प्रति कैसी अनुग्रह की दृष्टि दिखाई है। उसके बाद वे यह पहचानती हैं कि कैसे परमेश्वर उनके अनुग्रह से उनके लोगों के प्रति ऐतिहासिक रूप से काम कर रहे हैं।

उसके बाद मरियम अपने घर वापस लौटती हैं।

यह दिखाना महत्वपूर्ण है कि वे यूसुफ के घर नहीं जा रही हैं, क्योंकि उनकी अभी सगाई ही हुई है और वे अभी भी विवाहित नहीं हैं।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 1:39–56

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी के चार दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- इलीशिबा
- इलीशिबा के गर्भ में उनका बच्चा
- मरियम

मण्डली से कहानी को दो बार अभिनीत करवाएं। पहले मण्डली से बिना रुके कहानी का अभिनय कराएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है और उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

यह सुनिश्चित करें कि मण्डली इलीशिबा के छः मास की गर्भवती होने का अभिनय करे। मरियम इलीशिबा के घर पहुंचने में तीन से पांच दिन तक की लंबी दूरी तय करती हैं।

जब मरियम पहुंचकर इलीशिबा का अभिवादन करती हैं, तो उनका बच्चा उनके पेट में असामान्य रूप से ज़ोरदार हरकत करता है। इलीशिबा जब मरियम से बात करती हैं, तो यह पवित्र आत्मा की प्रेरणा से होता है।

दूसरी बार जब टीम इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

मरियम उनके घर से निकलती हैं और इलीशिबा के घर पहुंचने के लिए कई दिन तक चलती हैं। **अभिनय को बंद करें।** मरियम का किरदार अदा करने वाली अभिनेत्री से पूछें, "आप कैसा महसूस करती हैं?" ऐसा कुछ सुनें, "मैं कुतूहल में हूं," "मैं उम्मीद कर रही हूं," "मैं रिश्ते की अपनी बहन से मिलने को उत्सुक हूं," "मैं उत्साहित हूं," "जो कुछ स्वर्गदूत ने कहा था उसे मैं याद कर रही हूं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

मरियम आती हैं और वे रिश्ते में उनकी बहन इलीशिबा को नमस्कार करती हैं। मरियम के अभिवादन पर इलीशिबा अपने अंदर बच्चे की हरकत महसूस करती हैं। यह एक ऐसी हरकत थी जिसकी अपेक्षा उन्होंने नहीं की थी। **अभिनय को बंद करें।** इलीशिबा का किरदार अदा करने वाली अभिनेत्री से पूछें, "आप कैसा महसूस करती हैं?" ऐसा कुछ सुनें "मैं उत्साहित हूं," "मैंने इससे पहले ऐसा कभी महसूस नहीं किया," "मुझे लगता है कि परमेश्वर मुझे कुछ कहने के लिए प्रभावित कर रहे हैं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

इलीशिबा सवाल करती हैं, "मैं इतनी सम्मानित क्यों हूं कि मेरे प्रभु की माता मेरे पास आईं?" इलीशिबा मरियम से कहती हैं कि वे सभी महिलाओं में धन्य हैं और प्रभु ने उन्हें जो कुछ कहा उसका पालन उन्होंने किया। **अभिनय को बंद करें।** इलीशिबा का किरदार अदा करने वाली अभिनेत्री से पूछें, "आप कैसा महसूस करती हैं?" ऐसा कुछ सुनें "मुझे यकीन है," "मैं आश्वस्त महसूस करती हूं," सुरक्षित महसूस करती हूं," "मुझे लगता है कि यह सपना नहीं था।" मरियम का किरदार अदा करने वाली अभिनेत्री से पूछें, "आप कैसा महसूस करती हैं?" ऐसा कुछ सुनें "विनम्र," "श्रद्धापूर्ण विस्मय में," "परमेश्वर ने जो करने के लिए मेरा आह्वान किया है उसे मैं करना चाहती हूं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

मरियम स्तुति के एक गीत के साथ इसका जवाब देती हैं। **अभिनय को बंद करें।** इलीशिबा का किरदार अदा करने वाली अभिनेत्री से पूछें, "आप कैसा महसूस करती हैं?" ऐसा कुछ सुनें "मैं उत्साहित हूं कि अंततः यह हो रहा है," "मैं सौभाग्यशाली महसूस करती हूं," "जो होने वाला है उसे जानकर मुझे सम्मानित अनुभव होता है।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

मरियम तीन महीने बाद घर वापस जाती हैं। **अभिनय को बंद करें।** मरियम का पात्र अदा करने वाली अभिनेत्री से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रही हैं?" ऐसा कुछ सुनें "मैं यूसुफ के बारे में चिंतित हूं," "इलीशिबा के माध्यम से पुष्टि पाकर मैं खुश हूं," "मैं यीशु के भविष्य के बारे में उत्सुक हूं।"

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 1:39–56

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

जिब्राईल द्वारा मरियम को संदेश देने के तुरंत बाद मरियम नासरत से निकलकर **यहूदिया के पहाड़ी प्रदेश** में उनकी रिश्तेदार इलीशिबा से मिलने के लिए जाती हैं। यहूदिया या यहूदा का क्षेत्र उन क्षेत्रों में से एक था जहां यहूदी रहते थे। जैसा कि हमने पहले जाना था, इस पर राजा हेरोदेस का शासन था, जिसे रोमियों ने वहां का प्रभारी बनाया था। खास तौर पर, इलीशिबा इस क्षेत्र के पर्वतीय हिस्से में रहती थीं। नासरत से यहूदिया की यात्रा में मरियम को तीन से पांच दिन का समय लगा होगा।

यह क्षेत्र नक्शे पर जहां है, वह अनुवादकों को दिखाएं।

जब मरियम जकर्याह के घर पहुंचती हैं, तो वे प्रवेश करती और इलीशिबा का अभिवादन करती हैं। उनकी आवाज के स्वर से, इलीशिबा के अंदर का बच्चा एक ज़ोरदार हरकत करता है और इलीशिबा **पवित्र आत्मा** से परिपूर्ण हो जाती है।

पवित्र आत्मा शब्द का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने लूका में पहले के चरणों में किया है।

इलीशिबा सवाल करती हैं, **मेरा इतना सम्मान किसलिए कि मेरे प्रभु की माता मेरे पास आईं?** इलीशिबा मरियम से इस सवाल का जवाब देने की उम्मीद नहीं करतीं। यह इलीशिबा का ऐसा कहने का तरीका है कि वे मरियम के आने पर सम्मानित और धन्य महसूस करती हैं।

इलीशिबा मरियम को अन्य सभी स्त्रियों में सबसे अधिक धन्य और **मेरे प्रभु की माता** कहती हैं। इस मामले में प्रभु मरियम के बच्चे यीशु को संदर्भित करता है, जो एक अधिकार सम्पन्न महान विशारद हैं। इलीशिबा जानती हैं कि ये "प्रभु" प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता, मसीहा, होंगे। यह दर्शाता है कि इलीशिबा की मान्यता थी कि मरियम प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता को धारण करेंगी। यह कुछ ऐसा नहीं था जो उन्हें स्वयं से ही पता था, वरन् यह विशेष ज्ञान था जो पवित्र आत्मा ने उन्हें दिया था। उन्होंने यह पहचाना कि मरियम का बच्चा उनका उद्धारकर्ता था।

इलीशिबा से इस बात की पुष्टि पाकर कि वे उद्धारकर्ता को धारण कर रही हैं, मरियम स्तुति का एक गीत गाना या एक कविता का पाठ करने लगती हैं। वे कहती हैं कि उनकी **आत्मा** परमेश्वर की महिमा करती है और उनकी **आत्मा** आनन्दित होती है। आत्मा के लिए इस्तेमाल किया गया यूनानी शब्द व्यक्ति के उस भाग को संदर्भित करता है जो विचार करता और भावावेशों का अनुभव करता है। जब मरियम कहती हैं "मेरी आत्मा" तो वे उनके आध्यात्मिक अस्तित्व का जिक्र कर रही होती हैं। दोनों शब्द का अर्थ खुद मरियम से ही है। कुछ भाषाओं में यह वाक्यांश का सीधे अनुवाद करना आसान हो सकता है। "मैं परमेश्वर में आनन्दित हूं।"

मरियम परमेश्वर **को मेरा उद्धारकर्ता** कहती हैं, जिसका मतलब है "जो मुझे बचाता है"। मरियम ने परमेश्वर को खुद को छुड़ाने वाले के रूप में देखा। वे उन्हें सर्वशक्तिमान कहती **हैं,** जो परमेश्वर के लिए एक और उपाधि है, जो यह दर्शाती हैं कि वे अधिक सामर्थ्यशाली हैं और उनमें किसी अन्य से अधिक सामर्थ्य है। वे परमेश्वर को पवित्र कहती हैं और कहती हैं कि वे हर पीढ़ी पर **कृपा** करते हैं। कृपा करना पीड़ितों या जरूरतमंदों के प्रति करुणा दिखाना है।

अपने अनुवादकों से कृपा के लिए सबसे अच्छे शब्द पर चर्चा करें। यदि कोई प्रत्यक्ष अनुवाद न हो तो आप पूछ सकते हैं कि क्या इस संकल्पना को प्रदर्शित करने वाली कोई सांस्कृतिक कहानी है।

जब मरियम कहती हैं कि परमेश्वर **उनसे डरने** वालों पर कृपा करते हैं, तो उनका मतलब है कि जो परमेश्वर का सम्मान या आदर करते हैं। परमेश्वर का भय मानने वाले लोग यह जानते हैं कि वे महान हैं और उनके प्रति समर्पण और श्रद्धायुक्तता में जीवन जीते हैं। मरियम इस बारे में बात करती हैं कि किस तरह परमेश्वर ने **अपनी सामर्थ्यशाली भुजा** से बड़े-बड़े काम किए हैं। यह वाक्यांश उनकी शारीरिक भुजा के बारे में नहीं बल्कि परमेश्वर के सामर्थ्य का ज़िक्र कर रहा है। वे कहती हैं कि परमेश्वर ने अपने सामर्थ्य के माध्यम से कई अति महान कार्य किए हैं।

मरियम इस बात को पहचानती हैं कि परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा रखी है और वे इस्राएल के प्रति कृपापूर्ण रहे हैं। जब वे यह कहती हैं **कि हमारे पूर्वज या हमारे पिता,** तो वे सम्पूर्ण यहूदी लोगों या इस्राएलियों का जिक्र कर रही होती हैं। वे सभी अब्राहम के वंशज थे और उनके प्रति परमेश्वर की प्रतिज्ञा ने उन्हें उनके चुने हुए लोग बनाया। मरियम घर लौटने से पहले तीन माह तक इलीशिबा के साथ रहती हैं।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 1:39–56

Audio Content

webm zip (3085108 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (5359629 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 1:57–80

सुनना और मनन करना

लूका 1:57–80 सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे यह कथा सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

स्टेज सेट करना

लूका 1:57–80

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

लूका इलीशिबा की गर्भावस्था की अपनी कहानी जारी रखते हैं। जब मरियम इलीशिबा के घर से वापिस लौटती हैं, तक वे लगभग नौ महीने की गर्भवती रही होंगी। लूका हमें यह कहकर अपनी कहानी शुरू करते हैं कि इलीशिबा ने एक पुत्र को जन्म दिया।

बच्चे के जन्म के बारे में सुनकर हर कोई आश्चर्य करता है क्योंकि वे जानते थे कि इलीशिबा संतान उत्पत्ति में असमर्थ थीं। उनके करीबी जन और उनके रिश्तेदार सभी इस बात का जश्न मनाते हैं कि परमेश्वर ने उन्हें वृद्धावस्था में एक पुत्र दिया। इससे हर किसी को उनके प्रति परमेश्वर की कृपा दिखी होगी।

यहूदी संस्कृति में जन्म के एक सप्ताह बाद लड़कों का खतना किया जाता था। इसका मतलब है कि बच्चे के शिश्न के सिरे की त्वचा को काट दिया जाता था। परमेश्वर ने अपने चुने हुए लोगों से वादा किया था कि वे हमेशा उनके साथ रहेंगे। शिशु के शिश्न के सिरे पर खतना या त्वचा को काट देना एक ऐसा प्रतीक था कि बालक प्रतिज्ञा का हिस्सा था। खतना पिता द्वारा या इसमें दक्ष व्यक्ति द्वारा किया जाता था।

क्या आपकी संस्कृति में खतना या अन्य कोई धार्मिक संस्कार होता है? आपके संस्कार किस बात का प्रतीक होते हैं? यह बाइबल के खतना संस्कार से किस तरह समान होता है? आप अपने अनुवाद में खतने के बारे में कैसे बात करेंगे?

चूंकि यह संभवतः जकर्याह के घर में हुआ होगा, इसलिए उनके परिवार और पड़ोसी उनके बच्चे के जीवन में इस विशेष अवसर का जश्न मनाने के लिए आए होंगे। वे इसे स्वयं करने के लिए नहीं लेकिन वे वहां खतना समारोह में उपस्थित रहने और इसे देखने के लिए आए होंगे।

यहूदियों के लिए उनके पुत्रों को उनके पिता या दादा के समान ही नाम देना आम बात थी। जब लोग बालक का नाम जकर्याह, उनके पिता जकर्याह के नाम पर रखना चाहते थे, तो इलीशिबा ने उन्हें दृढ़ता से मना किया। उन्होंने कहा कि उनका नाम यूहन्ना होगा। यह कुछ ऐसा था जो पहले से ही तय कर लिया गया था क्योंकि परमेश्वर के स्वर्गदूत ने उन्हें यह बताया था कि बच्चे का नाम क्या होगा। यह लोगों के लिए आश्चर्य की बात थी क्योंकि उन्हें लगा था कि उनका नाम उनके परिवार में किसी के नाम पर रखा जाएगा। यह सुनिश्चित करने के लिए कि वे अपने बेटे का नाम क्या रखना चाहते थे, उन्होंने जकर्याह से संकेतों में बात की, लेकिन वे अभी भी कुछ बोल नहीं सके। जब उन्होंने एक स्लेट पर लिखा कि उनके बेटे का नाम यूहन्ना होगा और लोग अचरज में पड़ गए।

जिस क्षण जकर्याह ने उन शब्दों को लिखना समाप्त किया उसी क्षण वे बोलने में समर्थ हो गए। पहली बात जो उन्होंने करी वह थी परमेश्वर की स्तुति करना। उनके पास रहने वाले सभी लोग यूहन्ना के जन्म के बारे में सुनकर चकित और भयभीत थे। उनके जन्म के समय उनके आसपास घटी विशेष बातों के कारण यूहन्ना की खबर पूरे यहूदिया में तेजी से फैल गई। इन विशेष बातों में परमेश्वर के स्वर्गदूत का मंदिर में जकर्याह के समक्ष प्रकट होना और उन्हें बोल सकने में असमर्थ करना, बांझ होने के बावजूद इलीशिबा का उनकी वृद्धावस्था में गर्भवती होना, और जकर्याह का उनके पुत्र का नाम यूहन्ना रखने पर फिर से बोल पाने में सक्षम होना, सम्मिलित है। इन घटनाओं के कारण हर कोई जानता था कि परमेश्वर का यूहन्ना के लिए एक विशेष उद्देश्य था और उन्होंने आश्चर्य किया कि यह क्या हो सकता है। जब यह कहा जाता है कि "प्रभु का हाथ उनके साथ था" इसका मतलब है कि परमेश्वर उनके साथ थे और एक विशेष तरीके से उनका मार्गदर्शन करते थे।

तब जकर्याह अचानक पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते हैं और परमेश्वर का एक विशेष संदेश पवित्र आत्मा द्वारा उनके माध्यम से व्यक्त होता है। जिस तरह यह लिखा जाता है, यह संदेश जिसे भविष्यद्वाणी भी कहा जाता है, का अनुवाद एक गीत के रूप में भी किया जा सकता है।

यहां रुकें और एक दल के रूप में चर्चा करें: आपकी संस्कृति धार्मिक या भविष्यद्कथन सूचना का संचार कैसे करती है? जकर्याह का संदेश एक गीत हो सकता है। आपकी संस्कृति इन बातों के बारे में जिस तरह से बात करेगी, उससे यह किस तरह अलग या समान है?

जकर्याह उनके वचन का पालन करने और उनके चुने हुए लोगों को बचाने के लिए उद्धारकर्ता को भेजने के लिए परमेश्वर की प्रशंसा करते हैं। जकर्याह जिस तरह उनका गुणगान करते हैं, वह भूतकाल की भाषा में होता है, इसलिए यह ऐसा प्रतीत होता है जैसे परमेश्वर ने पहले ही उनके चुने हुए लोगों को बचा लिया है। लेकिन जकर्याह वास्तव में परमेश्वर के जो करने जा रहे हैं उसके बारे में बात कर रहे हैं। जिन घटनाओं के बारे में बात की जा रही हैं वे निश्चित रूप से घटित होंगी, ऐसा दर्शाने के लिए यहूदी भविष्यद्वक्ता अक्सर इस तरह से बोलते थे। परमेश्वर के स्वर्गदूत से वे यह जानते थे कि उनका पुत्र यूहन्ना प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता का मार्ग तैयार करेगा।

जकर्याह उद्धारकर्ता को "उद्धार के सींग" के उपमा के साथ वर्णित करते हैं। सींग एक शक्तिशाली हथियार होता था जो पशु शत्रुओं पर आक्रमण करने और उनका बचाव करने के लिए इस्तेमाल करते थे। ऐसा कहने के पीछे जकर्याह का मतलब था कि उद्धारकर्ता एक सामर्थ्यशाली व्यक्ति होगा जो उनके चुने हुए लोगों के लिए उद्धार का काम करेगा। जब वे उद्धार कहते हैं, तो उनका मतलब शत्रुओं जैसे भौतिक खतरों से तो होता ही है, लेकिन पाप और उसके दंड जैसे आध्यात्मिक खतरों से भी होता है। उद्धारकर्ता दोनों से ही उद्धार लेकर आएंगे। जकर्याह एक बार फिर ज़ोर देते हैं कि उद्धारकर्ता राजा दाऊद के वंशज होंगे। भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से जो प्रतिज्ञा परमेश्वर ने लंबे समय पहले की थी, उन्हें पूरा करने के लिए वे परमेश्वर की प्रशंसा करते हैं। परमेश्वर उद्धारकर्ता को भेजने और उनके लिए मार्ग तैयार करने के लिए उद्धारकर्ता के पहले किसी अन्य को भेजने की दोनों प्रतिज्ञाएं पूरी कर रहे हैं। चूंकि यूहन्ना का जन्म सिर्फ तभी हुआ था उसका मतलब था कि उद्धारकर्ता का जन्म भी जल्द ही होने वाला होगा।

जकर्याह अपनी भविष्यवाणी में पुराने नियम की कई घटनाओं का उल्लेख करते हैं, लेकिन उनके घटित होने के क्रम से ऐसा नहीं करते। जो पहले ही हो चुका था उसका एक वर्णन यहां है।

परमेश्वर अब्राहम का चयन करते हैं और उन्हें कहते हैं कि उनके कई वंशज होंगे। परमेश्वर ने जो भूमि अब्राहम को दिखाई थी, उसे उनके वंशज को देने की प्रतिज्ञा करते हैं। वे अब्राहम से कहते हैं कि वे उनके वंशजों को उनके शत्रुओं से छुड़ाएंगे। यह एक वाचा थी जो उन्होंने अब्राहम के साथ बांधी थी। वाचा का मतलब है कि दो लोगों के बीच एक समझौता जो शांति या मित्रता को स्थापित करता है। अब्राहम के वंशज यहूदियों को बाद में अन्य देशों द्वारा विजयी कर लिया गया था। परमेश्वर उनके भविष्यद्वक्ताओं या दूतों के माध्यम से यहूदियों से बात करते थे। उन्होंने उन्हें कहा कि वे अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करेंगे और उद्धारकर्ता के माध्यम से उन्हें उनके शत्रुओं से छुड़ाएंगे। भविष्यद्वक्ताओं ने यह भी कहा कि उद्धारकर्ता यहूदी राजा दाऊद के वंशज होंगे। इसलिए यहूदी उद्धारकर्ता की प्रतीक्षा कर रहे थे। चूंकि परमेश्वर ने उद्धारकर्ता के लिए मार्ग तैयार करने के लिए यूहन्ना को भेजा था इसका मतलब यह था कि उद्धारकर्ता जल्द ही जन्म लेंगे। यह यहूदियों की प्रार्थनाओं का एक जवाब था और अब्राहम के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञा की पूर्ति थी। इसलिए जकर्याह परमेश्वर की स्तुति करते हैं।

रुकें और अपनी टीम के साथ जकर्याह की भविष्यवाणी के क्रम पर चर्चा करें। कथा को और अधिक स्पष्ट करने के लिए आप भविष्यवाणी के क्रम को किस तरह बदल सकते हैं?

अब्राहम से उनके वंशजों को उनके शत्रुओं से छुड़ाने के लिए की गई प्रतिज्ञ पूरी करने के लिए ताकि वे उत्पीड़न के डर के बिना उनकी उपासना कर सकें, जकर्याह परमेश्वर की प्रशंसा करते हैं। परमेश्वर के लोग पवित्रता और धार्मिकता में उनकी उपासना करने में सक्षम होंगे। पवित्रता का मतलब परमेश्वर को पसंद आने वाली बातों को करने और नापसंद आने वाली बातों से बच कर उनके प्रति निष्ठावान होने से है। धार्मिकता का मतलब इस तरह से व्यवहार करना है जो परमेश्वर के नियमों के अनुसार होता है और उनके साथ सही संबंध रखता है।

उसके बाद जकर्याह अपना ध्यान बदल देते हैं और अपने नवजात पुत्र यूहन्ना से बात करने लगते हैं। जकर्याह उन्हें कहते हैं कि वे परमेश्वर के एक भविष्यद्वक्ता होंगे और उद्धारकर्ता के लिए मार्ग तैयार करेंगे। परमेश्वर के स्वर्गदूत ने उन्हें जो कुछ बताया था उसे जकर्याह दोहराते हैं और कहते हैं कि यूहन्ना एक संदेशवाहक होंगे जो परमेश्वर के लोगों के लिए प्रचार करेंगे। उद्धारकर्ता के माध्यम से न्याय और दण्ड से उन्हें बचाने के लिए परमेश्वर के आने के बारे में कहकर यूहन्ना लोगों को तैयार करेंगे।

जकर्याह उद्धारकर्ता की तुलना उदित होते सूर्य से करते हैं। ठीक जिस तरह सूर्य एक अंधेरी दुनिया में प्रकाश लाता है, उसी तरह उद्धारकर्ता आध्यात्मिक अंधकार में रह रहे लोगों की मदद करेंगे। "शांति का पथ" उद्धार कहने का एक और तरीका था और "मृत्यु की छाया" का मतलब है जो मरने के डर में रहकर जीवन जीते हैं। जकर्याह कहते हैं कि उद्धारकर्ता मृत्यु से परेशान या भयभीत लोगों के लिए उद्धार लाएंगे। जकर्याह के संदेश को समाप्त करने के बाद लूका यूहन्ना के बचपन का सारांश देते हैं। बालक यूहन्ना के जीवन का यह विवरण जकर्याह के संदेश का हिस्सा नहीं था।

तो यूहन्ना बलवंतता और आत्मविश्वास में बढ़े होते हैं। वे जंगल में ऐसी जगह रहते हैं जहां बहुत कम लोग होते हैं। उद्धारकर्ता के बारे में परमेश्वर के चुने हुए लोगों के लिए सार्वजनिक रूप से प्रचार प्रारंभ करने तक वे वहां रहते हैं।

यहूदिया का जंगल किस तरह लगा होगा, उसकी एक तस्वीर दिखाएं।

यह अंश हमें दिखाता है कि इलीशिबा को वृद्धावस्था में एक पुत्र देकर और अपने पुत्र का नाम यूहन्ना रखने पर जकर्याह की बोलने की क्षमता पुनर्बहाल कर परमेश्वर ने किस तरह अपनी प्रतिज्ञा को पूरा किया और अपना सामर्थ्य दिखाया था। परमेश्वर इस चमत्कारी जन्म के माध्यम से किस तरह सामर्थ्यशाली तरीके से काम कर रहे थे, यह समाचार यहूदा के लोगों में तेजी से फैल गया।

लूका *1:57–80*

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 1:57–80

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य बनाने में समूह की मदद करेंगे। आप कहानी के दृश्यों, विन्यास और पात्रों को परिभाषित करने में समूह की मदद करेंगे।

इस कहानी में छह दृश्य हैं।

पहला दृश्य: लोग उनके पुत्र जन्म के लिए इलीशिबा के साथ आनन्दित होते हैं।

दूसरा दृश्य: बच्चे का नाम यूहन्ना रखा जाता है, उसके बाद जकर्याह बोल पाते हैं और परमेश्वर की स्तुति करते हैं।

तीसरा दृश्य: जिस तरह से घटनाएं घटी थीं, उसके कारण लोगों ने यह पहचान लिया कि प्रभु का हाथ बच्चे पर है। वे बच्चे के बारे में उत्सुकता जताते हैं।

चौथा दृश्य: जकर्याह परमेश्वर की स्तुति करते हैं और घोषणा करते हैं कि उनके प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता को भेजकर परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की है। जकर्याह उनके छोटे बेटे के भविष्य के बारे में बोलते रहते हैं।

पांचवां दृश्य: यूहन्ना बड़े होते हैं और उनका सार्वजनिक सेवाकार्य शुरू करते हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- इलीशिबा
- यूहन्ना
- रिश्तेदार
- पड़ोसी
- जकर्याह
- अब्राहम
- परमेश्वर
- पवित्र आत्मा
- यहूदिया पहाड़ी के लोग

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल का इस्तेमाल करे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि जब ऐसा हुआ तब इलीशिबा वृद्धावस्था में थीं। उनके गर्भधारण को हर कोई प्रभु की अनुकंपा के कृत्य के रूप में देखता है।

किसी बालक को यहूदी समुदाय में पेश करने के लिए खतना एक संस्कार समारोह होता था। यहूदियों के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण होता था।

यह जानना महत्वपूर्ण है कि उन दिनों किसी पुत्र को दिया जाने वाला नाम आमतौर पर पिता या रिश्तेदार के नाम पर होता था। इसलिए, उन्हें यूहन्ना का नाम देने का प्रस्ताव वहां मौजूद हर किसी के लिए बहुत चौंकाने वाला हुआ होगा।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि उनके एक पुत्र होगा, इस बारे में स्वर्गदूत की घोषणा पर सवाल उठाने के बाद जकर्याह बोल नहीं पा रहे थे। यही कारण है कि उन्होंने एक लिखने के लिए एक स्लेट मांगी थी।

इसके अलावा, लोग संकेतों का इस्तेमाल करते हुए जकर्याह से संवाद करते हैं, जिसका मतलब है कि उनकी पत्नी इलीशिबा द्वारा उनके पुत्र का नाम यूहन्ना रखे जाने को वे सुन नहीं पा रहे थे। घटनाओं का गौर से देखने वाले लोग अचम्भित हुए क्योंकि उन्होंने इलीशिबा ने जो कहा उसे सुने बिना वही नाम लिखा जो इलीशिबा ने कहा था।

जकर्याह को उनकी वाणी पुन: प्राप्त हुई और उन्होंने परमेश्वर की स्तुति की। यहूदिया के पहाड़ी देश में जो कुछ हुआ था उसके बारे में हर किसी ने सुना था।

लोगों ने सुना कि जकर्याह ने अपनी बोलने की क्षमता खो दी थी और उन्हें एक दिव्य दर्शन हुआ था। उसके बाद उन्होंने सुना कि बच्चे का नाम रखने पर उनकी वाणी पुन: प्राप्त हुई।

जिस तरह सभी आश्चर्यजनक बातें हुई थीं, उनके कारण जैसे जैसे समाचार फैला, लोग अचम्भे में पड़ गए। यह जकर्याह की भविष्यवाणी के पहले, उसके दौरान और उसके बाद हुआ था। लोग यूहन्ना के भावी जीवन के बारे में उत्सुक थे, क्योंकि उन्होंने बच्चे पर प्रभु का हाथ देखा था। उन्हें एहसास हुआ कि बच्चा विशेष है।

ध्यान दें कि यह अभव्यक्ति "प्रभु का हाथ" एक शाब्दिक या शारीरिक हाथ को संदर्भित नहीं करता है, वरन् इस बात को करता है कि प्रभु सभी घटनाओं में सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं।

जब लोग एक दूसरे से यूहन्ना के भविष्य के बारे में पूछ रहे होते हैं, तब जकर्याह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाते हैं और भविष्यद्वाणी करते हैं।

यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि जकर्याह की भविष्यवाणी का उत्तरार्ध यूहन्ना के भविष्य के प्रश्न का जवाब देता है। साथ ही यह दिखाना भी महत्वपूर्ण है पवित्र आत्मा की मदद से ही वे यह भविष्यवाणी कर रहे हैं।

जकर्याह अपनी भविष्यद्वाणी की शुरुआत परमेश्वर की स्तुति करके और इतिहास में जो प्रतिज्ञाएं परमेश्वर ने की हैं, उनके स्मरण से करते हैं।

संभव है कि पुराने नियम के घटनाक्रम से मिलान करने के लिए लिए टीम जकर्याह की भविष्यवाणी के पूर्वार्द्ध को पुनर्व्यवस्थित करना चाहे। घटनाओं के कालक्रम के अनुसार भविष्यद्वाणी का यह एक उदाहरण है:

"इस्राएल के परमेश्वर, प्रभु की स्तुति हो,

वे हमारे पूर्वजों पर कृपालु रहे हैं

उनकी पवित्र वाचा को स्मरण रखकर-

जिस वाचा की उन्होंने शपथ लेकर प्रतिज्ञा की थी

हमारे पूर्वज अब्राहम को

उन्होंने हमें एक पराक्रमी उद्धारकर्ता भेजा है

उनके सेवक दाऊद के शाही वंश से,

ठीक वैसे ही जैसा उन्होंने वचन दिया था

उनके पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से बहुत पहले।

अब हम अपने शत्रुओं से बचा लिए जाएंगे

और उन सभी से जो हमसे घृणा करते हैं।

क्योंकि वे आएं हैं और उनके लोगों को छुड़ा चुके हैं।

हम अपने शत्रुओं से छुड़ा लिए गए हैं

ताकि हम बिना भय के परमेश्वर की सेवा कर सकें,

पवित्रता और धार्मिकता में

जब तक हम जीवित रहें, तब तक।

जकर्याह द्वारा अब्राहम, दाऊद और भविष्यद्ववक्ताओं का उल्लेख करने के बाद वे भविष्यद्वाणी के अंतिम हिस्से में उनके पुत्र के भविष्य के बारे में सवालों के जवाब देते हैं।

वे कहते हैं कि उनका पुत्र परमप्रधान का एक भविष्यद्वक्ता होगा, और वे उनके मार्ग तैयार करेंगे। इस तरह से जकर्याह यह स्पष्ट करते हैं कि यीशु यूहन्ना से उच्चतर हैं।

यूहन्ना बढ़ते हैं और आत्मा में बलवन्त होते हैं।

इससे पता चलता है कि जिस आत्मा ने यूहन्ना को परिपूर्ण किया, वही वह है जो उनके जीवन को आकार देती और उन्हें उनके सेवाकार्य के लिए तैयार करती है।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 1:57–80

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी में पांच दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- इलीशिबा
- यूहन्ना
- रिश्तेदार
- पड़ोसी
- जकर्याह
- परमेश्वर
- पवित्र आत्मा
- यहूदिया पहाड़ी के लोग

मण्डली से कहानी को दो बार अभिनीत करवाएं। पहले मण्डली से बिना रुके कहानी का अभिनय कराएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है और उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

सुनिश्चित करें कि दल जकर्याह के न बोल पाने और ना ही सुन पाने की स्थिति का अभिनय करे। उनके साथ संवाद संकेतों या लेखन के माध्यम से होता रहा है। इसलिए जब रिश्तेदार और पड़ोसी उनके पुत्र का नाम यूहन्ना रखने के लिए इलीशिबा के निर्णय पर सवाल उठाते हैं, तो जकर्याह न तो सुन सकते हैं और न ही समझ सकते हैं कि क्या हो रहा है। तब लोगों ने उनसे पूछा कि वे बच्चे को क्या नाम देना चाहते हैं। उन्हें नहीं पता था कि इलीशिबा ने पहले ही यूहन्ना कहा था। जब वे लिखते हैं कि "उसका नाम यूहन्ना होगा" लोग विस्मयाभिभूत हो जाते हैं।

जब लोग यह सुनते हैं कि जकर्याह को उनकी वाणी कैसे वापिस मिली थी, तो सभी पड़ोसियों पर भय छाता है। ऐसा नहीं है कि वे जकर्याह से डरते हैं, लेकिन यह उनके द्वारा देखे गए चमत्कार के प्रति एक प्रतिक्रिया है।

जब यहूदिया के पहाड़ी देश के लोग यह सुनते हैं कि क्या हुआ था, तो उन्हें यह स्पष्ट होता है कि कुछ असाधारण हो रहा है। वे आश्चर्य करते हैं कि इस्राएल के लिए परमेश्वर की योजना में यूहन्ना की भूमिका क्या होगी। वे स्पष्ट रूप से यह देख सकते हैं कि परमेश्वर यूहन्ना के जीवन में सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हैं।

जब जकर्याह भविष्यद्वाणी कर रहे होते हैं, तो जो पहला अंश वे याद करते हैं, वह यह है कि प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता के बारे में सभी यहूदियों ने क्या सुना है। सुनिश्चित करें कि जब जकर्याह उन्हें उनकी भविष्यद्वाणी कह रहे होते हैं तो दल परमेश्वर द्वारा उनके लोगों को प्रतिज्ञा देने का अभिनय करे। उनके संदेश के दूसरे हिस्से में जकर्याह उनके पुत्र के भविष्य और उनकी भूमिका के बारे में बोलते हैं।

लूका *1:57–80*

यह सुनिश्चित करें कि जब वे बड़े होते हैं तब यूहन्ना के परमेश्वर के साथ के निकट संबंध का टीम अभिनय करे। यह दिखाएं कि जब वे जंगल में होते हैं तब आत्मा उनके चरित्र और उनके सेवाकार्य को किस तरह आकार देती है।

दूसरी बार जब टीम इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

उनके पुत्र के जन्म पर इलीशिबा के साथ आनन्दित पड़ोसियों और रिश्तेदार का अभिनय करें। **अभिनय को बंद करें।** इलीशिबा का किरदार अदा करने वाली अभिनेत्री से पूछें, "आप कैसा महसूस करती हैं?" यह सुनें कि "मैं धन्य हूं "मैं प्रसन्न हूं," "मैं आनंद से परिपूर्ण हूं," अभिनय को फिर से शुरू करें।

खतना के दिन लोग बच्चे का नाम उनके पिता के नाम पर रखने वाले थे, लेकिन उनकी मां ने कहा, "नहीं, उनका नाम यूहन्ना होना चाहिए।" वे पशोपेश में पड़ जाते हैं क्योंकि उनके परिवार में किसी का नाम यूहन्ना नहीं था, लेकिन अंत में वे जकर्याह से यह पूछने का फैसला करते हैं कि उनका नाम क्या होगा।

अभिनय को बंद करें। इलीशिबा की भूमिका निभाने वाली अभिनेत्री से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रही हैं?" ऐसा सुनें, "मुझे लगता है कि लोग मुझ पर विश्वास नहीं करते हैं," "मैं नाराज हूं," "मैं उलझन में हूं," अभिनय को फिर से शुरू करें।

जकर्याह को नहीं पता है कि क्या हो रहा है और लोग उन्हें उनके पुत्र का नाम देने के लिए कहते हैं। वे लिखते हैं कि उनका नाम यूहन्ना होगा। जकर्याह तुरंत बोलने में समर्थ होते हैं और परमेश्वर की स्तुति करते हैं।

अभिनय को बंद करें। जकर्याह का पात्र अदा करने वाले अदाकार से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" ऐसा सुनें, "जो स्वर्गदूत ने कहा था उसे मैं अंततः देख रहा हूं", "मैं इसलिए राहत महसूस कर रहा हूं क्योंकि मैं बोल सकता हूं," "एक पुत्र होने पर मैं प्रसन्न हूं," "जो कुछ भी होगा उसमें मैं रुचि रखता हूं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

पड़ोसियों और यहूदिया के पहाड़ी देश में हर किसी पर भय छाता है। वे यूहन्ना की कहानी सुनते हैं और बच्चे के भविष्य के बारे में उत्सुकता रखते हैं।

अभिनय को बंद करें। पड़ोसियों का पात्र निभाने वाले अदाकारों से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" ऐसा सुनें, "मैं विस्मयाभिभूत हूं," "मैं भविष्य के बारे में उत्सुक हूं," "बच्चे के लिए मैं खुश हूं," "मैं सोच रहा हूं कि इस सब के मायने क्या हैं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

जकर्याह भविष्यद्वाणी करते हैं, पहले वे परमेश्वर के उनके लोगों के प्रति प्रतिज्ञाओं का स्मरण करते हैं और यह बताते हैं कि वे किस तरह परमेश्वर की सेवा करेंगे।

अभिनय को बंद करें। जकर्याह का पात्र अदा करने वाले अदाकार से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" ऐसा सुनें, "मैं उत्साहित हूं" "मैं प्रसन्न हूं," "मैं आशान्वित हूं," "मैं यह जान कर धन्य हूं कि उद्धार आ रहा है" अभिनय को फिर से प्रारंभ करें।

जकर्याह उनके पुत्र के बारे में भविष्यद्वाणी करना समाप्त करते हैं।

अभिनय को बंद करें। जकर्याह का पात्र अदा करने वाले अदाकार से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" ऐसा सुनें, "प्रभु के भविष्यद्वक्ता का पिता होने के लिए मैं सम्मानित हूं," "मैं प्रभु की योजना का एक छोटा हिस्सा हूं," "मैं यह देखकर उत्सुक हूं कि क्या होगा," "मैं उदास हूं कि मेरे जीते जी यह सब कुछ हो या न हो।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यूहन्ना जंगलज में परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संबंध में बढ़ते हैं।

अभिनय को बंद करें। यूहन्ना का पात्र अदा करने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" ऐसा सुनें, "मैं उत्साहित हूं कि मैं मसीहा को देखूंगा," "मैं इस ध्येयकार्य का दबाव महसूस करता हूं," "शुभांरभ करने के लिए मैं सही क्षण का इंतजार कर रहा हूं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 1:57–80

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

ठीक जिस तरह परमेश्वर ने कहा था उसी तरह इलीशिबा एक बच्चे को जन्म देती है। जन्म के बारे में सुन कर हर कोई अचरज करता है क्योंकि वे संतान उत्पत्ति में असफल रही थीं। जन्म के एक सप्ताह बाद बच्चे का खतना किया जाता था। यहूदी परंपरा में खतना एक बालक के शिश्न के सिरे की ढीली **त्वचा** को काट देने के संस्कार को कहते हैं। आमतौर पर इसे बच्चे के जन्म के एक सप्ताह बाद पिता या किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा किया जाता था जो इस क्रिया में दक्ष होता था। खतना एक ऐसा संकेत था कि लड़का परमेश्वर के चुने हुए लोगों का एक हिस्सा था इस्राएल और परमेश्वर के वचन उन पर लागू होते थे।

जकर्याह के कई पड़ोसी और परिजन इस आनंदपूर्ण समय का जश्न मनाने के लिए उनके घर आते हैं। जब इलीशिबा उन्हें बच्चे का नाम यूहन्ना बताती हैं, तो वे जकर्याह से पूछते हैं। जकर्याह एक **स्लेट** लेते हैं और उस पर "यूहन्ना" नाम लिखते हैं। एक स्लेट लकड़ी की एक छोटी तख्ती होती थी जिस पर मोम की परत होती थी। लोग मोम पर किसी पेन के आकार की नोकदार वस्तु से निशान अंकित कर लिख सकते थे। अचानक जकर्याह की जीभ खोल दी गई, जिसका मतलब था कि वे फिर से बात कर सकते थे। वे परमेश्वर की स्तुति करते हैं।

यहां रुकें और अनुवाद दल को एक स्लेट की तस्वीर दिखाएं।

यूहन्ना की खबर पूरे यहूदिया में फैल जाती है क्योंकि उनके जन्म के आसपास कई विशेष घटनाएं घटित होती हैं।

जब लोग कहते हैं कि **प्रभु का हाथ** यूहन्ना पर होता है, तो उनका मतलब है कि परमेश्वर उनका मार्गदर्शन कर रहे हैं। **प्रभु** यहां स्वयं परमेश्वर को संदर्भित करता है।

तब **पवित्र आत्मा** से जकर्याह परिपूर्ण हो जाते हैं और एक **भविष्यद्वाणी** करते हैं। भविष्यद्वाणी उस समय होती है जब परमेश्वर किसी भविष्यद्वक्ता को सीधे एक संदेश देते हैं और तब भविष्यद्वक्ता परमेश्वर की ओर से लोगों को संदेश देते हैं। **पवित्र आत्मा** को उसी तरह अनुवादित करें जिस तरह लूका के अन्य हिस्सों में आपने किया है।

जकर्याह अपने लोगों को छुड़ाने के लिए परमेश्वर की स्तुति करते हैं। **छुड़ाना** एक क्रियापद है जिसका मतलब मुक्त कराना या बचाना होता है। इस मामले में परमेश्वर इस्राएलियों को उनके शत्रुओं से बचा रहे होते हैं। जकर्याह यह पहचानते हैं कि जैसा भविष्यद्वक्ताओं ने बहुत पहले वचन दिया था, परमेश्वर उनके लिए एक उद्धारकर्ता भेज रहे हैं। जब आप **भविष्यद्वक्ता** शब्द का अनुवाद करते हैं तो ऐसे शब्द का प्रयोग करना सुनिश्चित करें जो भविष्यद्वक्ता के प्रकार्य को पर्याप्त रूप से वर्णित करता हो।

भविष्यद्वक्ता:

1. परमेश्वर की ओर से आह्वान प्राप्त करता है;
2. परमेश्वर का संदेश मनुष्यों तक ले जाता है क्योंकि इसे परमेश्वर द्वारा स्वयं उसे दिया गया था;
3. परमेश्वर के वचन को मनुष्यों तक पहुंचाना ही उसकी एकमात्र प्राथमिकता होती है।

यदि आप किसी धार्मिक शब्द का इस्तेमाल करते हैं, तो सुनिश्चित करें कि इसका मतलब ऐसा हो जिसे कोई औसत सुनने वाला समझ पाए।

जकर्याह कहते हैं कि परमेश्वर ने उनकी **पवित्र वाचा** को याद रखा है। वाचा एक ऐसा समझौता होता है जो दो लोगों के बीच शांति या मित्रता स्थापित करता है। दोनों लोग इस समझौते के प्रति निष्ठावान होने के लिए सहमत होते हैं। पावन या पवित्र वाचा वह प्रतिज्ञा है जो परमेश्वर द्वारा अब्राहम और उनके वंशजों को दिया गया था। यह पवित्र है क्योंकि परमेश्वर ने इसे बनाया था। जकर्याह कहते हैं कि परमेश्वर ने एक **शपथ** ली थी। शपथ एक प्रतिज्ञा के साथ जोड़ दी जाती है ताकि लोगों को पता हो कि उन्हें अपना करार बनाए रखना चाहिए और इसे बदला नहीं जा सकता है। शपथ लेने वाला व्यक्ति परमेश्वर

से कहता है कि यदि वे अपनी प्रतिज्ञा न रखें तो उन्हें दण्डित किया जाए।

जकर्याह कहते हैं कि वे बिना भय के परमेश्वर की सेवा कर सकते हैं। वे अपने पुत्र से बात करते हैं और उन्हें कहते हैं कि उन्हें **परम प्रधान** का भविष्यद्वक्ता कहा जाएगा। यह एक ऐसे व्यक्ति को संदर्भित करता है जो सर्वोच्च परमेश्वर के वचन व्यक्त करता है। जकर्याह यूहन्ना के उद्देश्य के बारे में बात करते हैं कि **पापों से क्षमा** के माध्यम से उद्धार कैसे पाना चाहिए। पाप का अनुवाद परमेश्वर के प्रति अवज्ञा के एक कृत्य के रूप में किया जा सकता है। क्षमा में दो लोग शामिल हैं, जिनमें से एक ने दूसरे के साथ कुछ गलत किया है। क्षमा में, जिस व्यक्ति के साथ गलत हुआ है, वह अपने अधिकारों की उपेक्षा करके गलती करने वाले को सज़ा नहीं देता है। वह बदला नहीं लेना चाहता। अगर गलती करने वाला अपने व्यवहार पर पश्चाताप करता है और क्षमा स्वीकार करता है, तो दोनों के बीच संबंध बहाल हो जाता है और अपराध बोध दूर हो जाता है। परमेश्वर के साथ, क्षमा उन सभी के लिए उपलब्ध है जो दुष्टता करना छोड़ कर परमेश्वर की और मन फिराते हैं। तब उनके साथ परमेश्वर का रिश्ता बहाल हो जाता है। यहाँ नए नियम में "क्षमा" का वर्णन करने के लिए उपयोग किए जाने वाले कुछ मुहावरे दिए गए हैं।

किसी के पापों को मिटाने के लिए

किसी के पापों को ऊपर उठाने के लिए

खोने के लिए, मुक्त करने के लिए

दूर फ़ेंक देने के लिए

कवर करने के लिए

भूल जाने के लिए

ले लेने के लिए

पीठ मोड़ लेने के लिए

आपकी भाषा में एक समान मुहावरा हो सकता है, और यदि ऐसा है, तो आप इसका उपयोग अपने दर्शकों के लिए एक शब्द चित्र बनाने के लिए कर सकते हैं।

शिक्षण साधन: पश्चिम अफ़्रीका की एक भाषा में, जब परमेश्वर किसी को क्षमा कर देते हैं, तो वे उनके पापों को पूरी तरह से "काट" देते हैं, ताकि उनकी मौजूदगी पूरी तरह समाप्त हो जाए। **अनुवाद टीम को किसी ऐसे दृश्य पर अभिनय करने को कहें जिसमें कोई किसी को क्षमा कर रहा हो। देखें कि क्षमा को दिखाने के लिए वे क्या क्रियाएं करते हैं। क्राफ़्टर्स से कहें कि वे दृश्य में हर पात्र की भावदशाओं को समझाएँ।**

जकर्याह ने कहा कि **स्वर्ग** से सुबह का प्रकाश उन पर फैलने ही वाला था। प्रसंग के आधार पर स्वर्ग आकाश को या उस स्थान को संदर्भित कर सकता है जहां परमेश्वर और उनके स्वर्गदूत रहते हैं। जब यह उस स्थान को संदर्भित करता है जहां परमेश्वर रहते हैं, तो यह विश्वासियों का अंतिम गंतव्य भी है। **सुबह** का प्रकाश एक भाषा अलंकार है जो उस उद्धारकर्ता को संदर्भित करता है जो आध्यात्मिक अंधेरे की दुनिया में प्रकाश रोशन करेगा। वे कहते हैं कि यह उद्धारकर्ता आध्यात्मिक अंधकार की दुनिया पर प्रकाश डालेगा और उनके लोगों को शांति के लिए मार्गदर्शन देगा। जकर्याह के संदेश के बाद लूका हमें यूहन्ना के बचपन के बारे में कुछ बताते हैं। वे हमें बताते हैं कि यूहन्ना **आत्मा में बलवन्त होते** हैं और जंगल में रहते हैं। आत्मा में बलवन्त होने का मतलब है कि यूहन्ना विश्वास में दृढ़ और उनकी सोच और चरित्र में परिपक्व होते हैं। **जंगल** यरदन नदी के पास के भूमि के क्षेत्र को संदर्भित करता है जहां कोई नहीं रहता था और बहुत कम उपज होती थी। बाइबल में, परमेश्वर अक्सर इन तरह के क्षेत्रों में अपने लोगों से मिलते हैं।

लूका कहते हैं कि यूहन्ना अपनी **सार्वजनिक सेवा** शुरू करने तक जंगल में रहे, जिसका अर्थ उस समय से है जब तक यूहन्ना ने परमेश्वर के लोगों को उद्धारकर्ता के बारे में परमेश्वर के संदेश का प्रचार करने के लिए स्वयं को सार्वजनिक रूप से प्रकट नहीं किया।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय

कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 1:57–80

Audio Content

webm zip (5057241 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (8801270 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 2:1–21

सुनना और मनन करना

लूका 2:1–21 सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे यह कथा सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

स्टेज सेट करना

लूका 2:1–21

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

यूहन्ना का जन्म एक ऐसा संकेत था कि प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता जल्द ही आ रहे थे। लूका यूहन्ना के जन्म के कुछ समय बाद की यूसुफ और मरियम की उनकी कहानी जारी रखते हैं। वे नासरत में रह रहे थे जब औगुस्तुस कैसर ने एक आदेश दिया कि जनगणना की जानी चाहिए। कैसर एक उपाधि है जिसका अर्थ सम्राट होता है। औगुस्तुस एक उपाधि है जिसका अर्थ महान होता है। इस कहानी में औगुस्तुस कैसर रोम के साम्राज्य के महान राजा को संदर्भित करता है। रोमन साम्राज्य उन सभी देशों को संदर्भित करता है जिन पर रोम के लोग शासन करते थे।

जनगणना का मतलब होता है कि लोगों को गिना और पंजीकृत किया जाना चाहिए। रोम की जनगणना में रोम के साम्राज्य में रहने वाले सभी को आकर एक पुस्तक में उनके नाम लिखने की आवश्यकता थी। इसमें यहूदी भी शामिल थे। सम्राट ने कर के उद्देश्य से उनके साम्राज्य में लोगों गणना की थी।

लूका कहते हैं कि यह पहली जनगणना थी जब क्विरिनियुस सीरिया के राज्यपाल थे। क्विरिनियुस रोम के एक नेता थे जो सम्राट की सेवा करते थे। सीरिया उन प्रांतों में से एक था जो रोमियों द्वारा शासित थे। सीरिया के पास यहूदिया और गलील दोनों की तुलना में अधिक शक्ति थी। लूका ऐसा इसलिए कहते हैं ताकि उनके पाठक यह समझ सकें कि इतिहास में कोई घटना कब घटित हुई थी। यह पृष्ठभूमि की जानकारी है।

जनगणना के लिए यह आवश्यक था कि सभी उस शहर में लौट आएं जहां उनके पूर्वज होते थे। यूसुफ को इसलिए बैतलहम लौटना पड़ा, वह स्थान जहां उनके पूर्वज राजा दाऊद का जन्म हुआ था। बैतलहम को "दाऊद का शहर" भी कहा जाता था। भविष्यद्वक्ता मीका के माध्यम से यहूदी

यह जानते होंगे कि बैतलहम वह जगह थी जहां उद्धारकर्ता का जन्म होने वाला था। यूसुफ मरियम के साथ यात्रा करते हैं क्योंकि जब मरियम गर्भवती थीं तब भी वे सगाई के अनुबंध में थे। उन्होंने नासरत से बैतलहम तक की यात्रा की जो एक तीन दिवसीय यात्रा थी। उन्होंने नासरत से लगभग 300 मीटर ऊंचाई पर स्थित एक क्षेत्र की यात्रा की होगी।

मरियम और यूसुफ द्वारा नासरत से बैतलहम तक के सफर का एक नक्शा अपनी टीम को दिखाएं। यह सोचें कि एक ऐसी महिला के लिए जो प्रसवकाल के करीब थीं उनके लिए यह यात्रा कितनी कठिन रही होगी।

जब वे बैतलहम में होते हैं तब मरियम उनके पहिलौठे बच्चे को जन्म देती हैं। वे यहूदी प्रथा का पालन करते हुए उनके बच्चे को कपड़े की पट्टियों में लपेटती हैं। यहूदी लोग ऐसा इसलिए करते थे ताकि बच्चों की बाहों और टांगों को सीधा रखते हुए उन्हें गर्म भी रखा जा सके। बच्चा कपड़े में लिपटा हुआ था - इसका मतलब केवल यह है कि बच्चे के चारों ओर कपड़े को कई बार लपेटा गया था। मरियम और यूसुफ संभवतः परिवार और मित्रों के साथ रह रहे थे। यहूदी घरों में कई बार पशु और लोग एक ही घर में रहते थे। पशु घर के निचले हिस्से में रहते थे। क्योंकि जनगणना के कारण घर में काफी भीड़ थी इसलिए मरियम और यूसुफ संभवतः पशुओं के साथ घर के निचले हिस्से में रह रहे थे क्योंकि अतिथि कक्ष पूरा भरा था। मरियम को अपने बच्चे को एक चरनी में लिटाना पड़ा। चरनी पशुओं के भोजन के लिए एक पात्र होता था। यह लकड़ी या पत्थर में नक्काशी के द्वारा बनाया जाता था।

रुकें और अपनी टीम को चरनी की एक तस्वीर दिखाएं, ताकि इसे आपकी भाषा में कैसे अनुवाद करना है इसे बेहतर तरीके से समझा जा सके। यदि कोई समानार्थी शब्द न हो तो इसके बजाय आपको इसे वर्णित करने की आवश्यकता हो सकती है।

बैतलहम के बाहर चरवाहे उनके भेड़ों के झुण्ड की देखभाल कर रहे थे। यह कुछ ऐसा था जो किसी अन्य स्थान पर उसी समय हो रहा था जब यीशु का जन्म हुआ था। भेड़ पालतू पशु होते हैं जिन्हें ऊन और मांस के लिए पाला-पोसा जाता था।

अगर आपकी भाषा में "भेड़" के लिए कोई शब्द नहीं हो तो आप शब्द को उद्धृत कर सकते हैं और चरवाहों के अपने अनुवाद में एक आमबोली के शब्द से उसका अर्थ इंगित कर सकते हैं। एक उदाहरण ऐसा हो सकता है, ऐसे लोग जो भेड़ नामक पशुओं की देखभाल करते हैं। यदि आपके क्षेत्र में भेड़ नहीं होती हैं तो आप एक तस्वीर दिखा सकते हैं।

इस्राएल में चरवाहे निम्न स्थिति के माने जाते थे और यहूदी लोगों द्वारा उन्हें समझा जाता था। वे अपने पशुओं को खुले मैदानों में रखते थे और उन्हें चोरों और जंगली जानवरों के खिलाफ रात को रखवाली करनी पड़ती थी। आमतौर पर यहूदी चरवाहे अप्रैल से नवंबर तक अपने झुण्ड को इस तरह से बाहर रखते थे। यह कहानी हमें यह नहीं बताती है वह वर्ष का कौनसा समय था। हमें यह नहीं मानना चाहिए कि यह सर्दियों या ठंडे मौसम का समय था।

यहां रुकें और अपनी टीम से चर्चा करें। आपकी संस्कृति में चरवाहे किस तरह देखे जाते हैं? क्या वे सूचना के विश्वसनीय स्रोत होते हैं? इस्राएल के देश में उनके मैदानों में चरवाहों की तस्वीरें दिखाएं।

प्रभु का एक स्वर्गदूत अचानक चरवाहों पर प्रकट होता है। वे एक विशेष उज्जवल प्रकाश से घिरे हुए होते हैं जो परमेश्वर के सामर्थ्य को दिखाता है। चरवाहे भयभीत हो जाते हैं। स्वर्गदूत चरवाहों से कहते हैं कि वे भयभीत न हों क्योंकि वे एक शुभ समाचार लाए हैं जो सभी लोगों को हर्ष प्रदान करेगा। उद्धारकर्ता के जन्म की खबर उन सभी लोगों में हर्ष उत्पन्न करेगी, जो उस पर विश्वास करेंगे। परमेश्वर ने विशेष रूप से यह प्रतिज्ञा की थी कि वे एक उद्धारकर्ता मसीहा को यहूदियों के लिए भेजेंगे। मसीहा या उद्धारकर्ता इस्राएल के सभी और अन्य देशों से जो भी जन इस संदेश पर विश्वास करेंगे, उनके लिए हर्ष लाएगा। यह उन लोगों के लिए हर्ष नहीं लाएगा, जो इस पर विश्वास नहीं करते।

स्वर्गदूत यह घोषणा करते हैं कि उद्धारकर्ता मसीहा का जन्म बैतलहम में हो चुका है। मसीहा और मसीह का मतलब इब्रानी भाषा में एक ही है। ये शब्द किसी विशेष कार्य के लिए परमेश्वर द्वारा अभिषिक्त या नियुक्त किए गए व्यक्ति का संदर्भित करता है। पुराने नियम में विशेष कार्यों के लिए भविष्यद्वक्ताओ, पादरियों और राजाओं को चुना जाता था। यीशु में वे सभी गुण हैं।

स्वर्गदूत चरवाहों को एक संकेत देते हैं ताकि वे जानें कि उनके वचन सत्य हैं। वे कहते हैं कि वे कपड़े में लिपटे एक बच्चे को चरनी में लेटा हुआ पा सकते हैं। दूसरा संकेत तब होता है जब स्वर्गदूतों का एक बहुत बड़ा समूह, स्वर्ग का लशकर अचानक प्रकट होता है। वे यीशु के जन्म के लिए परमेश्वर की स्तुति करते हैं। कुछ भाषाओं में उनकी प्रशंसा को कविता के रूप में अनुवादित करना अच्छा हो सकता है। स्वर्गदूत कहते हैं कि स्वर्ग में परमेश्वर को महिमा या स्तुति प्राप्त होती है। परमेश्वर जिनपर कृपा करते हैं उन्हें पृथ्वी पर शांति मिलती है। स्वर्गदूत परमेश्वर की स्तुति करने के बाद स्वर्ग लौट जाते हैं। चरवाहे जल्दी से बैतलहम जाते हैं ताकि स्वर्गदूत द्वारा उन्हें बताए गए उद्धारकर्ता को वे देख सकें। वे उद्धारकर्ता की खोज करते हैं और ठीक जैसा स्वर्गदूत ने बताया था उसी तरह मरियम और यूसुफ के साथ एक चरनी में उन्हें पाते हैं।

चरवाहे अपनी कहानी मरियम और यूसुफ को और जो कोई भी सुनने को राजी हो उसे बताते हैं। चरवाहे उनकी यह कहानी बताते हैं कि किस तरह स्वर्गदूत प्रकट हुए और उद्धारकर्ता को कैसे पाना चाहिए, यह उन्हें बताया। जो कोई भी उनकी कहानी सुनता है वह चकित हो जाता है। मरियम की प्रतिक्रिया अलग होती है। जो कुछ भी उन्होंने कहा उसे वे

सावधानी से सुनती हैं और उनके वचन को अपने हृदय में रख लेती हैं। हृदय शब्द यहां प्रतीकात्मक है। यहूदी इसका इस्तेमाल किसी व्यक्ति के उस हिस्से को संदर्भित करने के लिए करते थे जहां विचार और भावनाएं होती हैं। दूसरे शब्दों में चरवाहों ने जो कुछ कहा उसे मरियम याद रखती हैं।

यहां रुकें और अपनी टीम से चर्चा करें। आपकी संस्कृति में किसी व्यक्ति के ऐसे भाग को जहां विचार और भावनाएं होती हैं, उसे संदर्भित करने के लिए किस विशिष्ट अभिव्यक्ति का उपयोग किया जाता है?

चरवाहे परमेश्वर की स्तुति करते हुए अपने झुण्ड में लौट जाते हैं। वे चरनी के बच्चे के लिए, स्वर्गदूत ने उनके बारे में जो कुछ कहा था, और स्वर्गदूतों ने किस तरह परमेश्वर की स्तुति की थी, उस सभी के लिए उनका गुणगान करते हैं। आठ दिन बाद बच्चे का खतना किया जाता है और यीशु नाम दिया जाता है। यह वही नाम था जिसे परमेश्वर ने गर्भवती होने से पहले स्वर्गदूत जिब्राईल के माध्यम से मरियम को दिया था।

इस कहानी में हम देखते हैं कि परमेश्वर उनके लोगों के लिए उनके वचन को पूरा करते हैं। वह प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता - यीशु को भेजते हैं। यह शुभ समाचार न केवल इस्राएल के लिए बल्कि उन सभी देशों के लिए है जो इसपर विश्वास करते हैं। प्रारंभिक कथा में ही हमने दुनिया द्वारा यीशु की अस्वीकृति को तक देखा जब अतिथिगृह में उनके माता-पिता के लिए कोई स्थान नहीं था। हम यह भी देखते हैं कि किस तरह परमेश्वर चरवाहों जैसे साधारण और विनम्र लोगों के लिए खुद को प्रकट करते हैं।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 2:1–21

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य बनाने में समूह की मदद करेंगे। आप कहानी के दृश्यों, सेटिंग्स, व कहानी के चरित्रों को उतारने में समूह की मदद करेंगे।

इस कहानी में पांच दृश्य हैं।

पहला दृश्य: रोमन सम्राट यह आदेश देते हैं कि उनके साम्राज्य में रहने वाले सभी लोगों की गणना की जानी चाहिए। लोगों को उनके पूर्वजों के कस्बों में पंजीकृत होने के लिए यात्रा करनी पड़ती है। इसलिए यूसुफ और मरियम पंजीकरण के लिए नासरत से बैतलहम तक की यात्रा करते हैं।

दूसरा दृश्य: जब वे बैतलहम में होते हैं, तो मरियम के बच्चे का जन्म होता है। माता-पिता बच्चे को एक चरनी में रखते हैं, क्योंकि वे जहां रह रहे थे उस निजी घर में उनके रहने की कोई जगह नहीं थी।

तीसरा दृश्य: एक स्वर्गदूत प्रकट होते हैं और चरवाहों को उद्धारकर्ता के जन्म के बारे में अच्छी खबर देते हैं। स्वर्गदूत उन्हें बताते हैं कि बच्चा बैतलहम में एक चरनी में पाया जाएगा।

चौथा दृश्य: चरवाहे बच्चे को खोजने के लिए जल्दी से जाते हैं। वे उसे मरियम और यूसुफ के साथ पाते हैं। स्वर्गदूतों ने उन्हें जो कहा और जो कुछ हुआ था वह सब वे हर किसी को बताते हैं। मरियम इन सभी चीजों को उनकी स्मृति में रखती हैं।

पांचवां दृश्य: आठ दिन बाद बच्चे का खतना किया जाता है और उसका यीशु नामकरण किया जाता है।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- रोम के सम्राट, औगुस्तुस
- सीरिया के राज्यपाल, क्विरिनियुस
- मरियम
- यूसुफ
- स्वर्गदूत
- चरवाहे
- लोग
- यीशु

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल का इस्तेमाल करे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि औगुस्तुस न केवल यहूदियों पर बल्कि रोम द्वारा जीते गए अन्य देशों पर शासन करते थे। सीरिया के राज्यपाल औगुस्तुस के अधिकार के तहत हैं। यहूदिया की भूमि जहां यहूदी रहते हैं, उन्हें लोगों गणना के उद्देश्य से सीरिया के प्रांत का एक हिस्सा माना जाता था। औगुस्तुस सभी लोगों को उनके मूल शहर में गिनती के लिए आदेश देते हैं। हर कोई अपने पूर्वजों के कस्बों में वापस जाता है।

यूसुफ दाऊद के वंशज हैं, इसलिए उन्हें मरियम के साथ बैतलहम में वापस जाने की आवश्यकता थी।

ऐसा दिखाना सुनिश्चित करें कि इस लंबी यात्रा में लगभग तीन दिन लगे।

यूसुफ और मरियम की सगाई हो चुकी है और वे एक बच्चे की उम्मीद कर रही हैं। वे बैतलहम में पहुंचते हैं। वे यूसुफ के दोस्तों या परिवार के साथ एक घर में रहते हैं। लेकिन जनगणना के कारण घर में बहुत भीड़ थी। इसलिए यूसुफ और मरियम को घर के निचले हिस्से में रहना पड़ता है, जहां पशु रखे जाते हैं। कुछ समय के बाद मरियम जन्म देने के लिए तैयार होती हैं। जब बच्चा पैदा होता है, तो वे उन्हें कपड़ों में लपेटती हैं और उसे चरनी में रखती हैं।

उस रात बैतलहम के बाहर के मैदानों में चरवाहे उनकी भेड़-बकरियों के झुंड के साथ थे। यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि मौसम का उल्लेख नहीं किया गया है। मौसम इतना सुहावना रहा होगा कि वे रात बाहर बिता सकें।

एक स्वर्गदूत प्रकट होते हैं और उन्हें बताते हैं कि बैतलहम के शहर या दाऊद के शहर में उद्धारकर्ता, मसीहा का जन्म हो चुका है।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि सभी यहूदी इस मसीहा की प्रतीक्षा कर रहे होते हैं। स्वर्गदूत उन्हें बताते हैं कि उन्हें लपेटकर चरनी में रखा जाएगा। यह वह संकेत था जो स्वर्गदूत ने चरवाहों को बच्चे को खोजने के लिए दिया था। तब जो स्वर्गदूत बोल रहे होते हैं, उनका साथ देने के लिए एक बड़ी संख्या में स्वर्गदूत आते हैं और वे परमेश्वर की प्रशंसा करते हैं। जब स्वर्गदूत स्वर्ग में जाते हैं, तो चरवाहे, उन्हें बताई गई बातों को देखने के लिए बैतलहम जाते हैं।

यह दिखाना सुनिश्चित करें कि स्वर्गदूत द्वारा बताई गई बातों को देखने के लिए चरवाहे जल्दी में थे।

जिस तरह स्वर्गदूत ने उन्हें कहा था ठीक उसी तरह वे मरियम और यूसुफ को पाते हैं। चरवाहे वहां से निकलते हैं और उनके मार्ग में हर किसी को जो कुछ उन्होंने देखा और सुना था उसके बारे में बताते हैं। मरियम इन स्मृतियों को अपने पास रखती हैं जो अक्सर उनके बारे में सोचती रहती हैं। चरवाहे परमेश्वर की स्तुति करते हुए उनके झुण्ड में वापस चले जाते हैं।

आठ दिन बाद बच्चे का खतना किया जाता है और उसे यीशु नाम दिया जाता है।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यह उसी तरह का खतना है जिससे यूहन्ना भी उस समय गुज़रे थे जिस समय उनका नाम रखा गया था।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 2:1–21

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी में पांच दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- रोम के सम्राट, औगुस्तुस
- सीरिया के राज्यपाल, क्विरिनियुस
- मरियम
- यूसुफ
- स्वर्गदूत
- चरवाहे
- लोग
- यीशु

मण्डली से कहानी को दो बार अभिनीत करवाएं। पहले मण्डली से बिना रुके कहानी का अभिनय कराएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है और उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

सुनिश्चित करें कि टीम राज्यपाल क्विरिनियुस पर सम्राट औगुस्तुस के शासन का अभिनय करती है। मरियम के गर्भवती रहते हुए यूसुफ और मरियम द्वारा बैतलहम की लंबी यात्रा पर जाने का अभिनय करें। यह अवश्य दिखाएं कि चरनी में लिपटे बच्चे को खोजने के लिए चरवाहे जल्दी में थे।

दूसरी बार जब टीम इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

औगुस्तुस द्वारा रोम के साम्राज्य में लोगों की जनगणना के आदेश देने का अभिनय करें। हर कोई उन कस्बों में वापस जा रहा है जहां से उनके परिवार हैं। **अभिनय को बंद करें।** वापस जाने वाले लोगों में से किसी एक से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" सुनें, "मैं चिंतित हूं," "मैं नाराज हूं," "मैं थक गया हूं," अभिनय को फिर से शुरू करें।

यूसुफ और मरियम की लंबी यात्रा का अभिनय करें। मरियम यूसुफ से सगाईशुदा हैं और वे गर्भवती हैं। जब वे बैतलहम में हैं, तो मरियम का बच्चे को जन्म देने का समय आ गया होता है। उन्हें रहने के लिए कोई स्थान नहीं मिलता। जब मरियम जन्म लेती हैं तो वे बच्चे को कपड़ों में लपेटती हैं और उसे चरनी में लिटा देती हैं। **अभिनय को बंद करें।** मरियम का पात्र निभाने वाली अभिनेत्री से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रही हैं?" सुनें, "मैं उदास हूं क्योंकि हम अकेले हैं। हम पशुओं के पास हैं, न कि किसी आरामदायक स्थान पर," "मैं बहुत थक गई हूं," "मैं प्रसन्न हूं," अभिनय को फिर से शुरू करें।

मैदानों में चरवाहों का अभिनय उस समय करें जब कोई स्वर्गदूत उनके बीच में प्रकट होता है। वे बहुत भयभीत हो जाते हैं। लेकिन स्वर्गदूत उन्हें उद्धारकर्ता के जन्म का शुभ समाचार देते हैं। वे उन्हें बताते हैं कि वे उन्हें किस तरह पहचानेंगे। अचानक कई अन्य स्वर्गदूत एक साथ परमेश्वर की

स्तुति करते हुए आते हैं। **अभिनय को बंद करें।** चरवाहों का पात्र निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" सुनें, "मैं भयभीत हूं," "मैं उत्साहित हूं," "मुझे राहत मिली है," "मैं विस्मयाभिभूत हूं।"

स्वर्गदूतों का किरदार निभा रहे अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" सुनें, "मैं प्रशंसा से भरा हूं," "मैं उत्साहित हूं," "अंततः," "मुझे विश्वास नहीं होता कि वे अब पृथ्वी पर हैं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

चरवाहे शीघ्रतापूर्वक बैतलहम जाते हैं ताकि स्वर्गदूत ने उन्हें जो कुछ बताया उसे देख सकें। बच्चे को देखने के बाद जो कुछ उन्होंने देखा उसे वे सभी को बताते हैं। चरवाहें जो कुछ कहते थे, उससे हर कोई अचम्भित होता है। मरियम इन बातों को उनकी स्मृति में रखती हैं और उनके बारे में अक्सर सोचती हैं।

अभिनय को बंद करें। मरियम का पात्र निभाने वाली अभिनेत्री से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रही हैं?" सुनें, "मैं विचारशील हूं," "मैं थोड़ा उलझन में हूं," "मैं प्रसन्न हूं," "मैं आश्चर्य में हूं।"

चरवाहों का किरदार निभाने वाले अभिनेताओं और उन लोगों से पूछें, जिन्होंने यह खबर सुनी होती है, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" सुनें, "मैं सम्मानित हूं कि परमेश्वर ने मुझे उद्धारकर्ता को देखने के लिए चुना है," "मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि उद्धारकर्ता एक चरनी में थे," "मैं परमेश्वर की योजना से विस्मयाभिभूत हूं।"

ऐसे लोग जिन्होंने यह खबर सुनी उनकी भूमिका निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" सुनें, "क्या यह सच है?" "क्या मैं वास्तव में किसी चरवाहे पर भरोसा कर सकता हूं?" "मुझे उम्मीद है," "मैं उत्सुक हूं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

आठ दिन के बाद बच्चे का खतना किया जाता है। बच्चे का नाम यीशु रखा जाता है।

अभिनय को बंद करें। यूसुफ का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" सुनें, "मैं अभिभूत हूं," "मैं प्रसन्न हूं," "मैं घबराया हुआ हूं," "जो कुछ आने वाला है उसके लिए मैं उत्साहित हूं।"

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 2:1–21

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

यूहन्ना के जन्म के समय के आसपास रोम के सम्राट औगुस्तुस ने जनगणना का आदेश दिया। **जनगणना** का मतलब है कि नामांकित या पंजीकृत किया जाना। सरकारी अधिकारियों को एक पुस्तक में लोगों के नाम लिखना होंगे। इससे सम्राट को यह जानने का मौका मिलता कि उनके साम्राज्य में कितने लोग रहते थे और किन्हें कर का भुगतान करना था। जनगणना रोम के **पूरे जगत** या रोमी साम्राज्य पर लागू थी। इसका मतलब इस्राएल सहित उन सभी देशों से है जिस पर रोमियों ने विजय प्राप्त की थी। लूका हमें वह कालावधि बताते हैं जब जनगणना हुई।

जनगणना के कारण प्रत्येक व्यक्ति को उन नगरों की यात्रा करनी पड़ी जहां से उनके पूर्वज थे। यूसुफ **दाऊद के घराने और वंशावली** के थे। घराने और वंशावली का समान ही अर्थ है। दोनों शब्दों का मतलब है कि यूसुफ राजा दाऊद के वंशज थे। इस बात पर जोर देने के लिए कि दाऊद उनके पूर्वज थे, इसे दो अलग तरीकों से कहा गया है। यहूदी पहले से ही जानते थे कि मसीहा दाऊद के वंशज होंगे। **दाऊद का घराना** प्रधान शब्दावली में है।

यूसुफ को नासरत से **बैतलहम** या दाऊद के नगर तक मरियम के साथ यात्रा करनी थी। बैतलहम प्रधान शब्दावली में हैं। मरियम को उनके साथ **विवाह करने वचनबद्ध** थीं और उनकी पहली संतान से गर्भवती थीं। यहूदी संस्कृति में सगाई एक कानूनी विवाह समझौता होता था। विवाह समारोह के एक हिस्से के रूप में पुरूष स्त्री को जीवन निर्वाह करने के लिए अपने घर में ले जाता था। मत्ती का सुसमाचार यह इंगित करता है कि यूसुफ ने बैतलेहम के लिए रवाना होने से पहले ही मरियम को अपनी पत्नी के रूप में अपने घर में ले लिया था। यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि उनके बीच अभी तक यौन संबंध नहीं थे। इसी वजह से लूका यह कहना जारी रखते हैं कि वे सगाई कर चुके या विवाह के लिए प्रतिज्ञाबद्ध थे।

यूसुफ और मरियम तीन दिन तक यात्रा करने के बात बैतलहम पहुंचते हैं। वहां रहते समय मरियम को प्रसव का समय आ पहुंचा, लेकिन **सराय** में जगह नहीं थी। सराय ऐसे स्थान के लिए एक सामान्य शब्द है जहां यात्री रह सकते हैं। इसका मतलब विश्रामालय, अतिथिगृह, या किसी घर के अतिथि कक्ष से हो सकता है। इस मामले में इसे एक अतिथि कक्ष के रूप में अनुवादित किया जा सकता है। अतिथि कक्ष एक निजी घर में हुआ होगा, जिसका मतलब है कि मरियम और यूसुफ मित्रों या परिवार के साथ रह रहे थे। लेकिन जनगणना के कारण घर में बहुत भीड़ थी। यहूदी घरों में घर के निचले हिस्से में पशुओं को रखा जाता था। मरियम अपने नवजात पुत्र को कपड़े की पट्टियों में लपेटकर उसे चरनी में लिटा दिया। इससे हमें यह पता चलता है कि वे घर के उस हिस्से में ठहरे थे जहां पशु रखे जाते थे।

यदि आपने पहले से ऐसा नहीं किया है, तो अपनी टीम को चरनी का चित्र दिखाएं, ताकि वे बेहतर तरीके से यह समझ सकें कि इसे आपकी भाषा में कैसे अनुवाद करें।

इसके साथ ही बैतलहम के ठीक बाहर **खेतों में** चरवाहे रहते थे। इसे खुले में बाहर रहने या मैदानों में रहने के रूप में अनुवादित किया जा सकता है। चरवाहे अपनी भेड़ों का ध्यान रखते और बैतलहम के निकट के एक क्षेत्र में मैदानों में रहते थे। यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि मैदानों का मतलब है घास के क्षेत्र जहां भेड़ें चर सकती थीं, इसका मतलब खेती की जमीन नहीं है।

यदि आपने पहले से ही ऐसा नहीं किया है, तो अपनी टीम को अपनी भेड़ों के साथ देहात में चरवाहों की तस्वीर दिखाएं।

अचानक प्रभु का **एक स्वर्गदूत** प्रकट होता है और चरवाहे भयभीत हो जाते हैं। "प्रभु" स्वयं परमेश्वर को संदर्भित करता है। "स्वर्गदूत" के लिए इसी शब्द का इस्तेमाल सुनिश्चित करें जिसे आपने लूका के अपने पिछले अनुवादों में किया है और यह याद रखें कि स्वर्गदूत प्रधान शब्दावली में हैं। वे प्रभु के प्रताप में दमक रहे थे। प्रताप प्रभु की महान महिमा को संदर्भित करता है। परमेश्वर की महानता स्वर्गदूत के आसपास एक विशेष प्रकार के प्रकाश के रूप में चमकती है। स्वर्गदूत उन्हें बताते **हैं कि उनके पास बड़े हर्ष से पूर्ण शुभ समाचार है जो सभी लोगों के लिए होगा**। मसीहा के जन्म का शुभ समाचार उन सभी को हर्ष का अनुभव कराएगा जो इस पर विश्वास करेंगे। उद्धारकर्ता की प्रतिज्ञा विशेष रूप से यहूदियों से की गई थी। स्वर्गदूत कहते हैं कि मसीहा प्रभु, इस्राएल के सभी लोगों और इस संदेश को मानने वाले प्रत्येक राष्ट्र के लिए हर्ष लेकर आएंगे। इससे उन लोगों को हर्ष नहीं होगा जो विश्वास नहीं करते थे। यहां प्रभु एक स्वामी को संदर्भित करता है। यहूदी अक्सर परमेश्वर को स्वामी के रूप में संदर्भित करते थे।

स्वर्गदूत कहते हैं कि उद्धारकर्ता **आज** पैदा हुआ है। यहूदी संस्कृति में सूर्यास्त पर सांझ के लगभग 6:00 बजे नया दिन शुरू होता था। स्वर्गदूत ने रात में चरवाहों से बात की इसलिए यह स्पष्ट है कि यीशु सूर्यास्त के बाद रात में पैदा हुए थे। आपकी भाषा में इसे "आज रात" के रूप में अनुवाद करना आसान हो सकता है।

स्वर्गदूत **उद्धारकर्ता को मसीह** या **मसीहा** कहते हैं। उद्धारकर्ता का मतलब है कोई ऐसा व्यक्ति जो दूसरों को नुकसान से बचाता या छुड़ाता है। यहूदी उस व्यक्ति को संदर्भित करने के लिए मसीह की उपाधि का इस्तेमाल करते थे जिसे परमेश्वर ने नियुक्त किया था और जिसे उन्होंने एक राजा और उद्धारकर्ता के रूप में भेजने की प्रतिज्ञा की थी। इसका वही अर्थ है जो मसीहा का होता है। याद रखें कि मसीहा प्रधान शब्दावली में हैं।

स्वर्गदूतों ने उन्हें बच्चे को खोजने के लिए एक संकेत दिया। बच्चा कपड़ों में लिपटा चरनी में लेटा हुआ पाया जाएगा। **स्वर्ग के मेजबान की एक बड़ी मण्डली** स्वर्गदूत से आ मिलती है। इसका मतलब है कि स्वर्ग से एक बड़ी संख्या में स्वर्गदूत प्रकट होकर पहले स्वर्गदूत के साथ शामिल होते हैं। सर्वोच्च **स्थान के परमेश्वर की महिमा हो, और पृथ्वी पर उन सभी मनुष्यों को शांति मिले जिनपर उनकी कृपा** है। इसे एक गीत या कविता के रूप में अनुवाद करना आसान हो सकता है। वाक्यांशों का मतलब है कि परमेश्वर को स्वर्ग में महिमा या स्तुति मिलती है। परमेश्वर जिनपर कृपा करते हैं उन्हें पृथ्वी पर शांति मिलती है। यहूदियों के लिए **शांति** का मतलब अक्सर परमेश्वर और लोगों के बीच तारतम्य और मित्रता होता है। **शांति** शब्द प्रधान शब्दावली में भी पाया जा सकता है।

स्वर्गदूत **स्वर्ग** में जाते हैं जहां परमेश्वर रहते हैं जैसा स्वर्गदूत ने कहा था, ठीक वैसे ही चरवाहे बच्चे को बैतलहम में पाते हैं। जो कोई भी सुनने को राजी हो उसे वे उनकी कहानी बताते हैं। मरियम उनके शब्दों को अपने मन में रखती हैं और अक्सर उनके बारे में सोचती हैं। चरवाहे परमेश्वर की स्तुति करते हुए उनके भेड़ों के पास लौट जाते हैं। आठ दिन बाद मरियम के बच्चे का **खतना** यहूदी प्रथा के अनुसार किया जाता है और उन्हें यीशु नाम दिया जाता है। यह नाम गर्भधारण से पहले परमेश्वर ने उन्हें जिब्राईल के माध्यम से दिया था। याद रखें कि खतना शब्द प्रधान शब्दावली में है।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के

एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 2:1–21

Audio Content

webm zip (4397012 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (7658192 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 2:22–40

सुनना और मनन करना

लूका 2:22–40 सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे यह कथा सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच तैयार करना

लूका 2:22–40

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु के जन्म और खतना के बाद मरियम और यूसुफ को मूसा की व्यवस्था के अनुसार एक शुद्ध भेंट चढ़ानी पड़ती थी। शुद्धि के चढ़ावे की आवश्यकता मरियम को जन्म देने के बाद फिर से स्वच्छ होने के लिए थी। उन्होंने बैतलहम से यरूशलेम के मंदिर में जाने के लिए यीशु के साथ यात्रा की।

रुकें और अपनी टीम को बैतलहम से यरूशलेम का मार्ग दिखाएं।

मूसा की व्यवस्था वह थी जो परमेश्वर ने इस्राएलियों को मूसा के माध्यम से दी थी। परमेश्वर का नियम कहता था कि जब कोई स्त्री एक लड़के को जन्म देती थी, तो वह 40 दिन तक अशुद्ध हो जाती थी। स्वच्छ होने की स्थिति वह है जिसमें कोई परमेश्वर की सेवा करने के लिए योग्य होता है। अस्वच्छ किसी ऐसे व्यक्ति को संदर्भित करता है जो परमेश्वर की सेवा के लिए योग्य नहीं है। लोग अपनी कर्मों व स्वास्थ्य की स्थिति के आधार पर फिर से अपवित्र या पवित्र हो सकते हैं। परमेश्वर के नियम के अनुसार मरियम को जन्म के 40 दिन बाद तक प्रतीक्षा करनी चाहिए और उसके बाद स्वच्छ होने के लिए एक बलि चढ़ानी चाहिए।

यूसुफ को शुद्ध होने के लिए कोई भेंट नहीं करनी थी, लेकिन वे फिर भी मरियम के साथ जाते हैं क्योंकि यह एक पारिवारिक मामला है। वे यरूशलेम तक यात्रा करते हैं क्योंकि वहीं पर मंदिर स्थित था। मंदिर वह स्थान होता था जहां याजक लोगों की ओर से परमेश्वर के लिए बलि चढ़ाते थे। मरियम और यूसुफ भी उनके पुत्र को परमेश्वर को समर्पित करने के लिए गए थे। मूसा की व्यवस्था यह कहती थी कि हर पहिलौठा पुत्र परमेश्वर का होता था या उसे परमेश्वर के लिए समर्पित किया जाता था। मरियम और यूसुफ परमेश्वर की

उपासना करने और मूसा के नियमानुसार कार्य पूरा करने के लिए मंदिर में गए।

आपकी संस्कृति में बच्चे के जन्म से संबंधित परंपराएं क्या होती हैं? पहिलौठे बच्चे और बाद के बच्चों के लिए परंपराओं के बीच क्या अंतर है?

मरियम और यूसुफ ने मंदिर के याजकों में से एक को दो कबूतर या दो कपोतों का अपना बलिदान दिया। तब पुरोहित ने एक समारोह के दौरान पक्षियों को मार डाला ताकि मरियम फिर से स्वच्छ हो सके। यहूदी कानून के अनुसार, शुद्धि के बलिदानों के लिए कपोतों या कबूतरों का इस्तेमाल तभी किया जाता था जब स्त्री एक भेड़ के बच्चे का खर्च नहीं उठा सकती थी। जंगली कबूतर और कपोत ही ऐसे दो पक्षी थे जिन्हें बलि के लिए स्वीकार किया जाता था। ये दोनों पक्षी एक ही पक्षी परिवार के हैं जिन्हें अंग्रेजी में "डव्स" या "पीजेंस" कहा जाता है।

रुकें और एक जंगली कबूतर और कपोत का चित्र दिखाएं।

शमौन एक ऐसा व्यक्ति था जो यरूशलेम में रहता था। वे एक धर्मी व्यक्ति थे जो परमेश्वर द्वारा इस्राएल को प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता को भेजे जाने की प्रतीक्षा कर रहे थे। धर्मी का मतलब है कि शमौन का परमेश्वर के साथ एक सही संबंध था। पवित्र आत्मा ने शमौन पर यह खुलासा किया था कि मरने के पहले वे उद्धारकर्ता को देखेंगे। पवित्र आत्मा शमौन को उसी दिन मंदिर के एक प्रांगण में जाने के लिए प्रेरित करती है जिस दिन यूसुफ और मरियम वहां हैं।

शमौन पहचान लेते हैं कि यीशु कौन है और परमेश्वर की स्तुति करते हुए उन्हें अपने गोद में ले लेते हैं। शमौन कहते हैं कि अब वे शांति में मर सकते हैं क्योंकि परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की है और उन्हें मसीहा को देखने का अवसर दिया है। जब शमौन कहते हैं कि उन्होंने परमेश्वर के उद्धार को देखा है, तो इसे "प्रभु का मसीह" या "परमेश्वर का मसीहा" के रूप में भी अनुवादित किया जा सकता है। दोनों उपाधियां एक ही व्यक्ति को संदर्भित करती हैं। शमौन जानते थे कि यीशु मसीह ही इस्राएल के उद्धार थे क्योंकि वे ही परमेश्वर द्वारा उन्हें बचाने के लिए भेजे गए थे। शमौन कहते हैं कि यह उद्धार यहूदी और गैर यहूदी सभी लोगों के लिए है। शमौन यीशु को ऐसे प्रकाश के रूप में वर्णित करते हैं जो सभी देशों के लिए परमेश्वर को प्रकट करेगा। ठीक जिस तरह प्रकाश लोगों को देखने की अनुमति देता है, उसी तरह यीशु लोगों को परमेश्वर और उनके चरित्र के बारे में बातें जानने की अनुमति देंगे। यूसुफ और मरियम जो कुछ वे कहते हैं, उससे अचम्भित हो जाते हैं।

तब शमौन मरियम को बताते हैं कि यीशु कुछ लोगों के लिए उत्थान का कारण बनेंगे लेकिन कई अन्य पतित हो जाएंगे। जिन लोगों का उत्थान होगा वे, ऐसे लोग होंगे जो यीशु को मसीहा के रूप में स्वीकार करेंगे और उनका उद्धार किया जाएगा। जिनका पतन होगा वे, ऐसे लोग होंगे जो यीशु को अस्वीकार करेंगे और परमेश्वर के न्याय और विनाश का सामना करेंगे। शमौन कहते हैं कि यीशु परमेश्वर से एक ऐसा संकेत हैं जिसे कई लोग अस्वीकार कर देंगे। इस कारण कई लोगों के विचार प्रकट होंगे। शमौन कहते हैं कि एक तलवार मरियम के हृदय में बींध जाएगी, जिसका अर्थ है कि मरियम को बहुत दुख होगा। यह एक भविष्यद्वाणी थी। वे कुछ ऐसी बात का जिक्र कर रहे हैं जो भविष्य में घटित होगी।

रुकें और एक तलवार का चित्र दिखाएं, ताकि अनुवाद के लिए इसे बेहतर तरीके से समझा जा सके। आपकी संस्कृति यह किस तरह समझाती है कि किसी को गहरा दुख है या होगा।

हन्नाह नाम की एक बुजुर्ग महिला थीं जो एक यहूदी भविष्यद्वक्ता थीं। हन्नाह भी मंदिर में थीं। वे 84 वर्ष की थीं और पति की मृत्यु के बाद से एक विधवा के रूप में ही रहती थीं। हन्नाह ने संभवत: कभी भी मंदिर के प्रांगण को नहीं छोड़ा होगा। वे मंदिर में उपासना, प्रार्थना और उपवास करती थीं। उपवास का मतलब है कि वे परमेश्वर के प्रति उनकी उपासना के एक अंश के रूप में एक अवधि तक भोजन नहीं करेंगी।

जिस समय शमौन बात कर रहे थे, तभी हन्नाह मरियम और यूसुफ के पास पहुंच जाती हैं और प्रतिज्ञा के अनुसार यीशु को भेजने के लिए परमेश्वर की स्तुति करने लगती हैं। वे हर किसी को यीशु के मसीहा होने के बारे में बताती हैं। मसीहा ऐसे किसी को संदर्भित करता है जिसे परमेश्वर एक विशेष कार्य के लिए नियुक्त करते हैं। मरियम और यूसुफ परमेश्वर के नियम की सभी आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। वे नसरत अपने घर लौट जाते हैं। यीशु बलवन्तता में बड़े होते गए और बहुत ही बुद्धिमान हो गए। जैसे-जैसे वे बड़े होते गए वे परमेश्वर को प्रसन्न करते गए।

यह कथा परमेश्वर के समक्ष यीशु को प्रस्तुत करके और मंदिर में शुद्धि का बलिदान देने के द्वारा परमेश्वर के नियम के प्रति मरियम और यूसुफ के आज्ञाकारी होने को दर्शाती है। हम देखते हैं कि दो धर्मी इस बात की पुष्टि करते हैं कि यीशु ही वह उद्धारकर्ता हैं जिनकी प्रतीक्षा यहूदी कर रहे थे।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 2:22–40

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य बनाने में समूह की मदद करेंगे। आप कथा के दृश्यों, माहौल और कथा का चरित्र गढ़ने में समूह की मदद करेंगे।

इस कहानी के चार दृश्य हैं।

पहला दृश्य: यूसुफ और मरियम उनके बच्चे को बैतलहम से यरूशलेम ले जाते हैं ताकि वे मूसा के नियम के अनुसार परमेश्वर को भेंट दे सकें।

दूसरा दृश्य: शमौन एक ऐसे व्यक्ति थे जो मरने से पहले प्रभु के मसीहा को देखने की प्रतीक्षा कर रहे थे। वे यरूशलेम में रहते थे। जब उन्होंने यीशु को मंदिर में देखा तो उन्होंने परमेश्वर की स्तुति की। उन्होंने माता-पिता को आशीर्वाद दिया और मरियम को बच्चे के भविष्य के बारे में बताया।

तीसरा दृश्य: हन्नाह नामक एक भविष्यद्वक्ता भी मंदिर में थीं। जब शमौन मरियम और यूसुफ से बात कर रही होती हैं तब वे उनके पास पहुंचती हैं और परमेश्वर की स्तुति करती हैं। हर ऐसे जन को जो उद्धारकर्ता की प्रतीक्षा कर रहा होता है, उन्हें वे बच्चे के बारे में बताती हैं।

चौथा दृश्य: परमेश्वर के नियम को आवश्यक सभी कुछ करने के बाद यीशु और उनके माता-पिता नासरत वापस आते हैं। यीशु स्वस्थता में बड़े होते हैं और उनके पास परमेश्वर का अनुग्रह होता है।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यूसुफ
- मरियम
- यीशु
- पुजारी
- शमौन
- पवित्र आत्मा
- कई लोग जिनका पतन होगा / जो उनका विरोध करेंगे।
- कई जिनका उत्थान होगा
- हन्नाह
- मंदिर में लोग

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल का इस्तेमाल करे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यहूदी कानून के अनुसार मरियम यीशु को जन्म देने के बाद 40 दिन तक अशुद्ध रही थीं। उन 40 दिनों के बाद मरियम यरूशलेम के मंदिर में जा रही हैं ताकि वे फिर से शुद्ध हो सकें। साथ ही यह याद रखना भी महत्वपूर्ण है कि मरियम एक भेड़ का बच्चा नहीं खरीद पा रही हैं। वे बदले में दो पक्षी लाते हैं। यूसुफ मरियम के साथ यात्रा कर रहे हैं ताकि वे उनके पहिलौठे पुत्र यीशु को मंदिर में परमेश्वर के समक्ष पेश कर सकें। यह परमेश्वर का नियम जो कहता था उसके अनुसार था।

शमौन एक धर्मी व्यक्ति थे। उनके परमेश्वर के साथ सही संबंध थे। शमौन इस्राएलियों को बचाने के लिए प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता के आने की तीव्र इच्छा के साथ प्रतीक्षा कर रहे थे। पवित्र आत्मा ने शमौन को बताया कि जब तक वे मसीहा को नहीं देखते तब तक वे मृत्यु को प्राप्त नहीं होंगे।

जिस दिन मरियम और यूसुफ मंदिर में आ रहे थे उस दिन पवित्र आत्मा ने शमौन के वहां रहने का नेतृत्व किया। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि पवित्र आत्मा शमौन में सक्रिय है। न केवल मंदिर में वरन् हर घटना जो घटती है उसमें उनका नेतृत्व रहता है।

शमौन बच्चे को अपने गोदी में ले लेते हैं और परमेश्वर की स्तुति करते हैं। शमौन परमेश्वर को बताते हैं कि वे अब शांति से मर सकते हैं क्योंकि उन्होंने सभी लोगों के लिए उद्धार देख लिया है। शमौन कहते हैं कि यीशु सभी देशों को यह दिखाएंगे कि परमेश्वर कौन है। ये शब्द यीशु के माता-पिता को आश्चर्य कराते हैं। शमौन मरियम को बताते हैं कि कई लोग यीशु को अस्वीकार कर देंगे और अन्य कई उन्हें स्वीकार करेंगे। साथ ही शमौन मरियम को बताते हैं कि उन्हें बहुत दुख होगा क्योंकि उनके पुत्र को अस्वीकार कर दिया जाएगा।

हन्नाह एक भविष्यद्वक्ता थीं। अन्ना 84 वर्ष की थीं और उनके विवाह के सात वर्ष बाद उनके पति की मृत्यु हो गई थी। उन्होंने कभी मंदिर नहीं छोड़ा था। वे दिन - रात वहां रह कर प्रार्थना और उपवास करती थीं। जब शमौन मरियम और यूसुफ के साथ बात कर रहे थे तब वे वहां पहुंचती हैं और परमेश्वर की स्तुति करती हैं। ऐसे सभी लोगों को जो यरूशलेम को बचाने के लिए परमेश्वर के आने की उम्मीद कर रहे थे, हन्नाह उन्हें यीशु के बारे में बताती हैं।

व्यवस्था के अनुसार जो कुछ आवश्यक था उसे पूरा करने के बाद यीशु के माता-पिता नासरत लौट जाते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु के माता-पिता वही कुछ कर रहे हैं जिसकी आवश्यकता व्यवस्था को होती है। वे पक्षी याजक को देते हैं। पुजारी उन्हें बलि चढ़ा देते हैं इसलिए मरियम फिर से शुद्ध हो जाती हैं।

यीशु नासरत में पले बढ़े और वे ज्ञान से भर गए। परमेश्वर उनके साथ थे।

संभवत: टीम कहानी के घटनाक्रम को पुन:व्यवस्थित करना और दृश्यों के क्रम को परिवर्तित करना चाहे, ताकि वास्तव में जो कुछ हुआ उसे अधिक सटीकता से प्रतिबिंबित किया जा सके: हन्ना भविष्यद्वक्ता ने कई वर्ष पहले अपने पति को खो दिया था। वे लगभग हर समय, दिन और रात यरूशलेम के मंदिर में रहते हुए परमेश्वर की उपासना, प्रार्थना और उपवास करते हुए रहती थीं। शमौन यरूशलेम में एक ऐसे व्यक्ति हैं जो मसीहा के आने और इस्राएल को मुक्त किए जाने की प्रतीक्षा कर रहे थे। पवित्र आत्मा ने उन्हें यह खुलासा किया कि जब तक वे मसीहा को नहीं देखते तब तक वे मरेंगे नहीं।

यीशु को जन्म देने के बाद मरियम चालीस दिन तक मंदिर में जाने के लिए प्रतीक्षा करती रहीं, ताकि वे व्यवस्था के अनुसार

शुद्ध होने के लिए उनकी भेंट चढ़ा सकें। साथ ही यूसुफ मरियम के साथ यीशु को परमेश्वर को समर्पित करने जाते हैं। उस दिन पवित्र आत्मा शमौन को मंदिर में ले गईं। उन्होंने यीशु को देखा और उन्हें अपनी गोद में ले लिया। शमौन परमेश्वर की स्तुति करते हैं। उसके बाद वे मरियम से बात करते हैं और उन्हें यीशु के भविष्य के बारे में और उन्हें जो दुख होगा उस बारे में बताते हैं। जब शमौन बात कर रहे होते हैं तभी हन्नाह पहुंच जाती हैं। इस पूरे समय हन्नाह पहले से ही मंदिर में थीं। वे परमेश्वर की स्तुति करने लगती हैं। ऐसे सभी लोग जो इस्राएल को बचाने के लिए परमेश्वर की प्रतीक्षा कर रहे थे, हन्नाह उनसे यीशु के बारे में बात करती हैं। क्योंकि माता-पिता ने व्यवस्था को आवश्यक सब कुछ कर दिया था, इसलिए वे नासरत लौट गए। यीशु स्वस्थ होते हैं और परमेश्वर का अनुग्रह पाते हैं।

दृश्य कुछ इस तरह लग सकते हैं:

पहला दृश्य: हन्नाह नाम की एक भविष्यद्वक्ता लगभग प्रतिदिन मंदिर में परमेश्वर की उपासना करते हुए रहती थीं।

दूसरा दृश्य: शमौन एक व्यक्ति थे जो प्रभु के मसीहा को देखने की प्रतीक्षा कर रहे थे। पवित्र आत्मा से उन्हें उसी दिन मंदिर में जाने की प्रेरणा मिलती है, जिस दिन मरियम, यूसुफ और यीशु मंदिर में जा रहे होते हैं।

तीसरा दृश्य: मरियम यीशु को जन्म देने के बाद शुद्ध होने का चढ़ावा चढ़ाने के लिए मंदिर में जाने के लिए 40 दिन तक प्रतीक्षा करती हैं। यूसुफ उनके साथ यीशु को यरूशलेम ले जाने के लिए जाते हैं ताकि वे यीशु को मूसा की व्यवस्था के अनुरूप परमेश्वर को समर्पित कर सकें।

चौथा दृश्य: शमौन बच्चे को देखते ही परमेश्वर की स्तुति करते हैं और वे उन्हें आशीर्वाद देते हैं। वे एक कविता के रूप में उनकी स्तुति करते हैं। वे मरियम को बच्चे के भविष्य के बारे में बताते हैं। जब शमौन मरियम और यूसुफ के साथ बात कर रहे होते हैं तब हन्नाह वहां पहुंच जाती हैं। वे परमेश्वर की स्तुति करती हैं और लोगों को बच्चे के उद्धारकर्ता होने के बारे में बताती हैं।

पांचवां दृश्य: यीशु और उनके माता-पिता व्यवस्था की आवश्यकता पूरी करने के बाद नासरत लौट आते हैं। यीशु स्वस्थता में बड़े होते हैं और उन पर परमेश्वर का अनुग्रह होता है।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 2:22–40

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी में पांच दृश्य हैं।

लूका *2:22–40*

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यूसुफ
- मरियम
- यीशु
- याजक
- शमौन
- पवित्र आत्मा
- कई लोग जिनका पतन होगा / जो उनका विरोध करेंगे।
- कई जिनका उत्थान होगा
- हन्नाह
- मंदिर में लोग

मण्डली से कहानी को दो बार अभिनीत करवाएं। पहले मण्डली से बिना रुके कहानी का अभिनय कराएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है और उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

यह सुनिश्चित करें कि मण्डली इस बात का अभिनय करे कि मरियम के यीशु को जन्म देने के पहले से ही हन्नाह पूरे समय मंदिर में होती हैं। हन्ना, शमौन और मरियम, यूसुफ और यीशु के आगमन से पहले से वहां मौजूद होती हैं। शमौन को मंदिर में मार्गदर्शन देते हुए बच्चे को लेने का, परमेश्वर की स्तुति करने का और मरियम से बात करने हेतु पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन का अभिनय करें।

यह सुनिश्चित करें कि टीम यीशु द्वारा यीशु को देखने पर उन्हें अपनी गोद में लेने का अभिनय करे।

याद रखें कि हन्नाह तब आती हैं जब शमौन अभी भी मरियम और यूसुफ से बात कर रहे होते हैं।

यह सुनिश्चित करें कि टीम मरियम द्वारा दो पक्षियों को एक याजक को भेंट के लिए देने का अभिनय करे। याजक वह होता है जो एक नेगचार में पक्षियों की बलि देता है।

दूसरी बार जब टीम इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

हन्नाह का अभिनय करें। वे एक 84 वर्षीय भविष्यद्वक्ता हैं। विवाह के केवल सात वर्ष बाद ही अपने पति को खोकर वे एक विधवा के रूप में रहती थीं। वे लगभग हर दिन मंदिर में रहकर दिन और रात परमेश्वर की उपासना, उपवास और प्रार्थना के करती हैं।

अभिनय को बंद करें। हन्नाह का किरदार अदा करने वाली अभिनेत्री से पूछें, "आप कैसा महसूस करती हैं?" आप सुन सकते हैं "परमेश्वर मेरी शक्ति है," "मैं परमेश्वर की प्रतीक्षा कर रही हूं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

शमौन यरूशलेम में एक ऐसे व्यक्ति हैं जो मसीहा के आने और इस्राएल को मुक्त किए जाने की प्रतीक्षा कर रहे थे। पवित्र आत्मा ने उन्हें यह खुलासा किया था कि जब तक वे मसीहा को नहीं देखते तब तक वे मरेंगे नहीं।

अभिनय को बंद करें। शमौन का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप सुन सकते हैं "मैं प्रसन्न हूं कि मैं मसीहा को देखूंगा," "मुझे विश्वास है कि परमेश्वर उनके वचन को पूरा करेंगे," "मैं उन्हें कब देखूंगा?" अभिनय को फिर से शुरू करें।

शुद्ध होने का चढ़ावा चढ़ाने के लिए मंदिर में जाने के लिए जन्म देने के बाद मरियम 40 दिन तक प्रतीक्षा करती रहीं। यूसुफ उनके साथ यीशु को लेकर यरूशलेम जाते हैं ताकि वे उन्हें परमेश्वर को समर्पित कर सकें। पवित्र आत्मा शमौन को उस समय मंदिर में रहने के लिए ले जाती है जब मरियम, यूसुफ और यीशु का आगमन होता है।

अभिनय को बंद करें। शमौन का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप सुन सकते हैं "क्या आज ही वह दिन है?" "मैं उत्साहित हूं कि मैं मसीहा को देखूंगा," "मुझे उम्मीद है कि आज ही वह दिन होगा।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

जब शमौन बच्चे को देखते हैं तो परमेश्वर की स्तुति करते हैं। शमौन यीशु को अपनी गोद में ले लेते हैं और वे उन्हें आशीर्वाद देते हैं। तब शमौन मरियम को बच्चे के भविष्य के बारे में और उन्हें दुख का अनुभव होगा इस बारे में बताते हैं।

अभिनय को बंद करें। मरियम का पात्र निभाने वाली अभिनेत्री से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रही हैं?" आप सुन सकते हैं "मैं परमेश्वर की योजनाओं में आनन्दित हूं," "मुझे दुख है कि लोग मेरे पुत्र को अस्वीकार करेंगे," "कभी मुझे दुख होगा इस बात से मुझे डर लगता है।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

जब शमौन मरियम और यूसुफ के साथ बात कर रहे और परमेश्वर की स्तुति कर रहे होते हैं तब हन्नाह शमौन के साथ आती हैं। ऐसे लोग जो परमेश्वर द्वारा यरूशलेम को बचाए जाने की प्रतीक्षा कर रहे थे, उन्हें वे बच्चे के बारे में बताती हैं।

अभिनय को बंद करें। हन्नाह का किरदार निभाने वाली अभिनेत्री से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रही हैं?" आप सुन सकते हैं "मुझे खुशी है कि मैंने मसीहा को देखा," "इन सभी वर्षों की प्रतीक्षा के बाद अंततः," "मुझे लगता है कि मैं हर किसी को बताना रोक नहीं सकती।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु के माता-पिता परमेश्वर के नियम की पूर्ति के लिए सब कुछ करते हैं और वे नासरत लौट जाते हैं। यीशु स्वस्थता में बड़े होते हैं और उन पर परमेश्वर का अनुग्रह होता है।

अभिनय को बंद करें। यूसुफ और मरियम का किरदार निभाने वाली अदाकारों से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप सुन सकते हैं "मुझे एक बड़ी जिम्मेदारी महसूस होती है," "विस्मय" "मेरे पुत्र के लिए प्यार।" "यीशु का विकास कैसे होता है इसे देखने के लिए उत्साहित हैं।"

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 2:22–40

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

मरियम यीशु को जन्म देने के बाद यूसुफ के साथ यरूशलेम जाती हैं। वे **शुद**्धि की भेंट चढ़ाने के लिए मंदिर जाते हैं। यरूशलेम में यह एक विशेष स्थान होता था जहां याजक परमेश्वर के साथ मिल सकते थे और लोगों की ओर से बलि चढ़ाते थे । चूंकि मरियम और यूसुफ याजक नहीं थे इसलिए वे केवल मंदिर के प्रांगण में प्रवेश कर सकते थे न कि मुख्य इमारत में। मंदिर के लिए उसी शब्द का इस्तेमाल करना सुनिश्चित करें जैसा कि आपने लूका के पिछले अंशों में किया है। मंदिर की एक पूर्ण परिभाषा आपको प्रधान शब्दावली में मिल सकती है। मूसा की व्यवस्था के अनुसार **शुद्धि** का चढ़ावा मरियम के लिए आवश्यक था। शुद्धि का मतलब फिर से स्वच्छ होना है। शुद्धि का चढ़ावा प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है। एक पुत्र को जन्म देने वाली किसी भी यहूदी महिला को जन्म देने के बाद चालीस दिन तक अशुद्ध समझा जाता था। इस दौरान उन्हें किसी पवित्र वस्तु को छूने या मंदिर में प्रवेश करने की अनुमति नहीं होती थी। 40 दिनों की अवधि को "उनके शुद्धि का समय" कहा जाता था। उसके बाद बलि चढ़ाने पर ही वह महिला फिर से स्वच्छ होती थी। इसे शुद्धि की भेंट के रूप में जाना जाता था। बलि के बाद मरियम फिर से सार्वजनिक रूप से परमेश्वर की उपासना करने में सक्षम हो सकती थीं। स्वच्छ या अस्वच्छ होने की स्थिति एक ऐसी स्थिति को संदर्भित करती है जिसमें कोई परमेश्वर की सेवा के लिए योग्य या अयोग्य होता है। **मूसा की व्य**वस्था वह है जो परमेश्वर ने इस्राएलियों को मूसा के माध्यम से दी थी।

जब लूका **शुद**्धि की भेंट के बारे में कहते हैं तो यह यूसुफ और मरियम दोनों को संदर्भित करता है। परमेश्वर के नियम में यूसुफ को शुद्ध होने की आवश्यकता नहीं थी। वे इसलिए आए क्योंकि यह एक पारिवारिक मामला था। इसे एक तरह से अनुवाद करना सुनिश्चित करें जिसमें यह कहना सबसे स्वाभाविक हो कि केवल मां को ही स्वच्छ होना आवश्यक था।

मरियम और यूसुफ न केवल बलि चढ़ाने के लिए मंदिर तक यात्रा कर रहे थे बल्कि वे **यीशु को परमेश्वर को समर्पित** भी करने जा रहे थे। परमेश्वर का नियम कहता है कि यदि एक महिला का पहला बच्चा एक लड़का होता है तो उन्हें **परमेश्वर के लिए अर्पित किया जाना** चाहिए। इसका मतलब है कि बच्चा परमेश्वर के लिए समर्पित होगा और परमेश्वर बच्चे को अर्पित या पवित्र के रूप में देखेंगे। इसका मतलब है कि वे यीशु को एक याजक के पास ले गए ताकि यह प्रदर्शित किया जा सके कि यीशु परमेश्वर की सेवा के लिए उनके हो गए थे। सुनिश्चित करें कि आप **पवित्र** के उसी अनुवाद का उपयोग करें जैसा कि आपने लूका के पिछले चरणों में किया है। पवित्र शब्द प्रधान शब्दावली में है।

मरियम को मंदिर में बलि चढ़ाने की आवश्यकता थी। एक **बलिदान** परमेश्वर को धन्यवाद देने या उनसे क्षमा मांगने के लिए किया जाने वाला कृत्य है। बलिदान के लिए उसी परिभाषा का इस्तेमाल करें जैसा कि आपने लूका के पिछले अंशों में किया है। बलिदान शब्द प्रधान शब्दावली में है। रक्त बलि में एक समारोह के दौरान किसी प्राणी को मारने की आवश्यकता होती है। उपासक एक पशु को परमेश्वर के लिए एक उपहार के रूप में मारने और जलाने के लिए एक याजक के पास लाते थे ताकि यह दिखाया जा सके कि वे परमेश्वर के लिए पूरी तरह समर्पित थे। पशु बलि से उनके पाप धुल जाएंगे और वे फिर से स्वच्छ हो जाएंगे।

मरियम को जो बलि चढ़ानी थी वह दो जंगली कबूतर या दो कपोत थे। परमेश्वर की व्यवस्था में कोई महिला जब भेड़ के बच्चे का खर्च नहीं उठा सकती थी तो यह आवश्यक था। **जंगली कबूतर और कपोत** दो प्रकार के पक्षी हैं जो एक ही पक्षी परिवार से संबंधित होते हैं। जंगली कबूतर कबूतरों की एक छोटी प्रवासी प्रजाति है। मरियम के समय में ये पालतू पक्षी होते थे और बलि के लिए व्यवस्था द्वारा अनुमत किए गए एकमात्र प्रकार का पक्षी थे। कबूतरों को स्वच्छ और शांतिपूर्ण प्राणी माना जाता है।

यहां रुकें और अपनी टीम से चर्चा करें। अगर आपकी संस्कृति में कपोत या जंगली कबूतर नहीं होते हैं तो दो प्रकार के पक्षियों का एक चित्र दिखाएं, जिससे बेहतर अनुवाद हो सके। यदि पक्षियों के इस परिवार को वर्णित करने के लिए केवल एक ही शब्द हो, तो आप कबूतर/कपोत के लिए अपने शब्द का इस्तेमाल कर सकते हैं और फिर दूसरे को एक अन्य प्रकार के कबूतर/कपोत के रूप में वर्णित कर सकते हैं।

अब, शमौन नाम का एक व्यक्ति थे जो यरूशलेम में रहता था। अब का मतलब है कि शमौन पहले ही यरूशलेम में उस समय रहते थे जिस समय मरियम और यूसुफ मंदिर में गए थे। लूका इसे पृष्ठभूमि की जानकारी के रूप में लिखते हैं। इस नए व्यक्ति को अपनी भाषा में एक स्वाभाविक तरीके से कहानी में पेश करना सुनिश्चित करें। शमौन एक धर्मी और भक्त व्यक्ति थे जो परमेश्वर द्वारा मसीहा को भेजे जाने की प्रतीक्षा कर रहे थे। जब कोई **धर्मी** होता है तो परमेश्वर के साथ उनका एक सही संबंध होता है। धर्मी शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है। **भक्त** का मतलब है ऐसा कोई व्यक्ति जो परमेश्वर के लिए बड़ा सम्मान रखता है परमेश्वर द्वारा आवश्यक कार्य करने के लिए सावधान रहता है । धर्मी और मसीहा के लिए उसी शब्द का इस्तेमाल सुनिश्चित करें जैसा कि आपने लूका के पिछले अंशों में किया है।

पवित्र आत्मा ने शमौन को बताया कि जब तक वे **प्रभु के मसीहा** को नहीं देखेंगे तब तक वे मृत्यु को प्राप्त नहीं होंगे। प्रभु का संदर्भ परमेश्वर से है और मसीहा परमेश्वर द्वारा राजा और उद्धारकर्ता के रूप में भेजे गए नियुक्त व्यक्ति को संदर्भित करता है। प्रभु का मसीहा या प्रभु के मसीह का मतलब है "परमेश्वर द्वारा नियुक्त या प्रतिज्ञा किया गया।" मसीहा शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है। पवित्र आत्मा शमौन को मंदिर में ले जाती है। सुनिश्चित करें कि आप **पवित्र आत्मा** के लिए उसी शब्द या वर्णन का इस्तेमाल करें जैसा कि आपने लूका के अन्य भागों में किया है। पवित्र आत्मा को प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है। जब शमौन ने यीशु को देखा, तो उन्होंने बच्चे को अपनी गोदी में उठा लिया। उठाना इस मामले में लेने के रूप में अनुवादित किया जा सकता **है**। इसका मतलब है कि यूसुफ और मरियम ने राजी से शमौन को यीशु को गोदी में उठाने की अनुमति दी।

तब शमौन परमेश्वर की स्तुति करते हैं। उनकी स्तुति कविता के रूप में की जाती है। शमौन परमेश्वर **को सर्वश्रेष्ठ प्रभु** कहते हैं। यहां इस्तेमाल किए गए यूनानी शब्द को "स्वामी" के रूप में अनुवादित किया जा सकता है। यह वही है जो एक दास अपने मालिक को कहता था। शमौन परमेश्वर को बताते हैं "**आप अब अपने दास को शांति से जाने दे सकते** हैं।" इस वाक्यांश का मतलब केवल इतना है कि शमौन अब शांति या संतुष्टि में मर सकते हैं क्योंकि परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर दी थी। जब शमौन **आपका उद्धार** कहते हैं तो वह प्रभु के मसीहा कहने का ही एक और तरीका है। वे मसीहा को आपके उद्धार के रूप में वर्णित करते हैं क्योंकि वे ही थे जिन्हें परमेश्वर ने लोगों को बचाने के लिए भेजा था। शमौन कहते हैं कि परमेश्वर का उद्धार **सभी लोगों की नजरों के सामने** है। इसका मतलब है कि यहूदी और अन्य देशों दोनों ही परमेश्वर के उद्धार को देखेंगे। वे कहते हैं कि यीशु **अन्यजातियों के लिए प्रकाशन की एक ज्योति** हैं। यीशु एक ज्योति की तरह हैं क्योंकि वे परमेश्वर और उनके चरित्र को अन्यजातियों या गैर यहूदी लोगों के लिए प्रकट करेंगे। यीशु इस्राएल के लिए **महिमा** या सम्मान लाएंगे

यहां रुकें और अपनी टीम से चर्चा करें। आप अपनी संस्कृति में चरम आनंद और कृतज्ञता कैसे व्यक्त करते हैं? आप अपनी भाषा में परमेश्वर की स्तुति कैसे करते हैं?

तब शमौन मरियम से बात करते हैं। वे उन्हें बताते हैं कि कुछ लोगों का यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करने से

उत्थान होगा जबकि अन्य लोग जो उन्हें अस्वीकार करेंगे उनका पतन होगा। यीशु परमेश्वर की ओर से एक ऐसा संकेत होंगे जिन्हें कई लोग अस्वीकार कर देंगे। यह अस्वीकृति कई दिलों के विचार दिखाएगी। सुनिश्चित करें कि हृदय के अनुवाद के लिए उसी शब्द का उपयोग करें जैसा आपने पहले किया है। शमौन एक भविष्यद्वाणी करते हैं या परमेश्वर की ओर से एक संदेश कहते हैं कि **तलवार उनकी आत्मा को बींध देगी।** शमौन एक तुलना कर रहे हैं। तलवार एक लंबी, सीधे दोहरी धार वाली चाकू होती थी। आत्मा एक ऐसे व्यक्ति को संदर्भित करती है जहां भाववेश होते हैं। शमौन भविष्य की घटनाओं की बात कर रहे हैं जब लोग यीशु को अस्वीकार करेंगे और क्रूस पर चढ़ाएंगे। मरियम को जो दुख होगा वह इतना बड़ा होगा कि उन्हें ऐसा लगेगा मानो किसी ने उन्हें तलवार से बींध दिया हो।

हन्नाह एक विधवा और एक **भविष्यद्वक्ता स्त्री** थीं जो भी मंदिर में थीं। भविष्यद्वक्ता स्त्री एक ऐसी महिला होती है जो भविष्यकथन करती हैं। भविष्यद्ववक्ता का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने लूका के अन्य अंशों में किया है। भविष्यद्वक्ता शब्द प्रधान शब्दावली में है। उन्होंने **कभी मंदिर नहीं छोड़ा** यह कहने का एक तरीका है कि वे अक्सर मंदिर में रहती थीं। वे प्रार्थना, **उपवास** और परमेश्वर की उपासना करती थीं। उपवास का मतलब है कि हन्नाह कुछ खाती नहीं थी ताकि उनकी उपासना के एक हिस्से के रूप में वे केवल परमेश्वर और उनके राज्य के बारे में सोच सकें। शमौन ने यीशु के बारे में जो कुछ कहा था वह उन्होंने सुना और परमेश्वर की स्तुति की। ऐसे सभी यहूदी जो मसीहा की प्रतीक्षा कर रहे थे उन्हें उन्होंने यीशु के उद्धारकर्ता होने के बारे में बताया।

मरियम और यूसुफ **ने प्रभु की व्यवस्था की सभी आवश्यकताओं को पूरा किया**। इसका मतलब है कि उन्होंने मरियम की शुद्धि के लिए बलिदान दिया था और उन्होंने यीशु को परमेश्वर के लिए समर्पित कर दिया था। वे नासरत में अपने घर लौट गए। यीशु ज्ञान में वृद्धि करते हैं और परमेश्वर की कृपा उन पर होती है। **ज्ञान** का संदर्भ विशेष रूप से आध्यात्मिक मामलों में समझ और अंतर्दृष्टि से है। **परमेश्वर की कृपा** का मतलब है कि परमेश्वर ने लगातार यीशु पर अनुग्रह किया और उन्हें आशीर्वाद दिया। इस मामले में अनुग्रह का मतलब है कि परमेश्वर किसी से प्रसन्न हैं क्योंकि वे उन्हें अनुमोदित करते या उनके बारे में अच्छा सोचते हैं। परमेश्वर ने यीशु का अनुमोदन किया और उन्हें एक विशेष कार्य के लिए चुना।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 2:22–40

Audio Content

webm zip (5038302 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (8739442 KB)

लूका *2:41–52*

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 2:41–52

सुनना और मनन करना

लूका 2:41–52 को सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे यह कथा सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

स्टेज सेट करना

लूका 2:41–52

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु नासरत में यूसुफ और मरियम के साथ बड़े होते हैं। यीशु और उनके माता-पिता फसह के पर्व के लिए यरूशलेम लौटते हैं। यीशु को मंदिर में समर्पित किए जाने के बारह वर्ष बाद ऐसा होता है।

हर वर्ष यूसुफ और मरियम फसह का उत्सव मनाने के लिए यरूशलेम की यात्रा करते थे। फसह एक यहूदी धार्मिक उत्सव है। यह उस समय का जश्न मनाता था जब परमेश्वर ने यहूदियों के पूर्वजों को मिस्र में गुलामी से बचाया था। मिस्त्रियों के राजा ने यहूदियों को जाने की अनुमति दी क्योंकि परमेश्वर ने एक रात मिस्त्र के हर पहिलौठे पुत्र को मारने के लिए दूत भेजा। दूत ने किसी भी यहूदी के पहिलौठे पुत्रों को नहीं मारा। वे यहूदियों के सबसे ज्येष्ठ पुत्रों से "दूर रहे" और उनका कोई अहित नहीं किया। इसी वजह से फसह का पर्व यहूदियों के लिए स्वतंत्रता के एक उत्सव की तरह था।

यहां रुकें और अपनी टीम से चर्चा करें। क्या आपकी संस्कृति बड़े धार्मिक उत्सव मनाती है? आप अपने पसंदीदा त्योहारों का कैसे वर्णन करेंगे?

अपने माता-पिता के साथ फसह का पर्व मनाने के समय यीशु 12 वर्ष के थे। यहूदी लड़कों के लिए बारह वर्ष एक महत्वपूर्ण आयु होती थी। यह वह उम्र होती थी जब एक यहूदी लड़का "व्यवस्था का पुत्र" बन जाता था। इसका मतलब है कि परमेश्वर के कानून की क्या आवश्यकता थी इसे वह समझता था और उसके अनुसार जीने की कोशिश करता था। वह 13 वर्ष की आयु में धार्मिक समुदाय में प्रवेश की तैयारी कर रहा होता था।

क्या बच्चों की उम्र आपकी संस्कृति में कोई विशेष महत्व रखती है? आपकी संस्कृति में बच्चे धार्मिक मामलों को किस उम्र से समझने लगते हैं?

फसह का पर्व सात दिन तक चलता था, लेकिन तीर्थयात्री या यहूदी लोग जिन्हें यरूशलेम की यात्रा करनी होती थी, उन्हें केवल दो दिन तक ही रहना पड़ता था। यूसुफ और मरियम नासरत की वापसी यात्रा करना प्रारंभ करते हैं। उन्हें पता नहीं था कि यीशु यरूशलेम में रह गए। साथ में यात्रा करते समय यहूदी सामान्य रूप से छोटे समूहों में चलते थे। यीशु के लिए यात्रा करते समय रिश्तेदारों या मित्रों के साथ चलना सामान्य बात थी। इसी कारणवश यह ध्यान देने से पहले कि यीशु लापता हो गए थे, वे पूरे एक दिन तक यात्रा करते रहे। दल द्वारा एक दिन में 20–25 मील की यात्रा करने के बाद जब रात में शिविर लगाते हैं तो उन्हें ध्यान में आता है कि यीशु लापता हैं। यूसुफ और मरियम रिश्तेदारों और मित्रों से पूछते हैं, लेकिन यीशु उनके साथ नहीं हैं।

यीशु के माता-पिता उन्हें तीन दिन बाद तक नहीं पाते हैं। एक दिन उनकी यात्रा यरूशलेम से जाने वाली थी, दूसरा दिन उनकी यरूशलेम वापिस लौटने की यात्रा थी, और तीसरा दिन जब वे यीशु को मंदिर के एक प्रांगण में पाते हैं। यीशु धार्मिक शिक्षकों के साथ बैठ कर उन्हें सुन रहे थे और सवाल पूछ रहे थे। यीशु और शिक्षकों के बीच की बातचीत सुनने वाले आसपास के लोग चकित हैं। परमेश्वर के कानून को समझने की उनकी क्षमता और शिक्षकों द्वारा उनसे पूछे गए प्रश्नों के जवाब देने की उनकी अद्भुत क्षमता से वे चकित होते हैं। यूसुफ और मरियम को अचम्भा होता है। यीशु की उम्र के एक बच्चे के लिए शिक्षकों के समूह के साथ बैठकर धार्मिक मामलों पर चर्चा करना सामान्य नहीं था। मरियम यीशु से चकित होकर पूछती हैं कि उन्होंने यूसुफ और उनके साथ इस तरह का व्यवहार क्यों किया। इसका मतलब है कि उन्हें बताए बिना वे उन्हें क्यों छोड़ गए। मरियम उन्हें बताती हैं कि वे उन्हें उनकी खोज कर रहे थे क्योंकि वे चिंतित थे।

लूका *2:41–52*

यीशु अलंकारिक प्रश्नों के माध्यम से या ऐसे प्रश्नों के माध्यम से जवाब देते हैं जिनके उत्तर यीशु के विचार से उन्हें पता होना चाहिए थे। वे पूछते हैं कि वे उन्हें क्यों खोज रहे थे। उन्हें लगता है कि उन्हें यह स्पष्ट होना चाहिए था कि वे मंदिर में सवाल पूछते हुए क्यों थे। वे मंदिर को अपने पिता का घर या परमेश्वर का घर कहते हैं। यह निहित है कि यीशु के विचार में उनके लिए मंदिर में होना आवश्यक है। सुनिश्चित करें कि आपकी संस्कृति में लोग "मेरे पिता" को परमेश्वर के संदर्भ में समझें न कि यूसुफ के रूप में। हालांकि, "मेरे *स्वर्गिक* पिता के घर" के रूप में इसका अनुवाद नहीं करें क्योंकि यूसुफ और मरियम उनके जवाब को समझ नहीं पाए थे।

यहां रुकें और अपनी टीम से चर्चा करें। आपकी संस्कृति में बच्चे अपने माता-पिता से कैसे बात करते हैं? माता-पिता अपने बच्चों को कितनी स्वतंत्रता देते हैं?

यीशु अपने माता-पिता के साथ नासरत वापिस लौटते हैं और वे उनके प्रति आज्ञाकारी होते हैं। यीशु ज्ञान में या परमेश्वर जो कहते और लोगों को कराना चाहते हैं उसकी समझ में वृद्धि करते हैं। वे डील-डौल में भी बढ़ते हैं। इसका मतलब है कि उनका शरीर शारीरिक रूप से बढ़ रहा था। यीशु जैसे-जैसे बड़े होते हैं परमेश्वर और लोग दोनों ही यीशु को स्वीकृति देते हैं।

यह कहानी यीशु के संघर्ष को दर्शाती है। यीशु ने अपने स्वर्गिक पिता के साथ घनिष्ठ संबंध रखने की आवश्यकता महसूस की। लेकिन उन्हें अपने माता-पिता के लिए आज्ञाकारी होना भी आवश्यक लगा। यीशु परमेश्वर के कानून और चरित्र की अपनी समझ में बढ़ते हैं। मरियम उन सभी चीजों को याद करती हैं जो हो रही होती हैं और अक्सर उनके बारे में सोचती हैं।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 2:41–52

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य बनाने में समूह की मदद करेंगे। आप कहानी के दृश्यों, सेटिंग्स, व कहानी के चरित्रों को उतारने में समूह की मदद करेंगे।

इस कहानी में पांच दृश्य हैं।

पहला दृश्य: हर वर्ष यरूशलेम में होने वाले फसह के पर्व में मरियम और यूसुफ शामिल होते थे। इस बार वे यीशु को ले जाते हैं जो बारह वर्ष के होते हैं।

दूसरा दृश्य: उत्सव के समाप्त होने के बाद मरियम और यूसुफ अपने घर लौटने की वापसी यात्रा शुरू करते हैं। उसी समय यीशु यरूशलेम में रहते हैं।

तीसरा दृश्य: यात्रा के एक दिन के बाद मरियम और यूसुफ अपने रिश्तेदारों और मित्रों के बीच यीशु की तलाश करते हैं। वे उन्हें नहीं पाते इसलिए वे यरूशलेम वापिस लौटते हैं।

चौथा दृश्य: यरूशलेम से पहली बार निकलने के तीन दिन बाद मरियम और यूसुफ, यीशु को मंदिर में धार्मिक शिक्षकों के साथ बात करते हुए पाते हैं। लोग उनकी समझ और उनके जवाब से विस्मयाभिभूत होते हैं। यीशु के माता-पिता पूछते हैं कि वे पीछे क्यों ठहर गए थे। मरियम और यूसुफ यीशु के जवाब को समझ नहीं पाते हैं।

पांचवां दृश्य: यीशु अपने माता-पिता के साथ घर लौटते हैं। यीशु अपने माता-पिता के प्रति आज्ञाकारी थे। यीशु स्वस्थता में बढ़ते रहते हैं। वे परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं और लोग उनकी सराहना करते हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- यूसुफ
- मरियम
- अन्य यात्री (परिवार और मित्र)
- धार्मिक शिक्षक
- मंदिर में लोग

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल का इस्तेमाल करे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु के माता-पिता हर वर्ष फसह के उत्सव में जाते थे। यह परमेश्वर के प्रति उनकी भक्ति को और यह दर्शाता है कि वे अपने रीति-रिवाजों और परंपराओं का पालन करते थे। इससे यह भी पता चलता है कि यीशु परमेश्वर के प्रति गहरे सम्मान के एक वातावरण में बढ़ रहे थे।

जब यीशु 12 वर्ष के थे तो मरियम और यूसुफ मंदिर में गए। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि वे कम से कम 2 दिन तक यरूशलेम में रहे। फसह का पर्व एक ऐसा समय होता था जब हजारों यहूदी लोग यरूशलेम आते-जाते थे। चूंकि परमेश्वर के नियम में पुरुषों को भाग लेना आवश्यक था, इसलिए हर यहूदी व्यक्ति को उत्सव के लिए यरूशलेम की यात्रा करनी पड़ती थी। वे आमतौर पर अपने परिवारों के साथ यात्रा करते थे।

जब उत्सव का समापन हो जाता था, तो मरियम और यूसुफ अपने घर वापस जाने प्रारंभ करते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि मरियम और यूसुफ ने परमेश्वर के नियम के अनुसार फसह की आवश्यकताओं को पूरा किया। लेकिन यीशु यरूशलेम में पीछे ही रह जाते हैं।

यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि मरियम और यूसुफ ने यीशु को छोड़ नहीं दिया था। पीछे रहना यीशु का अपना निर्णय था। यह भी आवश्यक है कि यीशु को अपने माता-पिता के प्रति विद्रोही के रूप में न दिखाया जाए। इसके बजाय, यीशु अपने जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य का पालन कर रहे थे।

मरियम और यूसुफ समूह के कई अन्य लोगों के साथ यात्रा कर रहे थे। वे सोचते थे कि यीशु अन्य यात्रियों, परिजनों या मित्रों के साथ यात्रा कर रहे थे। रात में वे यीशु के दिखने की प्रतीक्षा कर रहे थे और वे उन्हें नहीं दिखे। वे रिश्तेदारों और मित्रों से पूछते हैं कि क्या उन्होंने यीशु को देखा है। वे उन्हें नहीं मिले इसलिए वे यरूशलेम लौट जाते हैं।

यहां रुकें और अपनी टीम से चर्चा करें। आपकी संस्कृति में लोग कैसे यात्रा करते हैं? जब लोग समूहों में यात्रा कर रहे होते हैं तो बच्चों के लिए कौन जिम्मेदार होता है।

यरूशलेम से कूच करने की एक दिन और यरूशलेम में वापसी की एक दिन की यात्रा के बाद वे यीशु को तीसरे दिन पाते हैं। वे मंदिर में कुछ धार्मिक शिक्षकों के साथ थे। वे उनके साथ एक सक्रिय बातचीत में उनकी सुन रहे और प्रश्न पूछ रहे थे। जो कोई भी सुन रहा था वह उनकी समझ और उनके द्वारा की गई बातचीत से चकित था।

उनके माता-पिता चकित होते हैं। वे उनसे पूछते हैं कि यीशु ने उनके साथ ऐसा क्यों किया क्योंकि वे उनके विषय में बहुत चिंतित थे। उन्होंने जवाब दिया, "आपको मेरी खोज करने की आवश्यकता क्यों थी? क्या आप नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिता के घर में होना चाहिए?"

यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि यीशु ने न तो किसी अवज्ञाकारी तरीके से जवाब दिया था और न ही वे अपने माता-पिता के अधिकार को चुनौती दे रहे थे। लेकिन यीशु परमेश्वर के साथ अपने विशेष संबंध और परमेश्वर के उद्देश्य के प्रति उनकी प्रतिबद्धता व्यक्त करते हैं।

वे यीशु के जवाब के अर्थ को समझ नहीं पाते। यीशु अपने माता-पिता के साथ अपने घर वापस जाते हैं। मरियम इन सभी बातों को उनकी स्मृति में रखती हैं और उनके बारे में अक्सर सोचती हैं। यीशु स्वस्थता में और परमेश्वर के अनुग्रह में भी बढ़ते हैं। वे परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं और लोग उनकी सराहना करते हैं।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 2:41–52

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी में छह दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- यूसुफ
- मरियम
- अन्य यात्री (परिवार और मित्र)
- धार्मिक शिक्षक
- मंदिर में लोग

मण्डली से कहानी को दो बार अभिनीत करवाएं। पहले मण्डली से बिना रुके कहानी का अभिनय कराएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है और उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

सुनिश्चित करें कि टीम फसह के उत्सव के लिए मरियम और यूसुफ का हर वर्ष यरूशलेम जाने का अभिनय करे। साथ ही यह अभिनय भी करें कि इसमें उन्हें दो दिन से अधिक का समय लगता है।

मरियम और यूसुफ को फसह के उत्सव में सक्रिय रूप से शामिल हुए दिखाना सुनिश्चित करें। उत्सव का समापन के समय मरियम और यूसुफ यरूशलेम को छोड़ देते हैं। यह दिखाना सुनिश्चित करें कि मरियम और यूसुफ इस बात पर आवश्वस्त हैं कि यीशु समूह के साथ आ रहे हैं। उन्हें नहीं पता कि वे यीशु को पीछे छोड़ रहे हैं। इसके बजाय, यीशु जानबूझकर पीछे रह जाते हैं। याद रखें कि यीशु में विद्रोही रवैया नहीं है, लेकिन वे परमेश्वर के उद्देश्य पर केंद्रित हैं।

यरूशलेम की वापसी की यात्रा के बाद मरियम और यूसुफ यीशु को मंदिर में धार्मिक शिक्षकों के साथ बात करते पाते हैं। यह सुनिश्चित करें कि जब मरियम और यूसुफ यीशु को पाते हैं और उनसे पीछे रहने के बारे में पूछते हैं, तब टीम ऐसा दर्शाए कि यीशु का रवैया विद्रोही नहीं था।

दूसरी बार जब टीम इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

प्रति वर्ष यरूशलेम में जाने वाले माता-पिता का अभिनय करें। जब यीशु 12 वर्ष के होते हैं तो वे उनके साथ जाते हैं। **अभिनय को बंद करें।** अभिनेता यीशु से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" सुनें, "इस समारोह में अपने माता-पिता के साथ होने से मुझे प्रसन्नता है," "मैं मंदिर को देखकर उत्साहित हूं," "मेरे पास इतने सवाल हैं," "मैं उत्सव में आने वाले इतने लोगों की संख्या से प्रभावित हूं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

फसह का उत्सव समाप्त हो गया है। इसलिए मरियम और यूसुफ घर वापस लौटने के रास्ते में हैं। वे मानते हैं कि यीशु उसी समूह में अन्य यात्रियों के साथ हैं। लेकिन यीशु पीछे रह

जाते हैं। शाम में यीशु दिखाई नहीं देते हैं। मरियम और यूसुफ मित्रों और परिवार से पूछते हैं और उन्हें नहीं पाते। मरियम और यूसुफ यरूशलेम वापस जाते हैं।

अभिनय को बंद करें। यूसुफ का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" सुनें, "मुझे डर है कि यीशु को कुछ हो गया है," "मैं व्याकुल हो रहा हूं," "मैं कल्पना कर रहा हूं कि वे अजनबियों के साथ अकेले कैसा महसूस कर रहे होंगे," "उन्हें बड़ा करने के परमेश्वर के ध्येयकार्य में मैं असफल रहा हूं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

तीसरे दिन मरियम और यूसुफ यीशु को मंदिर में धार्मिक शिक्षकों के साथ बात करते हुए पाते हैं। उनकी सुनने वाला हर कोई उनकी समझ और उनके जवाब से चकित था।

अभिनय को बंद करें। मरियम का किरदार निभाने वाली अभिनेत्री से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रही हैं?" सुनें, "मैं जो हो रहा है उससे विस्मयाभिभूत हूं," "स्वर्गदूत ने जो कहा था, वह मुझे याद है," "मुझे राहत मिली है कि वह मुझे मिल गया," "मुझे कुंठा हो रही है कि उसने मुझे यह नहीं बताया कि वो पीछे रहने वाला है।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु के माता-पिता नहीं जानते कि उन्हें क्या सोचना चाहिए, और उनकी मां पूछती हैं: "तुमने हमारे साथ ऐसा क्यों किया?" यीशु जवाब देते हैं "आप मेरी तलाश क्यों कर रहे थे? क्या आपको पता नहीं कि मुझे अपने पिता के घर में होना चाहिए?" यीशु के माता-पिता समझ नहीं पाते कि उनका क्या मतलब है।

अभिनय को बंद करें। यूसुफ का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" सुनें, "मैं भ्रमित हूं," "मैं अपमानित हूं, मुझे पता है कि मैं उसका पिता नहीं हूं लेकिन मैंने उसे पाला पोसा है," "मुझे आश्चर्य है कि उसने इस तरह जवाब दिया," "मुझे पता नहीं कि क्या कहना चाहिए।"

यीशु की भूमिका निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" सुनें, "क्या वे समझ नहीं सकते?" "मुझे अपने पिता के बारे में और अधिक सीखने की जरूरत है," "मैं अपने माता-पिता के लिए असभ्य नहीं बनना चाहता।"

मरियम का किरदार निभाने वाली अभिनेत्री से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रही हैं?" सुनें, "भ्रमित ," "मुझे दुख है कि उसे मेरी जरूरत पड़ना बंद हो रही है," "मुझे पता है कि यह परमेश्वर की योजना का हिस्सा है।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु अपने माता-पिता के साथ घर लौटते हैं और वे उनके प्रति आज्ञाकारी होते हैं। यीशु परमेश्वर को प्रसन्न करते हुए बड़े होते हैं और लोग यीशु का सम्मान करते हैं।

लूका *2:41–52*

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 2:41–52

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

यूसुफ, मरियम और यीशु नासरत से फसह के लिए यरूशलेम की यात्रा करते हैं। **फसह** का पर्व एक यहूदी धार्मिक त्योहार था। यह सात दिन तक चलता था और उस समय का उत्सव मनाता था जब परमेश्वर ने मिस्र में उनके पूर्वजों को गुलामी से बचाया था। उन्होंने ऐसा एक दूत भेजकर मिस्र के राजा को यहूदियों को जाने की अनुमति दिला कर किया था। परमेश्वर के एक दूत ने रात में आकर मिस्त्रियों के सभी पहिलौठे पुत्रों को मार डाला था। परंतु उस दूत ने यहूदियों के ज्येष्ठ पुत्रों को "छोड़" दिया था और उनके जीवन को बख्शा था। फसह यहूदियों के लिए स्वतंत्रता के उत्सव के समान है।

लूका का कहना है कि वे इस उत्सव **में परंपरा के अनुसार** भाग लेते थे। यीशु के समय में सभी यहूदी पुरुषों को यरूशलेम में फसह में शामिल होना आवश्यक था। उत्सव के समापन के बाद यूसुफ और मरियम अपने घर वापस यात्रा शुरू कर देते हैं। यात्रा के पूरे दिन के अंत के बाद उन्हें अहसास हुआ कि यीशु उनके साथ नहीं हैं। वे यीशु की खोज में यरूशलेम लौटते हैं।

यूसुफ और मरियम यीशु को मंदिर के प्रांगण में **धार्मिक शिक्षकों** के साथ बैठे पाते हैं। धार्मिक कानून के शिक्षक और मंदिर को प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है। ये शिक्षक परमेश्वर के नियम के शिक्षक थे। वे संभवतः इस्राएल के सबसे प्रसिद्ध धार्मिक शिक्षक थे। मरियम यीशु से पूछती हैं कि वे उन्हें बताए बिना क्यों छोड़ कर गए। यीशु पूछते हैं कि उन्हें यह पता क्यों नहीं था कि वे उनके पिता के घर में होंगे।

जब यीशु **मेरे पिता का घर** कहते हैं तो उनका मतलब मेरे स्वर्गिक पिता का घर या परमेश्वर के घर से होता है। वे मंदिर के बारे में बात कर रहे थे। सुनिश्चित करें कि इसे यूसुफ के घर के रूप में अनुवादित नहीं किया जाए।

लेकिन मरियम और यूसुफ को समझ नहीं आया। यीशु अपने माता-पिता के साथ नासरत वापिस लौटते हैं और वे उनके प्रति आज्ञाकारी थे। मरियम **ने इन सभी बातों को उनके हृदय संजो कर रखा।** इसका मतलब है कि मरियम ने उन सभी घटनाओं को अपने हृदय में रखा जो अभी घटित हुई थीं। वे हृदय का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने लूका के पिछले अंशों में किया है।

यीशु ज्ञान और **डील-डौल** में बढ़ते हैं। डील-डौल का मतलब है यीशु शारीरिक रूप से परिपक्व हो रहे थे और एक वयस्क पुरुष बन रहे थे। वे परमेश्वर और मनुष्य के **अनुग्रह** में बढ़ते

हैं। इसका मतलब है परमेश्वर और लोग दोनों ही उनके साथ प्रसन्न थे और उनकी सराहना करते थे।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 2:41–52

Audio Content

webm zip (3284561 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (5744351 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 3:1–14

सुनना और मनन करना

लूका 3:1–14

लूका 3:1–14 सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे यह कथा सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 3:1–14

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

लूका *3:1–14*

यीशु के जीवन में होने वाली अगली घटना के साथ लूका अपनी कहानी जारी रखते हैं। यीशु के मंदिर में समर्पित होने के लगभग 18 वर्ष बाद यह कहानी होती है। यीशु और उनके चचेरे भाई यूहन्ना दोनों ही लगभग 30 वर्ष के होते हैं जब वे अपनी सार्वजनिक सेवा की शुरुआत करते हैं। यह कहानी यूहन्ना द्वारा प्रभु - यीशु के लिए मार्ग तैयार करने के उनके उद्देश्य को पूरा करना दिखाती है। यूहन्ना यरदन नदी के दोनों ओर यहूदिया के रेगिस्तान में शिक्षा दे रहे हैं। जॉर्डन नदी लगभग 320 किलोमीटर लंबी है। लोग इसे आसानी से पार कर पाते थे। यह आमतौर पर लगभग 30 मीटर चौड़ी और तीन मीटर गहरी होती थी।

यहां रुकें और अपनी टीम को यरदन नदी और यहूदिया के जंगल की तस्वीर दिखाएं ताकि भूगोल को बेहतर तरीके से समझा जा सके।

एक इतिहासकार की तरह ही लूका पृष्ठभूमि की जानकारी देते हैं ताकि लोग यह जान लें कि यह कहानी कब होती है। इस समय यह रोमन सम्राट तिबिरियुस कैसर के शासन का पंद्रहवा वर्ष था। वे रोम के शहर से रोमन साम्राज्य पर शासन करते थे। रोमन साम्राज्य में यहूदा और गलील के यहूदी प्रांत शामिल थे। उनका पंद्रहवा वर्ष ईस्वी 26 से 28 के आसपास कहीं था और पुन्तियुस पिलातुस यहूदा के राज्यपाल या प्रधान का नाम था। वे रोमन सम्राट के अधिकार में थे।

हेरोदेस या हेरोदेस महान गलील के राजा थे। यीशु के जन्म के तुरंत बाद वे मर गए थे। रोम के सम्राट ने अपनी भूमि को चार भागों में विभाजित किया था। उन्होंने हेरोदेस के कुछ पुत्रों को उन पर शासन करने के लिए नियुक्त किया था। गलील के चतुरादिदारुक हेरोदेस, हेरोदेस महान के पुत्र थे। उनका पूरा नाम हेरोदेस अंतिपास था। चतुरादिदारुक का मतलब है कि वे एक क्षेत्र में चौथे पर शासन करते थे। इस मामले में हेरोदेस अंतिपास गलील के शासक थे। हेरोदेस के बड़े भाई फिलिप्पुस थे। वे दोनों हेरोदेस महान के पुत्र थे, लेकिन उनकी माताएं अलग थीं। फिलिप्पुस इतूरैया और त्रखोनीतिस पर शासन करते थे। ये गलील के पूर्व में दो प्रांतों के नाम थे। वहां जो लोग रहते थे वे अन्यजाति थे। अबिलेने जिले पर लिसानियास नाम के शासक राज्य करते थे जो गलील के उत्तर और पूर्व में एक प्रांत था। लूका हमें इन शासकों के बारे में बताते हैं ताकि यूहन्ना ने अपना सेवाकार्य जब शुरू किया था उस समय की राजनीतिक स्थिति को बेहतर समझा जा सके।

यहां रुकें और अपनी टीम को गलील इतूरैया, त्रखोनीतिस और अबिलेने के चारों क्षेत्र का नक्शा दिखाएं, जो उस समय इन चारों नेताओं द्वारा शासित किया जा रहा था। विशिष्ट रूप से यह दिखाना सुनिश्चित करें कि यरदन नदी विभिन्न प्रांतों के संबंध में कहां स्थित है।

लूका हमें धार्मिक स्थिति के बारे में भी बताते हैं। हन्ना और कैफा महा याजक हैं। महायाजक सभी यहूदी याजकों के नेता होते थे। वे यहूदी सर्वोच्च न्यायालय के प्रधान भी थे। इस कारण वे महान शक्ति और प्रभाव रखते थे। यहूदी प्रथा के अनुसार महा याजक तब तक सेवा कार्य करते थे जब तक वे जीवित रहते थे। हन्ना महायाजक थे, लेकिन रोमन राज्यपाल ने उन्हें उनके पद से हटा दिया था। उन्हें हन्ना के दामाद कैफा के साथ प्रतिस्थापित किया गया था। लूका यहूदी प्रथा का पालन करते हैं और हन्ना को महायाजक के रूप में संदर्भित करते रहते हैं भले ही कैफा आधिकारिक महायाजक थे। याद रखें कि यह पृष्ठभूमि की जानकारी है।

परमेश्वर यूहन्ना से बात करते हैं। यूहन्ना अभी भी जंगल या रेगिस्तान में रह रहे थे। परमेश्वर का वचन यूहन्ना के पास आता है। इसका मतलब है परमेश्वर यूहन्ना को एक विशेष संदेश देते हैं। यूहन्ना यरदन नदी के आसपास के लोगों को उपदेश देना शुरू करते हैं। उपदेश देना लोगों को सार्वजनिक रूप से कुछ महत्वपूर्ण बताना होता है। यूहन्ना परमेश्वर का संदेश उस भीड़ को देते हैं जो उनकी बात सुनने के लिए आई थी। यूहन्ना का संदेश यह है कि उन्हें पश्चाताप दिखाने के लिए बपतिस्मा लेना चाहिए। बपतिस्मा एक औपचारिक स्नान को संदर्भित करता है जो किसी को शुद्ध करता है या उन्हें संस्कारिक रूप से शुद्ध करता है। बपतिस्मा यह दर्शाता है कि कोई पाप करना या परमेश्वर की अवज्ञा करना रोक कर परमेश्वर का आज्ञा पालन करना चाहता था। पश्चाताप का मतलब केवल पाप से दूर होना और परमेश्वर की ओर मुड़ना है। यदि लोग पश्चाताप करते तो उन्हें पापों के लिए क्षमा कर दिया जाएगा।

यहां रुकें और अपनी टीम से चर्चा करें। आपकी संस्कृति में लोग यह कैसे दिखाते हैं कि वे जीवन का एक नया तरीका शुरू कर रहे हैं? क्या कुछ संस्कार समारोह होते हैं? उनका वर्णन करें।

तब लूका यशायाह की की एक भविष्यद्वाणी को साझा करते हैं ताकि लोग यह जान लें कि यूहन्ना ने इसे पूरा किया है। यूहन्ना के जन्म से लगभग 700 वर्ष पहले यशायाह भविष्यद्वक्ता ने इब्रानी में उनके बारे में लिखा था। उन्होंने कहा था कि कोई लोगों को यह घोषणा करेगा कि प्रभु परमेश्वर आ रहे हैं और वे उनके लिए तैयार हो जाएं। इब्रानी कविता में एक ही अर्थ को विभिन्न शब्दों के साथ दोहराया जाता था। यशायाह ने एक ही बात कहने के लिए कई तुलनाओं का इस्तेमाल किया था। यशायाह का संदेश यह था कि लोगों को प्रभु के लिए मार्ग या पथ तैयार करना चाहिए। जब कोई राजा उनके गांव से होकर जाता था तो सड़क तैयार करना एक यहूदी प्रथा थी। प्रभु या इस मामले में परमेश्वर स्वयं उनके पास मसीहा के रूप में आ रहे थे। मार्ग तैयार करना एक रूपक था। इसका मतलब था कि लोगों को प्रभु के आने के लिए खुद को तैयार करने के लिए पश्चाताप करने की जरूरत थी।

यशायाह कहते हैं कि सभी लोग परमेश्वर के उद्धार को देखेंगे। उद्धार का उपयोग यहां उसी तरह किया गया है जैसा शमौन ने उद्धारकर्ता के बारे में बात करते समय इस शब्द का

इस्तेमाल किया था। हर कोई उद्धार देखेगा क्योंकि वे यीशु को देखेंगे। वे ही मसीहा हैं, जिन्हें परमेश्वर ने लोगों को बचाने के लिए भेजा

लूका तब यह बताते हैं कि यूहन्ना ने किस तरह यह भविष्यद्वाणी पूरी की थी। यूहन्ना से बपतिस्मा लेने के लिए भीड़ यरदन नदी आ रही हैं। लेकिन यूहन्ना लोगों की आलोचना उन्हें जहरीला सांप कहकर करते हैं। यहूदी संस्कृति में यह एक अपमान होता था जो यह दर्शाता है कि वे लोग बुरे थे।

रुकें और अपनी टीम को एक सांप की तस्वीर दिखाएं।

यूहन्ना उन्हें बताते हैं कि वे केवल परमेश्वर के दंड से बचने के लिए बपतिस्मा लेने आ रहे हैं, न कि इसलिए कि वे वास्तव में परमेश्वर की ओर वापस लौटना चाहते थे। वे कहते हैं कि उन्हें यह साबित करना चाहिए कि वे वास्तव में पश्चाताप कर चुके हैं या परमेश्वर की ओर वापस लौट गए हैं। वे फल पैदा करके अपने पश्चाताप को साबित कर सकते हैं, जिसका मतलब है कि परमेश्वर जिस तरह से चाहते हैं उस तरह से सोचना और कार्य करना। कई यहूदी मानते थे कि परमेश्वर अन्य सभी देशों की तुलना में उनके लोगों का समर्थन करते थे। लेकिन यूहन्ना कहते हैं कि अब्राहम का वंशज होने के नाते वे परमेश्वर के न्याय और दंड से नहीं बचेंगे। वे उन्हें बताते हैं कि परमेश्वर चाहें तो उन पत्थरों से अब्राहम के लिए संतान उत्पन्न कर सकते हैं।

यूहन्ना लोगों की तुलना पेड़ों से करते हैं। वे कहते हैं कि परमेश्वर ठीक उसी तरह लोगों का न्याय करने के लिए तैयार हैं जिस तरह एक कुल्हाड़ी पेड़ को काटकर गिराने के लिए तैयार होती है। फल अच्छे विचारों और कार्यों के द्योतक हैं। यूहन्ना कहते हैं कि परमेश्वर उन लोगों का न्याय करने और उन्हें दंडित करने के लिए तैयार हैं जो उनकी ओर वापस नहीं फिरे हैं। जो परमेश्वर की ओर वापस नहीं मुड़े हैं वे अच्छे फल नहीं लेंगे। तब लोग यह पूछना शुरू करते हैं कि यह दिखाने के लिए कि उन्होंने पश्चाताप किया है उन्हें क्या करना चाहिए। यूहन्ना से यह सवाल पूछने वाले लोगों के तीन समूह हैं: भीड़, महसूल लेने वाले, और सिपाही।

यूहन्ना भीड़ को कहते हैं कि वे ज़रूरतमंदों को अपना अतिरिक्त कुरता या कमीज़ दे दें। वे उन्हें यह भी बताते हैं कि जिस व्यक्ति के पास उनकी ज़रूरत से अधिक भोजन है उसे उस व्यक्ति के साथ साझा करना चाहिए जिसके पास कुछ भी नहीं है।

रुकें और अपनी टीम को एक कुरते की तस्वीर दिखाएं।

महसूल लेने वालों को यूहन्ना यह बताते हैं कि वे कानून की आवश्यकता से अधिक धन न लें। महसूल लेने वालों से यहूदी संस्कृति में घृणा की जाती थी क्योंकि वे रोमियों के लिए काम करते थे। आमतौर पर आवश्यकता से अधिक धन वे एकत्र करते थे ताकि वे कुछ उनके लिए भी रख सकें।

सिपाहियों से यूहन्ना यह कहते हैं कि लोगों से धन लेने के लिए वे हिंसा या झूठे आरोपों का इस्तेमाल नहीं करें। जब एक सिपाही किसी पर गुनाह का झूठा आरोप लगाते थे तो वे अदालत में जाते थे। निर्दोष को अपराध के लिए धन देना पड़ता था। जिस सिपाही ने उन पर आरोप लगाया होता था उसे उस धन का हिस्सा मिलता था। यूहन्ना उन्हें यह बताते हैं कि उन्हें अपने वेतन से ही संतुष्ट रहना चाहिए।

यह कहानी यूहन्ना द्वारा मसीहा - यीशु के लिए मार्ग तैयार करने के उनके उद्देश्य को पूरा करना दिखाती है। यह यूहन्ना द्वारा लोगों के लिए परमेश्वर का संदेश लाना दिखाती है। वे उन्हें बपतिस्मा लेकर यह दिखाने के लिए कहते हैं कि वे परमेश्वर की ओर वापस लौट गए थे। वे कहते हैं कि उनके जीवन जीने के तरीके से उन्हें यह दिखाना चाहिए कि वे पश्चाताप कर चुके थे।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 3:1–14

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य बनाने में समूह की मदद करेंगे। आप कथा के दृश्यों, माहौल और कथा का चरित्र गढ़ने में समूह की मदद करेंगे।

इस कहानी के चार दृश्य हैं।

पहला दृश्य: यशायाह यूहन्ना के बारे में भविष्यद्वाणी करते हैं।

दूसरा दृश्य: इस कहानी का समय निर्धारित करने के लिए लूका सम्राट, राज्यपाल और नेताओं का परिचय देते हैं।

तीसरा दृश्य: परमेश्वर जकर्याह के पुत्र यूहन्ना से बात करते हैं। यूहन्ना लोगों से उनके पापों के पश्चाताप और परमेश्वर की ओर मुड़ते हुए बपतिस्मा लेने के लिए कहते हैं।

चौथा दृश्य: यूहन्ना लोगों को यह साबित करने के लिए कहते हैं कि अपने जीवन जीने के तरीके से वे दिखाएं कि वे पश्चाताप कर चुके हैं। लोग प्रश्नों की एक श्रृंखला पूछ कर प्रतिक्रिया देते हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यशायाह
- परमेश्वर
- यूहन्ना
- लोग
- महसूल लेने वाले
- सिपाही

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल का इस्तेमाल करे।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि कथा के दृश्य कालक्रमानुसार इस तरह से पुनर्गठित किए गए हैं ताकि अभिनय के समय इसे आसान बनाया जा सके।

यशायाह परमेश्वर के आने के विषय में भविष्यद्वाणी करते हैं। वे लोगों से यह कहते हैं कि उन्हें उनके मार्ग को सीधा बनाना है।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यह भविष्यद्वाणी 700 वर्ष पहले की गई थी। यशायाह भविष्य के बारे में बात कर रहे थे। यूहन्ना के जीवन और कार्यों ने यशायाह की भविष्यद्वाणी पूरी की।

घटनाएं उस समय की हैं जब तिबिरियुस रोम के सम्राट थे और पुन्तियुस यहूदा पर शासन कर रहे थे। हेरोदेस, फिलिप्पुस, और लिसानियास, शासक थे। हन्ना और कैफा महा याजक थे।

उस समय यूहन्ना जंगल में रह रहे थे। यूहन्ना को परमेश्वर से एक संदेश मिलता है। तब यूहन्ना यरदन नदी के दोनों ओर यात्रा करते हैं और लोगों को बपतिस्मा लेने के लिए कहते हैं। बपतिस्मा उनके पापों के पश्चाताप और क्षमा के लिए परमेश्वर की ओर मुड़ने का एक प्रतीक है।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि बपतिस्मा शब्द का मतलब जल में डुबकी लगाना है। यह भी याद रखना महत्वपूर्ण है कि यरदन नदी बहुत गहरी नहीं थी और आसानी से पार की जा सकती थी।

यूहन्ना लोगों से यह साबित करने के लिए कहते हैं कि अपनी जीवन चर्या के माध्यम से वे यह बताएं कि वे पश्चाताप कर चुके हैं। यूहन्ना इस बात पर जोर देते हैं कि उन्हें ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि उन्हें केवल इसलिए बचाया जा सकता है क्योंकि वे अब्राहम के वंशज हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि लूका यह बताते हैं कि यूहन्ना किस तरह फलों के पेड़ों से लोगों की तुलना करते हैं। कुछ पेड़ फल पैदा करते हैं, कुछ अन्य फल नहीं लाते हैं। कुछ लोग अच्छे काम करके यह संकेत देते हैं कि वे वास्तव में अपने पुराने तरीकों से फिर चुके हैं और परमेश्वर के साथ एक नया रिश्ता रखते हैं। कुछ लोग केवल कर्मकांडों पर भरोसा रखते हैं। वह कर्मकांड बपतिस्मा हो सकता है, जीवन परिवर्तन के संकेत के रूप में नहीं, बल्कि परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए एक कदम के रूप में। कुछ लोग विशेषाधिकार प्राप्त संबंध पर भरोसा रखते हैं। यहूदियों के मामले में यह विशेषाधिकार का संबंध अब्राहम के वंशज होना है। किसी कर्मकांड या विशेषाधिकार प्राप्त संबंध पर भरोसा रखने वाले लोगों को अच्छी बातें या अच्छे कार्यों को करने में बाधा आती है। इन लोगों की तुलना एक पेड़ से की जाती है जो फल नहीं पैदा करता है। लोगों पर परमेश्वर का न्याय एक किसान की तरह है जो फल नहीं पैदा करने वाले पेड़ को काट देने के लिए आता है।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि कुछ लोग किसी भी न्याय से मुक्त महसूस करते थे क्योंकि वे अब्राहम के वंशज हैं।

लोग पूछते हैं कि उन्हें क्या करना चाहिए।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि लोग यह पूछते हैं कि वे फल क्या हैं कि जो उन्हें दिखाने हैं ताकि यह दर्शाया जा सके कि उन्होंने वाकई पश्चाताप किया है।

यूहन्ना जवाब देते हैं अगर आपके पास दो हों तो एक कमीज उसे दे दें जिसके पास एक भी नहीं है। भ्रष्ट महसूल लेने वाले बपतिस्मा लेने आते हैं और पूछते हैं कि उन्हें क्या करना चाहिए। यूहन्ना यह जवाब देते हैं कि जो सही है उससे अधिक संग्रह नहीं करना चाहिए। कुछ सिपाही भी यही पूछते हैं। यूहन्ना उन्हें कहते हैं कि वे धन न मांगें और न ही लोगों पर झूठी बातों का आरोप लगाएं।

यह चित्रित करना महत्वपूर्ण है कि लोगों को महसूल लेने वाले पसंद नहीं थे। उनसे नापसंद किया जाता था क्योंकि वे किसी अन्य देश के लिए काम करते थे और आवश्यकता से अधिक धन एकत्र करते थे।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 3:1–14

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी के चार दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यशायाह
- परमेश्वर
- यूहन्ना
- लोग
- महसूल लेने वाले
- सिपाही

मण्डली से कहानी को दो बार अभिनीत करवाएं। पहले मण्डली से बिना रुके कहानी का अभिनय कराएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है और उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

सुनिश्चित करें कि टीम यशायाह द्वारा उनके समय के लोगों को यूहन्ना के बारे में भविष्यद्वाणी सुनाने का अभिनय करे। स्वयं भविष्यद्वाणी का ही अभिनय करना सहायक होगा। एक राजा के संभावित आगमन के कारण लोग सफाई कर रहे और सड़क तैयार कर रहे हैं। राजा यीशु के अभिनेता हो सकते हैं। यूहन्ना और यीशु के अभिनेताओं को यह दर्शाने के लिए ढंका जा सकता है कि उस समय के लोगों को यह पता नहीं था कि वे कौन होंगे। वह वाणी जो कहेगी केवल उसे ही वे जानते थे। 700 वर्ष के बाद भविष्यद्वाणी पूरी होती है।

दूसरी बार जब टीम इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

यशायाह द्वारा जंगल में सुनी गई वाणी जिसने कहा था कि मसीहा के मार्ग को सीधा करें, उसके विषय में उनकी भविष्यद्वाणी का अभिनय करें। **अभिनय को बंद करें।** लोगों का किरदार निभाने वाले लोगों से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप सुन सकते हैं कि "वे कब आएंगे?" "मैं उत्साहित हूं कि परमेश्वर हमारे लिए लड़ेंगे ।" "मैं योग्य नहीं हूं। "मुझे परमेश्वर की ओर फिरने की ज़रूरत है।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

उस समय तिबिरियुस, पुन्तियुस पिलातुस, हेरोदेस, फिलिप्पुस, और लिसानियास, उस क्षेत्र पर शासन करते थे। हन्ना और कैफा महा याजक थे। यूहन्ना जंगल में रह रहे होते हैं। यूहन्ना को परमेश्वर की ओर से एक संदेश मिलता है। यूहन्ना लोगों को पापों के पश्चाताप के प्रतीक के रूप में बपतिस्मा लेने के बारे में बताना शुरू करते हैं। यूहन्ना उन्हें क्षमा के लिए परमेश्वर की ओर फिरने के लिए कहते हैं। **अभिनय को बंद करें।** यूहन्ना का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप सुन सकते हैं कि "परमेश्वर के संदेश को साझा करने के लिए मैं सम्मानित हूं।" "मैं प्रसन्न हूं कि लोग सुन रहे हैं और बपतिस्मा ले रहे हैं।" "मुझे चिंता है कि मेरे लोग परमेश्वर के संदेश को वाकई नहीं समझते हैं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यूहन्ना लोगों से यह साबित करने के लिए कहते हैं कि अपनी जीवन चर्या के माध्यम से वे यह बताएं कि वे पश्चाताप कर चुके हैं। यूहन्ना इस बात पर जोर देते हैं कि यहूदियों को केवल इसलिए नहीं बचाया जाएगा क्योंकि वे अब्राहम के वंशज हैं। लोगों के प्रति परमेश्वर का न्याय एक पेड़ की शाखाओं को काट देना होता है जिससे कोई फल पैदा नहीं होता।

अभिनय को बंद करें। दर्शकों का किरदार निभा रहे अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप सुन सकते हैं जैसे "उलझन में हैं।" "चिंताकुल हैं।" "लेकिन मुझे लगता था कि अब्राहम के प्रति परमेश्वर का वचन काफी था।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

लोग पूछते हैं कि उन्हें क्या करना चाहिए। यूहन्ना जवाब देते हैं अगर आपके पास दो हों तो एक कमीज उसे दे दें जिसके पास एक भी नहीं है। भ्रष्ट महसूल लेने वाले बपतिस्मा लेने आए और पूछा कि हमें क्या करना चाहिए? यूहन्ना उन्हें कहते हैं कि जो सही है उससे अधिक इकट्ठा न करें। कुछ सिपाही भी यही पूछते हैं। यूहन्ना उन्हें कहते हैं कि धन हासिल करने के लिए हिंसा का इस्तेमाल न करें और न ही लोगों पर झूठे आरोप लगाएं।

अभिनय को बंद करें। महसूल लेने वालों का किरदार निभा रहे अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप सुन सकते हैं "दोषी." "असहज हैं।" "मुझे अपने तरीके बदलने की जरूरत है।" "यह कठिन होगा।"

अभिनय को बंद करें। सिपाहियों का किरदार निभा रहे अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप सुन सकते हैं "दोषी." "मुझे परमेश्वर पर अपने प्रावधानों की पूर्ति के लिए भरोसा करना होगा।" "शर्मिंदा"

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 3:1–14

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

राजा हेरोदेस गलील के **चतुराद**िदारुक हैं। चतुरादिदारुक का मतलब किसी क्षेत्र के चौथे भाग के सरकारी नेता होता है। इस मामले में वे उस भूमि के चौथे भाग पर शासन करते हैं जिस पर उनके पिता राजा हेरोदेस महान मरने से पहले शासन करते थे।

चतुरादिदारुक के लिए आपकी भाषा में सबसे अच्छा अनुवाद क्या होगा इस पर विचार करें। क्या आपके पास एक ऐसा शब्द है जो इसी अर्थ को व्यक्त करता हो? किसी क्षेत्र या कई

क्षेत्रों पर शासन करने वाले किसी व्यक्ति को आप किस तरह वर्णित करेंगे?

यूहन्ना **के पास परमेश्वर का वचन आने के** समय राजा हेरोदेस गलील पर शासन कर रहे थे। इसका मतलब है कि परमेश्वर यूहन्ना से बात करते हैं और उन्हें एक संदेश देते हैं। लूका हमें यह भी बताते हैं कि इस समय के दौरान **महायाजक** कौन थे। महायाजक सभी यहूदी याजकों और यहूदी सर्वोच्च न्यायालय के नेता थे। इस कारण वे महान शक्ति और प्रभाव रखते थे। यहूदी प्रथा के अनुसार महा याजक तब तक सेवा कार्य करते थे जब तक वे जीवित रहते थे। याजक शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

यूहन्ना यरदन नदी के पास के रेगिस्तान में उपदेश देना शुरू करते हैं। **रेगिस्तन** उसी स्थान को संदर्भित करते हैं जिस स्थान को जंगल कहा जाता है। इसका मतलब है एक जंगली क्षेत्र जहां कुछ ही लोग रहते थे। यह सूखा होता था और वहां बहुत कम उगता था। उपदेश देने का मतलब केवल यह है कि लोगों को सार्वजनिक रूप से कुछ महत्वपूर्ण बता**ना**। इस मामले में यूहन्ना भीड़ को परमेश्वर का विशेष संदेश बता रहे थे।

यदि आपने पहले से ऐसा नहीं किया है तो रुकें और अपनी टीम की यरदन नदी और जंगल की तस्वीरें दिखाएं।

यूहन्ना का संदेश **पश्चाताप का बपतिस्मा** था। यह कहने का एक आसान तरीका है "एक बपतिस्मा जो पश्चाताप को दर्शाता है।" **बपतिस्मा** एक औपचारिक स्नान को संदर्भित करता है जो यह दर्शाता है कि किसी ने उनके पापों से पश्चाताप कर लिया था। पश्चा**ताप** का मतलब है पाप से दूर होना, परमेश्वर की ओर मुड़ना, और परमेश्वर के मार्गों पर चलना शुरू करना। इसलिए यूहन्ना का संदेश यह था कि लोगों को अपने मार्गों से मुड़ने की, परमेश्वर की क्षमा प्राप्त करने की और बपतिस्मा लेने की आवश्यकता थी। पश्चाताप और बपतिस्मा का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने उन्हें लूका के पिछले अंशों में किया है। दोनों शब्दों को प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

उसके बाद लूका यशायाह की एक भविष्यद्वाणी को साझा करते हैं ताकि लोग यह जान लें कि यूहन्ना ने इसे पूरा किया है। यशायाह **एक आह्वान देने वाली वाणी** के बारे में लिखते हैं। इसका संदर्भ एक ऐसे व्यक्ति से है जो एक उच्च स्वर में संदेश देता है। **वह** वाणी प्रभु का मार्ग तैयार करने के लिए मार्ग को बेहतर बनाने की बात करती है। इस संदर्भ में प्रभु मसीहा के रूप में लोगों के पास आने वाले परमेश्वर को संदर्भित करता है। यशायाह मार्ग को तैयार करने के रूपक का इस्तेमाल करते हैं जिसका मतलब है कि लोगों को मसीहा की तैयारी के लिए पश्चाताप करना चाहिए और परमेश्वर की आज्ञा माननी चाहिए। यशायाह की भविष्यद्वाणी इब्रानी कविता के रूप में लिखी गई है। वे एक ही बात: मार्ग कैसे तैयार किया जाए, को कहने के लिए कई रूपकों का इस्तेमाल करते हैं।

हर घाटी को भर दिया जाएगा एक रूपक है जिसका मतलब है कि घाटियों को भरा जाना चाहिए ताकि मार्ग सपाट हो सके। घाटी पहाड़ियों या पहाड़ों के बीच भूमि के एक निम्न तल वाले क्षेत्र को संदर्भित करता है। **हर पहाड़ और हर टीला नीचा किया** जाएगा का संदर्भ एक पहाड़ी या पहाड़ से मिट्टी लेने और उसे निचले स्तर पर डालने से है ताकि मार्ग सपाट हो सके। नीचा किया जाएगा एक दंभी व्यक्ति को नम्र बनाने का द्योतक भी हो सकता है। जब वे कहते हैं कि **टेढ़े मार्ग को सीधा बनाया जाना चाहिए** तो इसका मतलब है कि घुमावदार और टेढ़े-मेढ़े मार्ग को एक सीधी रेखा में बनाया जाना चाहिए। लेकिन इसका एक टेढ़े व्यक्ति के सीधे होने का दोहरा अर्थ भी है। इसका मतलब है कि कोई व्यक्ति जो बेईमान या अन्यायपूर्ण होता है वह धर्मी और ईमानदार बन जाए।

यहां रुकें और अपनी टीम से चर्चा करें। आप निर्दोष लोगों के धर्मी बनने या परमेश्वर के साथ सही संबंध रखने के बारे में कैसे बात करते हैं? क्या आप उनके बारे में एक टेढ़े मार्ग को सीधे करने की तरह बात कर सकते हैं?

आप इस काव्यात्मक भाषा का अनुवाद कैसे करेंगे, इस बारे में बात करें। क्या आपकी भाषा कभी इस तरह बात करती है? आप अपनी भाषा में इस्तेमाल करने वाली उन तुलनाओं का उदाहरण दें जो लोगों के लिए यात्रा की सहूलियत के लिए किसी मार्ग या पथ को तैयार करने की बात करते हैं।

ऊबड़-खाबड़ **स्थान समतल** करने का मतलब है कि ऊंचे नीचे, असम मार्गों को चिकना और सपाट मार्ग बना दिया जाएगा। यशायाह अपनी भविष्**यद्वाणी** यह कहते हुए समाप्त करते हैं कि सभी मनुष्य परमेश्वर के उद्धार को देखेंगे। शमौन की तरह ही यशायाह भी उद्धार शब्द का इस्तेमाल मसीह के अर्थ में करते हैं। यीशु मसीह ऐसे एक थे जिन्हें परमेश्वर ने उनके जीवन में पाप की पकड़ और परमेश्वर के न्याय की अबूझ आग से बचाने और छुड़ाने के लिए नियुक्त किया था। जब लोग यीशु को देखेंगे, तो वे परमेश्वर के उद्धार को देखेंगे। उद्धार शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

[लूका यशायाह की भविष्यद्वाणी का समापन करते हैं। वे यूहन्ना ने भविष्यद्वाणी किस तरह पूरी की, इस बारे में यूहन्ना की कहानी को बताना शुरू करते हैं। आप एक भविष्यद्वाणी से ऐतिहासिक कहानी में परिवर्तन का अनुवाद कैसे करेंगे? क्या आपके पास यह बताने के लिए शब्द हैं कि भविष्यद्वाणी समाप्त हो गई है और इतिहास शुरू हो गया है?]{.mark} जब यूहन्ना भीड़ से बात करते हैं तो वे उन्हें **सांपों की संतान** कहते हैं। इसका अनुवाद जहरीले सांपों के बच्चों के रूप में होता है। यहूदी संस्कृति में यह वाक्यांश एक अपमान था जिसका अर्थ है कि लोग बुरे थे।

यहां रुकें और अपनी टीम से चर्चा करें। आपकी संस्कृति में सांप कैसे देखे जाते हैं? यदि आपकी संस्कृति यह नहीं समझ पाती कि यह वाक्यांश एक अपमान था, तो आप इस अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए किस तरह बदल सकते हैं?

जब यूहन्ना यह पूछते **हैं कि किसने तुम्हें आने वाले क्रोध से भागने की चेतावनी दी** थी तो यह एक अलंकारिक प्रश्न था। आने वाले क्रोध का मतलब है किसी के क्रोध के परिणाम स्वरूप आने वाला दंड। यूहन्ना यह कह रहे थे कि लोग भविष्य में परमेश्वर की सजा से बचने के लिए ही बपतिस्मा लेने आ रहे थे न कि इसलिए कि वे वास्तव में पश्चाताप करते थे। यूहन्ना लोगों के बारे में बात करने के लिए पेड़ों के रूपक का इस्तेमाल करते हैं। वे कहते हैं कि लोगों ने पश्चाताप किया है यह उनके जीवन में अच्छे फल या अच्छे कार्यों के माध्यम से दिखना चाहिए। कई यहूदी यह सोचते थे कि **चूंकि अब्राहम उनके पिता** या पूर्वज थे, इसलिए इसने उन्हें एक विशेष दर्जा दिया था। यूहन्ना कहते हैं कि केवल अब्राहम के वंशज होना परमेश्वर के न्याय से बचने के लिए पर्याप्त नहीं था। भीड़ यूहन्ना से यह पूछती है कि वे पश्चाताप करते हैं इसे किसी तरह दिखाएं। वे उन्हें **गुरु** कहते हैं जो एक यहूदी धार्मिक नेता के लिए एक विनम्र उपाधि है। गुरु शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

यूहन्ना उन्हें यह कहते हैं कि यदि उनके पास एक अतिरिक्त **कुरता** है तो उसे वे गरीबों को दे दें। एक कुरता इस तरह का वस्त्र होता है, जिसे पुरुष और महिला दोनों ही पहनते हैं। इसका सबसे करीबी अनुवाद कमीज़ है। कुरता शब्द को प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

यदि आपने पहले से ऐसा नहीं किया है तो रुकें और अपनी टीम को एक कुरते की तस्वीर दिखाएं।

महसूल लेनेवाले भी यूहन्ना से यह पूछते हैं कि उन्हें क्या करना चाहिए। **महस**ूल लेने वाले यहूदी लोग होते थे जो सरकार के लिए लोगों से धन एकत्र करते थे। उनसे इस कारण घृणा की जाती थी क्योंकि वे यहूदियों पर अत्याचार करने वाले लोगों के लिए काम करते थे। वे आवश्यकता से अधिक धन एकत्र करने और उसे अपने लिए रखने के लिए भी जाने जाते थे। जब यूहन्ना सिपाहियों से यह कहते हैं कि जबरिया **वसूली** न करें, तो इसका मतलब यह है कि वे हिंसक रूप से वसूली न लें। वे उन्हें लोगों से धन लेने के लिए हिंसा का इस्तेमाल नहीं करने को कह रहे थे।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 3:1–14

Audio Content

webm zip (4502309 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (7794729 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 3:15–22

सुनना और मनन करना

लूका 3:15–22

लूका 3:15–22 सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे यह कथा सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 3:15–22

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

यरदन नदी के दोनों ओर के जंगल में यूहन्ना द्वारा बपतिस्मा दिए जाने के वृत्तांत के साथ लूका अपनी कथा जारी रखते हैं। यह बताने के लिए कि उन्होंने पश्चाताप कर लिया है और परमेश्वर की ओर मन फिराया है, बड़ी संख्या में लोग यूहन्ना के पास बपतिस्मा लेने के लिए आते हैं।

क्योंकि हर कोई मसीहा या मसीह का बेसब्री से इंतजार कर रहा होता है, इसलिए वे यह सोचने लगते हैं कि यूहन्ना मसीहा हो सकते हैं। लेकिन यूहन्ना उन्हें बताते हैं कि मसीहा एक अलग व्यक्ति हैं जो उनके बाद आएगा। वे कहते हैं कि मसीहा के पास उनकी तुलना में अधिक सामर्थ्य और अधिकार होंगे।

लूका *3:15–22*

यूहन्ना उन्हें बताते हैं कि वे मसीहा के पादुकाओं के तसमे खोलने योग्य भी नहीं हैं। यहूदी संस्कृति में दास अपने स्वामी की पादुकाओं के तसमे खोलते थे। यूहन्ना यह कह रहे थे कि वे मसीहा के दास होने के योग्य भी नहीं हैं।

रुकें और अपनी टीम को यहूदी पादुकाओं के चित्र दिखाएं। तसमों का संदर्भ उन फीतों से है जिनका इस्तेमाल उन्हें साथ बांधने के लिए किया जाता था।

यूहन्ना यह भी कहते हैं कि उनका बपतिस्मा मसीहा के बपतिस्मा से अलग है। उनका बपतिस्मा पानी के साथ एक प्रतीकात्मक प्रदर्शन है। यह सार्वजनिक रूप से दिखाता था कि किसी ने पश्चाताप कर लिया था। भविष्य में मसीहा का बपतिस्मा पवित्र आत्मा और आग के साथ होगा। इस संदर्भ में बपतिस्मा का अर्थ स्नान के समान है। मसीहा के बपतिस्मा से यह पता चलेगा कि लोगों के पाप शुद्ध हो गए हैं। यूहन्ना के कथन का अर्थानुवाद दो अलग तरीकों से किया जा सकता है। एक स्पष्टीकरण यह है कि मसीहा का बपतिस्मा पवित्र आत्मा और आग से लोगों को शुद्ध या निर्मल करेगा। पवित्र आत्मा के बपतिस्मा का मतलब है कि पवित्र आत्मा उन्हें ग्रहण करने वाले का नवीकरण कर समर्थ बनाती है। अग्नि परिष्करण का, या जो अशुद्ध है उसे जलाने और जो शुद्ध है उसे रखने का द्योतक हो सकती है। अन्य स्पष्टीकरण यह है कि मसीहा का आग का बपतिस्मा पवित्र आत्मा के बपतिस्मा से अलग था। आग का बपतिस्मा ऐसे लोगों पर परमेश्वर के न्याय का द्योतक हो सकता है जो उनके उद्देश्य को अंगीकार नहीं करते हैं। जो भी हो, यूहन्ना यह कहते हैं कि उनका बपतिस्मा मसीहा के बपतिस्मा के लिए रास्ता तैयार करने का था।

तब यूहन्ना एक किसान की तुलना का उपयोग यह दिखाने के लिए करते हैं किस तरह मसीहा पश्चाताप करने वाले लोगों को उनसे अलग कर देंगे जिन्होंने ऐसा नहीं किया है। यहूदी संस्कृति में किसान अनाज को गाह कर, या उसके ऊपर कुछ भारी लुढ़का कर, एकत्रित करते थे। इसका मतलब है अंट्रा (दांत वाला एक बड़ा बेलचा) का इस्तेमाल कर उसे ऊपर हवा में फेंकना ताकि पुआल उड़ जाए और अनाज का बीज गाहने के फर्श पर इकट्ठा हो सके। दोनों तरीकों का इस्तेमाल अनाज के बीज को पुआल और भूसी से अलग करने के लिए किया जाता था। गाहने के स्थान का फर्श उस बाहरी समतल क्षेत्र का नाम होता है जहां बीज अलग किए जाते थे। [क्षेत्र को साफ करने के लिए]{.mark} पुआल और भूसी को बुझाई न जा सकने वाली आग [से]{.mark} जलाया जाता था। यूहन्ना कहते हैं कि बुझाई न जा सकने वाली आग वह आग है जिसे ठंडा नहीं किया जा सकता। यह उन लोगों के लिए अनन्त दण्ड का द्योतक है, जो पश्चाताप नहीं करते हैं। यूहन्ना लोगों को पश्चाताप करने और परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। वे उन्हें यह अच्छी खबर बताते हैं कि परमेश्वर उन्हें बचाने के लिए मसीहा भेज रहे हैं।

रुकें और अपनी टीम को किसानों द्वारा उपयोग किए जाने वाले अंट्रा (दांतों वाले एक बेलचे या पिचफाॅर्क) और गाहने वाले फर्श का एक वीडियो दिखाएं, ताकि इस प्रक्रिया का अनुवाद करने की एक बेहतर अवधारणा हो सके। यह चर्चा करें कि क्या आपकी संस्कृति में अच्छे धान को अवशेष से जुदा करने वाली इससे मिलती-जुलती कोई प्रक्रिया है।

लूका हमें बताते हैं कि यूहन्ना ने सार्वजनिक रूप से शासक हेरोदेस के खिलाफ बात की थी। यूहन्ना कहते हैं कि अपनी पत्नी को तलाक़ देकर और अपने सौतेले भाई की पत्नी हेरोदियास से विवाह कर वे पाप कर रहे थे। उनके लिए, उससे विवाह करना परमेश्वर के विधान के विरुद्ध था। हेरोदेस द्वारा किए गए कई अन्य गलत कार्यों के लिए भी यूहन्ना बात करते हैं। इसलिए हेरोदेस यूहन्ना को जेल में बंद करने का आदेश देते हैं।

यहां रुकें और अपनी टीम से चर्चा करें। लूका घटनाओं को जिस क्रम में वे घटित हुईं वैसे नहीं बताते हैं। पहला, यूहन्ना यीशु को बपतिस्मा देते हैं। बाद में हेरोदेस यूहन्ना को उनके खिलाफ बोलने के कारण जेल में डाल देते हैं। आप अपने दर्शकों के लिए यह कैसे स्पष्ट करेंगे कि यूहन्ना की गिरफ्तारी से पहले यीशु का बपतिस्मा हुआ था? जब आप अपनी भाषा में कोई कथा कहते हैं, तो आप किस तरह दिखाते हैं कि एक घटना दूसरे से पहले हुई थी? क्या आप हमेशा घटनाओं को क्रमानुसार बताते हैं? या क्या आपके पास पहले हुए किसी प्रसंग के बारे में बात करने का कोई तरीका है?

एक दिन, जब यूहन्ना भीड़ को बपतिस्मा दे रहे थे तब यीशु बपतिस्मा लेने आए। यूहन्ना यीशु को बपतिस्मा देते हैं। यीशु उनके बपतिस्मा लेने के बाद परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं और स्वर्ग या आकाश खुल जाता है। पवित्र आत्मा का एक कबूतर के रूप में नीचे आकर यीशु पर ठहराव होता है। स्वर्ग से या जहां परमेश्वर का निवास होता है, वहां से परमेश्वर की वाणी आती है। वे कहते हैं, "आप मेरे बेटे हैं। मैं तुमसे प्रेम करता हूं। मैं तुमसे प्रसन्न हूं।"

रुकें और अपनी टीम को बेहतर ढंग से यह कल्पना करने के लिए कबूतर की एक तस्वीर दिखाएं, कि पवित्र आत्मा का प्रकटन किस तरह हुआ।

यह कथा बताती है कि यीशु के पास यूहन्ना पर अधिकार और सामर्थ्य है, क्योंकि यूहन्ना कहते हैं कि वे उनके दास होने योग्य भी नहीं हैं। यह कथा यीशु का बपतिस्मा दिखाती है जब परमेश्वर बोलते और इस बात की पुष्टि करते हैं कि यीशु उनके पुत्र हैं जिनसे वे प्रेम करते हैं।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 3:15–22

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य बनाने में समूह की मदद करेंगे। आप कहानी के दृश्यों, विन्यास और पात्रों को परिभाषित करने में ग्रुप की मदद करेंगे।

इस कहानी में तीन दृश्य हैं।

पहला दृश्य: लोग पूछते हैं कि क्या यूहन्ना मसीहा हैं और यूहन्ना मसीहा की विशेषताओं को बताते हैं।

दूसरा दृश्य: यीशु बपतिस्मा लेने आते हैं। यूहन्ना उन्हें बपतिस्मा देते हैं। परमेश्वर यीशु से कहते हैं कि वे उनके पुत्र हैं और पवित्र आत्मा का उन पर अवतरण होता है।

तीसरा दृश्य: यूहन्ना एक शासक की आलोचना करते हैं और उस कारण उन्हें कारावास में डाल दिया जाता है।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- परमेश्वर
- यूहन्ना
- लोग
- यीशु
- हेरोदेस
- पवित्र आत्मा

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल (ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप इधर उधर रख सकते हैं जैसे पत्थर, लकड़ियां, बच्चों के खिलौने) का इस्तेमाल करे।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि कथा के दृश्य कालक्रमानुसार इस तरह से पुनर्गठित किए गए हैं ताकि अभिनय के समय इसे आसान बनाया जा सके।

लोग मसीहा की प्रतीक्षा कर रहे थे। लोग जानना चाहते थे कि क्या यूहन्ना ही मसीहा थे। यूहन्ना बताते हैं कि मसीहा यूहन्ना जो करते हैं उसकी तुलना में क्या करेंगे। यूहन्ना पश्चाताप के एक संकेत के रूप में पानी से बपतिस्मा दे रहे थे। लेकिन मसीहा पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देंगे।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि यूहन्ना यीशु और एक किसान के बीच की तुलना का इस्तेमाल करते हैं जो अनाज और भूसी को अलग करता है। यूहन्ना लोगों की तुलना गेहूं और भूसी से करते हैं। गेहूं विभिन्न तरीकों से बहुत उपयोगी है। भूसी उस आग में जा रही है जो कभी बुझती नहीं है। भूसी के पास इससे उबरने का कोई उपाय नहीं है। श्रोतागणों के लिए सुसमाचार यह था कि यीशु के पास उन्हें आग से बख्श देने का सामर्थ्य था।

यीशु यूहन्ना से बपतिस्मा लेते हैं और जब यीशु प्रार्थना कर रहे होते हैं तब पवित्र आत्मा का अवतरण यीशु पर होता है। स्वर्ग

की एक आवाज कहती है, "तुम मेरे बेटे हो। मैं तुमसे प्रेम करता हूं। तुम मुझे बहुत प्रसन्नता देते हो।"

शिक्षा देते समय यूहन्ना ने हेरोदेस के गलत कार्य की खुलकर आलोचना की। तो हेरोदेस ने यूहन्ना को जेल में डाल दिया।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 3:15–22

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी में तीन दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- परमेश्वर
- यूहन्ना
- लोग
- यीशु
- हेरोदेस
- पवित्र आत्मा

मण्डली से कहानी को दो बार अभिनीत करवाएं। पहले मण्डली से बिना रुके कहानी का अभिनय कराएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है और उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

दूसरी बार जब मण्डली इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

लोग मसीहा की प्रतीक्षा कर रहे थे। वे यह जानना चाहते थे कि क्या यूहन्ना ही मसीहा थे। यूहन्ना बताते हैं कि मसीहा यूहन्ना द्वारा दिए जा रहे बपतिस्मा से अलग प्रकार का बपतिस्मा देंगे। यूहन्ना पश्चाताप के लिए पानी में बपतिस्मा दे रहे थे। लेकिन मसीहा पवित्र आत्मा और आग के साथ बपतिस्मा देंगे।

मसीहा किस प्रकार न्याय करेंगे इसके लिए यूहन्ना यीशु की तुलना एक ऐसे किसान से करते हैं, जो गेहूं को भूसी से अलग कर भूसी को आग में फेंक देता है। यूहन्ना लोगों को कभी न बुझनेवाली आग की चेतावनी देते हैं। इस तरह यूहन्ना ने सुसमाचार प्रस्तुत किए। शुभ समाचार यह है कि मसीहा के पास उन्हें आग से बख्श देने का सामर्थ्य होगा।

अभिनय को बंद करें। दर्शकों का किरदार निभा रहे अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप सुन सकते हैं, "लेकिन मैंने सोचा था कि यूहन्ना ही मसीहा थे।" "पशोपेश में हैं।" "प्रतीक्षारत हैं" "गंभीर हैं" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु का बपतिस्मा होता है और जब वे प्रार्थना कर रहे होते हैं तब पवित्र आत्मा का यीशु पर अवतरण होता है। स्वर्ग की एक आवाज कहती है, "तुम मेरे बेटे हो। मैं तुमसे प्रेम करता हूं। तुम मुझे बहुत प्रसन्नता देते हो।"

अभिनय को बंद करें। यूहन्ना का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप सुन सकते हैं, "मैं श्रद्धायुक्त विस्मय में हूं।" "पूरे समय यह यीशु ही थे!" "मैं सम्मानित महसूस करता हूं।" "मुझे उम्मीद है।"

यीशु की भूमिका निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप सुन सकते हैं, "मैं आत्मा से परिपूर्ण हूं।" "मैं अपने सेवाकार्य की शुरुआत करने के लिए तैयार हूं।" "मैं अपने पिता से प्रेम करता हूं।" "मुझे स्वर्ग में उनके साथ होने की याद आती है, लेकिन मैं उनकी आज्ञा का पालन करने से प्रसन्न हूं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यूहन्ना ने हेरोदेस के गलत कार्य की भी खुलकर आलोचना की। इसलिए हेरोदेस यूहन्ना को जेल में डाल देते हैं।

अभिनय को बंद करें। लोगों का किरदार निभा रहे अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप सुन सकते हैं, "हेरोदेस पर क्रोधित हैं।" "यूहन्ना के बारे में चिंतित हैं।" "निराश हैं।"

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 3:15–22

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

सभी लोग **अपने दिलों में सोच** रहे थे या स्वयं से पूछ रहे थे कि क्या यूहन्ना ही मसीह थे। मसीह का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने लूका के पिछले अंशों में किया है। मसीह शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है। यूहन्ना उन्हें यह कहकर जवाब देते हैं कि मसीह एक अलग व्यक्ति थे जो उनके बाद आएंगे। यूहन्ना की तुलना में उनके पास अधिक अधिकार और सामर्थ्य होंगे। उनकी **पादुकाओं के तसमें भी खोलने के योग्य मैं नहीं,** यूहन्ना इस वाक्यांश का उपयोग करते हैं। चमड़े के तले से बने एक प्रकार के जूते को पादुकाएं कहते हैं। फीते चमड़े की पट्टियां होती हैं जो पादुकाओं को किसी व्यक्ति के पैर पर बांधती हैं। यहूदी संस्कृति में दास अपने स्वामी की पादुकाओं के फीते खोलते थे।

रुकें और अगर आपने पहले से ही ऐसा नहीं किया है तो अपनी टीम को यहूदी पादुकाओं की तस्वीर दिखाएं।

यूहन्ना यह कह रहे थे कि मसीह उनसे इतने अधिक महान हैं कि वे उनके दास होने के योग्य भी नहीं थे। **योग्य** का अर्थ लायक या पर्याप्त होना है। यूहन्ना को लगता है कि यीशु की सेवा करने के सम्मान के पात्र बनने जितने वे महत्वपूर्ण नहीं हैं। यह सुनिश्चित करें कि आपका अनुवाद यह न दर्शाए कि यूहन्ना बुरे या दुष्ट थे। योग्यता यूहन्ना की स्थिति पर लागू होती है, न कि उनके चरित्र पर।

यूहन्ना का कहना है कि मसीह जिस तरह से लोगों को बपतिस्मा देते थे वह उनके द्वारा दिए जाने वाले बपतिस्मा से उच्चतर था। यूहन्ना तो पानी से बपतिस्मा देते थे लेकिन मसीह लोगों को पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देंगे। याद रखें कि बपतिस्मा शब्द का अर्थ स्वच्छ और निर्मल करने के समान है। इस संदर्भ में बपतिस्मा का इस्तेमाल इस तरह से किया जाता है कि मसीह अपने बपतिस्मा के माध्यम से लोगों को निर्मल या शुद्ध करेंगे। बपतिस्मा देना प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है। **पवित्र आत्मा के साथ और आग के साथ** का अर्थानुवाद दो अलग तरीकों से किया जा सकता है। एक स्पष्टीकरण यह है कि मसीह का बपतिस्मा पवित्र आत्मा और आग से लोगों को निर्मल या शुद्ध करेगा। अन्य स्पष्टीकरण यह है कि मसीह का आग का बपतिस्मा पवित्र आत्मा के बपतिस्मा से अलग था। आग का बपतिस्मा ऐसे लोगों पर परमेश्वर के न्याय का द्योतक हो सकता है जो उनके उद्देश्य को अंगीकार नहीं करते हैं। सुनिश्चित करें कि आपका अनुवाद दोनों व्याख्याओं को गुंजायश देता हो। साथ ही पवित्र आत्मा के लिए उसी शब्द का इस्तेमाल करना भी महत्वपूर्ण है, जैसा कि आपने पहले उपयोग किया है। पवित्र आत्मा को प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

यूहन्ना गेहूं की कटाई करने वाले किसान के एक रूपक का इस्तेमाल यह बताने के लिए करते हैं कि मसीह पश्चाताप कर चुके लोगों से ऐसे लोगों को अलग करेंगे जिन्होंने ऐसा नहीं किया है। **गेहूं** एक प्रकार के अनाज का पौधा होता है। इसमें तने के रूप में एक डंठल होता है और उसके ऊपर बीज के गुच्छे होते हैं जिन्हें गेहूं का दाना कहा जाता है। **गाहने का फर्श** बाहर एक समतल क्षेत्र होता था जहां अनाज को भूसी या पुआल से अलग किया जाता था। दाने को भूसी से अलग करने के लिए के लिए ओसाई (पछोरने) नामक प्रक्रिया का उपयोग किया जाता था। **अंट्टा** एक ऐसा औजार होता था जो दांत वाले किसी बड़े बेलचे जैसा लगता था। इसका इस्तेमाल अनाज को हवा में फेंकने के लिए किया जाता था ताकि अनाज भूसी से अलग हो सके। भूसी खाने के काम की नहीं होती थी और इसलिए उसे बाद में जला दिया जाता था। अनाज के बीज एकत्रित किए जाते थे और उन्हें संजो कर रखा जाता था। गेंहूं के पौधे के एक बेकार हिस्से की तरह जो लोग पश्चाताप नहीं करते हैं उन्हें **कभी न बुझनेवाली आग** में फेंक दिया जाएगा। यह उन लोगों के लिए शाश्वत सजा का द्योतक है जो पश्चाताप नहीं करते हैं।

लूका *3:15–22*

रुकें और गेहूं की एक तस्वीर और अंट्टा की एक तस्वीर दिखाएं। यदि आपने पहले से ही ऐसा नहीं किया है तो ओसाई की प्रक्रिया का एक वीडियो दिखाएं। यदि आपके क्षेत्र में लोग इस औजार से परिचित नहीं हों तो इस उपकरण का उल्लेख करने के बजाय ओसाई की प्रक्रिया का वर्णन करना बेहतर विकल्प हो सकता है।

लूका का कहते हैं कि यूहन्ना ने **शुभ समाचार** बताया था। यह उसी शुभ समाचार को संदर्भित करता है जो स्वर्गदूतों ने चरवाहों को बताई थी। यह वह संदेश है कि परमेश्वर ने लोगों को बचाने के लिए मसीह को भेजा है। शुभ समाचार को प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है। यूहन्ना **घुड़कते** हैं या ऐसा कहते हैं कि राजा हेरोदेस जो कर रहे थे वह गलत था। वे कहते हैं कि राजा का अपने रिश्ते के भाई की पत्नी से विवाह करना परमेश्वर के कानून के खिलाफ है। चतुरादिदारुक, राजा हेरोदेस यूहन्ना को जेल में डालने का आदेश देते हैं। **चतुरादिदारुक** का मतलब किसी क्षेत्र के चौथे भाग के सरकारी प्रधान से होता है। इसका अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने लूका के पिछले अंशों में किया है। यूहन्ना को जेल में भेजे जाने से पहले, यीशु यूहन्ना के पास बपतिस्मा लेने आते हैं। लूका इन घटनाओं को उस क्रम में नहीं बताते हैं जिसमें वे घटित हुई थीं। कथा के लिए क्रम को और अधिक अर्थपूर्ण बनाने के लिए आपकी भाषा में यह अधिक आसान हो सकता है कि आप क्रम परिवर्तन कर दें।

बपतिस्मा लेने के बाद, यीशु प्रार्थना करते हैं और स्वर्ग खुल जाता है। इस संदर्भ में स्वर्ग का अर्थ आकाश के समान हो सकता है। पवित्र आत्मा का स्वर्ग से **एक कबूतर के शारीरिक रूप में** अवतरण होता है। इसका मतलब है कि यीशु पर अवतरित होने के लिए पवित्र आत्मा ने एक कबूतर का रूप धारण किया।

रुकें और अपनी टीम को एक कबूतर की तस्वीर दिखाएं।

जब लूका कहते हैं कि **स्वर्ग से एक आवाज आती** है, तो यह परमेश्वर की वाणी को संदर्भित करता है। यहां स्वर्ग शब्द उस स्थान को संदर्भित करता है जहां परमेश्वर रहते हैं। परमेश्वर यीशु से कहते हैं, "तुम मेरे पुत्र हो। मैं तुमसे प्रेम करता हूं। मैं तुमसे प्रसन्न हूं।"

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था,

जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 3:15–22

Audio Content

webm zip (3070750 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (5326295 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 3:23–38

सुनना और मनन करना

लूका 3:23–38

लूका 3:23–38 को सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे यह कथा सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 3:23–38

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

जब यीशु का बपतिस्मा हुआ, तो उन्हें पवित्र आत्मा द्वारा सामर्थ्यवान किया गया और परमेश्वर ने उनका अनुमोदन किया। लेकिन लूका अपनी कहानी को यहां ठहराने का फैसला करते हैं। एक अन्य प्रमाण के रूप में कि यीशु परमेश्वर के पुत्र थे, लूका यीशु की वंशावली देते हैं।

लूका कहते हैं कि यीशु लगभग 30 वर्ष के थे जब उन्होंने अपना सेवा कार्य प्रारंभ किया। इसका मतलब है कि वे सार्वजनिक रूप से परमेश्वर के बारे में शिक्षा देना शुरू करते हैं। यहूदी संस्कृति में 30 वर्ष की आयु परिपक्वता की द्योतक होती है।

लूका तब यीशु की वंशावली या उनके पूर्वजों की एक सूची देते हैं। वे ऐसा यह दिखाने के लिए करते हैं कि यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं। यह शब्द यीशु और परमेश्वर के बीच विशेष संबंध को संदर्भित करता है। यहूदी संस्कृति में वंशावलियां महत्वपूर्ण होती थीं क्योंकि वे यह दिखाती थीं कि कोई व्यक्ति किस परिवार से संबंधित होता था। इनका इस्तेमाल विरासत को निर्धारित करने के लिए भी किया जा सकता है। लूका कहते हैं कि यीशु को यूसुफ के पुत्र के रूप में जाना जाता था क्योंकि यूसुफ उनके जैविक पिता नहीं थे। लूका यह जानते हैं कि परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु की पहचान का यूसुफ के माध्यम से वापस अनुरेखण करने की आवश्यकता नहीं है। यीशु की पहचान उनके पवित्र आत्मा की शक्ति के माध्यम से गर्भधारण करने पर आधारित है। मानव वंशावली यह दिखाने का एक अन्य तरीका थी कि यीशु न केवल परमेश्वर के पुत्र थे बल्कि वे मानवता के साथ एकीकृत किए गए थे।

यहां रुकें और अपनी टीम से चर्चा करें। आपकी संस्कृति वंशावलियों को कैसे देखती है? अपनी संस्कृति में वंशावली को प्रस्तुत करने का सबसे स्वाभाविक तरीका क्या है? यीशु की वंशावली को प्रस्तुत करने के लिए इस आदर्श का इस्तेमाल करें।

अब्राहम और दाऊद को उनके पूर्वजों के रूप में सूचीबद्ध करके लूका यह साबित करते हैं कि यीशु ही मसीहा या प्रसिद्ध उद्धारकर्ता थे। ये दोनों पुरुष यहूदियों के लिए महत्वपूर्ण थे। परमेश्वर ने अपने लोगों से की जाने वाली उनकी वाचा या प्रतिज्ञा अब्राहम के साथ की थी, और मसीहा दाऊद के वंशज होंगे। इसलिए यीशु परमेश्वर के वचन में आधारित हैं और मसीहा होने की भविष्यवाणी को पूरा करते हैं।

लूका यीशु के पूर्वजों की वंशावली को आदम तक अनुरेखित करते हैं, जिन्हें लूका कहते हैं कि वे परमेश्वर के पुत्र थे। आदम परमेश्वर के पुत्र उस तरह से नहीं हैं जैसे सूची के लोग उनके पिताओं के पुत्र थे। लूका यह कह रहे हैं कि आदम परमेश्वर के पुत्र थे क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें रचा था। यीशु के पूर्वजों के संबंध में लूका की सूची को यह पूरा करता है।

लूका द्वारा दी गई वंशावली आदम तक यीशु के वंश को आरेखित कर यह दर्शाती है कि यीशु परमेश्वर के पुत्र थे।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 3:23–38

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य बनाने में समूह की मदद करेंगे। आप कथा के दृश्यों, विन्यास और पात्र परिभाषित करने में समूह की मदद करेंगे।

इस कहानी के चार दृश्य हैं।

पहला दृश्य: यूसुफ चरवाहों की सुनते हैं, शमौन और हन्नाह यीशु के भविष्य के बारे में बोलते हैं।

दूसरा दृश्य: परमेश्वर दाऊद से यह प्रतिज्ञा करते हैं कि उनका एक वंशज हमेशा के लिए शासन करेगा।

तीसरा दृश्य: परमेश्वर अब्राहम से प्रतिज्ञा करते हैं कि उनके वंशज एक जन-समूह बनेंगे और उनके पास उनके लिए एक विशेष भूमि है।

चौथा दृश्य: परमेश्वर आदम को जीवन देते हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- लूका
- थियुफिलुस
- परमेश्वर
- यूसुफ
- आदम
- दाऊद
- अब्राहम

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल (ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप इधर उधर रख सकते हैं जैसे पत्थर, लकड़ियां, बच्चों के खिलौने) का इस्तेमाल करे।

लूका थियुफिलुस को यीशु के हर एक पूर्वज की जानकारी देते हैं। वे ऐसा यह दिखाने के लिए करते हैं कि यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं। दृश्य 4 भागों में विभाजित हैं। प्रत्येक दृश्य में एक विशिष्ट चरित्र के बारे में थोड़ा विवरण दिया जाता है।

लूका बताते हैं कि यीशु के पिता यूसुफ थे। यूसुफ द्वारा विभिन्न लोगों से यह बात सुनी जाने को विशिष्ट रूप से दर्शाएं कि यीशु क्या बनेंगे।

लूका यीशु के पूर्वजों की वंशावली को जारी रखते हैं। दाऊद यूसुफ के एक पूर्वज हैं।

परमेश्वर द्वारा दाऊद से यह प्रतिज्ञा करने का दावा किया जाना चाहिए कि उनका राज्य हमेशा के लिए बना रहेगा। परमेश्वर कहते हैं कि एक राजा उनके वंशज से आएंगे। परमेश्वर का कहना है कि इस आने वाले राजा का शासन कभी समाप्त नहीं होगा।

लूका पूर्वजों के वंश क्रम को जारी रखते हैं। अब्राहम दाऊद के एक पूर्वज हैं।

परमेश्वर द्वारा अब्राहम को वंशजों की प्रतिज्ञा करने को विशिष्ट रूप से दर्शाएं। सितारों से अधिक! परमेश्वर कहते हैं कि वे लोगों का एक समूह बनेंगे और एक विशेष भूमि को धारण करेंगे।

लूका पूर्वजों के वंश क्रम को जारी रखते हैं। आदम अब्राहम के एक पूर्वज हैं।

परमेश्वर द्वारा आदम को जीवन देने और उनके जीवन को आकार देने को रेखांकित करें। आदम परमेश्वर के लिए एक पुत्र की तरह हो जाते हैं, क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें रचा है।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 3:23–38

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी के चार दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- लूका
- थियुफिलुस
- परमेश्वर
- यूसुफ
- आदम
- दाऊद
- अब्राहम

मण्डली से कथा की दो बार अदाकारी कराएं। पहले मण्डली से बिना रुके कहानी का अभिनय कराएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है और उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

यह सुनिश्चित करें कि मण्डली लूका द्वारा थियुफिलुस के लिए यीशु के पूर्वजों की वंशावली को सूचीबद्ध करने का अभिनय करती है। लूका ऐसा यह दिखाने के लिए करते हैं कि यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं। अन्य अभिनेता विशिष्ट पूर्वजों का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये पूर्वज मसीहा या प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता के बारे में परमेश्वर की वाचा की कथाओं को विशिष्ट रूप से दर्शाते हैं।

दूसरी बार जब टीम इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

यह लूका ही हैं जो हर एक पूर्वज के बारे में बता रहे हैं। उनके दर्शक थियुफिलुस हैं।

लूका द्वारा थियुफिलुस को यीशु के पूर्वजों की वंशावली को बताने की अदाकारी करें। यीशु के पिता यूसुफ थे। यूसुफ ने यीशु के भविष्य के बारे में विभिन्न स्रोतों से सुना।

लूका पूर्वजों की वंशावली को बताना जारी रखते हैं। दाऊद यूसुफ के एक पूर्वज हैं। परमेश्वर दाऊद से यह वादा करते हैं कि उनका राज्य हमेशा के लिए बना रहेगा। परमेश्वर कहते हैं कि एक राजा उनके वंशज से आएंगे। इस आने वाले राजा का शासन कभी समाप्त नहीं होगा।

लूका पूर्वजों की वंशावली को बताना जारी रखते हैं। अब्राहम दाऊद के एक पूर्वज हैं।

परमेश्वर अब्राहम को सितारों से अधिक वंशजों की वाचा देते हैं। उनके वंशज लोगों का एक समूह बन जाएंगे और एक विशेष भूमि पर अधिकार रखेंगे।

लूका पूर्वजों की वंशावली को बताना जारी रखते हैं। आदम अब्राहम के एक पूर्वज हैं।

परमेश्वर आदम को जीवन और उस जीवन को आकार देते हैं। आदम को सभी पेड़ों तक पहुंच होती है। परमेश्वर उन्हें फूलने-फलने और पृथ्वी को भरने के लिए कहते हैं। आदम अवज्ञा करते हैं। आदम परमेश्वर से विभक्त हो जाते हैं और बाग में वापस नहीं आ सकते।

अभिनय को बंद करें। लूका का पात्र निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप सुन सकते हैं, "हर चीज जुड़ी हुई है", "यह एक पूरी कथा ही है"

थियुफिलुस की भूमिका निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप सुन सकते हैं, "हर चीज यीशु के मसीहा होने की ओर इशारा करती है", "कुतूहल में हूं", "मैं अधिक सुनना चाहता हूं"।

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 3:23–38

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

जब यीशु लगभग 30 साल के हुए, तो वे लोगों को परमेश्वर के बारे में शिक्षा देना शुरू करते हैं। लूका यीशु की वंशावली या पूर्वजों की सूची देने के लिए अपने वृत्तांत को यहां ठहराते हैं। लूका इस वाक्यांश **'वे पुत्र थे'** का उपयोग उनकी सूची में यह अर्थ बताने के लिए करते हैं कि कोई व्यक्ति उनके पिता का पुत्र था। यह अर्थ यूसुफ के साथ यीशु के संबंध में अपने पहले उपयोग के बाद केवल निहित है। पुत्र का अर्थ पौत्र या वंशज

से भी हो सकता है। विद्वान इस बारे में सुनिश्चित नहीं हैं कि सूची में हर किसी का सटीक संबंध क्या है।

जब लूका कहते हैं कि **ऐसा यूसुफ के बारे में समझा जाता था,** तो उनका मतलब है कि यूसुफ यीशु के जैविक पिता नहीं थे, बल्कि उनके कानूनी पिता थे। मरियम यीशु के जन्म के समय कुंवारी थीं। कुछ लोगों ने यह जान लिया होगा कि यीशु का गर्भाधान पवित्र आत्मा द्वारा हुआ था, लेकिन दूसरों ने शायद सोचा होगा कि वे यूसुफ के पुत्र थे।

लूका **राम के पुत्र** का उल्लेख करते हैं। कुछ अनुवाद में यह दो पूर्वजों के रूप में सूचीबद्ध है। आदमीन का पुत्र, अरनी का पुत्र। यह सुझाव दिया जाता है कि आप अरनी के पुत्र का उपयोग करें। तब भी, यदि आपके क्षेत्र की प्रमुख राष्ट्रभाषा दो पूर्वजों के संदर्भ का उपयोग करती है, तो आप शायद इसे ऐसा ही रखना चाहेंगे।

लूका यीशु के वंश को आदम तक आरेखित करते हैं। वे आदम को **परमेश्वर का पुत्र** कहते हैं। आदम और परमेश्वर के बीच का संबंध सूची के शेष लोगों से अलग था। यह वाक्यांश परमेश्वर को आदम के सृजक होने का उल्लेख करता है। लूका वंश क्रम के माध्यम से दिखाते हैं कि यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं। **परमेश्वर के पुत्र** शब्द का इस्तेमाल इस्राएल के राष्ट्र, स्वर्गदूतों और राजा दाऊद के वंशज राजाओं के लिए किया जाता है। लूका इस उपाधि का उपयोग यह दिखाने के लिए करते हैं कि यीशु की प्रकृति परमेश्वर के समान है। उनका विशेष संबंध, मानवीय पिता और पुत्र के बीच के संबंध के समान है। यीशु पुत्र हैं और परमेश्वर उनके पिता हैं। यीशु के जन्म से पहले वे अपने पिता के पुत्र के रूप में शाश्वतत्व में पहले से ही विद्यमान थे। परमेश्वर का पुत्र प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 3:23–38

Audio Content

webm zip (2076235 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (3605300 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका *4:1–13*

लूका 4:1–13

सुनना और मनन करना

लूका 4:1–13

लूका 4:1–13 सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे यह कथा सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 4:1–13

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

यूहन्ना द्वारा यीशु के बपतिस्मा के बाद, लूका हमें यीशु की वंशावली देने के लिए ठहरते हैं। उन्होंने दिखाया कि यीशु परमेश्वर के पुत्र थे। इस अंश में लूका यीशु के यरदन नदी से निकलने के बाद उनके जीवन वृत्तांत को जारी रखते हैं।

यह कथा एक अन्य कथा के समान ही है जिससे यहूदी बहुत परिचित थे। यह जंगल में इस्राएल के परीक्षण की कथा है। दोनों ही कथाओं में दिव्य द्वारा जंगल में ले जाना दिखाया गया है, इसमें 40 की संख्या शामिल है और यह दिखाया जाता है कि परमेश्वर के "पुत्र" का परीक्षण किया जा रहा है। इस्राएल या यहूदियों को परमेश्वर के पुत्र के रूप में भी जाना जाता था। परमेश्वर ने इस्राएल को भोजन के बिना कई दिन रहने दिया। उन्होंने उन्हें केवल परमेश्वर की उपासना करने का निर्देश दिया। परमेश्वर ने इस्राएल से यह भी कहा कि वे परमेश्वर की परीक्षा न करें, लेकिन उन्होंने तीनों ही प्रलोभनों में उनकी अवज्ञा की। जिस अंतर पर लूका विशिष्ट रूप से ध्यान आकर्षित करते हैं, वह यह है कि यीशु सफल होते हैं और इस्राएल विफल हो जाता है।

अपने अनुवादकों को जंगल की एक तस्वीर दिखाएं, ताकि यह कथा कहां होती है, इसे वे बेहतर ढंग से समझ सकें।

लूका हमें यह बताते हैं कि यीशु उनके बपतिस्मा के बाद पवित्र आत्मा से भरे होते हैं। इसका मतलब है कि परमेश्वर की आत्मा यीशु के साथ थी और उन्होंने उन्हें वह करने का सामर्थ्य प्रदान किया जो परमेश्वर उनसे कराना चाहते थे। पवित्र आत्मा के नेतृत्व में वे यरदन नदी से जंगल की ओर जाते हैं।

रुकें और अपनी टीम को यरदन नदी और जंगल कहां हैं इसका नक्शा दिखाएं। वह जंगल किस तरह दिखता था, उसकी तस्वीर भी आप दिखा सकते हैं।

जब वे जंगल में होते हैं, तब शैतान दिखाई पड़ता है और यीशु को 40 दिन तक प्रलोभन देता है। शैतान का संदर्भ इब्लीस से है। वे सभी दुष्ट आत्माओं के प्रधान या नेता हैं। इब्रानी में उनका नाम शत्रु इसलिए है क्योंकि वे परमेश्वर और परमेश्वर के लोगों के शत्रु हैं। प्रलोभन देना यीशु को ऐसा करने के लिए फुसलाने की कोशिश करने से संदर्भित है, जो परमेश्वर उनसे कराना नहीं चाहते थे। शैतान यीशु से यह कहते हैं कि उन्हें पाप करने के लिए पुरस्कृत किया जाएगा, लेकिन वे झूठ बोलते हैं। शैतान यीशु को पाप करने के लिए फंसाने की कोशिश करने के लिए झूठ बोलते हैं।

यहां रुकें और अपनी टीम से चर्चा करें। दुष्ट आत्माओं के प्रधान को आपकी संस्कृति में कैसे देखा जाता है? दुष्ट आत्माओं के प्रधान लोगों से किस तरह बातचीत करते हैं? यहां शैतान को जिस तरह चित्रित किया जाता है, उससे वह किस तरह अलग है?

यीशु को जब प्रलोभन दिया जाता है तब वे चालीस दिन तक भोजन नहीं करते हैं, इसलिए वे बहुत भूखे होते हैं। शैतान यीशु को यह साबित करने के लिए चुनौती देते हैं कि पत्थर को रोटी के टुकड़े में तब्दील करके वे सिद्ध करें कि वे परमेश्वर के पुत्र हैं। यहां परमेश्वर के पुत्र के शीर्षक का अर्थ है कि यीशु के पास परमेश्वर के समान ही प्रकृति होती है। यह उनके संबंध को पिता और पुत्र के मानव संबंध के समान ही व्यक्त करता है। यीशु के जन्म से पूर्व वे पहले से ही अपने पिता परमेश्वर के पुत्र के रूप में शाश्वतत्व में अस्तित्व में थे। जब शैतान कहते हैं, "यदि आप परमेश्वर के पुत्र हैं," तो वे यीशु को यह साबित करने के लिए चुनौती दे रहे होते हैं कि वे कुछ अलौकिक कर्म करके यह सिद्ध करें कि वे कौन हैं। वे चाहते थे कि यीशु परमेश्वर के प्रावधान पर भरोसा करने के स्थान पर अपना प्रबंध स्वयं करें।

यीशु व्यवस्थाविवरण के इब्रानी शास्त्र से उद्धृत कर इब्लीस को जवाब देते हैं। व्यवस्थाविवरण मूसा द्वारा लिखी गई पुस्तकों में से एक थी। व्यवस्थाविवरण में यह लिखा गया है कि मनुष्य केवल रोटी से ही जीवित नहीं रहता है। इसका मतलब है कि भोजन से भी महत्वपूर्ण कुछ होता है। भोजन मात्र से सच्चा जीवन नहीं मिलता है। तो शैतान यीशु को एक अलग तरीके से प्रलोभन देने की कोशिश करता है।

शैतान यीशु को एक उच्च स्थान पर ले जाता है। वे यीशु को एक ही क्षण में दुनिया के सभी राष्ट्रों और राज्यों को दिखाते हैं। यह एक अतिप्राकृतिक घटना थी। शैतान यीशु से कहते हैं कि वे उन्हें सभी देशों पर शासन करने का अधिकार और हक देंगे। वे यह वादा करते हैं कि यीशु को सभी देशों की महिमा और महानता मिलेगी। शैतान कहते हैं कि वे यह अधिकार यीशु को दे सकते हैं क्योंकि यह उन्हें दिया गया है। वे यह नहीं कहते हैं कि उन्हें यह अधिकार किसने दिया है, केवल यही कि वे इसे जिसे चाहें उसे दे सकते हैं। यह एक और झूठ था। शैतान यीशु से कहते हैं कि वे उन्हें यह अधिकार तभी देंगे जब यीशु उन्हें पूजें। पूजा का मतलब है कि सम्मान या नम्रता में किसी के सामने झुकना। शैतान यीशु पर नियंत्रण हासिल करना चाहते हैं।

रुकें और अपनी टीम को उस ऊंचाई वाले स्थान की तस्वीर दिखाएं, जहां शैतान यीशु को ले गए थे।

यीशु एक बार फिर व्यवस्थाविवरण से शास्त्र को उद्धृत करके जवाब देते हैं। वे कहते हैं कि आपको केवल अपने परमेश्वर की उपासना करनी चाहिए और केवल उनकी सेवा करनी चाहिए। यहां उपासना का मतलब है सम्मान में झुकना और सेवा करने से तात्पर्य परमेश्वर को सम्मानित करने के लिए पूजा जैसे कृत्यों को करना है। प्रभु का मतलब है ऐसा कोई जिसे किसी व्यक्ति या वस्तु पर अधिकार होता है। यीशु के जवाब से यह पता चलता है कि जो शैतान उनसे चाहते थे उसे करने से वे इनकार कर रहे थे। यीशु कहते हैं कि वे केवल परमेश्वर की पूजा करेंगे।

तो शैतान यीशु को एक अलग तरीके से प्रलोभन देते हैं। इस बार वे यीशु को यरूशलेम में ले जाते हैं। वे उन्हें मंदिर या पूजा स्थल पर ले जाते हैं और उन्हें मंदिर के उच्चतम हिस्से पर बैठाते हैं। यह बाहरी दीवार पर बने बुर्ज में से एक था। यह 150 मीटर या 450 फीट लंबा था। यह इतना ऊंचा था कि अगर कोई उस पर से कूदता, तो वह बुरी तरह से घायल हो जाता। शैतान फिर से चुनौती देते हैं कि यीशु वास्तव में परमेश्वर के पुत्र हैं। वे यीशु से कहते हैं कि यदि वे वास्तव में परमेश्वर के पुत्र हैं तो वे मंदिर से कूद जाएं और उन्हें कोई चोट नहीं लगेगी। इस बार परंतु शैतान भजन संहिता की पुस्तक से इब्रानी शास्त्र को उद्धृत करते हैं। वे कहते हैं कि स्वर्गदूत यीशु को नुकसान पहुंचने से बचाएंगे। इस छंद का संदर्भ स्वर्गदूत है, जो किसी को उनके हाथों पर उठाते हैं ताकि वे जब चलें तो पत्थरों पर न लड़खड़ाएं। यह किसी को गिरने से और चोट लगने से बचाता है। शैतान यीशु पर इस छंद को लागू करते हैं। वे कहते हैं कि यदि यीशु मंदिर से कूद जाते हैं तो स्वर्गदूत उन्हें नीचे की चट्टानों पर चोट लगने से बचाएंगे।

अपने अनुवादकों को मंदिर के बुर्ज की एक तस्वीर यह समझने के लिए दिखाएं, कि वह कितना ऊंचा था।

यीशु पहले की तरह ही जवाब देते हैं। वे व्यवस्थाविवरण से शास्त्र उद्धृत करते हैं। वे शैतान से कहते हैं कि आपको प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा नहीं लेनी चाहिए। मंदिर से कूद जाना पाप था क्योंकि इससे परमेश्वर की परीक्षा होती थी। यीशु ने परमेश्वर की विश्वसनीयता की परीक्षा यह साबित करके की होती कि परमेश्वर उन्हें बचाएंगे।

शैतान यीशु की परीक्षा लेने के बाद उन्हें छोड़ देते हैं। वे केवल थोड़ी ही देर के लिए छोड़ते हैं जब तक कि यीशु की परीक्षा लेने का बेहतर अवसर न हो। यीशु को प्रलोभन दिया जाना यहूदी संस्कृति में महत्वपूर्ण है। यहूदी परंपरा में परमेश्वर के प्रति निष्ठा परीक्षण और प्रलोभन के माध्यम से सिद्ध होती है। यह कथा यीशु की परमेश्वर के लिए आज्ञाकारिता को दर्शाती है।

यह कथा महत्वपूर्ण है क्योंकि यह, जब यीशु को तीन अलग तरीकों से पाप करने को प्रलोभित किया जाता है, तब उनके द्वारा उस प्रलोभन पर काबू पाने को दर्शाती है। तीनों बार यीशु ऐसा नहीं करते हैं जो शैतान चाहता है कि वे करें। यीशु परमेश्वर के लिए अपनी विश्वासपूर्ण आज्ञाकारिता को दिखाते हैं, जो उन्हें सार्वजनिक सेवाकार्य के लिए तैयार करती है।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 4:1–13

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य बनाने में समूह की मदद करेंगे। आप कहानी के दृश्यों, विन्यास और पात्रों को परिभाषित करने में समूह की मदद करेंगे।

इस कहानी में पांच दृश्य हैं।

पहला दृश्य: यीशु पवित्र आत्मा से भरे होते हैं। पवित्र आत्मा के नेतृत्व में यीशु जंगल में जाते है। शैतान जंगल में यीशु को 40 दिन तक प्रलोभन देते हैं।

दूसरा दृश्य: यीशु भूखे हो जाते हैं। शैतान यीशु को पत्थर को रोटी में तब्दील करके अपनी पहचान को परमेश्वर के पुत्र के रूप में सिद्ध करने के लिए प्रलोभन देते हैं। यीशु ऐसा नहीं करते जो शैतान चाहते हैं कि वे करें।

तीसरा दृश्य: यदि यीशु उनकी उपासना करें तो, शैतान यीशु को दुनिया के सभी राज्यों पर नियंत्रण की पेशकश करते हैं। यीशु वैसा नहीं करते जो शैतान चाहते हैं कि वे करें।

चौथा दृश्य: शैतान यीशु को यरूशलेम में ले जाते हैं। वे चाहते हैं कि यीशु यह जानते हुए कि उन्हें कोई चोट नहीं पहुंचेगी, मंदिर से कूद कर परमेश्वर की परीक्षा करें। यीशु ऐसा नहीं करते जो शैतान चाहते हैं कि वे करें।

पांचवां दृश्य: शैतान छोड़ कर चले जाते हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- शैतान
- पवित्र आत्मा

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल (ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप इधर उधर रख सकते हैं जैसे पत्थर, लकड़ियां, बच्चों के खिलौने) का इस्तेमाल करे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु को तभी-तभी बपतिस्मा दिया गया था। स्वर्ग से आने वाली एक वाणी ने कहा। "तुम मेरे पुत्र हो। मैं तुमसे प्रेम करता हूं।"

यह ध्यान रखना भी महत्वपूर्ण है कि जब यीशु जंगल में थे तब शैतान उन्हें एक ऊंचे स्थान पर ले गया। कथा में यह उल्लेख नहीं मिलता कि यह कैसे हुआ था। लेकिन शैतान किसी तरह पृथ्वी के सभी राज्यों को दिखाता है। इसे एक अलौकिक घटना के रूप में दिखाया जा सकता है। एक बार फिर शैतान यीशु को यरूशलेम में मंदिर के एक उच्च हिस्से पर ले जाता है। इन क्रियाओं का आरंभ करने वाला शैतान है।

यीशु में उनके साथ पवित्र आत्मा होती है। पवित्र आत्मा यीशु को जंगल में जाने के लिए ले जाती है। जंगल में यीशु 40 दिन तक कुछ नहीं खाते हैं। यीशु को भूख लगती है। शैतान प्रकट होता है और यीशु को प्रलोभन देता है। पत्थर को रोटी में तब्दील करके शैतान यीशु से यह दिखाने के लिए कहता है कि यीशु वास्तव परमेश्वर के पुत्र हैं। यीशु शास्त्र को उद्धृत करके जवाब देते हैं, "लोग केवल रोटी से जीवित नहीं रहते हैं।"

शैतान यीशु को एक उच्च स्थान पर ले जाता है। शैतान यीशु को पृथ्वी के सभी राज्यों को दिखाता है। शैतान यीशु को सभी देशों पर अधिकार प्रदान करने की पेशकश करता है। शैतान यीशु से दुनिया के राज्यों की महिमा के बदले में उनकी उपासना करने को कहता है। यीशु शास्त्र को उद्धृत करके जवाब देते हैं, "आपको केवल परमेश्वर की उपासना करनी चाहिए और केवल परमेश्वर की सेवा करनी चाहिए।"

शैतान यीशु को यरूशलेम में मंदिर के सबसे ऊंचे हिस्से पर ले जाता है। एक बार फिर शैतान यीशु से वहां से बिना चोट खाए कूदकर यह दिखाने के लिए कहता है कि यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं। शैतान शास्त्र को यह कहते हुए उद्धृत करता है कि स्वर्गदूत यीशु की रक्षा करेंगे। शैतान यीशु को राजी करने की कोशिश के लिए ऐसा करता है। यीशु शास्त्र को उद्धृत करके यह कहते हुए जवाब देते हैं, "परमेश्वर की विश्वसनीयता की परीक्षा लेकर परमेश्वर की सच्चाई पर सवाल न उठाएं।"

यीशु द्वारा परमेश्वर के लिए उनकी आज्ञाकारिता को सिद्ध करने के बाद शैतान यीशु को प्रलोभन देना समाप्त करता है। शैतान यीशु को प्रलोभन देने के अगले अवसर तक के लिए छोड़ देता है।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 4:1–13

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी में पांच दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- शैतान
- पवित्र आत्मा

मण्डली से कहानी का दो बार अभिनय करवाएं। पहले मण्डली से बिना रुके कहानी का अभिनय कराएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है और उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

यह सुनिश्चित करें कि मण्डली यह अभिनय करे कि "तुम मेरे पुत्र हो मैं तुमसे प्रेम करता हूं" की स्वर्ग-वाणी होने के तुरंत बाद यह घटित हो रहा है।

यह सुनिश्चित करें कि मण्डली इस बात की अदाकारी करे कि यीशु 40 दिन तक जंगल में थे। शैतान उन 40 दिनों के दौरान यीशु को प्रलोभन देता है और यीशु कुछ भी नहीं खाते हैं।

दूसरी बार जब टीम इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

यह अभिनय करें कि यीशु पवित्र आत्मा से भरे हुए हैं। पवित्र आत्मा यीशु को जंगल में जाने के लिए ले जाती है। यीशु 40 दिन तक कुछ नहीं खाते हैं। यीशु को भूख लगती है। **अभिनय को बंद करें।** यीशु का पात्र निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मैं थक गया और भूखा हूं", "मैं कस्बे में वापस जाने के लिए तैयार हूं,", "मेरे पिता विश्वासयोग्य हैं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

शैतान प्रकट होता है और यीशु को प्रलोभन देता है। शैतान यीशु से पत्थर को रोटी में तब्दील करके यह दर्शाने के लिए कहता है कि यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं। यीशु शास्त्र को उद्धृत करके जवाब देते हैं, "लोग केवल रोटी से जीवित नहीं रहते हैं।" **अभिनय को बंद करें।** यीशु का पात्र निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मैंने अपने पिता की आवाज सुनी थी।

मैं जानता हूं कि मैं परमेश्वर का पुत्र हूं", "मैं आक्षेपित महसूस करता हूं", "मुझे उनका प्रतिरोध करने के लिए शास्त्र पर केंद्रित होने की जरूरत है।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

शैतान यीशु को एक उच्च स्थान पर ले जाता है। शैतान यीशु से पृथ्वी के राज्यों की महिमा के बदले में उनकी उपासना करने को कहता है। यीशु शास्त्र को उद्धृत करके जवाब देते हैं, "आपको केवल परमेश्वर की उपासना करनी चाहिए और केवल परमेश्वर की सेवा करनी चाहिए।"

अभिनय को बंद करें। शैतान का पात्र निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मुझे लगा था कि मैंने उन्हें इस बार फंसा लिया था", "यीशु राज्यों की महिमा क्यों नहीं चाहते हैं?" "मैं शास्त्र के खिलाफ जीत नहीं सकता हूं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

शैतान यीशु को यरूशलेम में मंदिर के सबसे ऊंचे हिस्से पर ले जाता है। एक बार फिर शैतान यीशु से वहां से बिना चोट खाए कूदकर यह दिखाने के लिए कहता है कि यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं। शैतान शास्त्र को यह कहते हुए उद्धृत करता है कि स्वर्गदूत यीशु की रक्षा करेंगे। शैतान यीशु को कूद जाने के लिए राजी करने की कोशिश में ऐसा करता है। यीशु शास्त्र को उद्धृत करके यह कहते हुए जवाब देते हैं, "परमेश्वर की विश्वसनीयता को परीक्षा में डालकर परमेश्वर की सच्चाई पर सवाल न उठाएं।" **अभिनय को बंद करें।** शैतान का पात्र निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "यीशु वाकई परमेश्वर के पुत्र हैं, यीशु यह सिद्ध करने को दृढ़संकल्पी हैं," "वे जानते हैं कि परमेश्वर के वचन सच हैं", "हताश हूं।"

यीशु का पात्र निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मैं अपने पिता के बल के लिए बहुत आभारी हूं", "मुझे पता है कि मुझे प्रलोभन देने की उनकी कोशिश अभी पूरी नहीं हुई है", "खाने और विश्राम के लिए तैयार हूं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु परमेश्वर के लिए उनकी आज्ञाकारिता को सिद्ध करते हैं। शैतान यीशु को प्रलोभन देना समाप्त करता है। शैतान यीशु को प्रलोभन देने के अगले अवसर तक के लिए छोड़ देता है।

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 4:1–13

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

लूका *4:1–13*

यीशु पवित्र आत्मा से भरे यरदन नदी से लौटते हैं। पवित्र आत्मा का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने उसे लूका के पिछले अंशों में किया है। पवित्र आत्मा को प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है। यीशु के बपतिस्मा लेने की यह कथा एक निरंतरता है।

आपकी भाषा में इसे इस प्रकार के परिवर्तन के साथ दिखाना और अधिक स्वाभाविक हो सकता है, जैसे, "यूहन्ना द्वारा यीशु को बपतिस्मा देने के बाद आत्मा यीशु को जंगल में ले जाती है।

जगंल में रहते समय यीशु को शैतान द्वारा 40 दिन **तक प्रलोभन दिया** जाता है। जंगल के लिए उसी शब्द का इस्तेमाल करें जैसा कि आपने पहले भी किया है। जंगल शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है। प्रलोभन का मतलब है किसी को पाप करने या कुछ गलत करने के लिए प्रेरित करने की कोशिश करना। कई बार लाभ अंतर्निहित है। प्रलोभन शब्द प्रधान शब्दावली में है। शैतान का संदर्भ इब्**लीस** से है। यह नाम उस आध्यात्मिक प्राणी को संदर्भित करता है, जिसे परमेश्वर ने बनाया था। वह दुष्ट आध्यात्मिक प्राणियों का नेता है, जिसने परमेश्वर से विद्रोह करने का फैसला किया। वे परमेश्वर और परमेश्वर के लोगों के शत्रु हैं। शैतान या इब्लीस को प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

अपने अनुवादकों से शैतान के लिए सबसे अच्छे शब्द पर चर्चा करें। अगर शैतान शब्द आपके दर्शकों के लिए अनजाना है आपको शैतान नाम को बुरी आत्माओं के प्रमुख के रूप में वर्णित करने की ज़रूरत पड़ सकती है, ।

यीशु 40 दिन तक कुछ नहीं खाते हैं, इसलिए वे बहुत भूखे हैं। शैतान यीशु को यह सिद्ध करने के लिए कि वे **परमेश्वर के पुत्र** हैं, उन्हें प्रलोभन देने की इच्छा करता है। परमेश्वर का पुत्र एक ऐसी उपाधि है जो परमेश्वर के साथ यीशु के विशेष संबंध को संदर्भित करता है। यह दर्शाता है कि यीशु के पास परमेश्वर के समान ही प्रकृति है। यीशु अपने जन्म से पहले अपने पिता के पुत्र के रूप में शाश्वतत्व में पहले से ही विद्यमान थे। परमेश्वर के पुत्र का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने उसे लूका के पिछले अंशों में किया है। परमेश्वर के पुत्र को प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है। शैतान चाहता है कि यीशु एक पत्थर को **रोटी** में तब्दील करें । यह शब्द उस रोटी को संदर्भित करता है जो यहूदी गेहूं से बनाते थे। यह गोल और सपाट होती थी।

रुकें और अपनी टीम को यहूदी लोग किस प्रकार की रोटी खाते थे उसकी तस्वीर दिखाएं।

यीशु शैतान को शास्त्र का उद्धरण देते हुए जवाब देते हैं। वे कहते हैं कि **मनुष्य केवल रोटी पर जीवित नहीं रहता है।** इसका मतलब है कि भोजन से अधिक महत्वपूर्ण बातें होती हैं। केवल रोटी ही सच्ची जिंदगी नहीं देती है। इस संदर्भ में रोटी सामान्य रूप से भोजन का प्रतिनिधित्व करती है।

यह सुनिश्चित करें कि इसका अनुवाद इस तरह न करें जिसका तात्पर्य हो कि लोगों को जीवन जीने के लिए रोटी के अलावा और भी कई प्रकार के भोजन की आवश्यकता होती है।

शैतान तब यीशु को एक उच्च स्थान पर ले जाता है और उन्हें दुनिया के सभी राज्यों को **एक ही पल में दिखाता है।** इसका मतलब है कि यीशु ने सभी देशों को एक ही समय में देखा था, इसलिए यह एक अलौकिक घटना ही रही होगी। शैतान कहते हैं कि अगर वे शैतान की उपासना करते हैं तो वे यीशु को सभी देशों का अधिकार और वैभव और महिमा देंगे। **उपासना** का मतलब है कि सम्मान या श्रद्धा दिखाने के लिए किसी को नमन करना। उन दिनों लोग राजाओं और मूरतों के सामने झुकते थे, घुटने टेकते थे या साष्टांग करते थे। उपासना शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है। शैतान यीशु के नेता के रूप में स्वयं को दिखाना चाहता है। यीशु यह कहते हुए जवाब देते हैं कि आप प्रभु अपने परमेश्वर की ही केवल उपासना करें। यहां **प्रभु** का मतलब है कि कोई ऐसा व्यक्ति जिसके पास अधिकार होता है। यीशु यह कह रहे थे कि उन्हें केवल सच्चे परमेश्वर की उपासना करनी चाहिए। प्रभु का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने उसे लूका के पिछले अंशों में किया है। प्रभु शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

अंत में शैतान यीशु को यरूशलेम ले जाता है और उन्हें **मंदिर के सबसे ऊंचे शिखर** पर रखता है। मंदिर का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने लूका के पिछले अंशों में किया है। मंदिर शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

रुकें और अपनी टीम को मंदिर की बाहरी दीवारों की तस्वीर दिखाएं।

सबसे ऊंचा बिंदु दूसरी दीवार पर स्थित मंदिर के बुर्ज के शीर्ष को संदर्भित करता है। यह लगभग 150 मीटर या 450 फीट लंबा था। शैतान यीशु से कहता है कि वह **अपने आप को वहां ने नीचे गिरा दें**। इसका अनुवाद इस तरह किया जा सकता है जैसे "छलांग लगा दो!" या "कूद जाओ!" इस बार शैतान शास्त्र को यह बताने के लिए उद्धृत करता है कि यीशु के स्वर्गदूत उन्हें नुकसान पहुंचने से बचाएंगे। पद कहता है कि स्वर्गदूत आपको हाथों-हाथ उठा लेंगे, ताकि आपके **पांव में पत्थर से ठे**स न लगे। इसका मतलब है कि स्वर्गदूत एक व्यक्ति को इस तरह उठा लेते हैं कि उनके पैर किसी पत्थर पर लड़खड़ाने और उनके गिरने का कारण न बने। यदि वे गिर गए तो उन्हें चोट लगेगी।

मंदिर के बुर्ज जितनी ऊंचाई से कूदने पर कोई भी व्यक्ति निश्चित ही मर जाएगा। तो शैतान चाहता है कि यीशु छलांग लगाकर परमेश्वर की परीक्षा लें ताकि यह सिद्ध हो सके कि परमेश्वर उनकी रक्षा करेंगे। यीशु शास्त्र के हवाले से यह कहते हुए जवाब देते हैं कि आप प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न करें। यीशु जानते हैं कि परमेश्वर को प्रलोभन देना पाप है। शैतान यीशु को कुछ समय के लिए प्रलोभन देना समाप्त करता है और छोड़ कर चला जाता है।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 4:1–13

Audio Content

webm zip (3637514 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (6315378 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 4:14–30

सुनना और मनन करना

लूका 4:14–30

लूका 4:14–40 को सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे यह कथा सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 4:14–30

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

लूका *4:14–30*

शैतान द्वारा यीशु को प्रलोभन देने के तुरंत बाद वे यरूशलेम से गलील के प्रांत की यात्रा करते हैं। यीशु परमेश्वर के बारे में शिक्षा देकर अपने सार्वजनिक सेवा कार्य का शुभारंभ करते हैं। लूका यीशु के सार्वजनिक सेवाकार्य के विषय में अपने क्रमबद्ध विवरण में सबसे पहले नासरत में यीशु की कथा को स्थान देते हैं। यीशु सब्त के दिन नासरत में शिक्षा देते हैं, लेकिन अपने गृहनगर में कोई सामर्थ्य के काम नहीं करते हैं।

रुकें और अपनी टीम को उस मार्ग का नक्शा दिखाएं, जो मार्ग यीशु ने यहूदिया से गलील तक जाने के लिए तय किया होगा। कथा को बेहतर ढंग से समझने के लिए कफरनहूम और नासरत के नगर कहां स्थित हैं, यह खोजें।

परमेश्वर जो करना चाहते हैं उसे करने का सामर्थ्य और मार्गदर्शन यीशु को पवित्र आत्मा से प्राप्त होता है। यीशु गलील में विभिन्न आराधनालयों में शिक्षा देते हैं और उनकी उपदेशों के लिए लोग उनकी प्रशंसा करते हैं। आराधनालय ऐसी इमारतें होती थीं जहां यहूदी प्रार्थना करने, परमेश्वर की उपासना करने, शास्त्रों का अध्ययन करने और उनकी मान्यताओं की शिक्षा देने के लिए एकत्रित होते थे। गलील के सभी लोग यीशु के बारे में बात कर रहे हैं।

रुकें और एक आराधनालय की तस्वीर दिखाएं।

यीशु नासरत, उस नगर में लौटते हैं जहां वे एक लड़के के रूप में बड़े हुए थे। सब्त के दिन वे आराधनालय में जाते हैं। यहूदियों के लिए सब्त का दिन सप्ताह का सातवां दिन होता है। जब से परमेश्वर ने उन्हें यह आज्ञा दी थी, तब से वे सब्त के दिन विश्राम करते और उपासना करते थे। यीशु की यह आदत थी कि वे हर सब्त के दिन आराधनालय में शिक्षा के लिए जाएं।

उपासना की सेवा के दौरान यीशु मण्डली के सामने शास्त्रों से पढ़ने के लिए खड़े होते हैं। खड़े होकर पढ़ना एक यहूदी प्रथा थी। एक सेवक जो आराधनालय में सेवा करते हैं ने यीशु को पढ़ने के लिए एक कुंडलित लेख दिया। कुंडलित लेख चर्मपत्र या कागज की एक लपेटी हुई पांड़लिपि होती थी जिस पर लेखन किया होता था। लोग उस कुंडलित लेख के दोनों सिरों को लकड़ी के हत्थों के चारों ओर लपेटते थे। हतथों का इस्तेमाल कुंडलित लेख को खोलने के लिए किया जाता था ताकि उसे पढ़ा जा सके।

रुकें और एक कुंडलित लेख की तस्वीर दिखाएं।

यीशु यशायाह के एक विशिष्ट अंश से पढ़ते हैं जो मसीहा या प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता का वर्णन करता है। इस अंश में मसीहा अपने बारे में बात कर रहे हैं। मसीहा कहते हैं कि पवित्र आत्मा ने उन्हें सामर्थ्य दिया है और परमेश्वर ने उन्हें विशेष रूप से चुना है। वे कहते हैं कि परमेश्वर ने उन्हें गरीबों तक अच्छी खबर पहुंचाने के लिए भेजा है। मसीहा कैदियों को मुक्त कर देंगे, अंधे लोगों को फिर से देखने का कारण बनेंगे, और उन लोगों को मुक्त करेंगे, जो दलित या टूटे हुए हैं। लोगों

के प्रत्येक समूह की व्याख्या न केवल शाब्दिक रूप से की जा सकती है, बल्कि आध्यात्मिक अर्थों में भी की जा सकती है। मसीहा का दावा है कि यह परमेश्वर की कृपा और दयालुता का वर्ष है। इस वाक्यांश ने यहूदियों के लिए क्षमा और स्वतंत्रता के एक विशेष वर्ष की याद दिलायी होगी, जिसे इस्राएली जुबली का वर्ष कहते हैं। यीशु तब कुंडलित लेख को लपेट देते हैं, उसे सेवक को वापस देकर नीचे बैठ जाते हैं। लेकिन लोग अभी भी यीशु पर ध्यान केंद्रित कर प्रतीक्षारत होते हैं कि वे आगे क्या कहेंगे।

यीशु कहते हैं कि शास्त्र ने जो बातें की थी वे उसी समय हो रही थीं जब वे उसे पढ़ रहे थे। यह कहकर यीशु मसीहा होने का दावा कर रहे हैं। यीशु के शब्द लोगों को आश्चर्य चकित करते हैं। यीशु लोगों को प्रभावित करते हैं। वे परमेश्वर की कृपा और अयोग्यता के बावजूद अनुग्रह के उनके संदेश पर सकारात्मक प्रतिक्रिया देते हैं। वे पूछते हैं कि "क्या यह यूसुफ का पुत्र नहीं है?" उन्हें यह विश्वास करना कठिन होता है कि जिस बालक को वे जानते थे कि वह अब इस तरह के ज्ञान के साथ शिक्षा देता था। लूका इसे एक प्रश्न के रूप में लिखते हैं जिसके जवाब की उम्मीद उन्हें नहीं होती है। वे यह व्यक्त कर रहे हैं कि नासरत के लोगों को अभी भी यह समझ नहीं आया था जो उनके पाठकों को पहले से ही पता था। यीशु की पहचान यूसुफ का पुत्र नहीं वरन् परमेश्वर का पुत्र है।

यीशु लोगों को एक प्रसिद्ध कहावत बताते हैं। इसका मतलब है कि जिस व्यक्ति में विशेष क्षमताएं हों उसे स्वयं की और अपने लोगों की मदद करनी चाहिए। यीशु को पता होता है कि लोग क्या सोच रहे हैं। वे उनसे उम्मीद करते हैं कि जिस तरह उन्होंने कफरनहूम में सामर्थ्य कर्म किए थे, उसी तरह वे नासरत में उनके लिए चमत्कार करें। लेकिन यीशु उन्हें बताते हैं कि कोई भी भविष्यद्वक्ता अपने गृहनगर में सम्मान नहीं पाता। लोगों को यह देखना कठिन होता है कि जिसके साथ वे पले बड़े हुए थे, वह व्यक्ति परमेश्वर द्वारा भेजा गया था। यीशु इस्राएल के अतीत के प्रसिद्ध भविष्यद्वक्ताओं में से दो उदाहरण देते हैं जिन्होंने अपने लोगों की बजाय अन्यजातियों की या गैर-यहूदी लोगों की मदद की थी। यीशु इस बात पर चर्चा करते हैं कि कैसे परमेश्वर ने अकाल के समय एक अन्यजाति विधवा की मदद करने के लिए भविष्यद्वक्ता एलिय्याह को भेजा। परमेश्वर ने एलिय्याह को इस्राएल की विधवाओं के पास नहीं भेजा। यीशु उस भविष्यद्वक्ता का वर्णन भी करते हैं जिसने नामान को कुष्ठ रोग, जो एक चर्म रोग है, से चंगा किया था। एलीशा ऐसे सभी इस्राएली लोग जिन्हें शुद्ध होने की आवश्यकता थी, के बजाय केवल नामान को चंगा करते हैं। नामान एक अन्यजाति थे जिन्होंने एक और देश सूर से इस्राएल की यात्रा की थी, और परमेश्वर ने उन्हें चंगा किया था। कुष्ठरोग एक चर्म रोग होता था जो किसी को अशुद्ध कर देता था। इन दोनों ही कथाओं से सभी यहूदी बहुत अच्छे से परिचित थे।

यहां रुकें और अपनी टीम से चर्चा करें। यदि कोई आपके समुदाय का है तो उसकी जिम्मेदारियां क्या होती हैं। वे ऐसे लोगों के बारे में क्या सोचते हैं जो अपनी क्षमताओं का कहीं और उपयोग करने के लिए अपने समुदाय को छोड़ देते हैं।

आराधनालय में लोग यीशु के वचनों पर बहुत क्रोधित हो गए। वे समझते हैं कि उनका मतलब है कि वे नासरत में सामर्थ्य कर्म नहीं करेंगे। लोग खड़े होकर यीशु की ओर हिंसक कार्रवाई करना शुरू करते हैं। वे यीशु को घेर कर पकड़ लेते हैं। वे यीशु को पहाड़ की उस चोटी पर जबरिया ले जाते हैं जिस पर नगर बसा हुआ था। वे यीशु को चट्टान से नीचे धकेलने और फिर पत्थर फेंक कर मारने की योजना बनाते हैं। लेकिन यीशु भीड़ से सुरक्षित निकल कर कहीं चले जाते हैं। लूका यह नहीं बताते कि यीशु ऐसा कैसे कर पाए। केवल यह स्पष्ट है कि लोग उन्हें नुकसान नहीं पहुंचा पाए।

यह कथा यीशु को परमेश्वर के पुत्र के रूप में पवित्र आत्मा के सामर्थ्य से शिक्षा देना दर्शाती है। यीशु अपनी शिक्षा के माध्यम से इस बात की पुष्टि करते हैं कि वे मसीहा हैं। यीशु यह भी स्पष्ट करते हैं कि उनका शुभ समाचार केवल यहूदियों के लिए ही नहीं है। यीशु का शुभ समाचार अन्याजाति की विधवा और अन्यजाति के कुष्ठ रोगी जैसे सबसे निम्न स्थिति के लोगों पर भी लागू होता है। लूका यीशु को अस्वीकार करने वाली अपनी विषय वस्तु को जारी रखते हैं। इस बार यीशु को नासरत में अपने पड़ोसियों और मित्रों द्वारा अस्वीकार कर दिया जाता है।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 4:14–30

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य बनाने में समूह की मदद करेंगे। आप कहानी के दृश्यों, सेटिंग्स, व कहानी के चरित्रों को उतारने में समूह की मदद करेंगे।

इस कहानी में पांच दृश्य हैं।

पहला दृश्य: यीशु गलील वापिस जाते हैं और आराधनालय में शिक्षा देते हैं। हर कोई उनकी प्रशंसा करता है।

दूसरा दृश्य: यीशु अपने गृहनगर में वापस आ गए हैं। यीशु सब्त के दिन आराधनालय में जाते हैं। यीशु यशायाह के पुस्तक से एक अंश को पढ़ते हैं।

तीसरा दृश्य: यीशु लोगों से कहते हैं कि भविष्यवाणी आज पूरी हुई है। लोग चकित होते हैं। साथ ही लोग उनसे सवाल भी करते हैं।

चौथा दृश्य: यीशु बताते हैं कि अतीत में भविष्यद्वक्ताओं के साथ क्या हुआ था।

पांचवां दृश्य: लोग उग्र हो जाते हैं और उन्हें चट्टान से नीचे फेंक देने की कोशिश करते हैं। लेकिन यीशु भीड़ के बीच में से बच निकलकर कहीं चले जाते हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- पवित्र आत्मा
- नासरत के लोग
- आराधनालय का सेवक
- कफरनहूम के लोग
- एलिय्याह
- इस्राएल की विधवाएं
- विदेशी विधवाएं
- इलीशा
- इस्राएल में कुष्ठरोगी
- नामान

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल (ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप इधर उधर रख सकते हैं जैसे पत्थर, लकड़ियां, बच्चों के खिलौने) का इस्तेमाल करे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु गलील के क्षेत्र में यात्रा कर रहे थे। इस सब्त के दिन वे नासरत में वापस आराधनालय में शिक्षा देते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु का गृहनगर एक पहाड़ी के स्थित था। हर कोई यीशु को यूसुफ का पुत्र मानता था।

शैतान द्वारा यीशु को रेगिस्तान में प्रलोभन देने के बाद वे गलील वापस जाते हैं। यीशु पवित्र आत्मा से भरे हुए हैं। लोग यीशु के बारे में बात करते हैं इसलिए क्षेत्र में हर कोई उनके बारे में जानता है। यीशु अक्सर आराधनालय में शिक्षा देने जाते हैं। यह एक ऐसा स्थान होता है जहां यहूदी शास्त्र सीखने और परमेश्वर की उपासना करने के लिए एकत्रित होते थे। लोग यीशु की प्रशंसा करते हैं।

यीशु अपने गृहनगर वापस जाते हैं। वे सब्त के दिन आराधनालय में शिक्षा देते हैं। यीशु शास्त्र पढ़ने के लिए खड़े हुए।

यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि यीशु ने यशायाह के कुंडलित लेख को नहीं मांगा था, लेकिन सेवक ने वह कुंडलित लेख यीशु को सौंपा था।

लूका *4:14–30*

आराधनालय का श्रोता यीशु को एक कुंडलित लेख देता है। वह कुंडलित लेख भविष्यद्वक्ता का था। यीशु शास्त्र का वह अंश पढ़ते हैं जहां यशायाह मसीहा के भविष्य के कार्यों का वर्णन करते हैं।

यीशु नीचे बैठते हैं। हर कोई उनकी ओर साभिप्राय प्रतीक्षा करता रहता है। तब यीशु कहते हैं कि "आज आपके सुनते हुए जो आपने सुना वह वर्तमान में पूरा हो रहा है।"

हर कोई उनके वचनों से चकित होता है। वे यीशु की प्रशंसा करते हैं। वे कहते हैं कि क्या यह यूसुफ का पुत्र नहीं है?

तब यीशु कहते हैं कि "कोई संदेह नहीं कि आप उस कहावत को उद्धृत करोगे कि अरे वैद्य स्वयं अपना इलाज कर।" और आपका मतलब है कि "कफरनहूम में जो सामर्थ्य कर्म आपने किए हैं उन्हें यहां भी करो।" लेकिन मैं आपको कहता हूं कि कोई भी भविष्यद्वक्ता अपने ही नगर में स्वीकार नहीं किया जाता है।"

उसके बाद यीशु लेख से लोगों को दो कहानियां बताते हैं। दोनों कथाएं इस बात का उदाहरण हैं कि किस तरह परमेश्वर ने अपने भविष्यद्वक्ताओं को उन लोगों को चंगा करने के लिए भेजा जो यहूदी नहीं थे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यहूदी उग्र हो गए क्योंकि लोगों के यीशु के प्रति विचारों को उजागर करने के लिए यीशु उन्हीं शास्त्रों का प्रयोग कर रहे थे जिन्हें यहूदी लोग अच्छी तरह से जानते थे।

जब लोगों ने यह सुना तो वे उग्र हो गए। उन्होंने एक झुंड बना लिया और यीशु को उस पहाड़ी के किनारे जबरिया ले जाने जिस पर नगर बसा हुआ था। वे उन्हें चट्टान पर से धक्का देने की कोशिश करते हैं लेकिन यीशु भीड़ के ठीक बीच में से बच निकलते और नासरत छोड़ देते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु का बच निकलना एक अलौकिक घटना है। हमें नहीं पता कि वे कैसे बच निकलते हैं केवल इतना ही कि परमेश्वर उन्हें वहां से जाने देते हैं।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 4:14–30

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी में पांच दृश्य हैं।

इस कहानी में पात्रों में ये शामिल हैं:

- यीशु
- पवित्र आत्मा
- नासरत के लोग
- आराधनालय का सेवक
- गलील के लोग
- एलिय्याह
- इस्राएल की विधवाएं
- विदेशी विधवाएं
- एलीशा
- इस्राएल में कुष्ठरोगी
- नामान

मण्डली से कहानी को दो बार अभिनीत करवाएं। पहले मण्डली से बिना रुके कहानी का अभिनय कराएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है और उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

यह सुनिश्चित करें कि दल यीशु को कफरनहूम से गुजरते हुए और वहां कुछ सामर्थ्य कर्म करने की अदाकारी करे।

यशायाह की भविष्यवाणी का अभिनय करना मददगार हो सकता है। यीशु का किरदार निभाने वाले पात्र इस अंश का अभिनय कर सकते हैं, परंतु बिना अपना चेहरा दिखाए। यह इस बात का द्योतक हो सकता है कि जब यशायाह ने भविष्यद्कथन लिखा था तो किसी को भी यीशु की पहचान नहीं थी।

यह सुनिश्चित करें कि जब मण्डली लोगों द्वारा यह कहे जाने का अभिनय करती है कि "क्या यह यूसुफ का पुत्र नहीं है?" तो उसमें प्रशंसा और विरोध दोनों ही दिखाया जा सकता है।

दूसरी बार जब टीम इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

शैतान द्वारा प्रलोभन दिए जाने के बाद यीशु के गलील में लौटने का अभिनय करें। यीशु पवित्र आत्मा से भरे हुए हैं। लोग उनके बारे में बात करते हैं। इस क्षेत्र के लोगों ने यीशु के बारे में सुना था। यीशु आराधनालय में शिक्षा देते हैं और लोग उनकी प्रशंसा करते हैं।

अभिनय को बंद करें। गलील के लोगों का पात्र निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप सुन सकते हैं कि "यीशु जिस तरह से शिक्षा देते हैं उससे अचम्भित हैं।" "प्रेरित हैं" "मुझे परमेश्वर की ओर फिरने की ज़रूरत है।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु अपने गृहनगर वापस जाते हैं। वे हमेशा की तरह आराधनालय में गए और सब्त के दिन शास्त्र पढ़ा। यीशु को यशायाह भविष्यद्वक्ता का कुंडलित लेख मिलता है। वे लिखते हैं कि "परमेश्वर की आत्मा मुझ पर है। परमेश्वर ने मुझे गरीबों को सुसमाचार पहुंचाने को चुना है। परमेश्वर ने मुझे बन्धुओं को छुड़ाने के लिए भेजा है ताकि वे मुक्त हो जाएं। जो लोग देख नहीं सकते वे देख पाएंगे और जो दलित हैं वे मुक्ति पाएंगे। यही वह समय है जब परमेश्वर इन नेक कार्यों को करेंगे।"

अभिनय को बंद करें। अभिनेता यीशु से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप सुन सकते हैं कि "चयनित।" "मेरे पिता के वचनों से उत्साहित हूं।" "काश कि वे समझ सकते कि मैं वास्तव में कौन हूं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

तब यीशु बैठ जाते हैं। हर कोई उनकी ओर साभिप्राय रूप से यह सुनने के लिए देख रहा होता है कि वे और क्या कहेंगे। तब यीशु कहते हैं कि "आज आपके सुनते हुए जो आपने सुना वह वर्तमान में पूरा हो रहा है।"

उनके कहे गए वचनों से हर कोई चकित होता है। हर कोई उनकी प्रशंसा करता है। वे कहते हैं कि "ऐसा कैसे हो सकता है?" क्या यह यूसुफ का पुत्र नहीं है?"

अभिनय को बंद करें। आराधनालय में लोगों का किरदार निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप सुन सकते हैं कि "यूसुफ का पुत्र मसीहा कैसे हो सकता है?" "मैं बेसब्री से उन सामर्थ्य के कार्यों का इंतजार कर रहा हूं जो वे यहां करेंगे।" "यदि वे मसीहा हैं तो परमेश्वर वाकई हमारे पक्ष में हैं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

तब यीशु लोगों से कहते हैं कि वे नासरत में सामर्थ्य कर्म नहीं करने के लिए उनसे सवाल करेंगे। यीशु कहते हैं कि कोई भी भविष्यद्वक्ता अपने ही नगर में स्वीकार नहीं किया जाता। यीशु एलिय्याह के समय सैदा की विधवा का उदाहरण देते हैं। उसके बाद यीशु एक दूसरा उदाहरण सूरयानी कुष्ठ रोगी नामान जो चंगे हो गए थे, का देते हैं।

अभिनय को बंद करें। यीशु का पात्र निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप सुन सकते हैं कि "उदास" "अस्वीकृत महसूस करते हैं।" मैं चाहता हूं कि वे विश्वास करें कि परमेश्वर का उद्धार हर किसी के लिए है, लेकिन वे विश्वास नहीं करेंगे।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

जब लोग यह सुनते हैं कि वे यीशु को पहाड़ की चोटी पर से धक्का देने की कोशिश करते हैं, लेकिन यीशु भीड़ में निकलकर नासरत छोड़ देते हैं।

अभिनय को बंद करें। लोगों का किरदार निभाने वाले लोगों से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप सुन सकते हैं कि "नाराज हैं।" "यीशु कहां गए?" "शायद हमने अतिप्रतिक्रिया कर दी।"

लूका *4:14–30*

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 4:14–30

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

शैतान द्वारा प्रलोभन दिए जाने के बाद यीशु गलील के प्रांत में लौट जाते हैं। पवित्र आत्मा द्वारा उनका नेतृत्व किया गया था। **पवित्र आत्मा** का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने उसे लूका के पिछले अंशों में किया है। पवित्र आत्मा प्रधान शब्दावली में है। यीशु गलील के लोगों को आराधनालय में शिक्षा देते हैं। **आराधनालय** ऐसे भवन होते हैं जहां यरूशलेम के मुख्य मंदिर जाने के बजाय गांवों में ही उपासना करने के लिए यहूदी लोग मिल सकते हैं। लोग आराधनालय में बलिदान नहीं करते थे। यहूदियों के स्थानीय लोग प्रार्थना करने, उपासना करने, शास्त्र पढ़ने और अपने विश्वासों की शिक्षा देने और सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए इकट्ठा होते थे। हर आराधनालय में पुरनियों का एक समूह और एक प्रधान नेता होता था। ये पुरुष याजक या शिक्षक नहीं होते थे लेकिन वे लोग उनके समुदायों में अति सम्मानित होते थे।

यदि आपने ऐसा पहले से नहीं किया है तो एक आराधनालय का चित्र दिखाएं। सुनिश्चित करें कि आराधनालय का अनुवाद वही शब्द न हो जो आप मंदिर के लिए उपयोग करते हैं। कुछ संभावित उदाहरण हो सकते हैं जैसे पूजा के यहूदी *प्रार्थना घर* या *उपासना के भवन*। आराधनालय का अनुवाद आप उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने लूका के पिछले अंशों में किया है। आराधनालय शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

शिक्षण साधन: एक आराधनालय और मंदिर के बीच के अंतर को दिखाने का एक तरीका यह है कि विभिन्न आकारों के कई पत्थर एकत्र किए जाएं। सुनिश्चित करें कि एक पत्थर बाकी सभी से बहुत बड़ा हो। छोटे पत्थरों की तुलना में बड़े पत्थर को थोड़ा ऊंचे स्थान पर रखें और मंदिर में लोगों के कार्यकलापों की तुलना आराधनालय में उनके कार्यकलापों से करने की चर्चा करने के लिए इस शब्द-चित्र का इस्तेमाल करें।

लूका बताते हैं कि हर सब्त के दिन आराधनालय में शिक्षा देना यीशु की आदत है। **सब्त** का दिन यहूदियों के लिए एक विशेष दिन होता है। यह सप्ताह के सातवें और अंतिम दिन का नाम है। जब से परमेश्वर ने उन्हें यह आज्ञा दी थी तब से यहूदी लोग सब्त के दिन को विश्राम और उपासना का दिन मानते थे। यीशु के समय के दौरान इस बात के बहुत कड़े नियम होते थे कि इस दिन कौन से काम हो सकते थे और कौन से नहीं। सब्त का दिन वह दिन भी होता था जब लोग परमेश्वर की उपासना करने के लिए आराधनालय में जाते थे। सब्त का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने उसे लूका के पिछले अंशों में किया है। शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

यीशु सब्त के दिन विशेष रूप से नासरत के आराधनालय में शिक्षा देते हैं। हर कोई उन्हें जानता है। यीशु खड़े होकर **एक कुंडल**ित लेख से पढ़ते हैं। कुंडलित लेख, पशु की खाल, चर्म-पत्र या भोजपत्र का एक लपेटा हुआ गोला होता था जिस पर लोग लेखन करते थे। कुंडलित लेख के दोनों सिरे लकड़ी के हत्थों के चारों ओर लिपटे हुए होते थे। हतथों का इस्तेमाल कुंडलित लेख को खोलने के लिए किया जाता था ताकि उसे पढ़ा जा सके। जब कोई उसका उपयोग नहीं कर रहा होता था तब कुंडलित लेख को लपेट कर रखा जाता था।

यदि आपने ऐसा पहले से नहीं किया है तो एक कुंडलित लेख का चित्र दिखाएं।

कुंडलित लेख में यशायाह भविष्यद्वक्ता के वचन रहे हैं। **भविष्यद्वक्ता** का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने लूका के पिछले अंशों में किया है। भविष्यद्वक्ता प्रधान शब्दावली में हैं। लूका बताते हैं कि यीशु **ने वही स्थान पाया** जहां लिखा गया था। इससे पता चलता है कि यीशु ने उन्हें दिए गए यशायाह के लेख से ऐसे ही कुछ भी पढ़ने के स्थान पर कुछ विशिष्ट बात पढ़ी। यीशु ने **मसीहा** या प्रतीज्ञा किए हुए उद्धारकर्ता के बारे में एक भविष्यद्वाणी को विशिष्ट रूप से पढ़ा जिससे यह पता चले कि वे ही मसीहा थे। सुनिश्चित करें कि आपका अनुवाद यह संकेत दे कि यीशु ने इस भविष्यद्वाणी को सस्वर पढ़ा। मसीहा के लिए उसी अनुवाद का इस्तेमाल करें जैसा कि आपने लूका के पिछले अंशों में किया है। मसीहा शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

यीशु कहते हैं कि परमेश्वर ने मेरा **अभिषेक** किया है। आमतौर पर अभिषेक का मतलब किसी के सिर पर तेल डालने कर उन्हें एक विशेष काम के लिए नियुक्त करने से होता है। यहां इस शब्द का प्रयोग लाक्षणिक रूप से किया गया है। इसका मतलब है कि भविष्यद्वाणी में सूचीबद्ध बातों को करने के लिए परमेश्वर ने यीशु को नियुक्त किया या चुना है। इसका मतलब यह नहीं है कि परमेश्वर ने मसीहा के सिर पर वस्तुत: तेल डाला था। अभिषेक शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

एक बात जो मसीहा करेंगे वह है कैदियों के लिए स्वतंत्रता की घोषणा करना। **कैदियों** का संदर्भ ऐसे लोगों से नहीं है जो अपराध करने के लिए जेल में थे । इसके बजाय, यह उन लोगों को संदर्भित करता है जो युद्ध के दौरान बंदी बना कर दूसरे देश में ले जाए जाते हैं। मसीहा इन कैदियों से कहेंगे, कि उनके लिए स्वतंत्रता है। उन्हें रिहा कर दिया जाएगा। **स्वतंत्रता** का अनुवाद अक्सर क्षमा के रूप में किया जा सकता है। इसलिए इस संदेश के लिए एक आध्यात्मिक अर्थ

भी हो सकता है। ऐसे लोग जो पाप के बंदी हैं, उन्हें मसीहा कह रहे हैं कि उन्हें क्षमा किया जा सकता है।

यशायाह लिखते हैं कि मसीहा **प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का भी प्रचार** करेंगे। इसका मतलब केवल यह है कि यह प्रभु के पक्ष का वर्ष है। इस वाक्यांश को सुनने वाले यहूदी लोगों ने परमेश्वर की व्यवस्था से जुबली के वर्ष को याद किया होगा। यह इस्राएलियों की स्वतंत्रता और क्षमा का एक विशेष वर्ष था। जुबली का वर्ष ऐसा कुछ था जो पुराने नियम में ऐसे समय का संकेत देने के लिए हुआ था जब मसीहा लोगों के लिए परमेश्वर की क्षमा की घोषणा करेंगे।

यीशु कहते हैं कि जब लोग बात सुन रहे थे तभी शास्त्र पूरा हो रहा था। **शास्त्र** उन यहूदी पवित्र लेखों को संदर्भित करता है जिनके पास अधिकार हैं। शास्त्र शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है। यीशु लोगों से कहते हैं कि वे मसीहा हैं। हर कोई उनके वचनों से चकित होता है। यीशु उनके विचारों को जानते हैं और **एक कहावत** को उद्धृत करते हैं। एक कहावत एक उक्ति या कथन होता है जिसे कई लोगों ने सुना होता है। यीशु इस कहावत का उपयोग यह बताने के लिए करते हैं कि लोग क्या सोच रहे थे। वे चाहते थे कि वे नासरत में उनके लिए सामर्थ्य कर्म करें। कहावत शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

आपकी भाषा में यह स्पष्ट करना आवश्यक हो सकता है कि यीशु वह कह रहे थे जो लोगों ने सोचा था। उन्होंने कहावत का उद्धरण देना बंद कर दिया।

जब यीशु इस्राएल के अतीत से एक भविष्यद्वक्ता एलिय्याह के बारे में बात करते हुए कहते हैं कि **आकाश बंद था**। इसका मतलब सिर्फ इतना है कि बारिश नहीं हुई थी। यीशु का कहना है कि एलिय्याह को **सैदा के सारफत क्षेत्र में** रहने वाली एक विधवा के पास भेजा गया था। यह इस्राएल के उत्तर में स्थित एक अन्यजाति नगर था। यह सैदा नगर के पास था।

यीशु इस्राएल के अतीत से एक अन्य भविष्यद्वक्ता एलीशा द्वारा नामान नामक कुष्ठ रोगी को चंगा करने के बारे में भी बात करते हैं। **कुष्ठरोग** कई प्रकार के चर्म रोग को संदर्भित करता है। ये बीमारियां किसी व्यक्ति को अशुद्ध और समुदाय में रहने में असमर्थ बनाती थीं। यदि कोई उन्हें छूता तो वे भी अशुद्ध हो जाते थे। यहूदी संस्कृति में परमेश्वर का कानून कहता था कि उन्हें फटे कपड़े पहनना, बालों को कंघी न करना और कहीं भी आते-जाते समय लोगों में 'अशुद्ध हूं' चिल्लाना आवश्यक था।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 4:14–30

Audio Content

webm zip (4155869 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (7223537 KB)

लूका *4:31–44*

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 4:31–44

सुनना और मनन करना

लूका 4:31–44

लूका 4:31–44 को सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे यह कथा सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

स्टेज सेट करना

लूका 4:31–44

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

क्योंकि नासरत के लोगों ने यीशु को अस्वीकार कर दिया था, वे वापिस कफरनहूम जाते हैं। कफरनहूम में लोग पहले से ही उन्हें स्वीकार कर चुके थे। बाद में वे शुभ समाचार का प्रचार करने के लिए गलील के विभिन्न नगरों में यात्रा करना जारी रखेंगे।

कफरनहूम नासरत से 580 मीटर नीचले तल पर स्थित है, इसलिए यीशु को शहर तक पहुंचने के लिए नीचे उतरना होता है। कफरनहूम नासरत से 30 किलोमीटर दूर था। कफरनहूम गलील झील के किनारे स्थित था। नासरत की तरह ही यीशु सब्त के दिन, जो यहूदी विश्राम और उपासना का धार्मिक दिन था, कफरनहूम आराधनालय में शिक्षा देते हैं। कफरनहूम में लोग यीशु कैसे शिक्षा देते हैं इस बात से चकित होते हैं। वे अधिकार या विश्वास के साथ शिक्षा देते हैं कि वे जो कुछ कहते हैं वह सत्य है।

रुकें और यीशु का नासरत से कफरनहूम तक का मार्ग देखने के लिए एक नक्शा दिखाएं।

जब यीशु शिक्षा दे रहे होते हैं तो एक दुष्टात्मा ग्रस्त व्यक्ति उन पर चिल्लाता है। दुष्टात्मा या बुरी आत्माएं उन आध्यात्मिक प्राणियों का उल्लेख करती हैं जो शैतान की सेवा करते हैं और उनके अधिकार के तहत हैं। वे अशुद्ध आत्माएं होती हैं जिनके पास लोगों पर कब्जा करने की शक्ति होती है। कब्जा करने का मतलब है कि मनुष्य के विचार और कृत्यों को बुरी आत्माओं द्वारा नियंत्रित किया जा रहा था।

ये बुरी आत्माएं मनुष्य के माध्यम से यीशु से बात करती हैं। वे यीशु को "यीशु नासरी" कहते हैं। इस वाक्यांश का मतलब है कि यीशु नासरत से थे। यहूदी संस्कृति में लोगों का एक निजी नाम होता था और उसके बाद उनकी पहचान उनके गृहनगर द्वारा की जाती थी। बुरी आत्मा डर से चिल्लाती है कि "आप हमसे क्या चाहते हैं?" इसका मतलब है कि यीशु का दुष्ट आत्माओं के साथ कुछ भी सामान्य नहीं है। बुरी आत्मा का तात्पर्य है कि यीशु को उनके या अन्य बुरी आत्माओं के साथ हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। बुरी आत्मा पूछती है कि "क्या आप हमें नष्ट करने आए हैं?" वे जानते हैं कि यीशु मसीहा या प्रसिद्ध उद्धारकर्ता हैं, और उनमें उन्हें नष्ट करने की शक्ति है। इस संदर्भ में नष्ट करने का अर्थ है कि दुष्ट आत्मा को मनुष्य को छोड़ने और उन्हें परमेश्वर के न्याय की प्रतीक्षा के लिए किसी स्थान पर जाने के लिए मजबूर करना है। बुरी आत्मा जानती है कि यीशु पवित्र हैं या विशेष उद्देश्यों के लिए परमेश्वर द्वारा एक व्यक्ति के रूप में अलग रखे गए हैं।

यहां रुकें और अपनी टीम से चर्चा करें। आपकी संस्कृति में जब कोई बुरी आत्मा द्वारा नियंत्रित होता है तो आप उसे किस तरह पहचान सकते हैं? क्या बुरी आत्माएं जिनका नियंत्रण करती हैं, उन्हें कुछ विशेष शक्तियां देती हैं।

लेकिन यीशु बुरी आत्मा को शांत होने और मनुष्य से बाहर निकलने की आज्ञा देते हैं। यीशु द्वारा ऐसा करने का एक कारण यह है क्योंकि बुरी आत्मा जानती है कि वे कौन हैं। यीशु नहीं चाहते थे कि लोग इस पहचान के कारण यह सोचें कि वे बुरी आत्मा के मिल कर काम कर रहे थे। बुरी आत्मा उस मनुष्य को सभी लोगों के बीच में पटक देती है। तब वह उस मनुष्य को बिना हानि पहुंचाए छोड़ देती है। आराधनालय में लोग बुरी आत्मा पर यीशु के सामर्थ्य पर चकित होते हैं। वे पूछते हैं कि "यह शिक्षा क्या है?" यह एक ऐसा सवाल था जिसका जवाब अपेक्षित नहीं था। यह यीशु के वचनों पर उनके आश्चर्य को व्यक्त करता है। इसका मतलब यह नहीं था कि लोग यह नहीं समझते थे कि यीशु क्या कह रहे थे। लोग देखते हैं कि यीशु को बुरी आत्माओं पर प्रभुत्व और उन्हें आज्ञा

पालन कराने का सामर्थ्य था। आराधनालय के लोग अन्य लोगों से कहते हैं कि क्या हुआ था। जल्द ही देश के उस हिस्से में हर कोई जानने लगता है कि यीशु ने क्या किया होता है।

यीशु आराधनालय से शमौन के घर तक जाते हैं, जिन्हें पतरस भी कहा जाता था। शमौन का घर आराधनालय के बहुत निकट है। शमौन विवाहित हैं। उनकी सास उनके साथ रहती हैं, लेकिन वे उच्च ताप से पीड़ित थीं। शमौन का परिवार चाहता है कि यीशु उन्हें चंगा करें। यीशु स्त्री पर झुकते हैं और बुखार को उन्हें छोड़ने की आज्ञा देते हैं। स्त्री का तापमान सामान्य हो जाता है। वे तुरंत उठकर आतिथ्य और आभार के साथ प्रतिक्रिया करती हैं। वे यीशु और उनके घर में लोगों के लिए भोजन खिलाने की सेवा प्रांरभ कर देती हैं।

जब सूर्यास्त होता है, वह शाम के लगभग छह बजे का समय था। इसका मतलब था कि यह सब्त का अंत था। सब्त के दिन काम न करने के सख्त नियमों के कारण लोग बीमार व्यक्ति को कहीं ले जाना काम समझते थे। वे रोगियों को यीशु तक चंगा होने के लिए लाने के लिए सब्त के समाप्त होने तक इंतजार करते हैं। यीशु प्रत्येक व्यक्ति को छूते और उन्हें चंगा करते हैं। यीशु कई बुरी आत्माओं को भी लोगों को छोड़ने का कह कर उनके बाहर निकलने का कारण बनते हैं। बुरी आत्माएं यीशु को पहचानती हैं और चिल्लाती हैं कि वे परमेश्वर के पुत्र हैं। लेकिन यीशु बुरी आत्माओं को लोगों को, वे जो हैं, उसे बताते नहीं रहने देते हैं। यीशु ने ऐसा इसलिए नहीं किया क्योंकि यह असत्य था। उन्होंने उन्हें इसलिए रोक दिया क्योंकि लोगों को यह जानने का सही समय नहीं था कि वे मसीहा हैं।

अगले दिन यीशु ऐसे क्षेत्र में जाने के लिए जाते हैं जहां कुछ लोग रहते थे। यीशु अकेले रहकर प्रार्थना करना चाहते थे। कफरनहूम की भीड़ को एहसास होता है कि उन्होंने अपने शहर को छोड़ दिया है और वे उनकी तलाश शुरू कर देते हैं। जब लोग उन्हें पाते हैं तो वे उन्हें कफरनहूम में ही रहने के लिए राज़ी कराने की कोशिश करते हैं। लेकिन यीशु उन्हें बताते हैं कि उन्हें परमेश्वर के राज्य के बारे में सुसमाचार बताने के लिए अन्य नगरों में जाना आवश्यक है। यहां परमेश्वर के राज्य का संदर्भ मसीहा पर विश्वास के माध्यम से परमेश्वर का लोगों के दिलों और जीवन पर शासन करने से है। यीशु कहते हैं कि यही वह कारण है जिस लिए परमेश्वर ने उन्हें भेजा है। इसलिए यीशु कफरनहूम छोड़ देते हैं। वे विभिन्न नगरों में उनके आराधनालयों में शिक्षा देना जारी रखते हैं।

यह कथा हमें परमेश्वर ने जिस ध्येयपूर्ति के लिए यीशु को भेजा था उस कार्य को यीशु द्वारा प्रारंभ करना दर्शाती है। जिस तरह यीशु ने यशायाह में पढ़ा था, उसी तरह यीशु का सेवाकार्य उन लोगों की मदद करता है जो निम्न स्थिति के होते हैं। इसमें बुरी आत्माओं से ग्रस्त, रोगी, स्त्री और साथ ही पुरुष भी शामिल हैं। लूका शैतान और उसकी दुष्ट आत्माओं द्वारा यीशु और परमेश्वर के ध्येय के विरोध की विषयवस्तु को भी निरंतर रखते हैं। यहां हम देखते हैं कि परमेश्वर ने यीशु को शिक्षा देने की और दुष्ट आत्माओं के ऊपर अधिकार दिया है।

मीडिया संसाधन सूची:\

- नासरत से कफरनहूम तक का मार्ग दिखाने वाला नक्शा
- एक आराधनालय का चित्र

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 4:31–44

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य बनाने में समूह की मदद करेंगे। आप कथा के दृश्यों, माहौल और कथा का चरित्र गढ़ने में समूह की मदद करेंगे।

इस कहानी के चार दृश्य हैं।

पहला दृश्य: यीशु आराधनालय में शिक्षा देते हैं और लोग चकित होते हैं। यीशु अधिकार के साथ बात करते हैं।

दूसरा दृश्य: एक दिन यीशु आराधनालय में शिक्षा दे रहे होते हैं। बुरी आत्माओं से युक्त एक मनुष्य यीशु पर चिल्लाता है। यीशु बुरी आत्मा को मनुष्य को छोड़ने के लिए आज्ञा देते हैं। बुरी आत्मा छोड़ देती है। लोग यीशु की शक्ति के बारे में आश्चर्य करते हैं। यीशु के बारे में समाचार पूरे क्षेत्र में फैल जाता है।

तीसरा दृश्य: यीशु आराधनालय से शमौन के घर तक जाते हैं। शमौन की सास को एक उच्च ताप होता है। यीशु उन्हें चंगा करते हैं और वह उन्हें भोजन खिलाने की सेवा करने लगती है।

चौथा दृश्य: यीशु कफरनहूम से जल्दी ही एक ऐसे स्थान पर जाने के लिए निकलते हैं जहां वे अकेले प्रार्थना कर सकें। लोग उनकी तलाश करते हैं और उन्हें पाते हैं। लोग उन्हें वहां रहने के लिए विनती करते हैं। यीशु यह स्पष्ट करते हैं कि उन्हें अन्य शहरों में जाना क्यों निरंतर रखना होगा।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- बुरी आत्मा वाला मनुष्य
- बुरी आत्मा
- कफरनहूम के लोग
- शमौन
- शमौन की सास

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल (ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप इधर उधर रख सकते हैं जैसे पत्थर, लकड़ियां, बच्चों के खिलौने) का इस्तेमाल करे।

यीशु गलील के एक नगर कफरनहूम जाते हैं। यीशु सब्त के दिन शिक्षा देते हैं और लोग चकित होते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यह एक बुरी आत्मा होती है जो यीशु को पहचानती है और वही बुरी आत्मा उस मनुष्य के माध्यम से बोलती है। यह वह मनुष्य नहीं है जो जानता है कि यीशु कौन हैं।

यीशु आराधनालय में होते हैं। एक बुरी आत्मा एक नियंत्रित मनुष्य की माध्यम से यह पहचानती है कि यीशु कौन थे।

याद रखें कि बुरी आत्मा मनुष्य को नियंत्रित कर रही है।

यीशु बुरी आत्मा को शांत रहने और मनुष्य से बाहर निकलने की आज्ञा देते हैं। मनुष्य गिर जाता है और हर कोई यह बता सकता है कि बुरी आत्मा मनुष्य को छोड़ चुकी है।

लोग यीशु के वचनों के अधिकार और सामर्थ्य के बारे में अचरज करते हैं। क्योंकि उन्होंने बुरी आत्मा को यीशु की आज्ञा पर छोड़ते देखा। इसलिए पूरे क्षेत्र का हर एक गांव यीशु के बारे में सुनता है।

यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि हर एक गांव को यीशु के बारे में इस समय तक पता नहीं था, लेकिन इस घटना के बाद जो कुछ हुआ उसका समाचार चारों ओर फैल गया।

यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि शमौन का घर आराधनालय से बहुत दूर नहीं था। इसलिए जिस भीड़ ने बुरी आत्मा को निकाले जाते हुए देखा वह शायद यीशु के पीछे-पीछे शमौन के घर गई थी।

यीशु आराधनालय से निकलते हैं और शमौन के घर जाते हैं। हर कोई यीशु से शमौन की सास को चंगा करने के लिए कहता है। वे एक उच्च ताप से बहुत बीमार थीं। यीशु उनके पास खड़े होते हैं और बुखार को उन्हें छोड़ने की आज्ञा देते हैं। तुरंत शमौन की सास अच्छी हो जाती है। उसके बाद वे खड़ी होती हैं और उनके लिए भोजन बनाती हैं। रात में लोग हर ऐसे व्यक्ति को जो रोग या बुरी आत्माओं से ग्रस्त था उसे यीशु के पास लेकर आए। यीशु ने बीमारों को चंगा किया और लोगों को बुरी आत्माओं से मुक्त कराया।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु भीड़ से बच नहीं रहे हैं बल्कि परमेश्वर के साथ अकेले रहने के लिए समय निकाल रहे हैं।

सुबह सबेरे, बहुत ही तड़के, यीशु अपने आप से एक स्थान पर जाते अकेले जाते हैं। लोग यीशु की हर जगह खोज करते हैं। अंतत: वे उन्हें पाते हैं और उनसे विनती करते हैं कि वे कफरनहूम को न छोड़ें। लेकिन यीशु बताते हैं कि उन्हें कई अन्य नगरों में भी परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाने के लिए भेजा गया था। इसलिए यीशु चारों ओर यात्रा करना और पूरे यहूदा के आराधनालयों में शिक्षा देना जारी रखते हैं।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 4.31–44

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी के चार दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- बुरी आत्मा वाला मनुष्य
- बुरी आत्मा
- कफरनहूम के लोग
- शमौन
- शमौन की सास

मण्डली से कहानी को दो बार अभिनीत करवाएं। पहले मण्डली से बिना रुके कहानी का अभिनय कराएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है और उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

स्मरण में रखें कि बुरी आत्मा मनुष्य को नियंत्रित कर रही है। यह बुरी आत्मा का अभिनय करने वाले व्यक्ति द्वारा नियंत्रित हुए और हाथ हिलाने वाले मनुष्य के पीछे छुपने का अभिनय कर दर्शाया जा सकता है। जो व्यक्ति बुरी आत्मा के रूप में काम कर रहा है वह उस मनुष्य के कान में जो नियंत्रित है, फुसफुसा सकता है और यीशु का भय दिखा सकता है।

जब मनुष्य गिर जाता है, तो आप बुरी आत्मा के अभिनेता को उस मनुष्य को नीचे धकेलकर दृश्य से बाहर चले जाने का अभिनय करा सकते हैं।

दूसरी बार जब टीम इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

यीशु अपने गृहनगर से निकलने के बाद कफरनहूम जाते हैं। यीशु का शिक्षण लोगों को चकित करता है। बुरी आत्माओं वाला एक मनुष्य यीशु को पहचानता है और उन्हें दूर जाने को कहता है।

अभिनय को बंद करें। लोगों का किरदार निभाने वाले लोगों से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप सुन सकते हैं जैसे "अचंभित हैं।" "वे कितने अधिकार के साथ शिक्षा देते हैं!" "परमेश्वर ने अंततः हमारे उद्धारकर्ता को भेजा है।" अभिनय को दोबारा प्रारंभ करें।

यीशु आत्मा को मनुष्य को छोड़ने के लिए आज्ञा देते हैं। बुरी आत्मा मनुष्य को छोड़ देती है। मनुष्य की पीड़ा खत्म हो जाती है।

अभिनय को बंद करें। बुरी आत्मा से ग्रस्त मनुष्य की भूमिका निभाने वाले अदाकार से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप सुन सकते हैं कि "मैं मुक्त हूं।" "राहत" "धन्यवाद, यीशु।" "अब मैं अपने परिवार में लौट सकता हूं।" अभिनय को दोबारा प्रारंभ करें।

लोग यीशु के वचनों के अधिकार और सामर्थ्य के बारे में आश्चर्य करते हैं क्योंकि वे बुरी आत्मा को यीशु की आज्ञा पर छोड़ते हुए देखते हैं। पूरे क्षेत्र का हर गांव यीशु के बारे में सुनता है।

तब यीशु शमौन के घर जाते हैं। शमौन की सास उच्च ताप से रोगग्रस्त है। लोग यीशु से उन्हें चंगा करने के लिए कहते हैं। यीशु उन्हें चंगा करते हैं और वे तुरंत उठकर भोजन बनाने के लिए खड़ी हो जाती हैं।

अभिनय को बंद करें। शमौन की सास की भूमिका निभाने वाली अदाकारा से पूछें, "आप कैसा महसूस करती हैं?" आप सुन सकते हैं कि "विनम्र" "मैं यीशु को दिखाना चाहता हूं कि मैं कितनी कृतज्ञ हूं।" "शमौन यीशु का शिष्य है, इस बात से मैं बहुत ही खुश हूं।" अभिनय को दोबारा प्रारंभ करें।

रात में लोग हर ऐसे व्यक्ति को जो रोग या बुरी आत्माओं से ग्रस्त था उसे यीशु के पास लेकर आए। यीशु ने बीमारों को चंगा किया और लोगों को बुरी आत्माओं से मुक्त कराया।

यीशु एक स्थान पर अकेले जाते हैं। लोग यीशु की तलाश करते हैं और उन्हें खोज निकालते हैं। लोग यीशु को रुकने के लिए कहते हैं। लेकिन यीशु कहते हैं कि उन्हें अच्छी खबर बताने के लिए अन्य स्थानों पर जाने की आवश्यकता है। इसलिए यीशु चारों ओर यात्रा करना और पूरे यहूदा के आराधनालयों में शिक्षा देना जारी रखते हैं।

अभिनय को बंद करें। यीशु का पात्र निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप सुन सकते हैं, "चयनित।" "मैं केवल परमेश्वर के बल के सहारे गुजरते रहना चाहता हूं।" "मुझे लोगों के लिए करुणा महसूस होती है।"

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 4:31–44

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु नासरत से कफरनहूम की ओर वापस जाते हैं। वे सब्त के दिन कफरनहूम आराधनालय में लोगों को शिक्षा देना शुरू कर देते हैं। **आराधनालय** और **सब्त** का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने लूका के पिछले अंशों में किया है। दोनों शब्दों को प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है। लोग यीशु की शिक्षा पर चकित होते हैं क्योंकि वे **अधिकार** के साथ शिक्षा देते हैं। लूका अधिकार शब्द का उपयोग करते हैं जिसका अर्थ है किसी को कोई कार्य करने के लिए दिया गया अधिकार। यह सामर्थ्य से अलग है क्योंकि सामर्थ्य किसी की अपने आप में कुछ करने की क्षमता होती है।

शिक्षण साधन: यह दिखाने के लिए कि अधिकार का क्या अर्थ होता है, आपको मण्डली के दैनिक जीवन से एक उदाहरण देने की आवश्यकता हो सकती है। स्थानीय सरकार या ग्रामीण जीवन से एक उदाहरण का इस्तेमाल करना उपयोगी हो सकता है। एक सरकारी कर्मचारी सिर्फ एक व्यक्ति है। किसी भी चीज का प्रवर्तन करने के लिए उसके पास कोई सामर्थ्य नहीं है। भले ही वह कानूनों को प्रवर्तित करने की कोशिश करे, तब भी शायद लोग उनका अनुसरण करें या शायद न भी करें। लेकिन जब सरकार उसे अधिकार प्रदान करती है, तो वह कानून का प्रवर्तन करने के लिए कार्य कर सकता है।

शिक्षा देते समय एक दुष्टात्मा ग्रस्त व्यक्ति उन पर चिल्लाता है। **दुष्टात**्मा एक **बुरी आत्मा** होती है। सभी बुरी आत्माएँ अशुद्ध हैं क्योंकि वे परमेश्वर की सेवा के योग्य नहीं हैं। बुरी आत्माएं आत्मिक प्राणी होती हैं जो शैतान की सेवा करते हैं और उनके अधिकार के तहत होते हैं। उनमें लोगों का दमन करने और उनके विचारों और कार्यों पर नियंत्रण करने की शक्ति होती है। हम बाइबल से जानते हैं कि बुरी आत्माओं को परमेश्वर ने बनाया था और उन्होंने उनकी आज्ञा न मानने का चुनाव किया। हालांकि कुछ भाषाओं में ऐसा शब्द नहीं होता है, जो इसे पर्याप्त रूप से व्यक्त कर सके।

अपनी भाषा में एक ऐसा शब्द चुनने की कोशिश करें जो किसी ऐसी स्वतंत्र आत्मा को संदर्भित करता हो, जो दुष्ट है और परमेश्वर की विरोधी है। अगर ऐसा कोई शब्द हो, तो आप स्वतंत्र आत्मा के लिए किसी तटस्थ शब्द का इस्तेमाल भी कर

सकते हैं और शैतान से आई आत्मा या बुरी/दुष्ट आत्मा जैसे विवरण जोड़ सकते हैं।

बुरी आत्मा डरी हुई है कि यीशु उसे **नष्ट कर** देंगे। इसका संदर्भ यीशु द्वारा उस मनुष्य से बुरी आत्मा का निकालना और ऐसे स्थान पर भेजना है जहां परमेश्वर के अंतिम न्याय तक उसे कैद में रखा जाएगा। बुरी आत्मा को डर है कि यीशु उसके सामर्थ्य को नष्ट कर देंगे। बुरी आत्मा यीशु **को परमेश्वर का पवित्र जन** कहती है। **पवित्र** का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले किया है। यीशु बुरी आत्मा को शांत रहने और मनुष्य से बाहर निकलने की आज्ञा देते हैं। बुरी आत्मा छोड़ देती है। बुरी आत्मा छोड़ देती है, इसलिए नहीं क्योंकि वह चाहती थी, बल्कि इसलिए कि यीशु ने उसे ऐसा करने की आज्ञा दी थी।

यीशु आराधनालय से निकलते हैं और शमौन के घर जाते हैं। यह पहली बार है जब लूका शमौन का उल्लेख करते हैं। लूका बाद में उन्हें पतरस के रूप में संदर्भित करेंगे। आपके अनुवाद में यह जोड़ना सहायक हो सकता है कि उन्हें पतरस भी कहा जाता था। शमौन की सास बीमार होती है। यीशु उनके ऊपर झुकते हैं और बुखार को डांटते हैं। **डांटने** का मतलब है कि बलपूर्वक बात करना। यीशु बुखार को छोड़ने की आज्ञा देते हैं और वह ऐसा करता है। लूका यीशु को इस महिला को ठीक करने का वर्णन ठीक उसी तरह करते हैं जिस तरह वे यीशु द्वारा बुरी आत्माओं को निकालने का वर्णन करते हैं। यह सुनिश्चित करें कि आपका अनुवाद का अर्थ ऐसा न हो कि सभी रोग बुरी आत्माओं के कारण होते हैं।

यीशु लोगों को चंगा करना, दुष्टात्माओं को निकालना और सुसमाचार का प्रचार करना जारी रखते हैं। दुष्टात्मा यह पहचानती हैं कि वे **मसीह या मसीहा** हैं। इसका अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पिछले अनुवादों में किया है। यीशु उन्हें बोलने नहीं देते और उन्हें दूर भेज देते हैं। कफरनहूम के लोग चाहते हैं कि यीशु वहीं रहें, लेकिन वे कहते हैं कि उन्हें अन्य नगरों में **सुसमाचार** का प्रचार करना आवश्यक है। सुसमाचार को उसी तरह अनुवादित करें जिस तरह आपने पिछले अनुवाद में किया है।

यीशु **परमेश्वर के राज्य वाक्या**ंश का उपयोग करते हैं। यह एक भौतिक राज्य का नहीं वरन् उस समय का उल्लेख करता है जब परमेश्वर लोगों के जीवन और दिलों पर शासन करने के लिए आते हैं। यीशु परमेश्वर के राज्य का एक हिस्सा लोगों तक लाने के लिए आए। इसका मतलब है कि लोग यीशु का अनुसरण करें, एक दूसरे की मदद करें और यीशु के प्रेम को दूसरों तक फैलाएं। बाद में परमेश्वर परिपूर्ण राज्य लेकर आएंगे। परमेश्वर अपने लोगों पर पूरी तरह से राज करेंगे। इसके बाद, कोई और तकलीफ़ या बुराई नहीं होगी और सभी लोग उनकी बात मानेंगे। जब यीशु ने परमेश्वर के राज्य के बारे में बात की, तो लोगों को यह समझ में नहीं आया, इसलिए यह उन्हें एक रहस्य जैसा लगा। उन्हें सच में यीशु की बात सुनने की ज़रूरत थी, ताकि वे समझ सकें कि वे क्या कहना चाहते हैं। यीशु ने परमेश्वर के राज्य के इस रहस्य को अपने दृष्टांतों के माध्यम से समझाया। हम अब परमेश्वर के राज्य का अनुभव करते हैं, क्योंकि हमने उनकी बात सुनी और यीशु का अनुसरण करते हुए उनकी बात मानी। परमेश्वर का राज्य प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 4:31–44

Audio Content

webm zip (3526085 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (6089848 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 5:1–11

सुनना और मनन करना

लूका 5:1–11

लूका 5:1–11 सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे इस कथा को सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 5:1–11

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु गलील के प्रांत में शिक्षा देना जारी रखते हैं। इस कथा में यीशु गलील सागर के इर्द-गिर्द शिक्षा दे रहे हैं। मछलियों की एक चमत्कारिक पकड़, शमौन, याकूब और यूहन्ना को अपना काम छोड़कर यीशु का अनुसरण करने में परिणत होती है।

यीशु गन्नेसरत की झील के बगल में एक भीड़ को शिक्षा दे रहे होते हैं। यह गलील की झील का एक और नाम है। गन्नेसरत झील के उत्तर-पश्चिम छोर का क्षेत्र है, इसलिए झील को कभी-कभी गन्नेसरत की झील के रूप में संदर्भित किया जाता है। गलील का सागर या झील ताजे पानी का एक अंतर्देशीय निकाय है। वह लगभग 21 किलोमीटर लंबी और 11 किलोमीटर चौड़ी थी। कफरनहूम झील के उत्तरी छोर पर है, इसलिए यीशु इस नगर के करीब थे।

रूकें और गलील की झील और कफरनहूम के सापेक्षिक स्थिति में यीशु जहां शिक्षा दे रहे थे, उसका एक नक्शा दिखाएं।

यीशु जो शिक्षा दे रहे होते हैं, उसे सुनने के लिए पास जाने के लिए लोगों की एक भीड़ धक्कम-धक्का कर रही होती है। यीशु परमेश्वर का वचन या परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार की शिक्षा दे रहे हैं। यीशु मछली पकड़ने वाली दो नावों को देखते हैं जिन्हें तट पर खींच लिया गया था। नावें तट पर इस तरह से थीं कि वे बह न जाएं। ये नावें लकड़ी की थीं और चार से पंद्रह लोगों को सवार करा सकती थीं। नावों के मालिक मछुआरे पास में कहीं जाने के लिए उन्हें वहां छोड़ गए थे। मछुआरों में से एक शमौन था।

रुकें और अपनी टीम को नाव की एक तस्वीर दिखाएं।

मछुआरे अपने जालों की सफाई कर रहे हैं। इन जालों को मछली पकड़ने का जाल कहा जाता है और इनका इस्तेमाल रात में मछली पकड़ने के लिए किया जाता है। वे सन के धागे से बनते थे इसलिए दिन में मछलियां उन्हें देख सकती थीं। आमतौर पर, इस तरह के जाल का इस्तेमाल करने के लिए दो से चार पुरुषों की आवश्यकता होती थीं। हर सुबह इसे साफ करना पड़ता था।

रुकें और अपनी टीम को मछलियां पकड़ने के जाल की तस्वीर दिखाएं।

यीशु शमौन की नाव में कदम रखते हैं। यीशु कफरनहूमवासी शमौन को पहले से ही जानते थे। यीशु शमौन से अपनी नाव को पानी में पूरा उतार कर किनारे से थोड़ी दूर ले जाने के लिए कहते हैं। यीशु ऐसा इसलिए करते हैं ताकि भीड़ उन्हें बेहतर रूप से देख और सुन सकें। शमौन कहना मानते हैं और यीशु नाव से शिक्षा देते हैं। जब वे शिक्षा पूरी कर लेते हैं तो यीशु शमौन से नाव को किनारे से आगे ले जाने के लिए कहते हैं जहां पानी गहरा है। यीशु शमौन से मछली पकड़ने के लिए उनके जाल को पानी में डालने या फेंकने के लिए कहते हैं। चूंकि इन जालों को कम से कम दो लोगों की आवश्यकता होती है, इसका मतलब है कि शमौन की नाव में और भी अन्य मछुआरे थे।

रुकें और चर्चा करें। आपकी संस्कृति में किसी बात का विशेषज्ञ होने का क्या मतलब होता है? आपकी संस्कृति में किसी विशेषज्ञ को कैसे कोई सही करता है?

शमौन एक कुशल और अनुभवी मछुआरे हैं। रात भर मछलियां पकड़ने की कोशिश के बावजूद वे कोई भी मछली पकड़ नहीं पाए थे। शमौन जानते हैं कि मछुआरे यदि जाल को नीचा करते हैं तो वे कोई भी मछली पकड़ नहीं पाएंगे। लेकिन शमौन यीशु को *स्वामी* कहते हैं और उनकी कही बात करते हैं। स्वामी किसी उच्च स्थिति के व्यक्ति के प्रति महान सम्मान दिखाने के लिए एक उपाधि होती है। इससे पता चलता है कि शमौन यीशु का सम्मान करते हैं। शमौन नाव को और आगे ले जाते हैं और अपने मछुआरों के साथ जाल को नीचा करते हैं। इतनी मछलियां जाल में फंस जाती हैं कि जाल फटने लगता है। मछुआरे उनकी मदद करने के लिए दूसरी नावों को आने का इशारा करते हैं। शायद अन्य मछुआरों से वे इतने दूर थे कि वे उनका चिल्लाना नहीं सुन पाते। याकूब और यूहन्ना शमौन के व्यावसायिक भागीदार हैं। वे मदद के लिए दूसरी नाव में आते हैं। जाल में इतनी मछलियां पकड़ा जाती हैं कि वे दोनों नावों को भर देती हैं। नावें इतनी भर जाती हैं कि उनमें पानी भरने लगता है।

शमौन, जिन्हें पतरस के नाम से भी संबोधित किया जाता है, वे देखते है कि नावों में कितनी मछलियां हैं। उन्हें पता चलता है कि यीशु ने एक सामर्थ्य कर्म किया है। शमौन सम्मान दिखाने के लिए यीशु को नमन करते हैं। शमौन यीशु को प्रभु कहते हैं। प्रभु शब्द स्वामी के समान ही है, लेकिन यह और अधिक सम्मान दिखाता है। यहूदी लोग भी प्रभु शब्द का इस्तेमाल परमेश्वर को संदर्भित करने के लिए करते थे। शमौन यह पहचानते हैं कि परमेश्वर यीशु के माध्यम से काम कर रहे हैं। शमौन उन्हें चले जाने के लिए कहते हैं क्योंकि वे स्वयं को एक पापी व्यक्ति मानते हैं। यह एक शाब्दिक अनुरोध नहीं है। इसके बजाय, शमौन यीशु के करीब होने के लिए स्वयं को अयोग्य महसूस करते हैं क्योंकि वे उन्हें पवित्र या एक विशेष उद्देश्य के लिए परमेश्वर द्वारा पृथक रखा हुआ मानते हैं। शमौन खुद को अयोग्य मानते हैं क्योंकि वे स्वयं को पापी मानते हैं। यीशु, जो पवित्र है, उनकी उपस्थिति में होने से वे डरते हैं।

रुकें और चर्चा करें। जब आपको पता चलता है कि आप अपने समुदाय में किसी बहुत ही प्रभावशाली या महत्वपूर्ण नेता के सामने खड़े हैं, तो आप किस तरह से प्रतिक्रिया करेंगे? आपकी संस्कृति में सम्मान या सम्मान के विभिन्न स्तरों को दर्शाने के लिए प्रयोग में आने वाले विभिन्न शब्द क्या हैं?

दिन में इतनी मछलियां पकड़ने के चमत्कार से सभी मछुआरे अचम्भा करते हैं। याकूब और यूहन्ना भी आश्चर्यचकित होते हैं। वे जब्दी नामक एक व्यक्ति के पुत्र थे। यीशु शमौन से कहते हैं कि "मत डर। अब से तुम मनुष्यों को पकड़ा करोगे।" यह एक अलंकारिक कथन है। इसका मतलब है कि शमौन अपने मछुआरे के पेशे को छोड़ देंगे। इसके बजाय, वे लोगों को परमेश्वर के राज्य में लाना शुरू करेंगे। यीशु शमौन से बात कर रहे हैं, लेकिन अन्य लोग जो यीशु का अनुसरण करना चाहते थे, उन्होंने भी ये वचन सुनें। इसलिए मछुआरों ने अपनी नावों को किनारे पर ले लिया, सब कुछ पीछे छोड़ दिया और यीशु के अनुयायी बन गए।

रुकें और चर्चा करें। ऐसे किसी व्यक्ति जिसके पास बड़ी सफलता हो और फिर अचानक वह सब कुछ पीछे छोड़ देता है, उसका सामान्य मत क्या होगा?

लूका इस कथा का इस्तेमाल यीशु के सेवाकार्य के प्रति सही अनुक्रिया दर्शाने के लिए करते हैं। नासरत और कफरनहूम में लोग यीशु को केवल अपने लिए ही रखना चाहते थे, लेकिन शमौन की प्रतिक्रिया अलग है। शमौन आज्ञाकारिता, नम्रता और पापपूर्ण होने की स्वीकारोक्ति के साथ प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। शमौन, याकूब और यूहन्ना, यीशु का अनुसरण करने और उनके सेवा कार्य में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए सब कुछ पीछे छोड़ देते हैं।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 5:1–11

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य कल्पांकित करने में समूह की मदद करेंगे। आप कथा के दृश्यों, विन्यास और पात्रों को परिभाषित करने में समूह की मदद करेंगे।

इस कहानी के चार दृश्य हैं।

पहला दृश्य: यीशु गलील की झील के समीप उपदेश दे रहे हैं। वहां इतने लोग हैं कि यीशु शमौन की नाव पर सवार हो जाते हैं। यीशु वहां से भीड़ को शिक्षा देते हैं।

दूसरा दृश्य: यीशु शमौन को जाकर मछली पकड़ने के लिए कहते हैं। शमौन बताते हैं कि सारी रात मेहनत के बावजूद वे कोई मछली नहीं पकड़ पाए। लेकिन शमौन कहते हैं कि यीशु ने जो कहा है वे वही करेंगे।

तीसरा दृश्य: जाल मछली से भरे हुए हैं। शमौन अपने दोस्तों से मदद मांगते हैं। दोनों नावें डूबने की कगार पर हैं।

चौथा दृश्य: शमौन यीशु से कहते हैं कि "मैं तुम्हारे करीब होने के अयोग्य हूं।" यीशु जवाब देते हैं कि "मत डर, अब से तुम लोगों को पकड़ा करोगे।" शमौन और अन्य लोग यीशु का अनुसरण करने के लिए सब कुछ छोड़ देते हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- भीड़
- शमौन
- शमौन के साथीगण
- यूहन्ना
- याकूब

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल (ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप इधर उधर रख सकते हैं जैसे पत्थर, लकड़ियां, बच्चों के खिलौने) का इस्तेमाल करे।

यीशु गलील के झील के किनारे शिक्षा दे रहे होते हैं। बहुत से लोग परमेश्वर के वचन को सुनने हेतु भीड़ में आगे बढ़ने के लिए दबाव डाल रहे हैं। किनारे की दो नावों में से एक में यीशु कदम रखते हैं। यीशु शमौन से नाव को झील में थोड़ी दूरी पर ले जाने के लिए कहते हैं। उसके बाद शिक्षा देने के लिए यीशु नाव में बैठ जाते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि शमौन और उनके साथी निपुण मछुआरे हैं। यह याद रखना भी महत्वपूर्ण है कि यीशु नाव में इसलिए सवार होते हैं ताकि लोग उन्हें बेहतर ढंग से देख और सुन सकें। यीशु ऐसा बच निकलने के लिए नहीं करते हैं।

यीशु बोलना समाप्त करते हैं। यीशु शमौन से ऐसी जगह जाने के लिए कहते हैं जहां पानी गहरा हो ताकि वे अपने जाल डालकर कुछ मछलियां पकड़ सकें। शमौन यह कह कर जवाब देते हैं कि "स्वामी, हमने सारी रात मेहनत की और कुछ भी न पकड़ा, तो भी आपके कहने पर मैं वही करूंगा जो आपने मुझे करने के लिए कहा है।"

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि शमौन और अन्य मछुआरे अपने जाल धो रहे थे। फिर से मछली पकड़ने के लिए नावें ले जाने को वे तैयार नहीं थे।

शमौन झील में और गहराई वाली जगह पर जाते हैं और उनके जाल डालते हैं। अचानक जाल मछली से लबालब भर जाते हैं। वे अपने भागीदारों से मदद के लिए कहते हैं। मछलियों की जो मात्रा उन्होंने पकड़ी थीं उसके कारण उनकी दोनों नावें डूबने की कगार पर पहुंच जाती हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि शमौन ने कई बार पूरे भरे हुए जाल को देखा था लेकिन जितना इस बार भरा था वैसा पहले कभी नहीं देखा था।

शमौन मछली की मात्रा देखते हैं। शमौन अपने घुटनों के बल नीचे बैठ जाते हैं और यीशु से कहते हैं कि वे यीशु के नज़दीक रहने योग्य नहीं हैं। शमौन यीशु को प्रभु कहते हैं। मछली की यह मात्रा याकूब और यूहन्ना को अचम्भित करती है।

यीशु शमौन से कहते हैं कि वे न डरें। यीशु शमौन से कहते हैं कि अब से वे मनुष्यों को जीवता पकड़ा करेंगे। जब शमौन, याकूब और यूहन्ना किनारे पहुंचते हैं तो वे सब कुछ छोड़ कर यीशु का अनुसरण करते हैं।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 5:1–11

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी के चार दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- भीड़
- शमौन
- शमौन के साथीगण
- यूहन्ना
- याकूब

मण्डली से कहानी का दो बार अभिनय करवाएं। पहली बार टीम से बिना रूके कहानी का अभिनय करवाएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है और उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, तब कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

यह सुनिश्चित करें कि मण्डली द्वारा यीशु के नाव पर सवार होने के समय शमौन और अन्य मछुआरों द्वारा उनके जालों को धोने का अभिनय किया जाए।

यह दर्शाना सुनिश्चित करें कि यीशु, शमौन, शमौन के साथी, याकूब और यूहन्ना के बीच उस समय बातचीत होती है जब वे नाव में सवार रहते हैं। जैसे ही वे किनारे पहुंचते हैं, वे अपनी नावों और मछलियों को यीशु का अनुसरण करने के लिए छोड़ देते हैं।

जब यीशु शमौन को गहरे पानी में मछली पकड़ने जाने के लिए सब कुछ फिर से तैयार करने के लिए कहते हैं तो यह सुनिश्चित करें की शमौन के पास 2 या 3 सहयोगी हों।

दूसरी बार जब मण्डली इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

यीशु गलील के झील के किनारे शिक्षा दे रहे होते हैं। यीशु एक नाव में कदम रखते हैं। यीशु शमौन से नाव को झील में थोड़ी और दूरी पर ले जाने के लिए कहते हैं। उसके बाद शिक्षा देने के लिए यीशु नाव में बैठ जाते हैं।

अभिनय को बंद करें। शमौन का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप सुन सकते हैं, "थका हुआ।" "यीशु क्या कर रहे हैं?" "उत्सुक" अभिनय को दोबारा प्रारंभ करें।

जब यीशु शिक्षा देना समाप्त करते हैं तो वे शमौन को और गहरे पानी में जाकर उनके जाल डालकर कुछ मछलियां पकड़ने के लिए कहते हैं। शमौन यह कहते हैं कि "स्वामी, हमने सारी रात मेहनत की और कुछ भी न पकड़ा, तो भी आपके कहने पर मैं वही करूंगा जो आपने मुझे करने के लिए कहा है।"

अभिनय को बंद करें। शमौन के साथियों का किरदार निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप सुन सकते हैं कि "और फिर नहीं।" "शमौन यीशु का इतना सम्मान क्यों करते हैं?" "संशयायुक्त" "हताश" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु ने जो कुछ बताया वह शमौन करते हैं। तो उनके जाल मछलियों से भर जाते हैं। वे दूसरी नावों को उनकी मदद करने के लिए कहते हैं। इतनी मछलियां होती है कि दोनों नावें डूबने की कगार पर चली जाती हैं।

अभिनय को बंद करें। याकूब और यूहन्ना का किरदार निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप सुन सकते हैं जैसे "अचंभित हैं।" "यीशु को सचमुच परमेश्वर की ओर से भेजा गया है।" "जहां भी वे जाएंगे मैं वहां जाना चाहता हूं" अभिनय को दोबारा प्रारंभ करें।

शमौन मछली की मात्रा देखते हैं। शमौन कहते हैं कि वे यीशु के बगल में रहने योग्य नहीं हैं। मछली की इतनी मात्रा ने याकूब और यूहन्ना को भी चकित कर दिया।

यीशु शमौन से कहते हैं कि वे न डरें। यीशु शमौन से कहते हैं कि अब से वे मनुष्यों को जीवता पकड़ा करेंगे। जब शमौन, याकूब और यूहन्ना किनारे पहुंचते हैं तो वे सब कुछ छोड़ कर यीशु का अनुसरण करते हैं।

अभिनय को बंद करें। शमौन के साथियों का किरदार निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप सुन सकते हैं कि "वे कहां जा रहे हैं?" "वह आश्चर्यजनक था!" "मछलियों का क्या होगा?" अभिनय को दोबारा प्रारंभ करें।

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 5:1–11

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु **गन्नेसरत की झील के पास शिक्षा दे रहे हैं। गन्नेसरत** गलील की झील के उत्तर-पश्चिमी छोर का नाम है। इस वजह से पूरी झील को कभी-कभी गन्नेसरत के रूप में संदर्भित किया जाता है। यह एक उपजाऊ क्षेत्र को संदर्भित करता है जहां कई लोग रहते थे। कफरनहूम का नगर निकट ही था।

यदि आपने पहले से ही ऐसा नहीं किया है तो गलील की झील नक्शे पर कहां स्थित है, यह दिखाएं।

यीशु एक **नाव** से शिक्षा देते हैं ताकि भीड़ उन्हें बेहतर ढंग से सुन सकें। ये लकड़ी की नावें थीं और मछली पकड़ने के लिए इस्तेमाल की जाती थीं। जिस नाव पर यीशु सवार थे, वह लगभग 8 मीटर लंबी और 2 ½ मीटर चौड़ी थी। वह लगभग 1 ¼ मीटर गहरी थी। ये नावें चार से पंद्रह लोगों को अंदर बैठाने के लिए पर्याप्त रूप से बड़ी थीं।

यदि आपने पहले से ही ऐसा नहीं किया है तो अपनी टीम को नाव की एक तस्वीर दिखाएं। नाव के आकार को दिखाने के लिए एक तरीका चुनें, शायद एक छड़ी के साथ जमीन पर आयाम को खींचकर और लोगों को आकर्षित लाइनों के अंदर कदम रखने के लिए कहने के द्वारा।

यदि आपके पास आपकी भाषा में नाव शब्द नहीं है तो आप कुछ ऐसे तरीके इसका अनुवाद कर सकते हैं जैसे: पानी के पार जाने का वाहन या पानी के ऊपर लोगों को ले जाने की सवारी जैसा कुछ।

भीड़ यीशु को **परमेश्वर के वचन की** शिक्षा देते हुए सुनती है। इस वाक्यांश का मतलब है कि लोगों ने यीशु के उस वचन या संदेश को सुना जो परमेश्वर ने उन्हें दिया था। यह वही संदेश है जिसका हवाला यीशु ने तब दिया था जब उन्होंने कहा था कि अन्य शहरों को परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनने की आवश्यकता है।

यीशु शमौन की नाव से शिक्षा दे रहे हैं। यीशु कफरनहूमवासी शमौन को पहले से ही जानते थे। शमौन को पतरस भी कहा जाता था। शमौन यीशु **को स्वामी** कहते हैं। स्वामी का अर्थ प्रभु के समान ही हो सकता है। यहां इसका उपयोग किसी सम्मानित व्यक्ति के लिए श्रीमान् जैसी एक उपाधि के रूप में किया गया है। इस उपाधि से पता चलता है कि शमौन यीशु का सम्मान करते हैं। स्वामी शब्द को प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

शमौन अपने **भागीदारों** को मछलियों के बारे में मदद करने के लिए संकेत देते हैं। भागीदार का संदर्भ याकूब और यूहन्ना से है जो खुद भी मछुआरे ही थे। वे दूसरी नाव में थे और शमौन के साथ व्यापारिक भागीदारों के रूप में काम करते थे।

मछलियों के चमत्कार के बाद शमौन यीशु को **प्रभु** कहते हैं। इससे स्वामी की तुलना में और अधिक सम्मान प्रदर्शित होता है। शमौन यह पहचानते हैं कि यीशु पवित्र हैं और परमेश्वर उनके माध्यम से काम कर रहे हैं। यह दर्शाता है कि शमौन यीशु के अधिकार को स्वीकार करते हैं। प्रभु का इस्तेमाल यहूदियों द्वारा परमेश्वर का उल्लेख करने के लिए भी किया जाता है। प्रभु शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

शमौन कहते हैं कि वे **एक पापी व्यक्ति** हैं। इसका मतलब है ऐसा कोई व्यक्ति जो आदतन परमेश्वर को अपमानित करता हो। उसके विचार और कर्म ऐसे नहीं हैं जैसा परमेश्वर उनका होना चाहते हैं। यह शमौन के जीवन में किसी विशिष्ट अवज्ञा को संदर्भित नहीं करता है। इसके बजाय, यह दर्शाता है कि शमौन स्वयं को अयोग्य महसूस करते थे। शमौन यीशु, जो पवित्र हैं और परमेश्वर द्वारा भेजे गए हैं, की तुलना में स्वयं को अशुद्ध महसूस करते हैं। पाप शब्द प्रधान शब्दावली में है।

लूका पकड़ना शब्द का इस्तेमाल मछली और पुरुषों के संबंध में करते हैं। **मनुष्यों** को पकड़ना एक अलंकारिक शब्द है जिसका मतलब है लोगों को परमेश्वर के राज्य में लाना। इसका मतलब यह नहीं है कि शमौन मनुष्यों को श्रम करने के लिए मजबूर करेंगे।

यदि संभव हो तो आपकी भाषा में पकड़ने के लिए एक ऐसे शब्द का इस्तेमाल करें जो पुरुषों और मछलियों दोनों पर लागू हो सकता है। इस शब्द का हत्या या गिरफ्तारी जैसा कोई नकारात्मक अर्थ नहीं होना चाहिए। यदि कोई उचित शब्द न हो, तो आप कुछ ऐसा कह सकते हैं जैसे "तुम लोगों को इकट्ठा करोगे"

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 5:1–11

Audio Content

webm zip (3199153 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (5543192 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 5:12–16

सुनना और मनन करना

लूका 5:12–16

लूका 5:12–16 सुनें और इसे अपने हृदय में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे इस कथा को सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 5:12–16

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु गलील के नगरों में शिक्षा जारी रखते हैं। वे न केवल शिक्षा देते हैं बल्कि लोगों को स्वस्थ भी करते हैं। इस कथा में यीशु एक ऐसे व्यक्ति को चंगा करते हैं जिसे त्वचा की बीमारी थी। यीशु की प्रतिष्ठा और बढ़ती जाती है, इसलिए लोग उनकी शिक्षाओं को सुनने और अपनी बीमारियों से चंगा होने के लिए आते रहते हैं।

जब यीशु एक नगर में होते हैं, तो एक कोढ़ी या त्वचा की बीमारी वाला व्यक्ति उनके पास पहुंचता है। त्वचा की वह बीमारी मनुष्य के पूरे शरीर पर थी। यहूदी संस्कृति में परंपरानुसार कुष्ठरोग किसी को अशुद्ध बना देता था। यदि कोई उन्हें छू लेता था तो वह भी अशुद्ध हो जाता था। उसे अशुद्ध के रूप में अंकितक कर दूसरों से अलग कर दिया जाता था। लैव्यव्यवस्था की पुस्तक मूसा के विधान का एक हिस्सा है। लैव्यव्यवस्था में मूसा ने कानून में यह कहते हैं कि कुष्ठ रोगियों को फटे कपड़े पहनने चाहिए, बालों में कंघी नहीं करना चाहिए और दिन भर "अशुद्ध, अशुद्ध" चिल्लाना चाहिए। कुष्ठरोगी समुदाय से परे अकेले रहते थे।

मनुष्य यीशु को देखता है और झुकता है। वह अपना मुंह भूमि पर नीचे झुकाता है। यह यीशु के प्रति उस मनुष्य की नम्रता और आदर को दर्शाता है। यह मनुष्य यीशु से गुहार लगाता है। वे कहते हैं "प्रभु यदि आप चाहें तो मुझे शुद्ध कर दें।" प्रभु शब्द वही है, जिसका इस्तेमाल शमौन ने पिछले अंश में किया था। इस संदर्भ में प्रभु एक उपाधि है जिसका प्रयोग किसी ऐसे जन के तात्पर्य से होता है जिसका किसी पर अधिकार हो। लेकिन यह ऐसा भी दर्शाता है कि उस मनुष्य का मानना है कि यीशु में दिव्य क्षमता है। उस मनुष्य का मानना है कि यीशु उन्हें चंगा कर सकते हैं। वह यह नहीं जानता कि यीशु उन्हें चंगा करने के लिए राजी हैं या नहीं। यीशु से उन्हें शुद्ध करके चंगा करने के लिए कहने का उनका यह एक विनीत तरीका था।

यीशु उस मनुष्य को चंगा करना चाहते हैं। वे उस मनुष्य को अपने हाथ से छूते हैं और कहते हैं कि "शुद्ध हो जाओ!" इस क्षण में, यीशु उस मनुष्य को चंगा और परंपरानुसार स्वच्छ या शुद्ध दोनों ही कर रहे हैं। तुरंत कोढ़ उस मनुष्य को छोड़ देता है। यह महत्वपूर्ण है। कुष्ठरोगी को छूने से यीशु के अशुद्ध हो जाने के बजाय उस मनुष्य को यीशु शुद्ध कर देते हैं। यीशु मनुष्य को स्वीकृति और समुदाय में फिर से प्रवेश देते हैं। यीशु उस मनुष्य से कहते हैं कि वह उसके स्वस्थ होने के बारे में किसी को न बताए।

यहां रुकें और अपनी टीम से चर्चा करें। आपकी संस्कृति में किसी चिकित्सक को किस तरह देखा जाता है? चंगा करने की उनकी शक्ति या क्षमता कहां से आती है? जब किसी को चंगा या स्वस्थ किया जाता है, तो चंगा करने वाले उसे कैसे व्यक्त करते हैं?

किसी अशुद्ध व्यक्ति को छूना मूसा के कानून का उल्लंघन माना जाता था। लेकिन यीशु तब उस मनुष्य से कहते हैं कि मूसा के कानून का पालन करते हुए वह खुद को किसी याजक को या किसी ऐसे व्यक्ति को दिखाए जो परमेश्वर को लोगों के निमित्त भेंट चढ़ाता हो। यह कोई भी आम याजक नहीं था, बल्कि यरूशलेम के मंदिर अथवा उपासना के स्थान पर सेवा करने वाले याजक थे। एक याजक ही ऐसा होता था जो उस मनुष्य की जांच कर यह पुष्टि कर सकता था कि उसे अब कुष्ठ रोग नहीं था। यदि उसे शुद्ध घोषित किया जाता था, तो फिर

याजक मनुष्य की ओर से भेंट चढ़ाते थे। उसके पश्चात वह अपने समुदाय में फिर से प्रवेश करने योग्य हो जाता था।

यीशु चाहते थे कि मनुष्य ऐसा इसलिए करे कि उसके ठीक होने का प्रमाण मिल सके। इसका मतलब है कि लोगों को यह साबित हो जाए कि वह वाकई चंगा हो गया था। एक बार शुद्ध घोषित होने पर वे अपने परिवार के साथ रह सकेंगे, सार्वजनिक रूप से उपासना कर सकेंगे और अपने समुदाय से परस्पर व्यवहार कर सकेंगे।

यीशु का समाचार फैलता है और लोगों की भीड़ उनके पास उन्हें शिक्षा देना सुनने के लिए और चंगा होने के लिए आती है। यीशु नियमित रूप से भीड़ से दूर परमेश्वर से अकेले में प्रार्थना करने के लिए जाते हैं।

यह कथा रोग पर यीशु के अधिकार को दर्शाती है। यह ऐसा भी दर्शाती है कि जैसे-जैसे यीशु की प्रसिद्धि बढ़ती जाती है, उनकी एकांतवास में प्रार्थना करने की आवश्यकता भी बढ़ती जाती है।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 5:12–16

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य कल्पांकित करने में समूह की मदद करेंगे। आप कहानी के दृश्यों, विन्यास और पात्रों को परिभाषित करने में ग्रुप की मदद करेंगे।

इस कहानी में तीन दृश्य हैं।

पहला दृश्य: यीशु एक ऐसे शहर में है जहां किसी व्यक्ति को उसके पूरे शरीर पर कुष्ठ रोग होता है। वह कोढ़ी यीशु से उन्हें चंगा करने के लिए कहता है। यीशु द्वारा उस कुष्ठरोगी को चंगा करने के बाद, यीशु उन्हें कहते हैं कि वे किसी को न बताएं, लेकिन मूसा के कानून में जो कुछ भी कहा गया था, वह करें।

दूसरा दृश्य: यीशु के बारे में समाचार फैलता है। कई लोग यीशु की शिक्षा सुनने और चंगा होने के लिए आते हैं।

तीसरा दृश्य: यीशु अक्सर एकांत में प्रार्थना करने के लिए जंगल में जाते हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- कुष्ठरोग के साथ मनुष्य
- यीशु को सुनने के लिए और चंगा होने के लिए आने वाले लोग

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल (ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप इधर उधर रख सकते हैं जैसे पत्थर, लकड़ियां, बच्चों के खिलौने) का इस्तेमाल करे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यहूदी लोग त्वचा के रोगों से ग्रस्त लोगों को अशुद्ध मानते हैं। इसका मतलब है कि कुष्ठरोग या त्वचा के रोगों से पीड़ित लोगों का अन्य लोगों के साथ बहुत कम परस्पर व्यवहार होता था। लोग उन्हें छूने से बचते थे और उन्हें समुदायों के बाहर रहना पड़ता था।

यीशु एक कुष्ठरोगी से मिलते हैं। कुष्ठरोगी यीशु को देखता है और यीशु के प्रति विनम्र सम्मान दिखाता है। वह कुष्ठरोगी झुककर यीशु से उन्हें चंगा करने के लिए निवेदन करता है। कुष्ठरोगी यीशु से कहता है, "यदि आप चाहें तो आप मुझे चंगा कर सकते हैं।"

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यहूदी संस्कृति में जब कोई व्यक्ति किसी कुष्ठरोगी को छूता है, तो वह अशुद्ध हो जाता है।

यीशु उस मनुष्य को यह कहते हुए छूते हैं कि "मैं चाहता हूं।" "कि आप चंगे हो जाओ!" ऐसा यीशु कहते हैं। तुरंत ही कुष्ठरोग मनुष्य को छोड़ देता है और मनुष्य शुद्ध हो जाता है।

यीशु उस व्यक्ति से जिसे कुष्ठरोग था, कहते हैं कि जो कुछ हुआ उसके बारे में वह किसी को न बताए। यीशु उस मनुष्य से मूसा के कानून में जो कहा गया था उसे करके, शुद्ध हो जाने की एक सार्वजनिक गवाही भी देने के लिए भी कहते हैं।

यीशु के बारे वह समाचार कई स्थानों पर बहुत तेजी से फैल गया। कई लोग यीशु की शिक्षा सुनने और उनकी बीमारियों से चंगा होने के लिए भी आए।

यीशु अक्सर जंगल में प्रार्थना करने के लिए जाते हैं।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 5.12–16

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी में तीन दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- कुष्ठरोग के साथ मनुष्य
- यीशु को सुनने के लिए और चंगा होने के लिए आने वाले लोग।

मण्डली से कहानी का दो बार अभिनय करवाएं। पहली बार टीम से बिना रूके कहानी का अभिनय करवाएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है और उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

यह सुनिश्चित करें कि मण्डली कुष्ठरोग से ग्रस्त व्यक्ति का समुदाय से अलग होने का अभिनय करें। कुष्ठरोगी को उसकी स्थिति में मदद नहीं मिल सकी थी।

दूसरी बार जब मण्डली इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

यीशु के निकट आने वाले कुष्ठरोगी का अभिनय करें। वह यीशु को रुककर नमन करता है। वह यीशु से उन्हें चंगा करने के लिए कहता है। **अभिनय को बंद करें।** कुष्ठरोगी का पात्र निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप सुन सकते हैं "शर्मिंदा," "हताश," "मैं जानता हूं यीशु सामर्थ्यवान हैं," "आशापूर्ण।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु उन्हें छूते हुए कहते हैं कि "मैं चाहता हूं।" कुष्ठरोग तुरंत मनुष्य को छोड़ देता है।

अभिनय को बंद करें। यीशु की भूमिका निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप सुन सकते हैं "प्रेम से परिपूर्ण," "बेचारा आदमी" "करुणापूर्ण," "बेशक मैं तैयार हूं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु ने कुष्ठरोग से पीड़ित व्यक्ति को कहा कि वह किसी को न बताएं। यीशु ने मनुष्य से कहा कि कुष्ठरोग के बारे में कानून जो कहता है उसे वह करे ताकि एक सार्वजनिक गवाही हो कि वह अब शुद्ध हो गया है।

तब भी, यीशु ने जो कुछ किया उसके बारे में समाचार और भी तेजी से फैल गया। यीशु ने जो कहा उसे सुनने और चंगा होने के लिए बहुत से लोग आए।

अभिनय को बंद करें। लोगों के किरदारों को निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप सुन सकते हैं "यह सच था," "वे मेरी परवाह करते हैं," "वे इस तरह बोेलते हैं जिस तरह कोई नहीं बोलता," "क्या मैं उस एक को देख रहा हूं?" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु अकेले जंगल में प्रार्थना करने के लिए जाते हैं।

अभिनय को बंद करें। यीशु की भूमिका निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप सुन सकते हैं "मुझे अपने पिता से बात करने की जरूरत है," "यह एक लंबा दिन था," "मुझे सच्चे विश्राम की जरूरत है," "इतने लोगों को देख कर कितनी खुशी हुई।"

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 5.12–16

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु के पास एक ऐसा व्यक्ति पहुंचता है जिसे कुष्ठरोग था। **कुष्ठरोग** एक ऐसा शब्द है जो किसी भी प्रकार के त्वचा रोग को संदर्भित कर सकता है। ये रोग किसी भी व्यक्ति को 'अपवित्र' बना देते थे, या समुदाय में रहने लायक नहीं रहने देते थे। ऐसे लोग आराधनालय में केवल एक परदे के पीछे से ही पूजा कर सकते थे और यदि कोई उन्हें छू लेता था तो वह व्यक्ति भी अशुद्ध हो जाता था। लैव्यव्यवस्था की पुस्तक में मूसा के कानून में कहा गया था कि उन्हें फटे कपड़े पहनना, बालों में कंघी नहीं करना और जहां कहीं भी जाएं वहां सार्वजनिक रूप से 'अशुद्ध' चिल्लाना आवश्यक था।

वह मनुष्य यीशु से कहता है कि वे उन्हें शुद्ध कर सकते हैं। यहूदी संस्कृति में **शुद्ध** होना एक ऐसी अवस्था को संदर्भित करता है जिसमें कोई परमेश्वर की सेवा के लिए योग्य हो। लोग अपनी कर्मों व स्वास्थ्य की स्थिति के आधार पर फिर से अपवित्र या पवित्र हो सकते हैं। इसका अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने लूका के पिछले अंशों में किया है। शुद्ध शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है। यीशु उस मनुष्य को छूते हैं और उसे उसके कुष्ठरोग से चंगा कर देते हैं। इससे मनुष्य फिर से शुद्ध हो जाता है।

लेकिन मूसा के कानून के अनुसार मंदिर का याजक ही एकमात्र ऐसा था जो उस मनुष्य का निरीक्षण कर उसे परंपरानुसार स्वच्छ या शुद्ध घोषित कर सकता था। मंदिर का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने लूका के पिछले अंशों में किया है। मंदिर शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

जब यीशु उस मनुष्य से मूसा **की आज्ञा के अनुसार भेंट** करने के लिए कहते हैं तो वे लैव्यव्यवस्था के विधान का संदर्भ दे रहे थे। इन कानूनों में एक व्यक्ति को कुष्ठरोग से चंगा होने के लिए क्या करना चाहिए इस बारे में विस्तृत निर्देश शामिल थे। चंगे हुए मनुष्य द्वारा याजक के पास उसकी ओर से भेंट चढ़ाने के लिए बलिदान लाना आवश्यक था। **बलिदान** का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने लूका के पिछले अंशों में किया है। **बलिदान** शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

लोगों ने यीशु के बारे में समाचार प्रचारित कर दिया। भीड़ उनके पास चंगा होने के लिए आई। यीशु प्रार्थना करने के लिए **एकांत स्थानों** पर जाते हैं। एकांत स्थान का भावार्थ जंगली या निर्जन क्षेत्रों के रूप में किया जा सकता है जहां कोई नहीं रहता था। यीशु भीड़ से दूर होने और अकेले में परमेश्वर से प्रार्थना करने जाने वाले थे।

रूकें और अपनी टीम को जंगल की एक तस्वीर दिखाएं।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 5:12–16

Audio Content

webm zip (2318065 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (4005272 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 5:17–26

सुनना और मनन करना

लूका 5:17–26 सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे इस कथा को सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 5:17–26

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु गलील के क्षेत्र में सुसमाचार की शिक्षा देना, लोगों को चंगा करना और उनका अनुयायी बनने के लिए बुलाना निरंतर रखते हैं। एक दिन, यीशु कफरनहूम में एक घर के अंदर शिक्षा दे रहे होते हैं। यीशु एक लकवाग्रस्त मनुष्य के पापों को क्षमा करते हैं। यहूदी धार्मिक नेता यीशु के अधिकार पर सवाल करते हैं। यीशु उस लकवाग्रस्त मनुष्य को चंगा करते हैं ताकि यह साबित हो सके कि परमेश्वर ने उन्हें पापों को क्षमा करने का अधिकार दिया है।

यीशु कफरनहूम में एक घर के अंदर शिक्षा दे रहे हैं। समूचे इस्राएल से फरीसी और कानून के शिक्षक यीशु को सुनने के

लिए यात्रा कर के वहां आए होते हैं। फरीसी एक प्रकार के धार्मिक नेता होते हैं। वे बहुत प्रभावशाली थे और लोग यह सोचते थे कि वे धर्मी थे, या कि उनके परमेश्वर के साथ सही संबंध थे। लोग ऐसा इसलिए सोचते थे क्योंकि उन्होंने स्वयं को परमेश्वर के कानून के लिए समर्पित कर दिया था। उन्होंने लिखित और मौखिक दोनों तरह की धार्मिक परंपराओं और कानूनों को मान्यता दी। कुछ फरीसी परमेश्वर के कानून के शिक्षक भी थे। उपस्थित धार्मिक नेताओं का दूसरा समूह उनका था जो कानून के शिक्षक थे। यह शब्द शास्त्रियों को संदर्भित करता है। शास्त्री परमेश्वर के कानून का अध्ययन, शिक्षा और व्याख्या करते थे। धार्मिक नेता यीशु के करीब बैठे हुए हैं।

प्रभु या परमेश्वर का सामर्थ्य यीशु के पास है। यह उन्हें लोगों को परमेश्वर की ओर से यह साबित करने के लिए चंगा करने के लिए सक्षम बनाता है कि उनके पास अधिकार, या कार्य करने का इख़्तियार है। कुछ मनुष्य एक लकवाग्रस्त व्यक्ति को बिछौने पर लेकर आते हैं। बिछौने का मतलब खाट, पलंग या शिविका हो सकता है। कई इस्राएली जो गरीब थे बुने हुए बिछौनो पर सोते थे। उन लोगों ने जो कुछ भी इस्तेमाल किया होगा, वह किसी को उठाकर ले जाने के लिए पर्याप्त रूप से हल्का था। खाट पर का मनुष्य लकवाग्रस्त था। लकवाग्रस्त होने का मतलब है शरीर के कुछ या सभी भागों को हिलाने में असक्षम होना। इस मामले में मनुष्य के पांव लकवाग्रस्त हैं। इस्राएल में कई बार अपंग लोगों को उनके समुदायों से अलग कर दिया जाता था। मनुष्यगण उनके लकवाग्रस्त मित्र को यीशु के पास चंगा होने के लिए लाना चाहते हैं। लेकिन यीशु जिस घर में शिक्षा दे रहे होते हैं उसमें और उसके आसपास बहुत से लोग इकट्ठा हैं।

रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपके समुदाय में लकवाग्रस्त या अन्यथा विकलांग लोगों के साथ किस तरह का व्यवहार किया जाता है? अगर आपके समुदाय में किसी लकवाग्रस्त व्यक्ति को कहीं जाने की आवश्यकता होती थी, तो उसके लिए परिवहन के कौन से तरीके उपलब्ध हैं?

अपनी टीम को सोने के लिए प्रयुक्त होने वाले एक यहूदी बिछौने की तस्वीर दिखाएं।

वे लोग उनके मित्र को खाट पर छत के ऊपर ले जाते हैं। कफरनहूम में घरों पर छतें सपाट होती थीं और घरों के बाहरी हिस्से से छत पर जाने की सीढ़ियां होती थीं। मनुष्यगण उनके साथ रस्सी लाए थे ताकि रोगी की खाट को नीचे उतारा जा सके। उन्होंने शायद रस्सी को खाट के चारों कोनों पर बांध दिया था। छत की फर्शियों या खपरैल को हटाना आसान रहा होगा। याद रखें कि लूका यह कथा थियोफिलुस को लिख रहे हैं। लूका यह जानते हैं कि थियोफिलुस ऐसे घरों से परिचित हैं जिनकी छत पर खपरैल होती है। यह कथा थियोफिलुस अच्छे ढंग से समझ जाएं इसलिए लूका खपरैल शब्द का इस्तेमाल करते हैं। तथापि गलीली घर आमतौर पर शाखाओं से बने होते थे और उन पर मिट्टी का पलस्तर किया जाता था। आपके अनुवाद में यह स्पष्ट करना सुनिश्चित करें कि छत पर एक छेद बनाना आसान था।

यहां रुकें और अपनी टीम से चर्चा करें। आपकी संस्कृति में ऐसे कुछ तरीके क्या हैं जिनका इस्तेमाल लोग किसी भीड़ में से गुज़र कर पहले से ही भीड़भाड़ वाले स्थान पर पहुंचने के लिए कर सकते हैं?

अपनी टीम को गलील के एक आम घर की तस्वीर दिखाएं, ताकि वे छत की कल्पना बेहतर तौर पर कर सकें।

उन लोगों ने उनके मित्र को भीड़ के बीचों-बीच नीचे यीशु के सामने (खाट सहित) उतार दिया। यीशु ने देखा कि उन लोगों ने क्या किया था। यीशु जानते हैं कि वे इसलिए आए थे क्योंकि उन्हें श्रद्धा थी कि यीशु उनके मित्र को चंगा कर सकते हैं। इस संदर्भ में श्रद्धा का संदर्भ यीशु पर विश्वास और भरोसे रखने की कार्रवाई को संदर्भित करता है। खाट पर का लकवाग्रस्त व्यक्ति और उनके मित्र दोनों ही यह विश्वास करते हैं कि यीशु उसे चंगा कर सकते हैं।

यीशु उस मनुष्य से कहते हैं कि उनके पाप क्षमा हुए। यीशु यह कह रहे हैं कि परमेश्वर के खिलाफ उस व्यक्ति की अवज्ञा को रद्द कर दिया गया है या हटा दिया गया है। इसका मतलब है कि यीशु के पास परमेश्वर की ओर से पापों को क्षमा करने का अधिकार है। इसका मतलब यह भी है कि यीशु परमेश्वर के बराबर हैं। धार्मिक नेता और शास्त्री उनके अपने मन-ही-मन यीशु की आलोचना करना शुरू कर देते हैं। वे सोचते हैं कि यीशु ईशनिन्दा कर रहे हैं क्योंकि उन्होंने उस मनुष्य को कहा कि उसके पाप क्षमा कर दिए गए थे। ईशनिन्दा का मतलब परमेश्वर के खिलाफ बोलना या उनका अनादर करना है। फरीसी अपने मन ही मन अपना क्रोध व्यक्त करने के लिए सवाल पूछते हैं। वे इस बात से दहल जाते हैं कि यीशु परमेश्वर होने का और पापों को क्षमा करने के लिए परमेश्वर का अधिकार रखने का दावा करते हैं।

लेकिन यीशु यह जानते हैं कि फरीसी और शास्त्री क्या सोच रहे होते हैं। इससे शमौन की वह भविष्यवाणी पूरी होती है कि यीशु कई लोगों के भीतर के विचारों को प्रकट करेंगे। वे 'उनके हृदयों में तर्क कर रहे थे' क्योंकि यहूदी लोग यह मानते थे कि विचारणा हृदय में होती थी।

आपकी संस्कृति में लोग ऐसे किसी का वर्णन किस तरह करते हैं जिसका खुद से ही अव्यक्त वार्तालाप चल रहा हो? उन्हें देखने वाले किसी व्यक्ति को किस तरह यह समझ में आ सकता है कि इस तरह की आंतरिक बातचीत हो रही है?

यीशु ऐसे सवालों के साथ जवाब देते हैं जिनका जवाब वे फरीसियों से पाने की उम्मीद नहीं करते हैं। यीशु उन से कहते हैं आसान क्या है, किसी को यह बताना कि उनके पाप क्षमा किए गए हैं या उन्हें चंगा करना। यीशु का मतलब है कि दोनों ही बाते परमेश्वर के सामर्थ्य और अधिकार के बिना करना

असंभव हैं। किसी के लिए यह कहना आसान होगा, कि उसके पाप क्षमा किए जाते हैं क्योंकि यह कुछ ऐसा था जिसे देखा या प्रमाणित नहीं किया जा सकता था। किसी को चंगा करने के परिणाम तुरंत देखे जा सकते हैं। यीशु कहते हैं कि वे उस मनुष्य को यह दिखाने के लिए चंगा करेंगे कि उनके पास पापों को क्षमा करने का अधिकार है।

यीशु अपने आप को मनुष्य का पुत्र यह अर्थ जताने के लिए करते हैं कि वे मनुष्य थे और सभी लोगों का प्रतिनिधित्व करते थे। लेकिन यीशु भी परमेश्वर की ओर से थे और उनके पास परमेश्वर के अधिकार थे। मनुष्य का पुत्र वह व्यक्ति है जिसे यहूदी भविष्यद्वक्ता दानिय्येल ने उनके दिव्य दर्शन में संदर्भित किया था। सभी यहूदी लोग भविष्यद्वक्ता दानिय्येल से आए इस दिव्य दर्शन के बारे में जानते थे। दानिय्येल के दर्शन में परमेश्वर मनुष्य के पुत्र को सभी अधिकार और सामर्थ्य प्रदान करते हैं।

यीशु उस लकवाग्रस्त मनुष्य को खड़े होने, अपनी खाट उठाने और घर लौट जाने के लिए कहते हैं। यीशु के ऐसा बोलते ही मनुष्य चंगा हो जाता है। यह इस बात का प्रमाण था कि यीशु पापों को क्षमा कर सकते हैं। वह मनुष्य सबके सामने खड़ा होता है। वह अपनी खाट लेकर परमेश्वर की स्तुति करते हुए विदा हो जाता है। हर कोई आश्चर्य और भय से भर जाता है। परमेश्वर कितने अद्भुत हैं इस बारे में बातें करके वे उनकी स्तुति करते हैं। वे यीशु के माध्यम से दिखाए गए परमेश्वर की सामर्थ्य के प्रति विस्मयाभिभूत होते हैं। लोग कहते हैं कि उन्होंने उस दिन अद्भुत बातें देखी हैं। यह यीशु द्वारा उस मनुष्य को चंगा करने और धार्मिक नेताओं का सामना करने को संदर्भित करता है।

यह कथा ऐसा दर्शाती है कि यीशु के पास न केवल चंगा करने का सामर्थ्य है, बल्कि पापों को क्षमा करने का अधिकार भी है। लूका यह दिखाना जारी रखते हैं कि यीशु के सेवाकार्य में वचन और कर्म दोनों ही सम्मिलित हैं। इस मामले में शिक्षा देना और चंगा करना। यह कथा यीशु और धार्मिक नेताओं के बीच बढ़ते संघर्ष और टकराव को भी दिखाती है।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 5:17–26

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य कल्पांकित करने में समूह की मदद करेंगे। आप कहानी के दृश्यों, विन्यास और पात्रों को परिभाषित करने में समूह की मदद करेंगे।

इस कहानी में पांच दृश्य हैं।

पहला दृश्य: यीशु एक घर में शिक्षा दे रहे हैं। कानून के धार्मिक नेता और शिक्षक निकट ही बैठे हैं।

दूसरा दृश्य: कुछ लोग छत के माध्यम से नीचे उतारकर एक लकवाग्रस्त व्यक्ति को यीशु के पास लाते हैं।

तीसरा दृश्य: यीशु उनकी श्रद्धा देखते हैं और मनुष्य के पापों को क्षमा करते हैं। धार्मिक नेता सोचते हैं कि यीशु ईश-निन्दक हैं।

चौथा दृश्य: यीशु उस मनुष्य को खड़े होने और चलने के लिए कह कर पापों को क्षमा करने के अपने अधिकार को सिद्ध करते हैं।

पांचवां दृश्य: जब वे मनुष्य को कूद कर अपनी खाट उठाकर परमेश्वर की स्तुति करते हुए घर जाते हुए देखते हैं तो सभी अचम्भित होते हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- सुन रहे लोग
- फरीसी लोग
- कानून के शिक्षक
- लकवाग्रस्त मनुष्य
- लकवाग्रस्त मनुष्य को ले जाने वाले मनुष्य

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल (ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप इधर उधर रख सकते हैं जैसे पत्थर, लकड़ियां, बच्चों के खिलौने) का इस्तेमाल करे।

यीशु एक घर के अंदर शिक्षा दे रहे थे। समूचे इस्राएल से धार्मिक नेता और परमेश्वर के कानून के शिक्षक उन्हें शिक्षा देते हुए सुनने के लिए आए थे। इसमें गलील, यहूदिया और यरूशलेम के गांव शामिल थे। जहां यीशु शिक्षा दे रहे थे वे लोग उसके करीब बैठे थे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि धार्मिक नेता यीशु पर यह देखने के लिए गौर कर रहे थे कि यीशु अपनी शिक्षाओं से परमेश्वर के कानून का पालन कर रहे थे या उन्हें तोड़ रहे थे।

कुछ लोग एक लकवाग्रस्त मनुष्य को खाट पर लाते हैं। वे यीशु के पास नहीं पहुंच पा रहे थे क्योंकि घर के आसपास बहुत लोग जमा थे। वे लोग उनके मित्र को छत पर ले जाते हैं और छत पर एक सुराख बनाते हैं। वे लोग लकवाग्रस्त मनुष्य को लोगों के बीचों-बीच यीशु के सामने नीचे उतार देते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि गलीली घरों में छतें सपाट होती थीं और बाहरी दीवार के पास छत पर जाने वाली सीढ़ियां होती थीं। इसी तरह वे लोग घर के ऊपर छत पर जाकर उनके मित्र को नीचे उतारने में सक्षम हो पाए। यह याद रखना भी महत्वपूर्ण है कि उन लोगों के पास शायद रस्सियां

थीं जिससे खाट को यीशु तक पहुंचाने के लिए नीचे उतारने में उन्हे मदद मिली।

यीशु उन लोगों और लकवाग्रस्त मनुष्य की श्रद्धा पर गौर करते हैं। यीशु लकवाग्रस्त मनुष्य से कहते हैं "मैं तुम्हें तुम्हारे पापों के लिए क्षमा करता हूं।" धार्मिक नेता और कानून के शिक्षक यह सोचते हैं कि यीशु ईश-निन्दक थे क्योंकि केवल परमेश्वर ही पापों को क्षमा कर सकते हैं।

यीशु कानून के धार्मिक नेताओं और शिक्षकों के विचार जानते थे। यीशु कानून के धार्मिक नेताओं और शिक्षकों से पूछते हैं कि आप अपने विचारों में पापों की क्षमा पर सवाल क्यों उठाते हैं? यीशु ने उनसे पूछा लकवाग्रस्त मनुष्य के पापों को क्षमा करना ज़्यादा आसान है, या फिर उसे चलने के लिए आज्ञा देना। यीशु लकवाग्रस्त मनुष्य को खड़े होने और घर जाने के लिए कह कर पापों को क्षमा करने के उनके अधिकार को साबित करते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु मनुष्यों के छिपे हुए विचारों को प्रकट कर शमौन की भविष्यवाणी को पूरा कर रहे हैं।

सभी लोगों ने उस मनुष्य को कूद कर, उसकी खाट उठाकर परमेश्वर की स्तुति करते हुए घर जाते हुए देखा। सभी ने प्रशंसात्मक रूप से परमेश्वर की स्तुति की।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 5:17–26

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी में पांच दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- सुन रहे लोग
- फरीसी लोग
- कानून के शिक्षक
- लकवाग्रस्त मनुष्य
- लकवाग्रस्त मनुष्य को ले जाने वाले मनुष्य

मण्डली से कहानी का दो बार अभिनय करवाएं। जिस भाषा में वे अभिनय कर रहे हैं, उन्हें उसकी भाषा में अनुवाद करना चाहिए। पहली बार मण्डली से बिना रूके कहानी का अभिनय करवाएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है तब उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, तब कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें। कथा या गद्यांश के वे अहम या मुश्किल हिस्से, जिन्हें अभिनीत करना है और छोड़ना नहीं है, उनका पता करें। कथा के अंशों को याद करने में मण्डली की मदद करें।

यह सुनिश्चित करें कि मण्डली लोगों से बहुत भरे हुए एक घर में यीशु द्वारा शिक्षा देने का अभिनय करे।

दूसरी बार जब मण्डली इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

यीशु द्वारा एक घर के अंदर शिक्षा दिए जाने का अभिनय करें। कई अलग-अलग गांवों से धार्मिक नेता और शिक्षक उन्हें सुनने के लिए आए थे। वे यीशु के करीब बैठे होते हैं।

अभिनय को बंद करें। कानून के धार्मिक नेताओं और शिक्षकों का पात्र निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मुझे इस शिक्षक के बारे में उत्सुकता है," "मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या वह एक झूठा भविष्यद्वक्ता है," "वे सही शिक्षा देते हुए लगते हैं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

कुछ मनुष्य एक लकवाग्रस्त मनुष्य को लेकर आते हैं। वहां बाहर इतने लोग जमा थे कि वे उस मनुष्य को छत पर ले जाते हैं और एक सुराख बनाते हैं। फिर वे उस लकवाग्रस्त मनुष्य को नीचे यीशु के करीब उतार देते हैं।

अभिनय को बंद करें। लकवाग्रस्त मनुष्य को लेकर आने वाले लोगों की भूमिका निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "यीशु उसे चंगा कर सकते हैं," "दृढ़ संकल्पी," "यह हमारा आखिरी मौका है," "यह मुश्किल है, लेकिन यह काम करेगा।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु उन लोगों और लकवाग्रस्त मनुष्य की श्रद्धा को देखते हैं। यीशु लकवाग्रस्त मनुष्य से कहते हैं "मैं तुम्हें तुम्हारे पापों के लिए क्षमा करता हूं।" धार्मिक नेता और कानून के शिक्षक यह सोच रहे होते हैं कि यीशु ईश-निन्दक थे क्योंकि केवल परमेश्वर ही पापों को क्षमा कर सकते हैं।

अभिनय को बंद करें। लकवाग्रस्त मनुष्य का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "यीशु मुझे चंगा करने वाले हैं," "यीशु की आंखें करुणा दर्शाती हैं," "मुझे यह उम्मीद नहीं थी कि मेरे पाप क्षमा हो जाएंगे।" "मैं खुशी से परिपूर्ण महसूस करता हूं।"

धार्मिक नेताओं और शिक्षकों का किरदार निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मैं गुस्से में हूं," "मैं उलझन में हूं कि उन्होंने ऐसा क्यों कहा?" "मुझे विश्वास नहीं होता कि वह खुद

को परमेश्वर समझता है।" "कोई भी इन शब्दों को कह सकता है, "तुम्हारे पाप क्षमा हुए।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु धार्मिक नेताओं और शिक्षकों के विचार जानते थे। यीशु कानून के धार्मिक नेताओं और शिक्षकों से पूछते हैं कि आप अपने विचारों में पापों की क्षमा पर सवाल क्यों उठाते हैं? यीशु ने उनसे पूछा लकवाग्रस्त मनुष्य के पापों को क्षमा करना ज़्यादा आसान है, या फिर उसे चलने के लिए आज्ञा देना।

अभिनय को बंद करें। यीशु का पात्र निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "उन्हें कितना संदेह है," "हतोत्साहित हूं," "उन्हें संकेतों को देखने की जरूरत है।"

धार्मिक नेताओं और शिक्षकों का किरदार निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मुझे आश्चर्य होता है कि यीशु को मेरे विचार पता थे," "उसे हमारे विचारों को जानने का सामर्थ्य किसने दिया?" "क्या यीशु यह कह रहे हैं कि वह इस लकवाग्रस्त को चंगा करेंगे," "यीशु लोगों को भ्रमित करने की कोशिश कर रहे हैं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु लकवाग्रस्त मनुष्य को खड़े होने और घर जाने के लिए कह कर पापों को क्षमा करने के उनके अधिकार को साबित करते हैं।

अभिनय को बंद करें। लकवाग्रस्त मनुष्य का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मैं इतना खुश हूं, यीशु ने मेरे पापों को क्षमा कर दिया और मुझे चंगा कर दिया," "मैं परमेश्वर की प्रियता महसूस करता हूं," "मैं अब अपने परिवार और समुदाय में लौट सकता हूं," "मैं आभारपूर्ण महसूस करता हूं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

सभी लोगों ने उस मनुष्य को कूद कर, उसकी खाट उठाकर परमेश्वर की स्तुति करते हुए घर जाते हुए देखा। सभी ने प्रशंसात्मक रूप से परमेश्वर की स्तुति की।

अभिनय को बंद करें। लोगों का किरदार निभाने वाले लोगों से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मैं अचम्भित हूं," "मैं सम्मानित महसूस करता हूं," "मैं आभारी हूं कि परमेश्वर हमारे बीच महान कार्य कर रहे हैं," "शायद यीशु वास्तव में मसीहा ही हैं!"

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 5:17–26

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु कफरनहूम के एक घर में शिक्षा दे रहे होते हैं। समूचे इस्राएल से फरीसी और कानून के शिक्षक उन्हें सुनने के लिए वहां आए होते हैं। **फरीसी** नाम का मतलब विभक्त होना होता है। उन्हें इस्राएल के धार्मिक नेताओं में सबसे प्रभावशाली समूह के रूप में देखा जाता था। फरीसी परमेश्वर के कानून के प्रति समर्पित थे। वे लिखित और मौखिक दोनों ही प्रकार की धार्मिक परंपराओं और कानून को समझते थे। कुछ फरीसी परमेश्वर के कानून के शिक्षक भी थे, और इस कहानी में उन्हीं के बारे में बताया गया है। फरीसी शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है। **कानून के शिक्षक** शास्त्रियों को संदर्भित करता है। इन लोगों का मूल काम मूसा के कानून की प्रतियां लिखना था। लेकिन यीशु के समय के दौरान वे परमेश्वर के कानून का अध्ययन करते, शिक्षा देते और भावार्थ करते थे। कानून के अधिकांश शिक्षक फरीसी थे, लेकिन सभी फरीसी कानून के शिक्षक नहीं थे। कानून के शिक्षक प्रधान शब्दावली में है।

प्रभु की शक्ति यीशु के साथ है। यहां **प्रभु** स्वयं परमेश्वर को संदर्भित करता है। यह वह तरीका है जिससे यहूदी लोग परमेश्वर का जिक्र तब करते थे जब वे उनका नाम इसलिए नहीं पुकारना चाहते थे क्योंकि वे उनका बहुत सम्मान करते थे। प्रभु का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने उसे पिछले अंशों में किया है। प्रभु शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

कुछ मनुष्य एक **लकवाग्रस्त मनुष्य** को खाट पर यीशु के पास लेकर आते हैं। वह मनुष्य खाट पर पड़ा हुआ होता है क्योंकि उसे एक बीमारी थी जिसके कारण वह अपने पांव हिला नहीं पाता था। चूंकि लूका हमें यह नहीं बताते कि उस मनुष्य को क्या यह बीमारी जन्मजात थी या नहीं, तो संभवत: उसने जन्म के बाद यह रोग विकसित किया था। **खाट** का संदर्भ सामान के किसी भी ऐसे हिस्से को संदर्भित करता है जिसका इस्तेमाल लेटने के लिए किया जाता है। इस मामले में उसका इतना हल्का होना आवश्यक था, कि उस पर किसी व्यक्ति को उठा कर ले जाया जा सके। इस्राएल के अधिकांश गरीब लोग बुने हुए बिछौनो पर सोते थे जिन्हें लपेटा जा सकता था। संभवत: इस कथा में संदर्भित किए गए बिछौने इसी प्रकार की खाट है।

उस मनुष्य के मित्र उसे यीशु के सामने नीचे उतारने के लिए छत में एक सुराख बनाते हैं। यीशु उनकी श्रद्धा देखते हैं। **श्रद्धा** परमेश्वर के वचनों के प्रति लोगों की प्रतिक्रिया को संदर्भित करता है। यह केवल परमेश्वर के साथ सहमत होना ही नहीं है, बल्कि परमेश्वर पर अपना विश्वास और भरोसा रखना है। लकवाग्रस्त मनुष्य और उसके मित्रों का मानना है कि यीशु उसे चंगा कर सकते हैं। यह बताना महत्वपूर्ण है, कि एक व्यक्ति किस में विश्वास करता है। इस मामले में उन लोगों को यीशु पर श्रद्धा है।

शिक्षण साधन:इस बारे में किसी स्वयंसेवक से पहले ही मदद मांग लें। कमरे के बीच में एक कुर्सी रखें और स्वयंसेवक से पूछें, "क्या आप मानते हैं कि यहां एक कुर्सी है? क्या आप मानते हैं कि यह एक कुर्सी है? क्या आप मानते हैं कि यह कुर्सी इतनी मज़बूत है कि आप इस पर आराम से बैठ सकें?" स्वयंसेवक को इन सभी सवालों के लिए "हां" कहना चाहिए। फिर पूछें, "मुझे पता है कि आप थक चुके हैं, इसलिए यह कुर्सी आपके बैठने के लिए है।" स्वयंसेवक को कुर्सी पर बैठने से इंकार कर देना चाहिए। ऐसा कई बार करें, यह पूछते हुए कि स्वयंसेवक कुर्सी पर क्यों नहीं बैठेंगे, जबकि उन्हें पता है कि कुर्सी वहाँ है और वह मानते हैं कि कुर्सी काफ़ी मज़बूत है। समूह को समझाएँ कि यह विश्वास के बारे में एक उदाहरण है। अगर व्यक्ति कुर्सी पर नहीं बैठेगा तो वास्तव में उन्हें कुर्सी पर विश्वास नहीं है।

यीशु उस मनुष्य को **मित्र** कहते हैं जो एक तटस्थ शुभकामना है जिसका मतलब मनुष्य है। यीशु उसे कहते हैं कि **तुम्हारे पाप क्षमा हो गए हैं।** यह निहित है कि यीशु ने उसके पापों को क्षमा कर दिया था।

आपकी भाषा में आपको यह कहना हो सकता है कि पापों को किसने क्षमा किया था। इस मामले में आप या तो इसे "मैं तुम्हारे पापों को क्षमा करता हूं" अथवा "मैं तुम्हें घोषणा करता हूं कि परमेश्वर ने तुम्हारे पापों को क्षमा कर दिया है।" के रूप में अनुवादित कर सकते हैं। पाप और क्षमा का वर्णन उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पिछले चरणों में किया है। दोनों शब्दों को प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

फरीसी सोचते हैं कि यीशु ईश निन्दा कर रहे हैं। **ईश निन्दा** करना आपके वचनों के माध्यम से परमेश्वर का अपमान करना है। फरीसियों ने यीशु पर परमेश्वर का अपमान करने का आरोप लगाया। पुराने नियम में यह मृत्युदण्ड के द्वारा दंडनीय था। ईश-नन्दा शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है। यीशु कहते हैं कि वे जानते हैं कि फरीसी **उनके हृदय में** क्या सोच रहे होते हैं। आपकी भाषा में शायद आपको शरीर के एक अलग अंग का या किसी अन्य अभिव्यक्ति का इस्तेमाल यह बताने के लिए करना पड़ सकता है कि कोई कहां सोचता है।

यीशु स्वयं को **मनुष्य का पुत्र** कहते हैं। इस वाक्यांश का मतलब है कि यीशु मनुष्य हैं। "मनुष्य का पुत्र" वह व्यक्ति है जिसका संदर्भ दानिय्येल ने उनके दिव्य दर्शन में दिया था। परमेश्वर मनुष्य के पुत्र को सभी सामर्थ्य और शक्ति प्रदान करते हैं। यह शब्द लोगों को यह तय करने के लिए मजबूर करता है कि यीशु मनुष्य हैं या परमेश्वर। यह सुनिश्चित करें कि आपके अनुवाद में यह स्पष्ट होता है कि यीशु इस उपाधि के साथ स्वयं के बारे में बोल रहे हैं। मनुष्य के पुत्र के लिए उसी अनुवाद का इस्तेमाल करें जैसा कि आपने पिछले चरणों में किया है। मनुष्य का पुत्र उपाधि को प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

यह प्रमाणित करने के लिए कि उनके पास पापों को क्षमा करने का अधिकार है, यीशु मनुष्य को चंगा करते हैं। लोग **अचम्भित** हैं। इसका मतलब है कि लोगों की प्रतिक्रिया सकारात्मक थी। वे खुश और आश्चर्यचकित थे कि वह व्यक्ति ठीक हो गया था।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 5:17–26

Audio Content

webm zip (4007684 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (6923709 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 5:27–39

सुनना और मनन करना

लूका 5:27–39 सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे इस कथा को सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 5:27–39

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु ने अभी-अभी एक मनुष्य को चंगा कर के यह सिद्ध कर दिया कि उनके पास पापों को क्षमा करने का अधिकार है। इस कथा में यीशु अपने अधिकार का इस्तेमाल करते हैं और लेवी नामक एक व्यक्ति को क्षमा करते हैं। यीशु लेवी को अपना अनुयायी बनने के लिए कहते हैं। प्रत्युत्तर में लेवी सब कुछ छोड़ देते हैं। लेवी यीशु और उनके चेलों को अपने घर में उनके साथ भोजन करने के लिए आमंत्रित करते हैं। एक बार फिर यीशु को धार्मिक नेताओं के साथ टकराव का सामना करना पड़ता है।

लकवाग्रस्त मनुष्य को चंगा करने के बाद, यीशु कफरनहूम के बाहर जाते हैं। यीशु एक यहूदी मनुष्य को रोमन सरकार के लिए कर या धन एकत्र करते हुए देखते हैं। लूका और मार्क के सुसमाचार इस व्यक्ति के लिए लेवी नाम का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन मत्ती का सुसमाचार कहता है कि उसका नाम मत्ती है। चूंकि कफरनहूम एक छोटा सा नगर है, यीशु के शिष्य, शमौन, याकूब और यूहन्ना शायद पहले से ही यह जानते थे कि लेवी कौन थे।

यहूदी संस्कृति में कर संग्राहकों का तिरस्कार किया जाता था। वे रोमन सरकार के लिए लोगों से कर, या धन एकत्र करते थे। यहूदियों को पता था कि वे आमतौर पर आवश्यकता से अधिक धन एकत्र करते थे और अतिरिक्त धन अपने लिए रख लेते थे। कर संग्राहक समुदाय से बहिष्कृत होते थे। वे किसी अदालत में न्यायाधीश या साक्षी नहीं बन सकते थे। वे आराधनालयों में पूजा अर्चना नहीं कर सकते थे। उन्हें उनके परिवारों के लिए भी शर्मिंदगी का कारण माना जाता था।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपके समुदाय में ऐसी कौन सी बातें होती हैं जो किसी को बहिष्कृत करती हैं। आपकी संस्कृति में बहिष्कृत लोगों से किस तरह व्यवहार किया जाता है?

कर चौकी एक ऐसा स्थान होता है जहां यहूदी करों का भुगतान करते थे। यह शायद किसी सायबान के नीचे एक छोटी मेज थी जहां लेवी कर संग्रह करने के लिए बैठते थे। कर चौकियां आमतौर पर किसी शहर के ठीक बाहर ही स्थित होती थीं क्योंकि सड़कों का इस्तेमाल करने के लिए लोगों को धन या कर का भुगतान करना पड़ता था।

रुकें और अपनी टीम को कर चौकी का एक चित्र दिखाएं।

यीशु लेवी से कहते हैं "मेरे पीछे हो लो।" इस वाक्यांश का मतलब है कि यीशु चाहते हैं कि लेवी उनका शिष्य बन जाए। शिष्य एक शिक्षार्थी होता है जो हमेशा अपने शिक्षक के साथ होता है। एक शिष्य अपने शिक्षक के वचनों और कार्यों से लगातार शिक्षा लेता रहता है। उस संकेत की प्रतिक्रियास्वरूप लेवी यीशु का अनुसरण करने के लिए सब

कुछ छोड़ देते हैं। लेवी एक कर संग्राहक के रूप में अपना काम छोड़ देते हैं और यीशु का शिष्य बनना शुरू कर देते हैं। लूका लेवी की प्रतिक्रिया को अन्य शिष्यों - शमौन, याकूब और यूहन्ना के साथ संबद्ध करते हैं। उन्होंने भी यीशु का अनुसरण करने के लिए सब कुछ छोड़ दिया था।

लेवी बहुत से लोगों को उनके घर में एक बड़े भोज के लिए आमंत्रित करते हैं। लेवी मेजबान हैं और यीशु उनके सम्मानित अतिथि हैं। यहूदी संस्कृति में मेजबान को समृद्ध होने के लिए और सम्मानित अतिथि को उनकी बुद्धिमत्ता के लिए जाना जाता था। भोजन में आमंत्रित लोगों को मित्र माना जाता था। अन्य कर संग्राहक, लेवी के मित्र और यीशु के शिष्य सभी इस भोज में एक साथ हैं।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में साथ मिलकर भोजन साझा करने का क्या मतलब होता है? क्या किसी के घर में आमंत्रित किए जाने का कोई विशेष महत्व होता है? जब आप भोजन करते हैं तब किस तरह की बातें की जाती हैं?

फरीसी सुनते हैं कि यीशु कर संग्राहकों के साथ भोजन कर रहे हैं। वे यीशु के चेलों से शिकायत करते हैं। फरीसी इसलिए परेशान हैं क्योंकि यीशु परमेश्वर के कानून के शिक्षक हैं, और वे पापियों या ऐसे लोगों के साथ खा रहे होते हैं जो नियमित रूप से परमेश्वर की अवज्ञा करते हैं। फरीसी लेवी के मेहमानों को पापी कहते हैं क्योंकि वे कर संग्राहक और बहिष्कृत थे। फरीसी कर संग्राहकों को परमेश्वर के प्रति श्रद्धाहीन के रूप में देखते हैं। उनका मानना था कि पवित्रता को न केवल मंदिर में बल्कि घर में भी रखा जाना चाहिए। लेवी के मेहमानों ने धार्मिक रूप से या रिवाज़ के अनुसार भोजन से पहले खुद का शोधन नहीं किया था। फरीसियों ने सोचा कि यीशु इन बहिष्कृतों के साथ भोजन करके परमेश्वर की सेवा करने के लिए अशुद्ध या अयोग्य हो रहे थे।

यीशु धार्मिक नेताओं को एक सीखावन देने वाली कहावत या सुपरिचित लोकोक्ति के साथ जवाब देते हैं। यीशु पाप की तुलना बीमारी से करते हैं और कहते हैं कि लोग जो बीमार हैं उन्हें चिकित्सक की आवश्यकता होती है। यीशु कहते हैं कि वे एक चिकित्सक हैं। उनकी तुलना का मतलब है कि जो लोग ऐसा सोचते हैं कि वे धर्मी हैं उन्हें यह नहीं लगता कि उन्हें मदद की आवश्यकता है। तब भी, पापी लोग यह जानते हैं कि उन्हें यीशु की मदद की आवश्यकता है। यीशु का निहितार्थ है कि फरीसी यह सोचते थे कि वे पहले से ही धर्मी थे। उन्होंने सोचा कि परमेश्वर के साथ पहले से ही उनका सही संबंध था। यीशु का कहना है कि उनका प्रयोजन पापियों को प्रायश्चित करने और परमेश्वर की ओर फिरने के लिए बुलाने का है। इससे यह पता चलता है कि वे पापियों के साथ क्यों खा रहे हैं जो यह जानते हैं कि उन्हें उनकी आवश्यकता है।

लूका *5:27–39*

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में बुद्धिमत्ता या जीवन सलाह किस तरह से आगे बढ़ाई जाती है?

बाद में कोई यीशु से उपवास के बारे में एक प्रश्न पूछता है। उपवास का मतलब है परमेश्वर की उपासना के एक अंश के रूप में बिना भोजन या पेय के रहना। यूहन्ना के शिष्य और फरीसियों के अनुयायी उपवास करते हैं जबकि यीशु के अनुयायी खाना-पीना जारी रखते हैं। यूहन्ना का संदर्भ यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से है। उन लोगों ने परोक्ष रूप से यीशु के अनुयायियों पर परमेश्वर के प्रति गंभीर भक्ति न दिखाने का आरोप लगाया था। यीशु फिर से उनका जवाब एक तुलना के साथ देते हैं। यीशु स्वयं को एक दूल्हे के रूप में और अपने शिष्यों को बारातियों के रूप में वर्णित करते हैं जो उनके साथ जश्न मनाने आ रहे हैं। यीशु कहते हैं कि जब तक दूल्हा उनके साथ है, बाराती उपवास नहीं करते हैं। दूल्हा वह व्यक्ति है जो शादी कर रहा है। यहूदी संस्कृति में किसी विवाह में यदि मेहमान उपवास करते थे तो वे आनन्द के बजाय उदासी दिखा रहे होते थे। यीशु कहते हैं कि उनके चेले उपवास नहीं करते क्योंकि यीशु अभी भी उनके साथ हैं। यीशु का तात्पर्य है कि भविष्य में उन्हें उनके अनुयायियों से छीन लिया जाएगा। जब वे चले जाएंगे तो उनके शिष्य अपनी उदासी दिखाने के लिए उपवास करेंगे।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। यहूदी शादियों के दौरान मेहमान उस व्यक्ति के साथ जश्न और हर्ष मनाने के लिए आते होंगे जिसका विवाह हो रहा है। आपकी संस्कृति में लोग विवाहोत्सव कैसे मनाते हैं?

इसके बाद यीशु तीन दृष्टांत या बुद्धिमत्तापूर्ण कहानियों का इस्तेमाल करते हैं, ताकि यह व्यक्त किया जा सके कि वे परमेश्वर के लिए जीवन जीने का एक नया तरीका सिखा रहे हैं। यीशु की शिक्षा का नया तरीका पुरानी यहूदी परंपराओं के माकूल नहीं होगा।

यीशु पुराने तरीकों की तुलना एक पुराने वस्त्र से करते हैं। वे अपने नए तरीके की तुलना एक पैबन्द से या एक नए वस्त्र से काटे गए कपड़े के टुकड़े से करते हैं। कोई भी किसी पुराने वस्त्र पर पैबन्द लगाने के लिए नए कपड़े से टुकड़ा नहीं लेगा। जब कोई उस कपड़े को धोएगा तो वह पैबन्द सिकुड़ कर पुराने कपड़ों से फट जाएगा। यीशु यह निहितार्थ कर रहे हैं कि उनकी शिक्षा को लोगों के जीवन के पुराने तरीके से जोड़ा नहीं जा सकता है।

यीशु पुराने तरीकों की तुलना पुरानी मशकों के साथ भी करते हैं। एक मशक पशु की खाल से बना एक ऐसा पात्र होता है जिसे लोग दाखरस के भंडारण के लिए इस्तेमाल किया करते थे। दाखरस अंगूरों से बनाया गया एक किण्वित पेय होता है। यीशु अपने नए तरीके की तुलना नए दाखरस से करते हैं। यहूदियों को यह पता था कि जब नई दाखरस पुरानी मशकों में डाली जाती है तो मशक फट जाती हैं। नई मशकें दाखरस

के किण्वित होने के साथ फैलती थीं, लेकिन पुरानी मशकें पहले से ही फैली हुई होती थीं।

रुकें और इस संकल्पना को बेहतर ढंग से समझने के लिए एक मशक की तस्वीर दिखाएं।

उसके बाद यीशु कहते हैं कि जो लोग पुराना दाखरस पीते हैं वे नया दाखरस पीना नहीं चाहते। वस्तुत: वे उन लोगों के बारे में बात कर रहे थे जो यहूदी धर्म की शिक्षा देने के पुराने तरीके से संतुष्ट थे। पुराना दाखरस अच्छा होता है। यीशु यह कह रहे हैं कि यद्यपि पुरानी शिक्षाएं अच्छी हैं, तथापि उनकी नई शिक्षाएं पुरानी शिक्षाओं की परिपूर्णता या अंतिम परिणाम हैं।

लूका इस कथा का इस्तेमाल पश्चाताप दिखाने के लिए सब कुछ छोड़ कर यीशु का अनुसरण करने के लिए करते हैं। गरीबों की मदद करने की यीशु की विषय-वस्तु निरंतर होती है। यीशु की क्रियाएं यह दर्शाती हैं कि उनका संदेश हर किसी के लिए है, यहां तक कि बहिष्कृतों के लिए भी। यीशु उन धार्मिक नेताओं के साथ टकराव का सामना करते रहते हैं जो पुराने तरीकों से चिपके रहते हैं। यह वृतांत अगली कथा की तैयारी करता है जहां यीशु के शिष्यों की एक बार फिर आलोचना की जाएगी।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 5:27–39

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य कल्पांकित करने में समूह की मदद करेंगे। आप कथा के दृश्यों, विन्यास और चरित्रों को परिभाषित करने में समूह की मदद करेंगे।

इस कहानी के चार दृश्य हैं।

पहला दृश्य: यीशु कफरनहूम से बाहर जाते हैं। यीशु एक कर संग्राहक से कहते हैं "मेरे पीछे चलो।" कर संग्राहक का नाम लेवी है। लेवी यीशु के अनुयायी बन जाते हैं।

दूसरा दृश्य: यीशु के सम्मानित अतिथि के रूप में लेवी का उनके साथ भोज होता है। लेवी के मित्र यीशु के साथ मेज़ पर हैं। लोग लेवी के मित्रों का तिरस्कार करते हैं। लेवी के मित्र कर संग्राहक हैं। धार्मिक नेता और कानून के शिक्षक यह सवाल उठाते हैं कि यीशु और उनके शिष्य ऐसे बुरे लोगों के साथ खा-पी रहे हैं। यीशु यह कहकर जवाब देते हैं स्वस्थ नहीं बल्कि केवल ऐसे लोगों को चिकित्सक की आवश्यकता होती है जो रोगी हैं। यीशु ने कहा कि ऐसे लोग, जो यह सोचते हैं कि वे धर्मी हैं, या कि उनका परमेश्वर के साथ सही संबंध है, वे उनके लिए नहीं बल्कि पापियों के लिए आए हैं।

तीसरा दृश्य: "लोग यीशु से पूछते हैं कि उनके अनुयायी दूसरों के अनुयायियों की तरह उपवास क्यों नहीं करते हैं। यीशु एक विवाह के उदाहरण का इस्तेमाल करके जवाब देते हैं। एक विवाह में लोग दूल्हे के साथ जश्न मनाते हैं, लेकिन जब दूल्हे को दूर कर दिया जाएगा, तो लोग उपवास करेंगे।

चौथा दृश्य: यीशु उन्हें कहते हैं कि एक पुराने परिधान को ठीक करने के लिए नए वस्त्र के एक टुकड़े का इस्तेमाल करना नए वस्त्र को बर्बाद कर देता है और पुराने वस्त्र से मेल भी नहीं खाता है। यीशु यह भी कहते हैं कि पुरानी मशकों का इस्तेमाल नए दाखरस को भरने के लिए करना, पुरानी मशकों को बर्बाद कर देता है और नया दाखरस ढलक जाता है। अंत में यीशु उन्हें कहते हैं कि जो लोग पुरानी दाखरस पीते हैं, वे नया दाखरस नहीं चाहते। ये तीन दृष्टांत हैं।

इस कहानी के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- लेवी
- कररोपित यहूदी लोग
- लेवी के मित्र
- फरीसी और कानून के शिक्षक
- शिष्य
- दूल्हा
- दूल्हे के मित्र
- दर्जी
- दाखरस निर्माता

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल (ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप इधर उधर रख सकते हैं जैसे पत्थर, लकड़ियां, बच्चों के खिलौने) का इस्तेमाल करे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु ने अभी अभी एक लकवाग्रस्त मनुष्य के पापों को क्षमा कर उसे चंगा किया था। लोगों ने जो कुछ देखा उसके लिए वे परमेश्वर की स्तुति कर रहे थे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यहूदी लोग कर संग्राहकों का तिरस्कार करते थे। कर संग्राहक रोमियों के लिए काम करते थे। लोग यह जानते थे कि कर संग्राहक जितना उन्हें मांगना चाहिए उससे अधिक धन मांगते थे। यीशु द्वारा लेवी को बुलाए जाने से पहले लेवी कर संग्रह करने के चौकी में करसंग्रह करते रहे हैं।

यीशु नगर से बाहर जा रहे हैं। यीशु एक कर संग्राहक को देखते हैं। यीशु कर संग्राहक से कहते हैं कि वे उनके पीछे हो

लें। कर संग्राहक का नाम लेवी है। लेवी सब कुछ छोड़ कर यीशु के पीछे हो लेते हैं।

लेवी उनके घर में यीशु के लिए एक भोज आयोजित करते हैं। लेवी के मित्र यीशु के साथ मेज़ पर खा रहे होते हैं। लेवी के मित्र कर संग्राहक और अन्य प्रकार के लोग हैं। अधिकांश यहूदी कर संग्राहक और लेवी के मित्रों का तिरस्कार करते थे क्योंकि वे उन्हें पापियों के रूप में देखते थे। वे अशुद्ध हैं क्योंकि उनका संपर्क अन्यजातियों से था। भोजन से पहले वे रिवाज़ानुसार स्वयं का शोधन उस तरह नहीं करते थे जैसा धार्मिक नेतागण उनसे अपेक्षा करते थे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि जब भोज हुआ तब फरीसी और कानून के शिक्षक लेवी के घर में नहीं थे। फरीसी और कानून के शिक्षक यह मानते थे कि पापियों के साथ मेल-जोल उन्हें अशुद्ध या परमेश्वर द्वारा अस्वीकृत बना देगा। फरीसियों ने भोज के बाद घर के बाहर चेलों से सवाल किया।

फरीसियों और कानून के शिक्षक चेलों से पूछते हैं "यीशु पापियों के साथ क्यों खा रहे हैं?" यीशु यह कहकर जवाब देते हैं कि चिकित्सक की आवश्यकता रोगियों को ही होती है। यीशु कहते हैं कि वे पापियों के लिए आए हैं, न कि ऐसे लोगों के लिए जो यह सोचते हैं कि वे धर्मी हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यहूदी लोग एक बड़े नुकसान के कारण या आने वाले कुछ बेहतर की उम्मीद दिखाने के लिए उपवास करते थे। यीशु के जवाब से यह पता चलता है कि जब तक यीशु उनके साथ हैं, उन्हें उपवास करने की कोई वजह नहीं है।

फरीसियों और शास्त्रियों ने यीशु से पूछा कि यूहन्ना और फरीसियों के शिष्य तो अक्सर उपवास और प्रार्थना करते हैं, तो ऐसा क्यों है कि यीशु के शिष्य खाते-पीते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि कोई भी एक पुराने वस्त्र में पैबन्द लगाने के लिए नए कपड़े के टुकड़े को बर्बाद नहीं करेगा। लोग यह जानते थे कि नया दाखरस फैल जाता है और एक पुरानी मशक जो पहले से ही फैली हुई है, उसे फाड़ देगा।

यीशु दो उदाहरण देते हैं। यीशु कहते हैं कि नए वस्त्र से एक टुकड़े का इस्तेमाल करके पुराने वस्त्र को ठीक करना नए वस्त्र को बर्बाद कर देता है और वह पुराने वस्त्र से मेल भी नहीं खाएगा। यीशु कहते हैं कि एक पुरानी मशक का इस्तेमाल नए दाखरस को भरने के लिए करने पर पुरानी मशक फट कर दाखरस को ढलका देगी। नया दाखरस नई मशकों में ही जाना होता है। ये उदाहरण यह दर्शाते हैं कि जो लोग पुराने यहूदी धार्मिक शिक्षण से चिपके रहते हैं वे यीशु के नए शिक्षण को स्वीकार नहीं करेंगे। यीशु कहते हैं कि जो लोग पुराना दाखरस पीते हैं वे नया दाखरस नहीं चाहते।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका *5:27–39*

लूका 5:27–39

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी के चार दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- लेवी
- लेवी के मित्र
- कर-रोपित यहूदी लोग
- फरीसी और कानून के शिक्षक
- शिष्य
- दूल्हा
- दूल्हे के मित्र
- दर्जी
- दाखरस निर्माता

मण्डली से कहानी का दो बार अभिनय करवाएं। जिस भाषा में वे अभिनय कर रहे हैं, उन्हें उसकी भाषा में अनुवाद करना चाहिए। पहली बार मण्डली से बिना रूके कहानी का अभिनय करवाएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है तब उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, तब कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें। कथा या गद्यांश के वे अहम या मुश्किल हिस्से, जिन्हें अभिनीत करना है और छोड़ना नहीं है, उनका पता करें। कथा के अंशों को याद करने में मण्डली की मदद करें।

यह सुनिश्चित करें कि मण्डली लेवी का उनकी चौकी में बैठकर कर-संग्रह करने का अभिनय करे। यहूदी लेवी का तिरस्कार करते हैं। चूंकि कफरनहूम छोटा था, यीशु के शिष्य शायद लेवी को जानते थे।

यह सुनिश्चित करें कि मण्डली लेवी के मित्रगण, वे लोग जो पापी और कर संग्राहक थे, उनके बहिष्कृत होने का अभिनय करे। वे यीशु के साथ खा और पी रहे होते हैं।

यह सुनिश्चित करें कि मण्डली फरीसियों और कानून के शिक्षकों का घर के बाहर होने की अदाकारी करे। भोज के बाद फरीसी और कानून के शिक्षक यीशु के पापियों के साथ खाने और पीने के व्यवहार के बारे में उनके शिष्यों से सवाल करते हैं।

यह सुनिश्चित करें कि मण्डली एक बारात और लोगों का दूल्हे के साथ खाने और पीने का अभिनय करे। फिर जब दूल्हा दूर कर दिया जाता है, तो वे ही लोग उदासी दिखाने के लिए उपवास कर रहे होते हैं। यह अदाकारी उसी समय होती है जब यीशु उदाहरण दे रहे होते हैं।

यह सुनिश्चित करें कि मण्डली एक व्यक्ति द्वारा अपने पुराने कपड़ों की मरम्मत करने की कोशिश करने का अभिनय करे। यह व्यक्ति पुराने वस्त्र को ठीक करने के लिए नए वस्त्र का एक टुकड़ा काट देता है। लेकिन नया पैबंद पुराने वस्त्र से मेल नहीं खाता और नया वस्त्र बर्बाद हो जाता है। जब वे पुराने वस्त्र को धोते हैं, तो वह पैबन्द सिकुड़ जाता है और पुराना वस्त्र भी बर्बाद हो जाता है।

यह सुनिश्चित करें कि मण्डली एक व्यक्ति को नया दाखरस बनाने और एक पुरानी मशक का इस्तेमाल करने का अभिनय करे। समय के साथ पुरानी मशक फट जाती है और नया दाखरस ढलक जाता है। अन्य लोग पुरानी दाखरस पी रहे होते हैं और वे नए दाखरस को अस्वीकार करते हैं।

दूसरी बार जब मण्डली इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

लेवी कर संग्रह की उनकी चौकी में हैं, इसकी अदाकारी करें। वे यहूदी जो कर का भुगतान करने जाते हैं, वे लेवी को पसंद नहीं करते। लेवी एक बहिष्कृत है।

अभिनय को बंद करें। अभिनेता लेवी से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मुझे कभी-कभी अकेलापन महसूस होता है," "यह एक अच्छा काम है जिसमें अच्छी कमाई होती है," "मुझे ऐसे लाभ होते हैं जो अन्य लोगों को नहीं होते," "मैं इस काम के कारण मित्रों और परिवार में वापस नहीं जा सकता।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु नगर से बाहर जा रहे हैं। यीशु लेवी को देखते हैं। यीशु लेवी से कहते हैं कि "मेरे पीछे हो लो।" लेवी सब कुछ पीछे छोड़ कर यीशु का अनुसरण करते हैं।

अभिनय को बंद करें। कर अदा वाले यहूदियों का किरदार निभा रहे अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि वह रोमवासियों के लिए काम करता है," "यीशु उससे बात क्यों कर रहे हैं?" "मुझे लेवी पसंद नहीं है," "रुको, वे कहां जा रहे हैं?" अभिनय को फिर से शुरू करें।

लेवी एक भोज आयोजित करते हैं। सम्मानित अतिथि यीशु हैं। लेवी के मित्र यीशु के साथ खा और पी रहे होते हैं। यहूदी लेवी के मित्रों का सम्मान नहीं करते क्योंकि वे कर संग्राहक हैं। लेवी के अन्य मित्र ऐसा जीवन जीते हैं जिसे यहूदी असम्मानजनक, यहां तक कि पापपूर्ण भी समझते हैं।

अभिनय को बंद करें। लेवी के मित्रों का किरदार निभा रहे अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मुझे सम्मानित महसूस होता है कि यीशु हमारे साथ हैं," "वे अन्य लोगों की तरह नहीं हैं, वे हमारे साथ मिलते-जुलते हैं," "यीशु को जो कहना है, उस विषय में मुझे कुतूहल है।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

कुछ समय बाद फरीसी और कानून के शिक्षक शिष्यों से सवाल करते हैं कि वे ऐसे बुरे लोगों के साथ क्यों खा और पी रहे हैं। यीशु उन्हें यह कहकर जवाब देते हैं कि रोगियों को चिकित्सक की आवश्यकता होती है, न कि स्वस्थ लोगों को। यीशु कहते हैं कि मैं पापियों के लिए आया हूं जिन्हें पश्चाताप की आवश्यकता है, न कि उन लोगों के लिए जो यह सोचते हैं कि वे धर्मी हैं।

अभिनय को बंद करें। फरीसियों और कानून के शिक्षकों का किरदार अदा कर रहे अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि वे खुद को अशुद्ध बना रहे हैं।" "यह लोगों के लिए एक बुरा उदाहरण है।" "यह नया शिक्षण खतरनाक है।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

कुछ लोग यीशु से पूछते हैं कि उनके शिष्य हमेशा खाते-पीते क्यों रहते हैं, जबकि यूहन्ना के और फरीसियों के शिष्य उपवास करते थे।

यीशु एक दूल्हे या ऐसे व्यक्ति जिसकी शादी हो रही हो, का उदाहरण देकर प्रत्युत्तर देते हैं। यीशु एक नए वस्त्र का पुराने वस्त्र को ठीक करने में इस्तेमाल करने का उदाहरण देते हैं। यीशु पुरानी मशकों में नए दाखरस का उदाहरण देते हैं।

अभिनय को बंद करें। फरीसियों और कानून के शिक्षकों का किरदार अदा कर रहे अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "नाराज़ हैं। "हमारा शिक्षण परमेश्वर की आंखों में सही है, न कि आपका!" "यीशु को रोकने की आवश्यकता है।"

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 5:27–39

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु कफरनहूम के पास हैं, जब वे लेवी नामक एक व्यक्ति को कर-संग्रह करते हुए देखते हैं। **एक कर-संग्राहक** किसी ऐसे व्यक्ति को संदर्भित करता है जो सरकार के लिए धन या कर का संग्रह करने की नौकरी करता है। यहूदी लोगों को सड़कों का इस्तेमाल करने और माल या उत्पाद को देश में लाने के लिए रोमन सरकार को कर का भुगतान करना पड़ता था। यहूदी लोग कर संग्राहकों को नापसंद करते थे क्योंकि वे

लोग आवश्यकता से अधिक धन एकत्र करने और इसे अपने लिए रखने के लिए जाने जाते थे। कर संग्राहक यहूदी समुदायों में बहिष्कृत होते थे और उन्हें उनके परिवारों के लिए शर्मिंदगी का कारण माना जाता था। कर संग्राहक का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने लूका के पिछले अंशों में किया है।

कर संग्राहक **कर की चौकियों** में काम करते थे। वह चौकी शायद किसी सायबान के नीचे रखी गई एक छोटी सी मेज होती थी जहां लेवी कर संग्रह करने के लिए बैठते थे। अधिकांश समय कर चौकियां मुख्य शहर या शहर के ठीक बाहर स्थापित की जाती थीं। इससे यह स्पष्ट होता कि क्यों यीशु कफरनहूम से बाहर गए और उन्होंने लेवी को देखा।

यदि आपने पहले से ही ऐसा नहीं किया है तो, अपनी टीम को कर चौकियों की तस्वीर दिखाएं।

यीशु लेवी से कहते हैं "मेरे पीछे हो लो।" लेवी को उनका शिष्य होने के लिए कहने का यह यीशु का तरीका था। **शिष्य** का अर्थ शिक्षार्थी होता है। ये शिक्षार्थी अपने शिक्षक का जहां भी वे जाते थे वहां अनुसरण करते थे। वे उनकी शिक्षाओं और कार्यों से सीखने के लिए खुद को प्रतिबद्ध करते थे। यीशु की सार्वजनिक सेवा के अधिकांश हिस्से में उनके करीबी अनुयायी उनके साथ थे। वे उनके साथ यात्रा करते थे, उनसे सब कुछ सीखते थे, और कभी-कभी उन्हें राज्य के सुसमाचार का प्रचार करने और रोगियों को चंगा करने के लिए भी भेजा जाता था। इस कथा में शिष्य का संदर्भ शमौन, याकूब, यूहन्ना और अब लेवी से है। शिष्य शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

अगर आपकी भाषा में किसी शिक्षक को समर्पित अनुयायियों के लिए एक समझा जाने वाला शब्द है, तो आप उसका इस्तेमाल यहां कर सकते हैं।

लेवी सब **कुछ छोड़** कर यीशु का अनुसरण करते हैं। इसका मतलब है कि लेवी ने एक कर-संग्राहक की उनकी नौकरी छोड़ दी ताकि वे यीशु के शिष्य बन सकें। यह सावधानी रखें कि इस बात का अनुवाद लेवी द्वारा अपनी सभी संपत्ति को पीछे छोड़ देना न हो, क्योंकि हमें पता है कि कथा का अगला हिस्सा लेवी के घर में घटित होता है।

लेवी यीशु के लिए **एक दावत** या एक बड़े भोज का आयोजन करते हैं। लेवी अपने मित्रों और अन्य कर संग्राहकों को उनके घर में खाने के लिए आमंत्रित करते हैं। लोग भोजन की मेज के पास **अधलेटे** होते हैं। इस वाक्यांश का मतलब सिर्फ इतना है कि वे मेज़ पर भोजन कर रहे थे। यहूदी संस्कृति में लोग आमतौर पर एक कम ऊंचाई वाली मेज पर एक साथ खाते थे और वे फर्श पर गादियों पर बैठते थे।

उनके संप्रदाय से संबंधित फरीसी और कानून के शिक्षक भी वहां मौजूद हैं। इसका मतलब केवल फरीसी और उनके शास्त्रियों से है। **फरीसी** और **शास्त्री या कानून के शिक्षक,** का अनुवाद उसी तरह से करें, जिस तरह से आपने पिछले अंशों में किया है। दोनों शब्दों को प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है। फरीसी यह देखने के लिए वहां हैं कि क्या यीशु परमेश्वर के कानून का पालन कर रहे हैं। वे शिष्यों से **कुड़कुड़ाने** लगते हैं या शिकायत करने लगते हैं। फरीसी **पापियों** के साथ खाने के लिए परमेश्वर के कानून के शिक्षक के रूप में यीशु का आंकलन करते हैं। पापी लोग वे होते हैं जो परमेश्वर के कानून की नियमित रूप से अवज्ञा करते हैं। फरीसियों ने परमेश्वर के कानून में कई अन्य नियमों को जोड़ दिया था। जो कोई भी इन नियमों का पालन नहीं करता था, उन्हें वे पापी कहते थे। इनमें से एक नियम यह था कि लोगों को धार्मिक रूप से और रिवाज़ानुसार खाने से पहले खुद का शोधन करना चाहिए। लेवी के मेहमानों ने ऐसा नहीं किया। फरीसी कर संग्राहकों को भी पापी मानते थे। पापी का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने उसे पिछले अंशों में किया है। पाप शब्द प्रधान शब्दावली में है।

यीशु पाप की तुलना रोग से करते हैं। यीशु का कहना है कि वे उन लोगों को बुलाने के लिए आए हैं जो पाप के रोग से ग्रस्त हैं, ताकि वे पश्चाताप कर उनके साथ हो सकें। वे धर्मियों को बुलाने नहीं आए हैं क्योंकि उन्हें उनकी मदद की आवश्यकता नहीं थी। **पश्चाताप** और **धर्मी** का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने उन्हें पिछले अंशों में किया है। दोनों शब्दों को प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

बाद में यीशु के शिष्यों की फिर से आलोचना की जाती है। इस बार यह **उपवास** के बारे में है। सुनिश्चित करें कि उपवास का वही अनुवाद करें जैसा आपने पहले किया है। उपवास शब्द प्रधान शब्दावली में है। यीशु एक ऐसे प्रश्न से जवाब देते हैं जिसके जवाब की उम्मीद उन्हें नहीं होती क्योंकि जवाब स्पष्ट है। जब **दूल्हा** या जिसकी शादी हो रही हो, वह बारातियों के साथ होता है तो क्या मेहमान उस विवाहोत्सव में उदास होते हैं? उसका जवाब 'नहीं' है। उपवास का मतलब है कि मेहमान उदास हैं। यीशु अपनी तुलना उस व्यक्ति से करते हैं जो विवाह कर रहा है। जब तक यीशु को उनसे ले नहीं लिया जाता तब तक उनके शिष्य उपवास नहीं करेंगे। उसके बाद वे अपनी उदासी दिखाने के लिए उपवास करेंगे।

तब यीशु तीन **दृष्टांत** बताते हैं। एक दृष्टांत वह शब्द है जो विभिन्न प्रकार के बुद्धिमत्तापूर्ण वचनों का वर्णन करता है। उनमें सांस्कृतिक कहानियां या नीति वचन शामिल हो सकते हैं। कई बार दृष्टांत एक विशेष प्रकार की कथा को संदर्भित करते हैं जो यीशु ने कही थीं। वह कथा रोजमर्रा की बातों का इस्तेमाल परमेश्वर के बारे में गहरी बातें बताने के लिए करती थी। जब तक लोग वास्तव में सुनने की कोशिश न करें तब तक दृष्टांत अक्सर समझ नहीं आते थे। जब यीशु एक दृष्टांत बताते हैं, तो वे उम्मीद करते हैं कि लोग उनके रवैये या कार्यों में बदलाव करेंगे। इस मामले में दृष्टांत एक नीति वचन को

संदर्भित करता है। दृष्टांत शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

यीशु एक पुराने **वस्त्र** को ठीक करने के लिए एक नए वस्त्र से काटे गए पैबंद के टुकड़े के उदाहरण का इस्तेमाल करते हैं। एक वस्त्र का मतलब कपड़े के टुकड़े से है। एक **पैबंद** कपड़े का एक छोटा टुकड़ा होता है जिसे कोई किसी दूसरे कपड़े के फटे हुए हिस्से पर सिलता है। वह नया पैबंद काम नहीं करेगा क्योंकि कपड़े धोने पर वह सिकुड़ जाएगा और पुराने कपड़े में से फट जाएगा। ऐसा करना व्यवहारिक भी नहीं था क्योंकि पैबंद को काटने के लिए एक नए कपड़े को बर्बाद करने की ज़रूरत होती है।

यीशु मशकों के बारे में एक और दृष्टांत का इस्तेमाल करते हैं। **दाखरस** अंगूरों से बनाया गया एक किण्वित पेय होता है। **मशक** वे पात्र होते थे जो दाखरस को संग्रहित करने के लिए इस्तेमाल किए जाते थे। आमतौर पर यहूदी इन पात्रों को बकरी की खाल से बनाते थे। दाखरस के किण्वित होने पर एक नया मशक फैल जाएगा, लेकिन पुराना मशक फट जाएगा।

यदि आपने पहले से ऐसा नहीं किया है तो अपनी टीम को मशक की तस्वीर दिखाएं।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 5:27–39

Audio Content

webm zip (4999585 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (8626462 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 6:1–11

सुनना और मनन करना

लूका 6:1–11 सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे इस कथा को सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 6:1–11

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

धार्मिक नेता यीशु और उनके शिष्यों को स्वीकार नहीं करते क्योंकि वे पापियों के साथ भोजन करते थे। इस कथा में लूका यीशु और धार्मिक नेताओं के बीच टकराव के बारे में इसी प्रकार की दो और घटनाओं का वर्णन करते हैं। उनकी असहमति इस बात पर है कि परमेश्वर का कानून विश्राम के यहूदी दिन सब्त के बारे में क्या कहता है। यीशु सब्त के दिन एक मनुष्य को चंगा करते हैं। उस मनुष्य के स्वास्थ्यलाभ से यह पता चलता है कि उनके पास परमेश्वर से यह तय करने का अधिकार था कि सब्त के दिन कोई व्यक्ति क्या कर सकता है और क्या नहीं।

लूका हमें यह नहीं बताते कि यीशु कहां है, लेकिन वे इस बात पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं कि वह दिन कौन सा है। यह यहूदियों के लिए विश्राम, अर्थात् सब्त का दिन है। परमेश्वर का कानून कहता है कि यहूदियों को इस दिन काम नहीं करना चाहिए। यीशु अपने शिष्यों या अनुयायियों के साथ खेतों में अनाज पैदा करने वाली फसलों के क्षेत्र में चल रहे होते हैं। वे उन रास्तों का इस्तेमाल करते थे जिनमें उन्हें पौधों को नुकसान पहुंचाए बिना खेतों से गुजरने की गुंजायश मिलती थी। यीशु के शिष्य भूखे हैं। गुजरते हुए वे अनाज के दानों की बालों की एक छोटी सी मात्रा को तोड़ लेते हैं। अनाज के बीजों को कच्चा खाया जा सकता है। शिष्य बालों को अपनी हथेलियों में मलते थे ताकि दाने या बीज खाने से पहले भूसी को अलग किया जा सके। लैव्यव्यवस्था में मूसा का कानून यहूदियों को अन्य यहूदियों के स्वामित्व वाले खेतों में ऐसा करने की अनुमति देता था, जब तक कि वे बड़ी मात्रा में फसल नहीं काटें।

रुकें और शीर्ष पर बालों के साथ अनाज के पौधे की एक तस्वीर दिखाएं। [आपकी संस्कृति में जब लोग यात्रा कर रहे होते हैं, तो वे किस तरह खाते हैं? क्या उन्हें अन्य लोगों के खेतों से भोजन प्राप्त करने की अनुमति होती है?]{.mark}

कुछ फरीसी या धार्मिक नेता यीशु के शिष्यों को ऐसा करते हुए देखते हैं। फरीसी एक ऐसा सवाल पूछते हैं जो शिष्यों पर सब्त के नियमों को तोड़ने का आरोप लगाता है। फरीसी बालों को तोड़ना अनाज को काटने और गाहने के समान ही मानते हैं। यहूदी संस्कृति में अनाज काटना और गाहना काम होता है। वे सोचते हैं कि शिष्य सब्त के दिन काम करके परमेश्वर के कानून को तोड़ रहे होते हैं। फरीसी चेलों से सवाल पूछते हैं, लेकिन उनका निहितार्थ यीशु को दोष देना होता है। यहूदी संस्कृति में एक शिक्षक उनके अनुयायियों के व्यवहार के लिए जिम्मेदार होता है।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में एक शिक्षक और एक छात्र के बीच का संबंध किस तरह दिखता है?

यीशु शास्त्र या यहूदी पवित्र ग्रंथों से दाऊद की एक कथा सुना कर जवाब देते हैं। दाऊद यहूदियों के एक प्रसिद्ध और सम्मानित पूर्वज थे। वे परमेश्वर द्वारा चुने गए इस्राएल के राजा थे। इस कथा में दाऊद अभी तक राजा नहीं हैं। दाऊद और उनके लोग भूखे हैं। दाऊद देवालय या एक बड़े तम्बू में जाते हैं जहां यहूदी लोग परमेश्वर को बलि चढ़ाते थे और जहां परमेश्वर उनके सामने उनकी उपस्थिति का खुलासा करते थे। दाऊद महायाजक से रोटी का निवेदन करते हैं। एकमात्र उपलब्ध रोटी अर्पित की गई, या परमेश्वर को चढ़ाई गई रोटी थी। परमेश्वर केवल याजकों को इस रोटी को खाने की अनुमति देते थे। याजक दाऊद को उनके लोगों और उनके खाने की रोटी प्रदान करते हैं। दाऊद ने ऐसा कुछ किया जिसकी उन्हें अनुमति नहीं थी, लेकिन परमेश्वर उन्हें दण्ड नहीं देते हैं। यीशु इस कथा के माध्यम से यह दर्शाते हैं कि दाऊद अभी भी परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी थे, भले ही वे कानून को तोड़ते हुए प्रतीत होते थे।

रुकें और तम्बू में इस्तेमाल की जाने वाली यहूदी रोटी की तस्वीर दिखाएं।

यीशु कहते हैं कि उनके पास दाऊद की तुलना में और महत अधिकार या काम करने का इख्तियार है। यीशु कहते हैं कि मनुष्य का पुत्र सब्त का या विश्राम के यहूदी दिन का भी प्रभु है। यीशु जब मनुष्य का पुत्र कहते हैं तो वे अपने बारे में बात कर रहे होते हैं। "प्रभु" शब्द के इस्तेमाल का मतलब है कि यीशु को सब्त के दिन पर अधिकार था। यीशु को यह अधिकार इसलिए है क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें भेजा था। यीशु यह तय कर सकते हैं कि सब्त के दिन क्या करना सही या क्या गलत है। फरीसी परमेश्वर के कानून को जानते थे लेकिन वे वास्तव में इसे समझते नहीं थे।

फिर लूका सब्त के बारे में एक और कथा कहते हैं जो इसी तरह की है। यीशु एक आराधनालय में या पूजा के यहूदी स्थान में शिक्षा दे रहे होते हैं। हर सब्त के दिन किसी आराधनालय

में शिक्षा देना यीशु की आदत थी। वहां एक ऐसा मनुष्य होता है जो उसके हाथ को हिला नहीं सकता। सूखे होने का मतलब है कि उसकी कोहनी तक की उंगलियां लकवाग्रस्त थीं। वह अपने दाहिने हाथ या बांह को हिला नहीं सकता था।

रुकें और अपनी टीम को आराधनालय के अंदर की तस्वीर दिखाएं।

वहां फरीसी और शास्त्री भी मौजूद हैं। वे यीशु की बातें सुन रहे और उनके द्वारा परमेश्वर के कानून को तोड़े जाने का इंतजार कर रहे होते हैं। फरीसी चाहते हैं कि यीशु कानून को तोड़ें, ताकि वे कानूनी तौर पर अदालत में उन पर आरोप लगा सकें। फरीसी मानते थे कि सब्त के दिन चंगा करना एक पाप है। परमेश्वर का कानून सब्त के दिन चिकित्सा की अनुमति तभी देता है जब कोई व्यक्ति मर रहा हो। फरीसी जानते हैं कि यीशु के पास चंगा करने की शक्ति है। लेकिन वे यह देखने का इंतजार कर रहे होते हैं कि क्या यीशु सब्त के दिन मनुष्य को चंगा कर कानून को तोड़ेंगे।

यीशु जानते हैं कि धार्मिक नेता क्या सोच रहे होते हैं - वे जानते हैं कि वे चाहते हैं कि वे विफल रहें। यीशु उस मनुष्य से आराधनालय के बीच में खड़े होने को कहते हैं ताकि हर कोई उसे देख सके। यीशु फरीसियों के विचारों का जवाब एक सवाल के साथ देते हैं। यीशु उनके सवाल का जवाब पाने की उम्मीद नहीं करते क्योंकि हर कोई पहले से ही जवाब जानता है। सब्त के दिन जीवन को बचाकर भलाई करना नियमानुसार है या बुराई करना? यीशु सोचते हैं कि परमेश्वर का कानून कहता है कि आप सब्त के दिन भलाई कर सकते हैं। वे यह भी सोचते हैं कि अगर आपके पास भलाई करने का मौका है, तो आपको ऐसा करना चाहिए। यदि आप सब्त के दिन भलाई नहीं करना चुनते हैं तो वस्तुत: आप बुराई कर रहे होते हैं। यीशु फरीसियों को यह स्वीकार करने के लिए चुनौती देते हैं कि सब्त के दिन चंगा करना न्यायोचित है।

यीशु मनुष्य से हाथ फैलाने के लिए कहते हैं। आमतौर पर लोग लकवाग्रस्त हाथ हिला नहीं सकते हैं। यीशु ने उस मनुष्य से कुछ असंभव करने को कहा था। वह मनुष्य आज्ञापालन करता है और यीशु उसका हाथ पूरी तरह से चंगा करते हैं। फरीसी इतने नाराज होते हैं कि वे स्पष्ट रूप से सोच भी नहीं पाते। वे आपस में यह बात करने लगते हैं कि यीशु के साथ क्या करना चाहिए। मरकुस और मत्ती के सुसमाचार हमें बताते हैं कि वे इतने नाराज होते हैं कि वे यीशु को जान से मारना चाहते हैं।

यह कथा दर्शाती है कि यीशु सब्त के दिन के प्रभु हैं। यीशु के पास यह तय करने का अधिकार होता है कि सब्त के दिन सही या गलत क्या है। लूका धार्मिक नेताओं और यीशु और उनके शिष्यों के बीच के टकराव को दर्शाते हैं।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका *6:1–11*

लूका 6:1–11

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य कल्पांकित करने में समूह की मदद करेंगे। आप कथा के दृश्यों, विन्यास और चरित्रों को परिभाषित करने में समूह की मदद करेंगे।

इस कथा में दो दृश्य हैं।

पहला दृश्य: यीशु और उनके शिष्य सब्त के दिन एक खेत में चल रहे होते हैं। शिष्य अनाज के कुछ दाने लेते हैं और उन्हें खाते हैं। धार्मिक नेता उनके कार्यों पर सवाल उठाते हैं। यीशु दाऊद की कथा सुनाते हुए जवाब देते हैं। यीशु कहते हैं कि उनके पास दाऊद से भी अधिक अधिकार है।

दूसरा दृश्य: एक अन्य सब्त के दिन यीशु एक आराधनालय में शिक्षा दे रहे होते हैं। धार्मिक नेता वहां मौजूद होते हैं और यीशु द्वारा परमेश्वर के कानून को तोड़ने का इंतजार कर रहे होते हैं। यीशु एक ऐसे मनुष्य को चंगा कर उनके विचारों का जवाब देते हैं जिसकी बांह लकवाग्रस्त थी। धार्मिक नेता नाराज होते हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- शिष्य
- फरीसी लोग
- कानून के शिक्षक
- राजा दाऊद
- महायाजक
- आराधनालय में मौजूद लोग
- लकवाग्रस्त बांह वाला मनुष्य

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल (ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप इधर उधर रख सकते हैं जैसे पत्थर, लकड़ियां, बच्चों के खिलौने) का इस्तेमाल करे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर द्वारा मूसा को दिया गया कानून यहूदियों को अन्य यहूदियों के खेतों से अनाज लेने की अनुमति देता था। कानून की आवश्यकता थी कि उन्हें बड़ी मात्रा में फसल काटने की अनुमति नहीं थी।

यीशु अपने शिष्यों के साथ सब्त के दिन अनाज के खेतों से होकर गुजर रहे होते हैं। यीशु के शिष्य खाने के लिए अनाज के कुछ दाने लेते हैं। यीशु के शिष्य छिलके को अलग करने के लिए दानों को उनके हाथों में मसलते हैं। यीशु के शिष्य अनाज खाते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि धार्मिक नेताओं ने मूसा को परमेश्वर द्वारा दिए गए कानूनों में कई और नियम जोड़े थे। धार्मिक नेता मानते थे कि बालों को तोड़ना भी अनाज की फसल काटना होता है। यहूदी संस्कृति में कटाई एक काम होता था। किसी तरह धार्मिक नेता यह पता लगाते हैं कि यीशु के शिष्य क्या कर रहे होते हैं।

वे धार्मिक नेता यीशु के शिष्यों की आलोचना करते हैं। वे शिष्यों को यह बताते हुए बात करते हैं कि शिष्य सब्त के दिन काम रहे थे, जो परमेश्वर के कानून के खिलाफ है।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि शिक्षक अपने शिष्यों या अनुयायियों के कार्यों के लिए जिम्मेदार होते थे। इसलिए धार्मिक नेता वास्तव में यीशु की आलोचना कर रहे होते हैं।

धार्मिक नेता जब शिष्यों से बात कर चुके होते हैं, तब यीशु दाऊद की रोटी खाने का वृत्तांत बताते हुए उन्हें जवाब देते हैं जो केवल धार्मिक नेताओं के लिए था। यीशु कहते हैं कि उनके पास दाऊद से अधिक अधिकार हैं।

एक और दिन यीशु सब्त के दिन एक आराधनालय में शिक्षा दे रहे होते हैं। धार्मिक नेता वहां होते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि धार्मिक नेता यीशु का अनुसरण और उन्हें सुनना इसलिए शुरू नहीं करते हैं कि वे उनके शिक्षण का श्रवण करना चाहते थे, बल्कि इसलिए ताकि वे यीशु पर अदालत में आरोप लगाने का तरीका पा सकें। वे चाहते हैं कि यीशु विफल रहे और उन्हें रोका जा सके।

यीशु धार्मिक नेताओं के विचारों को जानते हैं। यीशु धार्मिक नेताओं से अन्य यहूदियों के सामने एक सवाल पूछते हैं। यीशु पूछते हैं कि क्या विश्राम के दिन अच्छा या बुरा करने की अनुमति है। यीशु अपने ही सवाल का जवाब एक लकवाग्रस्त व्यक्ति को चंगा कर के देते हैं। धार्मिक नेता बहुत नाराज हो जाते हैं।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 6:1–11

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कथा में दो दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- शिष्य
- फरीसी लोग
- कानून के शिक्षक
- राजा दाऊद
- महायाजक
- आराधनालय में मौजूद लोग
- लकवाग्रस्त बांह वाला मनुष्य

मण्डली से कहानी का दो बार अभिनय करवाएं। पहली बार टीम से बिना रूके कहानी का अभिनय करवाएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है तब उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, तब कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

यह सुनिश्चित करें कि मण्डली शिष्यों द्वारा बालें तोड़ने के बारे में धार्मिक नेताओं को पता चलने का अभिनय करे।

यह सुनिश्चित करें कि जब यीशु दाऊद की कहानी कह रहे होते हैं तब मण्डली उसका अभिनय करे।

कानून के शिक्षक और धार्मिक नेता बिना अपनी मंशा जाहिर किए यीशु द्वारा किसी को चंगा किए जाने का इंतजार करते हैं, इसका अभिनय मण्डली द्वारा किया जाना सुनिश्चित करें।

दूसरी बार जब मण्डली इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

यीशु का उनके शिष्यों के साथ खेत में चलने का अभिनय करें। शिष्य बहुत भूखे हैं। खाने के लिए वे कुछ दाने लेते हैं। **अभिनय को बंद करें।** शिष्यों की भूमिका निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "भूखे हैं।" "थके हुए हैं।" "यीशु के अनुयायी के रूप में जीवन मुश्किल हो सकता है।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

फरीसियों द्वारा भोजन के लिए बालें तोड़ने को देखे जाने की अदाकारी करें। फरीसी शिष्यों का आमना सामना करते हैं और उन्हें बताते हैं कि सब्त के दिन काम करना गलत है। **अभिनय को बंद करें।** शिष्यों का किरदार निभा रहे अभिनेताओं से पूछें, आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "नाराज़ हैं। "वे हमारा आंकलन क्यों करते रहते हैं?" "यदि यह गलत होता तो यीशु ने हमें बताया होता।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु फरीसियों को जवाब देते हैं। वे उन्हें दाऊद की कहानी बताते हैं। वे उन्हें बताते हैं कि उनके पास दाऊद से अधिक अधिकार हैं। **अभिनय को बंद करें।** यीशु की भूमिका

निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "आपके सवालों के जवाब शास्त्रों में हैं।" "काश कि आप समझ सकते।" "यह परमेश्वर की योजना का हिस्सा है।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु एक आराधनालय में शिक्षा दे रहे होते हैं। फरीसी यीशु द्वारा परमेश्वर के कानून को तोड़ने का इंतजार कर रहे होते हैं। यीशु उनके विचारों को जानते हैं और एक सवाल पूछते हैं। वे एक लकवाग्रस्त व्यक्ति की बांह यह दिखाने के लिए स्वस्थ करते हैं कि उनके पास सब्त के दिन पर अधिकार है। फरीसी नाराज़ होते हैं और यीशु को रोकना चाहते हैं। **अभिनय को बंद करें।** यीशु की भूमिका निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "परमेश्वर ने मुझे सभी अधिकार दिए हैं।" "वे समझ सकें इसलिए मुझे उन्हें यह दिखाना चाहिए।" "मैं अपने अंदर परमेश्वर के सामर्थ्य के लिए आभारी हूं।"

स्वस्थ व्यक्ति का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "यीशु सामर्थ्यवान हैं।" "आभारी।" "आश्चर्यचकित हूं।" "विस्मयाभिभूत"

शिष्यों का किरदार निभा रहे अभिनेताओं से पूछें, आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "नाराज़ हैं। "यीशु फरीसियों को दुरुस्त करने से डरते नहीं हैं।" "मैं उनका अनुयायी होने पर विनम्रता महसूस कर रहा हूं।"

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 6:1–11

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु सब्त के या विश्राम के यहूदी दिन अनाज के खेतों में चल रहे होते हैं। **खेत** ऐसे क्षेत्र होते हैं जिनका इस्तेमाल अनाज उत्पन्न करने वाली विभिन्न प्रकार की फसलों को उगाने के लिए किया जाता है। ये खेत गेहूं या जौ के हो सकते थे। यीशु अपने **शिष्यों** के साथ चल रहे होते हैं। शिष्यों की परिभाषा के लिए प्रधान शब्दावली को संदर्भित करें। इस शब्द का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पिछले अंशों में किया है।

हालांकि हम यह नहीं जानते कि यीशु कहां हैं, लेकिन लूका हमें बताते हैं कि यह **सब्त** का या यहूदियों के लिए विश्राम का दिन है। सब्त की पूरी परिभाषा के लिए प्रधान शब्दावली को संदर्भित करें। सब्त का अनुवाद उसी तरह करें जिस तरह आपने पिछले चरणों में किया है।

शिष्य खेत से अनाज की बालें तोड़ते हैं। **अनाज की बालें** अनाज के पौधों के ऊपरी भाग को संदर्भित करता है जहां बीजों के गुच्छे उगते हैं। बीज या **दानों** को कच्चा खाया जा सकता है।

यदि आपने पहले से ऐसा नहीं किया है तो रुकें और गेहूं की तस्वीर दिखाएं।

कुछ फरीसी जो निकट होते हैं वे ऐसा होते हुए देखते हैं। फरीसी का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने उसे पिछले अंशों में किया है। फरीसी शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है। लूका **कुछ फरीसी** कहते हैं क्योंकि वे यह संकेत देना नहीं चाहते कि सभी फरीसी यीशु और उनके शिष्यों की आलोचना करते थे। फरीसी इसलिए परेशान होते हैं क्योंकि वे सोचते हैं कि यीशु और उनके शिष्य सब्त के दिन कुछ **गैरकानूनी** कर रहे हैं। यह पूछना कि क्या कुछ कानूनी है या गैरकानूनी, ऐसा पूछने के बराबर है कि क्या यह परमेश्वर के कानून द्वारा अनुमत है। परमेश्वर ने यहूदियों को जीवन जीने के लिए अपने कानून दिए। कई बार धार्मिक नेता इन कानूनों का भावार्थ करते थे और उनके भावार्थों को भी परमेश्वर के कानून के रूप में मानते थे। परमेश्वर का कानून कहता है कि यहूदी सब्त के दिन काम नहीं कर सकते हैं। फरीसी सब्त के बारे में परमेश्वर के कानून की व्याख्या करते हुए उसका यह मतलब निकालते हैं कि लोग अनाज की बालियां नहीं तोड़ सकते हैं।

जब यीशु फरीसियों से पूछते हैं "**क्या आपने यह नहीं पढ़ा...?**" तो वे पूछ रहे हैं कि क्या वे शास्त्रों को पढ़ चुके हैं। **शास्त्र** यहूदियों के पवित्र लेख थे और उनके पूर्वज दाऊद की कथा को शामिल करते थे। शास्त्रों का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले किया है। शास्त्र शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

यीशु उनके पूर्वज दाऊद की एक कथा के साथ प्रत्युत्तर देते हैं। इस कथा में दाऊद परमेश्वर के घर में प्रवेश करते हैं। **परमेश्वर का घर** एक बड़े तम्बू को संदर्भित करता है जो एक जगह से दूसरी जगह ले जाया जाता था जहां यहूदी पूर्वज परमेश्वर की पूजा करते थे। परमेश्वर के निवास को भी तम्बू कहा जाता था। यह एक ऐसा स्थान था जहां दाऊद के पुत्र द्वारा मंदिर के निर्माण से पहले याजक, लोगों की ओर से बलि चढ़ाया करते थे। परमेश्वर का घर प्रधान शब्दावली में है।

यदि आपने पहले से ऐसा नहीं किया है तो रुकें और परमेश्वर के घर या तम्बू की एक तस्वीर दिखाएं।

परमेश्वर के कानून के अनुसार याजकों द्वारा उन्हें भेंट चढ़ाया जाना आवश्यक था। **पवित्र भेंट की रोटी या अर्पित की गई रोटी,** उस रोटी को संदर्भित करता है जो याजक तम्बू के पवित्र स्थान में परमेश्वर को भेंट करते थे। हर सब्त के दिन, रोटी बदल दी जाती थी और **याजक** को पुरानी रोटी खाने की अनुमति थी। परमेश्वर केवल याजकों को इस रोटी को खाने की अनुमति देते थे। याजक का अनुवाद उसी तरह करना

सुनिश्चित करें जिस तरह आपने उसे पिछले अंशों में किया है। याजक शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

सब्त के दिन क्या कानूनी है और क्या गैर कानूनी, फरीसियों के इस सवाल का जवाब यीशु ने दिया। यीशु कहते हैं कि वे सब्त के दिन के प्रभु हैं। यहां **प्रभु** किसी ऐसे व्यक्ति को संदर्भित करता है जिसके पास किसी पर अधिकार होता है। यीशु स्वयं को मनुष्य का पुत्र कहते हैं।

पक्का करें कि आपके अनुवाद से यह स्पष्ट हो कि यीशु खुद के बारे में बोल रहे हैं। प्रभु और मनुष्य के पुत्र को उसी तरह अनुवादित करें जिस तरह आपने पिछले अंशों में किया है। दोनों शब्दों को प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

दानि**य्येल में मनुष्य का पुत्र** वह व्यक्ति है जिसे परमेश्वर सभी अधिकार और सामर्थ्य प्रदान करते हैं। यीशु शायद यह वचन पसंद करते हैं क्योंकि यह उपाधि एक साधारण मनुष्य या एक अधिभौतिक प्राणी को संदर्भित कर सकती है, जैसा कि दानिय्येल के दिव्य दर्शन में वह करती है। यीशु इस उपाधि का इस्तेमाल करना पसंद करते थे क्योंकि यह लोगों को यह तय करने के लिए मजबूर करता है कि यीशु मनुष्य हैं या परमेश्वर हैं। यीशु कह रहे हैं कि उन्हें यह तय करने का अधिकार है कि सब्त के दिन लोग क्या कर सकते थे और क्या नहीं। यीशु के पास यह अधिकार है क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें भेजा है।

लूका एक दूसरी कथा बताते हैं जो भी सब्त के दिन घटित होती है। वे किसी आराधनालय या उपासना के यहूदी स्थान में शिक्षा दे रहे होते हैं। **आराधनालय** का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने लूका के पिछले अंशों में किया है। आराधनालय शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

यदि आपने पहले से ऐसा नहीं किया है तो रुकें और किसी आराधनालय के अंतर्भाग को दिखाएं।

वहां एक सूखे हाथ वाला मनुष्य होता है। यहां हाथ के लिए प्रयुक्त यूनानी शब्द में उंगलियां, हथेली, कलाई और भुजाएं शामिल हैं।

प्रत्येक भाषा शरीर के अंगों को अलग तरह से परिभाषित करती है। यदि आपके पास ऐसा शब्द है जिसमें कोहनी से उंगलियों तक के क्षेत्र को शामिल किया गया है, तो आप उस शब्द का इस्तेमाल यहां कर सकते हैं। अन्यथा आप हाथ और बांह के लिए एक सामान्य शब्द का इस्तेमाल कर सकते हैं।

उस मनुष्य का हाथ **सूखा** होता है। जब सूखा होना शरीर के अंगों का वर्णन करता है, तो इसका मतलब जीवन रहित या लकवाग्रस्त होना होता है। वह मनुष्य उसके दाहिने हाथ या बांह को हिला नहीं सकता था।

फरीसी यीशु **पर आरोप** लगाना चाहते हैं। आरोप लगाना एक कानूनी शब्द है। इसका मतलब है कि वे यीशु को परमेश्वर के कानून को तोड़ते हुए देखना चाहते हैं ताकि वे उनके खिलाफ एक कानूनी अदालत में आरोप लगा सकें।

यीशु जानते हैं कि वे क्या सोच रहे होते हैं। वे एक सवाल पूछते हैं जिसका जवाब हर कोई जानता है। सब्त का दिन क्या**भलाई करने का दिन होता है या बुराई करने का**। ये शब्द बताते हैं कि क्या सही या अच्छा है और क्या बुरा या गलत है। आप ऐसे शब्दों का इस्तेमाल भी कर सकते हैं जिसका मतलब लोगों को मदद या नुकसान पहुंचाने से हो। यह स्पष्ट है कि परमेश्वर ने सब्त का दिन अच्छे के लिए बनाया था। यीशु मनुष्य के हाथ को चंगा करना एक अच्छी बात मानते हैं। मनुष्य का हाथ चंगा कर यीशु यह दर्शाते हैं कि वे सब्त के दिन के प्रभु हैं।

लूका कहते हैं कि फरीसी **क्रोध से पागल** हो गए थे। इसका मतलब है कि वे इतने नाराज थे कि वे स्पष्ट रूप से सोच नहीं सकते थे।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 6:1–11

Audio Content

webm zip (3751680 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (6478819 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 6:12–16

सुनना और मनन करना

लूका 6:12–16 को सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे इस कथा को सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 6:12–16

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु गलील के आराधनालय में शिक्षा दे रहे और चंगा कर रहे होते हैं। एक दिन, यीशु अकेले प्रार्थना करने के लिए एक पहाड़ पर जाते हैं। यीशु पूरी रात प्रार्थना करते हैं। नेतृत्व के लिए प्रशिक्षित करने के लिए 12 शिष्यों को चुनने के लिए परमेश्वर यीशु का संदर्शन करते हैं। किस तरह सोचना और कार्य करना चाहिए, यह बताने के लिए एक लंबी शिक्षा देने से पहले ही यीशु इन अग्रणियों का चुनाव करते हैं।

यीशु अकेले होने और प्रार्थना करने के लिए एक पहाड़ पर चढ़ जाते हैं। पहाड़ आमतौर पर वे स्थान होते थे जहां परमेश्वर यहूदी लोगों के साथ मिलते थे। यह पहाड़ गलील की झील के आसपास की पहाड़ियों में से एक था।

रुकें और गलील की झील के आसपास की पहाड़ियों की एक तस्वीर दिखाएं।

यीशु पूरी रात प्रार्थना करते हैं। वे परमेश्वर के संदर्शन की मांग कर रहे होते हैं। अगले दिन, यीशु उनके सभी शिष्यों को बुला कर अपने आसपास इकट्ठा करते हैं। उनके शिष्यों में से 12 को प्रेरित बनने के लिए चुनाव करने में परमेश्वर यीशु का संदर्शन करते हैं। प्रेरित ऐसा जन होता है जिसे एक विशेष काम को पूरा करने के लिए अधिकार के साथ भेजा जाता है। अग्रणी होने के लिए प्रशिक्षित करने के लिए यीशु इन 12 पुरूषों को चुनते हैं।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। एक बड़ा निर्णय लेने के लिए तैयार करने के लिए आपकी संस्कृति में कोई क्या करता है?

उसके बाद लूका 12 प्रेरित के नामों को सूचीबद्ध करते हैं। लूका कहते हैं कि यीशु ने शमौन को पतरस नाम दिया। यह

कुछ ऐसा है जो यीशु ने विगतकाल में किया था। लूका और प्रेरितों के कार्य की अधिकांश पुस्तकों के लिए शमौन को पतरस के नाम से ही संबोधित किया जाएगा। पतरस का अर्थ "चट्टान" होता है। यह नाम परिवर्तन यीशु के साथ शमौन के नए संबंध को दर्शाता है। यीशु पतरस को ऐसा कोई देखते हैं जो उनके वचनों का अनुसरण करता है। 12 की संख्या भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इस्राएल में 12 कबीले शामिल थे। क्योंकि इस्राएल के धार्मिक नेता यीशु को अस्वीकार कर रहे थे, यीशु ने 12 नए आध्यात्मिक अग्रणियों को चुना।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में नामकरण किस प्रकार किया जाता है? किसी मनुष्य के नाम को कौन बदल सकता है? किसी व्यक्ति के नाम परिवर्तन के कारण क्या होते हैं?

लूका पहले से ही शमौन, याकूब और यूहन्ना का परिचय दे चुके हैं। लूका अंन्द्रियास को भी एक प्रेरित के रूप में नामित करते हैं। अन्द्रियास पतरस के छोटे भाई हैं। फिलिप्पुस और बरतुल्मै भी चुने जाते हैं। बरतुल्मै को नतनएल के नाम से भी जाना जाता है। मत्ती और थोमा का चयन किया जाता है। मत्ती को लेवी के रूप में भी जाना जाता है। वे वही कर संग्राहक हैं जिन्हें यीशु ने बुलाया था। फिर हल्फई के पुत्र याकूब हैं। लूका उनके पिता का नाम हमें बताते हैं क्योंकि याकूब नाम के दो प्रेरित हैं। यीशु शमौन जेलोतेस (जिलौती या हिमायती) को चुनते हैं। शमौन को जेलोतेस के रूप में वर्णित किया जाता है क्योंकि शमौन नाम के दो प्रेरित हैं। जिलौती या जेलोतेस का अर्थ है कि वे इस बात के हिमायती थे कि इस्राएल रोमन सरकार से मुक्त हो। यीशु ने यहूदा नाम के दो मनुष्यों को भी चुना। यहूदा नामक एक मनुष्य को लद्दी का नाम भी दिया गया था। वे याकूब नाम के एक मनुष्य के पुत्र थे। और फिर एक अन्य मनुष्य यहूदा इस्करियोती हैं।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में लोग एक ही नाम साझा करने वाले लोगों के बारे में कैसे चर्चा करते हैं?

लूका इस बात पर जोर देते हैं कि यहूदा इस्करियोती एक गद्दार थे। इसका संदर्भ किसी ऐसी बात से है जो भविष्य में होने वाली है जब यहूदा यीशु को धोखा देते हैं। एक गद्दार ऐसा व्यक्ति होता है जो किसी का मित्र होने का नाटक करता है लेकिन फिर उसे ही हानि पहुंचाने में शत्रु की मदद करता है।

इस कथा में लूका यीशु के 12 प्रेरितों का परिचय देते हैं। लूका और प्रेरितों के कार्य की पुस्तक में उनका उल्लेख कई बार किया जाएगा। लूका ऐसा महत्वपूर्ण निर्णय करने से पहले यीशु द्वारा प्रार्थना करने पर दिए गए महत्व को दर्शाते हैं। यीशु द्वारा यीशु के अनुयायी के रूप में किस प्रकार जीना और कार्य करना चाहिए इस विषय में यीशु के उपदेश के ठीक पहले प्रेरितों का चयन किया जाता है।

लूका *6:12–16*

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 6:12–16

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य कल्पांकित करने में समूह की मदद करेंगे। आप कथा के दृश्यों, विन्यास और चरित्रों को परिभाषित करने में समूह की मदद करेंगे।

इस कथा में दो दृश्य हैं।

पहला दृश्य: यीशु ने पूरी रात एक पहाड़ पर परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए व्यतीत की।

दूसरा दृश्य: यीशु ने उनके अनुयायियों को बुलाया और प्रेरित होने के लिए उनमें से बारह का चयन किया।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- शमौन पतरस
- अन्द्रियास
- याकूब
- यूहन्ना
- फिलिप्पुस
- बरतुल्मै
- मत्ती (लेवी)
- थोमा
- याकूब (हलफई के पुत्र)
- शमौन जेलोतेस
- याकूब के पुत्र यहूदा
- यहूदा इस्करियोती
- अन्य शिष्यगण

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल (ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप इधर उधर रख सकते हैं जैसे पत्थर, लकड़ियां, बच्चों के खिलौने) का इस्तेमाल करे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि अनुयायियों की संख्या बारह से अधिक थी। यीशु ने कई चेलों या अनुयायियों को बुलाया लेकिन यीशु ने उन अनुयायियों में से केवल बारह को प्रेरित होने के लिए चुना।

यह याद रखना सहायक हो सकता है कि शमौन पतरस, अन्द्रियास, याकूब और यूहन्ना मछुआरे थे। वे एक साथ काम

करते थे। अन्द्रियास शमौन पतरस के भाई हैं। आपको एक पूर्व अंश से याद होगा कि याकूब और यूहन्ना भाई थे। उनके पिता का नाम जब्दी था।

यह याद रखना सहायक होगा कि यीशु फिलिप्पुस, बरतुल्मै, और थोमा को भी प्रेरित बनने के लिए चुनते हैं। ये मत्ती वही कर संग्राहक हैं जिन्हें यीशु ने उनके पीछे चलने के लिए बुलाया था।

यह याद रखना भी मददगार होगा कि यीशु ने याकूब, शमौन, यहूदा और यहूदा इस्करियोती को भी बुलाया। यहां जिस याकूब का उल्लेख किया गया है वह वही व्यक्ति नहीं हैं जिनका उल्लेख पहले किया गया था। ये याकूब हलफई नामक व्यक्ति के पुत्र हैं। यह शमौन भी पूर्वउल्लेखित शमौन नहीं हैं। ये शमौन एक जेलोतेस या हिमायती थे, जो इस बात की हिमायत करते थे कि इस्राएल को रोमन सरकार से मुक्त होना चाहिए। अंतिम दो यहूदा भिन्न-भिन्न हैं, एक याकूब नाम के व्यक्ति के पुत्र हैं, और दूसरे का नाम यहूदा इस्करियोती है।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 6:12–16

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कथा में दो दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- शमौन पतरस
- अन्द्रियास
- याकूब
- यूहन्ना
- फिलिप्पुस
- बरतुल्मै
- मत्ती (लेवी)
- थोमा
- याकूब (हलफई के पुत्र)
- शमौन जेलोतेस
- याकूब के पुत्र यहूदा
- यहूदा इस्करियोती
- अन्य शिष्यगण

मण्डली से कहानी का दो बार अभिनय करवाएं। पहली बार टीम से बिना रूके कहानी का अभिनय करवाएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है तब उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, तब कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

यह सुनिश्चित करें कि मण्डली द्वारा अनुयायियों का अभिनय इस बात को दर्शाए कि वहां बारह से अधिक अनुयायी थे।

दूसरी बार जब मण्डली इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

यीशु को अकेले परमेश्वर से प्रार्थना करने की अदाकारी करें। वे पूरी रात पहाड़ पर प्रार्थना करते हैं। **अभिनय को बंद करें।** अभिनेता जो यीशु का पात्र निभा रहे हैं, उनसे पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप सुन सकते हैं "मैं जानता हूं कि सही निर्णय लेने में परमेश्वर मेरी मदद करेंगे।" "आत्मा द्वारा सामर्थ्यशाली।" "मेरे जाने के बाद शिक्षण जारी रखने के लिए अग्रणियों को छोड़ना महत्वपूर्ण है।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु द्वारा उनके कई शिष्यों में से 12 प्रेरित चुनने का अभिनय करें। शमौन को चुना जाता है। **अभिनय को बंद करें।** शमौन की भूमिका निभा रहे अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप सुन सकते हैं "मुझे विश्वास नहीं होता कि उन्होंने मुझे चुना है।" "सम्मानित।" "दीन।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु प्रत्येक प्रेरित को नाम लेकर पुकारते रहते हैं।

प्रेरितों के आह्वान के किसी भी बिंदु पर रुकने को स्वतंत्र महसूस करें और अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?"

यीशु मत्ती को चुनते हैं। **अभिनय को बंद करें।** अन्य शिष्यों का किरदार निभा रहे अभिनेताओं से पूछें, आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप सुन सकते हैं जैसे "आश्चर्यचकित हैं।" "लेकिन वे तो एक कर संग्राहक थे!" "परेशान" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु बाकी 12 प्रेरितों को बुलाना जारी रखते हैं।

प्रेरितों के आह्वान के किसी भी बिंदु पर रुकने को स्वतंत्र महसूस करें और अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?"

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 6:12–16

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु प्रार्थना करने के लिए एक पहाड़ पर जाते हैं। यह पहाड़ गलील की झील के आसपास की पहाड़ियों में से एक था।

रुकें और यदि आपने पहले से ही ऐसा नहीं किया है तो गलील की झील के आसपास की पहाड़ियों की तस्वीर दिखाएं।

यीशु पूरी रात परमेश्वर से उन्हें मार्गदर्शन देने के लिए **प्रार्थना करते** हैं। प्रार्थना शब्द प्रधान शब्दावली में है। परमेश्वर यीशु का मार्गदर्शन 12 शिष्यों को प्रेरित बनने के लिए चुनने के लिए करते हैं। **शिष्यों** के लिए उसी अनुवाद का इस्तेमाल करना सुनिश्चित करें जैसा कि आपने लूका के पूर्व अंशों में किया है। शिष्य शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है। यीशु **प्रेरितों** को उनके प्रतिनिधि बनने के लिए चुनते हैं। एक प्रेरित का मुख्य कार्य सुसमाचार का प्रचार करना, कलीसिया के संस्थापक कनना, कलीसिया के आध्यात्मिक अधिकारों को संभालना और अंत में इस तथ्य का गवाह बनना है कि यीशु को मरे हुओं में से पुनरुत्थित किया गया था।

यदि आपकी भाषा में प्रेरितों के लिए एक स्वीकृत शब्द है जो सभी के द्वारा आसानी से समझा जाता है, तो आप उस शब्द का इस्तेमाल यहाँ कर सकते हैं। परन्तु अगर आपके दर्शक विश्वासी नहीं हैं या वे नए विश्वासी हैं, तो उन्हें और स्पष्टीकरण की जरूरत हो सकती है और एक अलग शब्द उनके लिए मददगार हो सकता है। कुछ सुझाव हैं:

यीशु मसीह के प्रतिनिधि

यीशु मसीह के (विशिष्ट) दूत

यीशु मसीह द्वारा भेजे गए लोग

आप जो भी शब्द चुनते हैं उसका मतलब यह होना चाहिए कि ये लोग भरोसे और अधिकार की स्थिति में हैं। प्रेरित शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

लूका 12 प्रेरितों को सूचीबद्ध करते हैं। प्रेरित में से एक यहूदा इस्करियोती हैं। लूका कहते हैं कि यहूदा एक **गद्दार** हैं। एक गद्दार ऐसा व्यक्ति होता है जो किसी का मित्र होने का दिखावा करता है और फिर उसे ही हानि पहुंचाने में अन्य लोगों की मदद करता है। लूका ऐसी घटनाओं के बारे में बोल रहे थे जो भविष्य में घटित होंगी। यहूदा यीशु को गिरफ्तार करने में उनके शत्रुओं की मदद करके उन्हें धोखा देंगे।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 6:12–16

Audio Content

webm zip (2198471 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (3827681 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 6:17–19

सुनना और मनन करना

लूका 6:17–19 सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे इस कथा को सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 6:17–19

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु गलील की झील के पास उनके शिष्यों के साथ एक पहाड़ पर हैं। उनके अनुयायियों में से 12 प्रेरितों या प्रतिनिधियों को चुनने में सक्षम होने के लिए यीशु ने अभी-अभी पूरी रात प्रार्थना की होती है। वे पहाड़ से नीचे एक समतल भूमि पर जाते हैं। यीशु को शिक्षा सुनने के लिए और बीमार लोगों को चंगा करने के लिए वहां एक भीड़ इकट्ठी हुई होती है।

यीशु उनके शिष्यों और उनके प्रेरितों के साथ पहाड़ से नीचे आते हैं। प्रेरितों को यीशु ने उनके प्रतिनिधि बनने के लिए विशेष रूप से चुना था। यीशु एक सपाट भूमि पर रुकते हैं। इसका मतलब है यीशु ने उतरना बंद कर दिया और एक समतल जगह पर आए जहां लोग बैठ सकते थे। यीशु लोगों की बड़ी भीड़ को शिक्षा देने वाले हैं।

रुकें और गलील की पहाड़ियों में एक समतल क्षेत्र की तस्वीर दिखाएं, जहां भीड़ बैठ सकती थी।

यीशु के इंतजार में वहां एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हुई होती है। ये कई हजार लोग हो सकते थे। यीशु के शिष्यों या अनुयायियों का एक बड़ा समूह भी वहां होता है। ये ऐसे शिष्य थे, जो यीशु के साथ तब नहीं थे जब उन्होंने 12 प्रेरितों को चुना था। लोग यहूदा या यहूदियों की भूमि के पूरे क्षेत्र से आए थे। लोग यरूशलेम या यहूदियों की धार्मिक राजधानी से आए थे। लोग सूर और सैदा, या दो अन्य अन्यजाति अथवा गैर-यहूदी नगरों के पास के क्षेत्र से भी आए थे। सूर और सैदा, भूमध्य सागर पर स्थित तटीय नगर थे। इससे यह पता चलता है कि यहूदी और गैर-यहूदी दोनों ही तरह के लोग यीशु की शिक्षा सुनने के लिए आए थे।

रुकें और अपनी टीम को एक ऐसा नक्शा दिखाएं, जहां सूर, सैदा और गलील की झील स्थित हो। आपकी संस्कृति में सूचना किस तरह प्रसारित होती है? ऐसा समाचार या सूचना किस तरह की होती है जो लोगों को उनके समुदाय से बाहर यात्रा करने का कारण बनती है?

लोग इसलिए भी आए ताकि यीशु बीमार लोगों को चंगा कर सकें। यीशु ऐसे लोगों को मुक्त करते हैं जो बुरी, या अशुद्ध आत्माओं द्वारा नियंत्रित थे। जो लोग बुरी आत्माओं द्वारा बीमार या नियंत्रित हैं, वे यीशु को छूना चाहते हैं।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपको यह कैसे पता चलता है कि कोई एक बुरी आत्मा द्वारा नियंत्रित है? जब कोई किसी बुरी आत्मा से ठीक हो जाता है, तो वह कैसा लगता है? एक बुरी आत्मा से किसी को चंगा करने का सामर्थ्य किसमें होता है?

लोग जब यीशु को छूते थे, तब वे चंगे हो जाते थे। जब यीशु ने किसी को चंगा किया, तो उसे चंगा करने पर उनके सामर्थ्य में कोई कमी नहीं आई। लूका का मतलब है कि यीशु जिसे भी छूते थे उसे सामर्थ्य के साथ चंगा कर रहे थे।

यीशु की विशिष्ट शिक्षाओं का परिचय देने से पहले लूका इस अंश का इस्तेमाल यह बताने के लिए करते हैं कि यीशु कहां हैं और वे किससे बात कर रहे होते हैं। इन विशिष्ट शिक्षाओं को आमतौर पर परमानंद के रूप में संदर्भित किया जाता है। यीशु उन्हें अपने शिष्यों को यह शिक्षा देने के लिए इस्तेमाल करते थे कि उनके अनुयायियों के रूप में उन्होंने कैसे सोचना और कार्य करना चाहिए।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 6:17–19

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य कल्पांकित करने में समूह की मदद करेंगे। आप कथा के दृश्यों, विन्यास और चरित्रों को परिभाषित करने में समूह की मदद करेंगे।

इस कहानी में एक दृश्य है।

पहला दृश्य: जब यीशु पहाड़ से नीचे आते हैं तो वहां एक बड़ी भीड़ होती है। भीड़ यीशु को सुनने का इंतजार कर रही होती है। साथ ही लोग बीमारी और बुरी आत्माओं से चंगा होना चाहते हैं। हर कोई यीशु को छूने की कोशिश करता है क्योंकि चंगा करने का सामर्थ्य यीशु से स्फुरित होता है।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- प्रेरितजन या 12 शिष्य
- उनके शिष्यों की वह भीड़ जो उनके साथ पहाड़ से नीचे आई थी
- उनका इंतजार कर रहे उनके शिष्यों की भीड़
- हज़ारों लोग

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल (ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप इधर उधर रख सकते हैं जैसे पत्थर, लकड़ियां, बच्चों के खिलौने) का इस्तेमाल करे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु ने अभी-अभी बारह शिष्यों को उनके प्रेरितों के रूप में चुना होता है। तो यीशु उनके कुछ शिष्यों और 12 प्रेरितों के साथ पहाड़ पर से नीचे आ रहे होते हैं।

चंगा करने की यीशु के सामर्थ्य की तुलना में परमेश्वर के वचन को सुनने के महत्व को कम न करने को याद रखना महत्वपूर्ण है।

लोग यीशु को सुनने के लिए विभिन्न क्षेत्रों से आ रहे थे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि इन क्षेत्रों में यरूशलेम शामिल था। यह यहूदियों की राजधानी थी, जहां मंदिर स्थित था। लोग एक ऐसे क्षेत्र से भी आए थे जहां अन्यजातियों के लोग रहते थे।

कई लोगों ने यीशु को छूने की कोशिश की क्योंकि चंगा करने का सामर्थ्य यीशु से स्फुरित हो रहा था। हर कोई जो बीमार था उसे यीशु चंगा करते थे। यीशु ऐसे लोगों को भी चंगा करते थे जो बुरी आत्माओं के साथ आए थे।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 6:17–19

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी में एक दृश्य है।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- प्रेरितजन या 12 शिष्य
- उनके शिष्यों की वह भीड़ जो उनके साथ पहाड़ से नीचे आई थी
- उनका इंतजार कर रहे उनके शिष्यों की भीड़
- हज़ारों लोग

मण्डली से कहानी का दो बार अभिनय करवाएं। पहली बार टीम से बिना रूके कहानी का अभिनय करवाएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है तब उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, तब कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

यह सुनिश्चित करें कि मण्डली यीशु द्वारा पहाड़ से नीचे उतरकर आने का अभिनय करे।

यीशु के कुछ शिष्यों का उनके साथ चलने का अभिनय करना सुनिश्चित करें। उनके शिष्यों की एक भीड़ और समूचे यहूदा से आने वाली बड़ी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करें। कई लोग सूर और सैदा के तटीय क्षेत्र से भी आते हैं, जो एक ऐसी जगह है जहां अन्यजाति रहते थे।

यह सुनिश्चित करें कि मण्डली यीशु को सुनने की इच्छा रखने वाले एक बड़े जनसमूह और उनके शिष्यों की भीड़ का अभिनय करे। चंगा होने के लिए यीशु को छूने वाली भीड़ में बीमार लोगों का अभिनय करें।

दूसरी बार जब मण्डली इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

इस कहानी में एक दृश्य है।

यीशु द्वारा पहाड़ से नीचे आने का अभिनय करें। एक बड़ी भीड़ यीशु को सुनने के लिए आई थी। चंगा होने के लिए लोग यीशु को छूना चाहते हैं। यीशु बुरी आत्माओं से ग्रस्त लोगों को चंगा करते हैं।

अभिनय को बंद करें।

प्रेरितों की भूमिका निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "यीशु से शिक्षा पाने को लेकर मैं इतना उत्साहित हूं।" "मुझे उत्सुकता है कि क्या किसी दिन मैं लोगों को चंगा कर सकूंगा।" और "मुझे आश्चर्य है कि इतने सारे लोग यीशु को सुनने आए हैं।"

जनसमूह का किरदार निभाने वाले कलाकारों से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे, "यीशु को जो कहना है, उसे सुनने को मैं बेताब हूं।" "उम्मीद है कि मैं उन्हें छू सकूंगा, मुझे उनकी चंगाई की ज़रूरत है।" "बहुत आभारी हूं कि यीशु ने मुझे चंगा करने के लिए समय निकाला।" और "मुझे खुशी है कि मैं बुरे प्रभावों से मुक्त हूं।"

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 6:17–19

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु पहाड़ से उतरकर **गलील की झील** के पास एक समतल स्थान तक आते हैं। गलील की झील प्रधान शब्दावली में है। इस संदर्भ में **एक** समतल स्थान का मतलब सपाट भूमि से है जहां लोग इकट्ठा होकर बैठ सकते हैं। यद्यपि वह समतल था, लेकिन वह स्थान तब भी एक पर्वतीय क्षेत्र में हो सकता था।

रूकें और अपनी टीम को गलील की झील के आसपास की पहाड़ियों की तस्वीर दिखाएं।

एक जनसमूह यीशु का इंतजार कर रहा होता है जिसमें यीशु के **शिष्य** या अनुयायी भी शामिल हैं। शिष्यों के लिए उसी शब्द का इस्तेमाल करना सुनिश्चित करें जैसा कि आपने पूर्व अंशों में किया है। शिष्य शब्द प्रधान शब्दावली में हैं। लूका हमें बताते हैं कि समूचे **यहूदा** से लोग आए थे। यह एक आम शब्द है जो यहूदियों की भूमि को संदर्भित करता है। लोग **यरूशलेम** से आए थे। यह यहूदियों की धार्मिक राजधानी थी जहां मंदिर या यहूदियों का आराधनास्थल स्थित था। यरूशलेम प्रधान शब्दावली में हैं। लोग **सूर और सैदा** के तट से भी आए थे। ये दो अन्यजाति नगर थे, जो भूमध्य सागर के किनारे इस्राएल के उत्तर में स्थित थे।

रूकें और अनुवादकों को दिखाएं, कि सूर और सैदा नक्शे पर कहां स्थित हैं। लोग यीशु को सुनने और चंगा होने के लिए कितनी दूर तक यात्रा करते थे, इस बात पर विचार करें।

हर कोई यीशु को छूना चाहता था क्योंकि **उनमें से सामर्थ्य स्फुरित हो रहा था** और सभी को चंगा कर रहा था। यह वाक्यांश यह दर्शाता है कि लोग यीशु को क्यों छूना चाहते हैं।

सुनिश्चित करें कि इसका अनुवाद इस तरह से न करें कि किसी को चंगा करने के बाद यीशु का सामर्थ्य कम हो जाता है। यदि यह कहना संभव नहीं है कि यीशु से सामर्थ्य स्फुरित हो रहा था, तो आप कुछ ऐसा कह सकते हैं जैसे यीशु सभी को सामर्थ्य के साथ चंगा कर रहे थे।

जो लोग चंगा होना चाहते थे उनमें वे लोग शामिल थे जो **बुरी आत्माओं से संतप्त** थे। यह उन लोगों को संदर्भित करता है जो बुरी आत्माओं या दुष्टात्माओं द्वारा नियंत्रित थे। ये अशुद्ध आत्माएं लोगों को परमेश्वर की सेवा के लिए अयोग्य बनाती थीं। यीशु बुरी आत्माओं के नियंत्रण से मुक्त कर के उन्हें चंगा करते थे। बुरी आत्माओं के लिए उसी शब्द का इस्तेमाल

करना सुनिश्चित करें जैसा कि आपने पिछले अंशों में किया है। बुरी आत्मा शब्द प्रधान शब्दावली में है।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 6:17–19

Audio Content

webm zip (1979069 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (3429996 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 6:20–26

सुनना और मनन करना

लूका 6:20–26 सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे इस कथा को सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 6:20–26

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

लूका *6:20–26*

यीशु गलील की झील के पास एक पहाड़ पर हैं। वे अपने 12 प्रेरितों, या प्रतिनिधियों और उनके शिष्यों अथवा अनुयायियों के साथ हैं। एक बड़ी भीड़ यीशु की शिक्षाओं को सुनने के लिए आई होती है। यीशु पहले ही कई बीमार और बुरी आत्माओं से ग्रस्त लोगों को चंगा कर चुके होते हैं। कई लोग यीशु के इस विशिष्ट शिक्षण को परमानंद कहते हैं, जिसका अर्थ आशीष होता है।

यीशु अपने शिष्यों की ओर मुड़ते हैं और उन्हें पढ़ाने लगते हैं। जनसमूह भी यीशु के संभाषण को सुन रहा होता है और यह सोच रहा होता है कि यीशु के एक अनुयायी बनने का क्या अर्थ होता है। यीशु अपने संभाषण की शुरुआत करते हैं और अपने शिष्यों से कहते हैं कि परमेश्वर उन्हें आशीषित करते हैं और उन पर कृपा करते हैं। धन्य शब्द एक भावना या वित्तीय स्थिति को संदर्भित नहीं करता है। तब भी, परमेश्वर की कृपा की अच्छी स्थिति में होने वाले एक व्यक्ति को आमतौर पर खुशी और हर्ष की भावनाएं होती हैं। धन्य के लिए ऐसे शब्द का इस्तेमाल न करें जो केवल समृद्धि या स्वस्थता पर लागू होता है। जब यीशु आप शब्द का इस्तेमाल करते हैं, तो वे इसे सामान्य संबंध में बोल रहे होते हैं। यीशु कहते हैं कि जो लोग दीन, भूखे और रोते हैं, वे धन्य हैं। उनका यह अर्थ नहीं है कि भीड़ में हर कोई दीन, भूखा और रोता हुआ है।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आप एक समय में कई लोगों से किस तरह बात करेंगे कि वह संदेश प्रत्येक व्यक्ति पर भी लागू हो?

दीन ऐसे लोगों को संदर्भित करता है जिनके पास वह नहीं होता जिसकी उन्हें आवश्यकता है। कुछ विद्वान यह भी सोचते हैं कि दीन की व्याख्या आध्यात्मिक रूप से भी की जा सकती है। पुराने विधान में लोग दीन शब्द का इस्तेमाल ऐसे व्यक्ति को वर्णित करने के लिए करते थे जिन्हें यह पता था कि उन्हें परमेश्वर की जरूरत है। जब यीशु कहते हैं, "परमेश्वर का राज्य आपका है", तो उनका अर्थ है कि वे परमेश्वर के राज्य के नागरिक हैं। यीशु उन्हें यह बता रहे हैं कि यदि वे अपने हृदय में यीशु का अपने राजा के रूप में अनुसरण करते हैं, तो परमेश्वर की कृपा उन पर होगी। गरीब होते हुए भी यदि वे यीशु का अनुसरण करते हैं, तो वे धनी होते हैं, क्योंकि परमेश्वर उन से प्रसन्न होते हैं और उनकी स्थिति अच्छी होती है।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। [आपकी संस्कृति में किस तरह के 'दीनों' की आप बात करते हैं? क्या लोग सिर्फ धन के मामले में या अन्य बातों में भी दीन होते हैं?]{.mark} दीन जन धनी लोगों की तुलना में किस तरह अलग व्यवहार करते हैं?

यीशु कहते हैं कि जो भूखे हैं, वे तृप्त किए जाएंगे। कुछ विद्वान भूखे की व्याख्या आध्यात्मिक अर्थ में करते हैं जिसका मतलब परमेश्वर की अभिलाषा और उनके साथ अच्छे संबंध होता है। भरे जाने का अर्थ परमेश्वर द्वारा संतुष्ट होने से हो सकता है। यीशु कहते हैं कि वे भविष्य में संतुष्ट किए या भरे जाएंगे, इसलिए वे धन्य हैं।

रोना दुख को व्यक्त करता है। यीशु कहते हैं कि जो लोग अब रोते हैं, वे भविष्य में हर्ष के साथ हंसेंगे, क्योंकि वे परमेश्वर के राज्य का हिस्सा हैं।

यीशु कहते हैं कि उनका अनुसरण करने पर जिनसे घृणा की जाती है, वे धन्य हैं। यीशु स्वयं को मनुष्य के पुत्र के रूप में संदर्भित करते हैं। यह उस व्यक्ति के लिए इस्तेमाल की गई उपाधि थी, जिसे परमेश्वर सभी सामर्थ्य और अधिकार प्रदान करते हैं। यीशु कहते हैं कि अस्वीकृत या अपमानित किए जाने पर भी परमेश्वर अपने अनुयायियों को आशीषित करते हैं, भले ही वह इस तरह महसूस न कर सकें। यह यीशु के शिष्यों के लिए महत्वपूर्ण था, जो धार्मिक नेताओं से लगातार आंकलन और आलोचना का सामना कर रहे थे। यीशु अपने अनुयायियों को कष्ट में होने पर हर्ष के साथ उछलने के लिए कहते हैं, क्योंकि परमेश्वर उनके विश्वास का सम्मान करेंगे।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। यदि आपकी संस्कृति में खुशी दिखाने के लिए उछला नहीं जाता है, तो आप चरम प्रसन्नता का वर्णन कैसे करते हैं?

परमेश्वर उन्हें स्वर्ग में या उस स्थान पर जहां परमेश्वर रहते हैं, वहां एक महान पुरस्कार देकर ऐसा करेंगे। यीशु उन्हें याद दिलाते हैं कि भविष्यवक्ताओं पर भी अत्याचार किया गया था।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में विश्वासियों को किस तरह के कष्ट का सामना करना पड़ता है?

उसके बाद यीशु उन चार धिक्कारों की बात करते हैं जो परमेश्वर की तलाश न करने वाले लोगों पर होंगे। ये चार धिक्कार उन चार आशीषों के विपरीत हैं जिसके बारे में यीशु ने पहले भी बात की थी। जब यीशु "आप" कहते हैं, तो वे आम शब्दों में बोलना जारी रखते हैं। धिक्कार, परमेश्वर के न्याय के आने पर विक्षोभ को व्यक्त करते हैं। यह उन लोगों के लिए चेतावनी है जो धनी हैं। धनी केवल वित्तीय स्थिति पर लागू नहीं होता है। इसका अर्थ उन लोगों से भी हो सकता है जो दंभी, बेईमान या दीनों पर अत्याचार करते हैं। यीशु इन धिक्कारों का इस्तेमाल लोगों के लिए एक चेतावनी के रूप में करते हैं कि उन्हें अपने तरीकों को बदलना चाहिए। परमेश्वर के न्याय और कोप का अनुभव परमेश्वर के आशीष को अनुभव करने के विपरीत है।

यीशु उन लोगों को चेतावनी देते हैं जो धनी, तृप्त, हंसते और दूसरों द्वारा प्रशंसा पाते हैं। धनी के पास पहले से ही इस जीवन में उनकी सुख सुविधाएं होती हैं। तृप्त स्वयं की संतुष्टि के लिए परमेश्वर की भूख नहीं रखते हैं। जो लोग अभी हंसते हैं, वे तब नहीं हंसेंगे, जब परमेश्वर का न्याय आएगा। जो लोग सांसारिक स्वीकृति की तलाश में हैं, वे परमेश्वर की मंजूरी नहीं चाहते हैं। यीशु उनकी तुलना उन झूठे भविष्यवक्ताओं से करते हैं

जिनकी यहूदियों के पूर्वजों द्वारा प्रशंसा की गई थी। झूठे भविष्यवक्ताओं ने लोगों को बताया कि उनके पास परमेश्वर से संदेश था, लेकिन परमेश्वर ने उनसे बात नहीं की। लेकिन उन्होंने जो कहा वह लोगों ने पसंद किया और झूठे भविष्यवक्ताओं के बारे में अच्छी बातें कीं। यीशु कहते हैं कि जो पृथ्वी पर दीन, भूखे, उदास और घृणायोग्य हैं, वे उनके पुरस्कार और राहत स्वर्ग में पाएंगे।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 6:20–26

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य कल्पांकित करने में समूह की मदद करेंगे। आप कथा के दृश्यों, विन्यास और चरित्रों को परिभाषित करने में समूह की मदद करेंगे।

इस कथा में दो दृश्य हैं।

पहला दृश्य: यीशु शिष्यों की ओर मुड़ते हैं और उन्हें बताते हैं कि कष्ट में वे धन्य हैं। यीशु उन्हें बताते हैं कि स्वर्ग में उनके लिए एक पुरस्कार प्रतीक्षा कर रहा है।

दूसरा दृश्य: यीशु उन दुःखों के बारे में बात करते हैं जो ऐसे लोगों की प्रतीक्षा कर रहे हैं जिन्होंने अपनी मानव इच्छाओं को बहुतायत में पूरा किया है।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- प्रेरितगण या 12 करीबी अनुयायी
- उनके शिष्यों की भीड़
- बहुसंख्या में लोग

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल (ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप इधर उधर रख सकते हैं जैसे पत्थर, लकड़ियां, बच्चों के खिलौने) का इस्तेमाल करे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है यीशु अपने शिष्यों से बातचीत उन्हें प्रोत्साहन देने के लिए एक तरीके के रूप में करते हैं। आशीष उनके लिए हैं क्योंकि वे परमेश्वर के राज्य से हैं, जिसका अर्थ है कि वे परमेश्वर के राज्य के नागरिक हैं। आसपास के लोग भी सुन रहे होते हैं। ये लोग भविष्य में अनुयायी बन सकते हैं।

यीशु अपने शिष्यों की ओर मुड़ते हैं और उन्हें उन आशीषों के बारे में बताते हैं जो उन्हें कठिन परिस्थितियों के बीच मिलेंगे। यीशु उन्हें बताते हैं कि किस तरह कठिनाईयों के बीच में उन्हें खुश और हर्षित होना चाहिए। स्वर्ग में उनके लिए एक महान पुरस्कार प्रतीक्षा कर रहा है।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि अपने शिष्यों को प्रोत्साहन देने के बाद यीशु उन लोगों से बातचीत करते हैं जो परमेश्वर की तलाश नहीं कर रहे होते हैं। इन लोगों को न केवल अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए चीजें मिलती हैं, उनके आमोद के लिए भी चीजें बहुतायत में मिलती हैं। ये लोग दुःखी होंगे, क्योंकि उनकी प्रसन्नता अस्थायी है।

यीशु उन लोगों को संबोधित करते हैं जो धन, भोजन, हंसी-मज़ाक और दूसरों से प्रशंसा पाने में आत्मसंतुष्टि की तलाश कर रहे हैं। यीशु उन्हें बताते हैं कि वे सभी वस्तुएं जो उन्हें प्रसन्न करती हैं, वे दुःख में बदल जाएंगी। यीशु उन्हें परमेश्वर के आने वाले न्याय के बारे में यह कहकर चेतावनी देते हैं कि "तुम पर धिक्कार" है।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 6:20–26

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कथा में दो दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- प्रेरितगण या 12 करीबी शिष्य
- उनके शिष्यों की भीड़
- एक बड़ा जनसमूह।

मण्डली से कहानी का दो बार अभिनय करवाएं। पहली बार टीम से बिना रूके कहानी का अभिनय करवाएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है तब उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, तब कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

जब यीशु आशीषों का जिक्र करते हैं तब वे शिष्यों से बात कर रहे हों, मण्डली द्वारा इसका अभिनय सुनिश्चित करें। यह अभिनय करना भी सुनिश्चित करें कि भीड़ सुन रही होती है।

दूसरी बार जब मण्डली इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

इस कथा में दो दृश्य हैं।

यीशु अपने शिष्यों की ओर मुड़ते हैं और उन्हें बताते हैं कि परमेश्वर ऐसे लोगों को आशीषित करते हैं जो दीन हैं क्योंकि वे परमेश्वर के राज्य से हैं। परमेश्वर उन लोगों को आशीष देते हैं जो भूखे हैं, क्योंकि वे भूखे नहीं रहेंगे। परमेश्वर उन लोगों को आशीषित करते हैं जो रोते हैं, क्योंकि वे प्रसन्न होंगे। यीशु उन्हें उन आशीषों के बारे में भी बताते हैं जो उनका स्वर्ग में

तब इंतजार कर रही होती हैं, जब लोग यीशु का अनुसरण करने के कारण उनसे घृणा करते हैं, उन्हें स्वीकार नहीं करते हैं, उनका अपमान करते हैं, या उन्हें दुष्ट कहते हैं। यीशु अपने शिष्यों को ऐसा घटित होने पर प्रसन्न होने के लिए कहते हैं, क्योंकि स्वर्ग में उनके लिए एक बड़ा पुरस्कार प्रतीक्षारत है। यीशु उन्हें याद दिलाते हैं कि प्राचीन भविष्यवक्ताओं के साथ किस तरह बुरा व्यवहार किया गया था।

अभिनय को बंद करें। शिष्यों का किरदार निभा रहे अभिनेताओं से पूछें, आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं, जैसे "यीशु का अनुसरण करना कठिन है, लेकिन ऐसा करना सार्थक है।" "यीशु का अनुसरण करते हुए मुझे पहले ही भूख और उदासी महसूस हुई है।" और "मैं प्रोत्साहित हूं कि परमेश्वर मुझे पुरस्कृत करेंगे।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

अब यीशु उन लोगों को संबोधित करते हैं जिन्होंने परमेश्वर की तलाश करने के बजाय अपनी मानवीय इच्छाओं को पूरा किया है। यीशु धनी को बताते हैं कि दुःख उनका इंतजार कर रहे हैं, क्योंकि उनके पास एकमात्र प्रसन्नता जो होगी, वह अभी है। जिनके पास पर्याप्त भोजन से अधिक है, और जो अभी समृद्ध हैं, यीशु उन लोगों को बताते हैं, कि भविष्य में दुःख उनका इंतजार कर रहे हैं। उनके लिए भूख का एक समय आएगा। ऐसे लोग जो अभी हंसते हैं,, यीशु उन्हें कहते हैं, कि दुःख उनका इंतजार कर रहे हैं, क्योंकि उनकी हंसी उदासी में बदल जाएगी। यीशु उन लोगों को चेतावनी देते हैं जो अभी प्रशंसा प्राप्त कर रहे होते हैं, क्योंकि उनके पूर्वजों ने भी झूठे भविष्यवक्ताओं की प्रशंसा की थी।

अभिनय को बंद करें। भीड़ का किरदार निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं, जैसे "लेकिन मुझे आराम में होना पसंद है।" "मैं परमेश्वर को कैसे तलाश करूं?" और "मैं अपमानित महसूस कर रहा हूं।"

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 6:20–26

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु अपने **शिष्यों** या अनुयायियों को एक भाषण देते हैं। शिष्यों का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले किया है। शिष्य शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है। यीशु उन्हें बताते हैं कि वे परमेश्वर द्वारा **धन्य** या कृपापात्र हैं। धन्य शब्द प्रधान शब्दावली में हैं। जो लोग दीन हैं, यीशु उन लोगों को बताते हैं, "**परमेश्वर का राज्य आपका है।**" किसी का पक्ष लेने पर परमेश्वर उन्हें समृद्ध बनाते हैं। इसका मतलब यह है कि वे परमेश्वर के राज्य के नागरिक हैं, और उन सभी आशीषों के वारिस होंगे, जो उसके साथ संबद्ध हैं। परमेश्वर का राज्य परमेश्वर के साथ उनके संबंधों को संदर्भित करता है। परमेश्वर अपने लोगों की परवाह करते और उनके राजा के रूप में उनकी रक्षा करते हैं। लोग अपने राजा के रूप में उनका आज्ञापालन, भरोसा करते हैं और उनके प्रति समर्पित होते हैं। **परमेश्वर का राज्य** प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

जब यीशु **ऐसे लोगों** के बारे में बात करते हैं, जो अभी रोते हैं, तो उनका मतलब ऐसे लोगों से होता है, जो उदास हैं या शोक दिखाते हैं। वे उन्हें बताते हैं कि वे धन्य हैं, और भविष्य में हंसेंगे, क्योंकि वे परमेश्वर के राज्य से हैं।

यीशु अपने शिष्यों से कहते हैं कि, जब लोग **तुम्हारे नाम को दुष्ट के रूप में अस्वीकार करते हैं** तब वे धन्य होते हैं। इस वाक्यांश का मतलब किसी के खिलाफ इस तरह से बोलना होता है, जो उन्हें या उनकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाता हो। यहूदी संस्कृति में एक व्यक्ति का नाम उस व्यक्ति का स्वयं का प्रतिनिधित्व करता है। यीशु का कहना है कि चूंकि वे **मनुष्य के पुत्र** का अनुसरण करते हैं, इसलिए उन्हें अस्वीकृत कर दिया जाएगा। यह एक उपाधि है जो यीशु स्वयं को वर्णित करने के लिए इस्तेमाल करते हैं। मनुष्य के पुत्र के लिए उसी अनुवाद का इस्तेमाल करना सुनिश्चित करें जैसा कि आपने पिछले अंशों में किया है। मनुष्य का पुत्र शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

यीशु अपने शिष्यों से कहते हैं कि जब वे उत्पीड़ित किए जाते हैं, तब उन्हें खुश होना चाहिए और हर्ष के साथ उछलना चाहिए। **हर्ष के साथ उछलने** का मतलब खुशी के कारण उछलना और कूदना होता है।

यीशु का कहना है कि जब उनके साथ बुरा व्यवहार किया जाता है, तो उन्हें हर्षित होना चाहिए, क्योंकि उन्हें स्वर्ग में उनका **पुरस्कार** प्राप्त होगा। एक पुरस्कार कुछ ऐसी अच्छी चीज़ होती है जो लोगों को उनके द्वारा किए गए कार्यों के कारण दी जाती है। इस संदर्भ में पुरस्कार का मतलब यीशु का अनुसरण करने के लिए परमेश्वर द्वारा सम्मानित किया जाना है। **स्वर्ग** का मतलब वह स्थान है जहां परमेश्वर रहते हैं। इस बात का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले किया है। स्वर्ग शब्द प्रधान शब्दावली में है।

यीशु अपने शिष्यों से कहते हैं कि **उनके पूर्वज भी इसी तरह भविष्यवक्ताओं से व्यवहार करते** थे। इसका मतलब केवल यह है कि लोगों के पूर्वजों ने भी भविष्यवक्ताओं से दुर्व्यवहार किया था। यीशु यह कह रहे हैं कि लोगों द्वारा उन से किया गया दुर्व्यवहार यह साबित करता है कि वे भविष्यवक्ताओं की तरह ही परमेश्वर के सच्चे अनुयायी हैं। भविष्यवक्ताओं को उसी तरह से अनुवादित करें जिस तरह आपने पहले किया है। **भविष्यद्वक्ता** शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

उन्हें यह बताने के बाद कि वे किस तरह धन्य हैं, उसके पश्चात यीशु धिक्कार की बात करते हैं। **धिक्कार** एक कष्टप्रद स्थिति को वर्णित करता है। यीशु परमेश्वर से लोगों को अभिशाप देने के लिए नहीं कह रहे हैं, लेकिन वे लोगों को चेतावनी दे रहे हैं कि परमेश्वर का न्याय आ रहा है। यीशु लोगों को चेतावनी दे रहे हैं कि वे अपने तरीकों को बदलें।

आप इसे अपनी भाषा में सहज तरीके से व्यक्त कर सकते हैं। यह एक एकल शब्द या एक छोटा वाक्यांश हो सकता है जो दु:ख या शोक का संप्रेषण करता हो। एक उदाहरण हो सकता है, "कौनसा दु:ख आपकी प्रतीक्षा कर रहा है।"

यीशु उन लोगों को चेतावनी देते **हैं जो धनी हैं**। इस का अनुवाद ऐसे लोगों के रूप में होता है जो समृद्धशाली हैं। उनके पास जरूरत से कहीं अधिक होता है। आमतौर पर, धनी लोग प्रभावशाली होते थे और उन्हें बहुत विशेषाधिकार होते थे। यीशु यह कह रहे हैं कि ऐसे धनी लोग जो परमेश्वर के बजाय अपने धन पर निर्भर थे, उन्हें पहले ही वह सब सुख प्राप्त हो चुका है। यीशु का कहना है कि **आपको पहले ही आपका आराम मिल चुका है।** यीशु का मतलब है कि पृथ्वी पर समृद्ध लोगों को सहजता और प्रसन्नता का जीवन मिलता है। परमेश्वर स्वर्ग में उन्हें यह सुख नहीं देंगे।

यीशु कहते हैं कि लोग **झूठे भविष्यवक्ताओं** के बारे में अच्छा कहते हैं। एक झूठा भविष्यद्वक्ता ऐसा व्यक्ति होता है जो यह कहता है कि वह परमेश्वर का संदेश बोलता हैं, लेकिन परमेश्वर ने वास्तव में उन से बात नहीं की होती है। वे वास्तविक भविष्यवक्ता नहीं थे। भविष्यद्वक्ता का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने लूका के पिछले अंशों में किया है।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 6:20–26

Audio Content

webm zip (2997303 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (5169215 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका *6:27–36*

लूका 6:27–36

सुनना और मनन करना

लूका 6:27–36 सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे इस कथा को सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 6:27–36

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु अपने शिष्यों और एक जनसमुदाय को गलील की झील के पास एक पहाड़ पर शिक्षा दे रहे होते हैं। यीशु ने अभी-अभी अपने शिष्यों को धन्यता के बारे में सिखाया होता है। ऐसे लोग जो परमेश्वर के लिए नहीं रहते, उन्हे भी उन्होंने परमेश्वर के आने वाले न्याय के बारे में चेतावनी दी। इस कथा में यीशु अपने अनुयायियों को यह शिक्षा देते हैं कि अपने शत्रुओं से कैसे प्रेम करें।

तब यीशु कहते हैं, "लेकिन मैं आप सुननेवालों से कहता हूं..." भीड़ में उपस्थित अपने अनुयायियों को यह सिखाने के लिए कि उन्हें अपने शत्रुओं से किस तरह व्यवहार करना चाहिए, वे अपने ध्यान में बदलाव लाते हैं। यीशु कहते हैं कि वे लोग प्रेम करें, भलाई करें, आशीष दें, और अपने शत्रुओं के लिए प्रार्थना करें। यीशु यह बात तब भी करने के लिए कहते हैं, जब उनके शत्रु शारीरिक या मौखिक रूप से उन से दुर्व्यवहार करते हैं। यीशु यह दर्शाते हैं कि प्रेम इस बात निर्भर नहीं होता कि कोई किस तरह महसूस करता है, लेकिन किसी के कर्मों और इच्छा पर निर्भर होता है। यदि किसी को गाल पर थप्पड़ मारा जाता है, तो यीशु कहते हैं, कि उन्हें अपना दूसरा गाल उसके आगे कर देना चाहिए। यहूदी संस्कृति में किसी को गाल पर खुली हथेली से प्रहार करने को बड़ा अपमान माना जाता था। यीशु अपने अनुयायियों से यह कह रहे हैं कि वे पलट कर न मारें, या बदला लेने की इच्छा न करें।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आप अपनी संस्कृति में शत्रुओं से किस प्रकार व्यवहार करते हैं? आपकी संस्कृति आपके शत्रु के प्रति जिस व्यवहार की आपसे अपेक्षा रखती है, आप किस तरह उस के विपरीत कार्य करेंगे?

तब यीशु यह उदाहरण देते हैं कि किस तरह उनके अनुयायी अपने शत्रुओं से प्रेम कर सकते हैं। यदि कोई शत्रु किसी का कोट या बाहरी कपड़ा ले ले, तो उन्हें ऐसे लोगों को अपना कुरता या अंतर्वस्त्र भी दे देना चाहिए। यीशु उन्हें उदार होने के लिए और लोगों से अपनी दी गई चीजें वापस न मांगने के लिए कहते हैं। यीशु चाहते हैं कि उनके अनुयायी अन्य लोगों के साथ उसी तरह व्यवहार करें, जिस तरह वे स्वयं के प्रति व्यवहार चाहते हैं। यह शिक्षण जिन्हें स्वर्ण नियम के रूप में भी जाना जाता है, यहूदी और यूनानी नीति में आम था। लेकिन इसका नित्य प्रयोग इसलिए किया जाता था क्योंकि लोग चाहते थे कि अन्य लोग उनके साथ अच्छा व्यवहार करें। यीशु इस अवधारणा में एक नई समझ लाते हैं। यीशु कहते हैं कि उन्हें लोगों से व्यक्तिगत लाभ की उम्मीद के बिना ही अच्छा व्यवहार करना चाहिए।

रुकें और अपनी टीम को एक कोट और कुरते की तस्वीरें दिखाएं।

यीशु पूछते हैं कि ऐसे लोग जो आपसे प्रेम करते हैं उनसे प्रेम करने पर या जो आपके साथ भलाई करते हैं, उनके साथ भलाई करने पर आपको प्रशंसा क्यों मिलना चाहिए? ऐसे प्रश्न पूछ कर जिनके जवाब की उम्मीद यीशु नहीं करते, यीशु यह शिक्षा देते हैं कि जब कोई आपकी भलाई करता है, तब उसके प्रति सदय व्यवहार करना सहज होता है। पापीगण या ऐसे लोग जो परमेश्वर का आदतन तिरस्कार करते हैं, भी ऐसा ही करते हैं। लेकिन यीशु अपने अनुयायियों को बदले में कुछ भी पाने की उम्मीद किए बिना प्रेम करने, भलाई करने और अपने शत्रुओं को धन देने की आज्ञा देते हैं। यदि वे ऐसा करते हैं, तो यीशु के अनुयायी सम्मानित किए जाएंगे। यीशु के अनुयायी अपने पिता परमेश्वर की तरह कर्म करके स्वयं का परमेश्वर की संतान होने को दर्शाएंगे।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में धन को उधार लेना किस तरह देखा जाता है? यदि कोई उनके द्वारा उधार लिए गए धन को वापस नहीं चुका पाता है तो क्या होता है?

यीशु कहते हैं कि उन्हें अपने शत्रुओं से प्रेम करना चाहिए क्योंकि परमेश्वर ऐसे ही हैं। ऐसे लोग जो अकृतज्ञ हैं और पाप से या उनके प्रति अवज्ञा से भरे हैं, परमेश्वर ऐसे लोगों के प्रति सदय हैं। यीशु उन्हें कठिन परिस्थितियों में करुणा दिखाने के लिए कहते हैं, ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर उनके प्रति करुणा को दर्शाते हैं।

लूका *6:27–36*

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 6:27–36

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य कल्पांकित करने में समूह की मदद करेंगे। आप कथा के दृश्यों, विन्यास और चरित्रों को परिभाषित करने में समूह की मदद करेंगे।

इस कहानी में एक दृश्य है।

पहला दृश्य: यीशु उन लोगों से बात करते हैं जो सुनने के इच्छुक हैं। यीशु उन्हें उनके शत्रुओं से प्रेम करने के लिए कहते हैं। यीशु बताते हैं कि उन्हें किस तरह जीवन की विभिन्न स्थितियों के लिए एक नए अप्रत्याशित तरीके से प्रतिक्रिया करनी चाहिए।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- प्रेरितगण या 12 करीबी शिष्य
- उनके शिष्यों की भीड़
- बहुसंख्या में लोग
- परिस्थितियों पर प्रतिक्रिया करता हुआ एक शिष्य
- एक ऐसा व्यक्ति जो घृणा करता, दुर्व्यवहार करता, गाल पर थप्पड़ मारता, कोट छीनता, सामान हड़प लेता, वसूली की आशा में उधार देता है।
- ऋण मांगने वाला एक व्यक्ति

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु इस समय दर्शकों में एक भेद बनाते हैं। यीशु विभिन्न परिस्थितियों में किस तरह व्यवहार करना चाहिए, इस पर अपने अनुयायियों को निर्देश दे रहे हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि जो लोग उन्हें सुन रहे होते हैं, उन्हें किस तरह: प्रेम कर के, भलाई कर के, आशीष दे कर और प्रार्थना कर के, उनके शत्रुओं से व्यवहार करना चाहिए इस बारे में चार आज्ञाएं यीशु देते हैं। उसके बाद यीशु इस बात के चार उदाहरण देते हैं कि लोग इन आदेशों का पालन किस तरह कर सकते हैं: जब कोई आपको गाल पर थप्पड़ मारता है, तो दूसरा गाल उसके आगे कर दें, अपने कपड़े लेने से किसी को न रोकें, जो भी मांगे उसे दे दें, किसी व्यक्ति से उन चीजों को वापस न मांगे, जो उन्होंने आपसे ली हैं। तब यीशु स्वर्णिम नियम देकर आज्ञाओं का सारांश देते हैं। यीशु कहते हैं कि दूसरों से उसी तरह व्यवहार करें, जिस तरह आप चाहते हैं कि वे आपके साथ व्यवहार करें।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु तीन और उदाहरण देते हैं। यीशु कहते हैं कि पापी भी उन लोगों से प्रेम करते हैं जो उन्हें प्रेम करते हैं, उन लोगों की भलाई करते हैं, जो उनके साथ भलाई करते हैं, और ऐसे लोगों को उधार देते हैं, जो उन्हें वापस भुगतान करेंगे। यीशु बताते हैं कि ऐसी प्रत्येक स्थिति में, यदि उनके अनुयायी पापियों की तरह कार्य करते हैं, तो वे पापियों से अलग कुछ नहीं होते हैं। वस्तुत: यीशु कहते हैं कि उनके अनुयायियों को प्रेम करना चाहिए, भलाई करना चाहिए, और उनके शत्रुओं से कुछ भी वापिस पाने की उम्मीद किए बिना उधार देना चाहिए।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु कर्म करने की आज्ञा देते हैं, भावनाओं की नहीं।

उन्हें सुनने वाले लोगों से यीशु कहते हैं, अपने शत्रुओं से प्रेम करो। हानिकारक लोगों के प्रति किस तरह प्रतिक्रिया देना चाहिए, इस पर यीशु निर्देश देते हैं। यीशु बताते हैं कि पापी भी ऐसे लोगों से प्रेम करते हैं, उनकी भलाई करते हैं, और ऐसे लोगों को उधार देते हैं, जिनके बारे में वे जानते हैं कि वे बदले में उसी तरह व्यवहार करेंगे। बदले में भलाई की उम्मीद किए बिना यीशु उन्हें भलाई करने के लिए निर्देश देते हैं।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 6:27–36

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी में एक दृश्य है।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- प्रेरितगण या 12 करीबी शिष्य
- उनके शिष्यों की भीड़
- बहुसंख्या में लोग
- स्थितियों पर प्रतिक्रिया करने वाला एक व्यक्ति
- एक शत्रु जो घृणा करता, दुर्व्यवहार करता, गाल पर थप्पड़ मारता, कोट छीनता, सामान हड़प लेता, वसूली की आशा में उधार देता है।
- ऋण मांगने वाला एक व्यक्ति

मण्डली से कहानी का दो बार अभिनय करवाएं। पहली बार टीम से बिना रूके कहानी का अभिनय करवाएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है तब उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, तब कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

यह सुनिश्चित करें कि मण्डली इस बात का अभिनय करे कि यीशु लोगों को उनके शत्रुओं से प्रेम करने का कहते हैं, उनके शिष्य बनने की शर्त के रूप में नहीं बल्कि एक निर्देश के रूप में क्योंकि वे उनके अनुयायी हैं।

यह सुनिश्चित करें कि मण्डली इस बात का अभिनय करे कि जैसे-जैसे यीशु हर कर्म का उल्लेख करते हैं, वैसे-वैसे कोई शत्रु उन्हें प्रदर्शित करे। साथ ही प्रदर्शित की जा रही स्थितियों पर जैसे-जैसे यीशु उन में से प्रत्येक के अनुसार जिस प्रतिक्रिया का वर्णन करते हैं वैसे-वैसे उस तरह की प्रतिक्रिया करने को भी दर्शाया जाए।

दूसरी बार जब मण्डली इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

जो लोग सुनेंगे, उन से यीशु कहते हैं: अपने शत्रुओं से प्रेम रखो; जो आपसे घृणा रखते हैं, उनकी भलाई करो; जो आपको श्राप देते हैं, उन्हें आशीष दो; जिन्होंने आपको आहत किया है, उनके लिए प्रार्थना करो। यीशु लोगों से कहते हैं कि यदि कोई आपके एक गाल पर थप्पड़ मारता है, तो उसे दूसरा गाल पेश करें, यदि कोई आपसे कोट की मांग करे, तो उसे अपनी कमीज़ दे दें, जो भी मांगता है, उसे दे दें। यदि कोई आपसे वस्तुएं छीन लेता है, तो उन्हें वापस पाने की कोशिश न करें। तब यीशु उन्हें कहते हैं, यदि आप केवल ऐसे लोगों से प्रेम करते हैं, जो आपसे प्रेम करते हैं; यदि आप केवल उन लोगों की भलाई करते हैं, जो आपकी भलाई करते हैं; यदि आप केवल उन लोगों को उधार देते हैं, जो आपको भुगतान कर सकते हैं; तो ऐसा करने पर आप की प्रशंसा क्यों की जाए? पापी भी इसी तरीके से कर्म करते हैं। यीशु उन्हें कहते हैं, अपने शत्रुओं से प्रेम करो, उनका भला करो, और उनसे बिना वापिस पाने की उम्मीद किए उधार दो, तब तुम्हें स्वर्ग में एक पुरस्कार मिलेगा। तब आप परमेश्वर की सन्तान होंगे। अकृतज्ञ और दुष्टों के प्रति परमेश्वर करुणा रखते हैं। यीशु चाहते हैं कि वे दूसरों के प्रति करुणा रखें, क्योंकि परमेश्वर ने उनके प्रति करुणा रखी है।

अभिनय को बंद करें। भीड़ का किरदार निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "एक शिष्य बनना कठिन प्रतीत होता है।", "मैं अपने शत्रु से इस तरीके से कभी व्यवहार नहीं कर सकता", और "जो कुछ भी मैंने सुना है उससे यीशु का शिक्षण कितना अलग है।"

शत्रु का किरदार निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे, "यह इतना अप्रत्याशित है।" "मैंने सोचा कि यह व्यक्ति मेरा अपमान करेगा", "शायद यह व्यक्ति एक बड़े प्रतिशोध की योजना बना रहा है।" और "मुझे शर्म आती है कि मैंने इस व्यक्ति से इतना बुरा व्यवहार किया।"

लूका *6:27–36*

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 6:27–36

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु अपने **शिष्यों को गलील की झील के** पास शिक्षा दे रहे होते हैं। शिष्य और गलील की झील का अनुवाद उसी तरह से करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले किया है। दोनों शब्दों को प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

यीशु बताते हैं कि उनके अनुयायी किस तरह अपने शत्रुओं से प्रेम कर सकते हैं। वे उन्हें कहते **हैं कि जो लोग आपको श्राप** देते हैं, उन्हें आशीष दें। श्राप शब्द का अर्थ दंड और किसी का कुछ अनिष्ट करना होता है। किसी को श्राप देने का अर्थ है किसी व्यक्ति का बुरा करने के लिए परमेश्वर या आत्माओं का आह्वान करना।

यह सुनिश्चित करें कि आप जिस शब्द का चयन करते हैं, उसका अर्थ जादू-टोना नहीं हो।

अपने शत्रुओं के प्रति किस तरह से उदार होना चाहिए, इसका उदाहरण यीशु देते हैं। वे कहते हैं कि जब वे आपका **वस्त्र** लेते हैं, तो उन्हें आपका **कुरता** भी लेने दें। कोट एक ढीला बाहरी परिधान होता है जो एक चोगे या कॉलर वाली अचकन की तरह दिखता है। कुरता एक कमीज के समान होता है और कोट के नीचे पहना जाता है। कमीज़ का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले किया है।

यदि आपने पहले से नहीं किया है, तो एक कोट और कमीज़ की तस्वीरें दिखाएँ।

यीशु कहते हैं कि जो लोग आपसे प्रेम करते हैं, उन्हें प्रेम करना आसान होता है। वे पूछते हैं कि **इसमें आपको क्या श्रेय है?** इस संदर्भ में श्रेय का अर्थ है लोगों द्वारा या परमेश्वर द्वारा आपके बारे में अच्छा सोचा जाना। यीशु कह रहे हैं कि जो लोग आपसे प्रेम करते हैं, उनसे प्रेम करना कुछ खास नहीं है। इससे प्रशंसा नहीं मिलेगी। यीशु कहते हैं कि **पापी,** या जो लोग नियमित रूप से परमेश्वर की अवज्ञा करते हैं, वे भी ऐसा ही करते हैं। पापियों के उसी अनुवाद का इस्तेमाल करना सुनिश्चित करें जैसा कि आपने पिछले अंशों में किया है। पाप शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

यीशु कहते हैं कि पापी पैसे उधार देते हैं और उम्मीद करते हैं कि **उन्हें पूरी अदायगी** प्राप्त हो। इस वाक्यांश का अर्थ है कि वे उम्मीद करते हैं कि उन्हें वही राशि प्राप्त हो जो उन्होंने उधार दी थी।

यीशु कहते हैं कि यदि उनके अनुयायी उनकी आज्ञा मानते हैं और अपने शत्रुओं से प्रेम करते हैं, तो वे **परम प्रधान के पुत्र होंगे**। यह वाक्यांश परमेश्वर के साथ एक संबंध का अर्थ रखता

है। यीशु के अनुयायी उसी तरह कर्म करेंगे जिस तरह उनके पिता, परमेश्वर करते हैं। इस मामले में पुत्र पुरुष और स्त्री दोनों को संदर्भित करता है। इसमें यीशु के शिष्य भी शामिल हैं जो महिलाएं थीं। परमप्रधान परमेश्वर के लिए एक उपाधि है। सम्मान दिखाने के लिए परमेश्वर का नाम न बुलाना एक यहूदी प्रथा थी। परमप्रधान का अनुवाद उसी तरह करें जिस तरह आपने पिछले अंशों में किया है।

यीशु अपने शिष्यों से कहता है कि वे **सदय रहें**। सदय का अर्थ है एक कठिन स्थिति में किसी के प्रति करुणा दिखाना।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 6:27–36

Audio Content

webm zip (2528046 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (4351808 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 6:37–42

सुनना और मनन करना

लूका 6:37–42 सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे इस कथा को सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 6:37–42

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु अपने शिष्यों को गलील की झील के पास शिक्षा दे रहे होते हैं। यीशु उन्हें शिक्षा दे रहे हैं कि उनके अनुयायियों के रूप में उन्हें कैसे जीना और कार्य करना चाहिए। उनके शत्रुओं से उन्हें किस तरह प्रेम करना चाहिए इस बारे में यीशु ने उन्हें शिक्षा दी। यीशु अब उन्हें दो ऐसी बातें सिखाते हैं जोउन्हें करनी चाहिए और दो ऐसी बातें भी जो उन्हें नहीं करनी चाहिए। वे चाहते हैं कि वे प्रेम और सदयता के साथ कार्य करें।

यीशु इस बात पर जोर देते हैं कि उनके अनुयायियों के साथ उसी तरह व्यवहार किया जाएगा जिस तरह वे दूसरों के साथ व्यवहार करते हैं। वे उन्हें कहते हैं कि किसी का आंकलन न करें, या किसी पर कोई गलत काम करने का दोष न लगाएं। यीशु उन वास्तविक नेताओं का जिक्र नहीं कर रहे थे जिन्हें अदालत में कुछ सही या गलत होने पर न्याय करने की आवश्यकता हो सकती थी। यीशु अपने अनुयायियों से यह भी कहते हैं कि किसी के द्वारा कुछ बुरा करने पर वे किसी की निन्दा न करें, या किसी को दोषी न ठहराएं। यीशु कहते हैं कि उन्हें ये कार्य इसलिए नहीं करना चाहिए क्योंकि जैसा व्यवहार वे दूसरों के साथ करते हैं, वैसा ही व्यवहार उनके साथ किया जाएगा। यीशु अपने अनुयायियों से कहते हैं कि उन्हें क्षमा करना चाहिए या किसी को अपराध करने पर दंड नहीं देना चाहिए अथवा किसी के अपराध बोध को मिटा देने का चयन करना चाहिए। यीशु कहते हैं कि उन्हें देना चाहिए या ज़रूरतमंदो के प्रति उदार बनना चाहिए, और परमेश्वर उनके प्रति उदार बनेंगे।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। यदि आपकी संस्कृति में किसी को दोषी के रूप में नामांकित किया जाता है, तो उनके साथ किस तरह का व्यवहार किया जाता है? कोई दोषी है या नहीं, यह निर्धारित करने का अधिकार किस के पास होता है?

तब यीशु अनाज बेचने वाले एक व्यापारी के उदाहरण का इस्तेमाल करते हैं। व्यापारी अनाज को मापने के पात्र में दबाता है। वह पात्र को हिलाता है ताकि अनाज उसमें समा सके। उसके बाद वह उसे तब तक भरता रहता है जब तक कि अनाज पात्र में से बाहर न गिरने लगे। इसका मतलब है कि यदि आप उदारता से देते हैं, तो बदले में आपको उदार उपहार मिलेंगे।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में व्यापारी या विक्रेता कैसे होते हैं? यदि आप किसी व्यापारी से बार-बार खरीदी करते हैं, तो क्या उनका व्यवहार बदलता है?

यीशु अपने अनुयायियों को दो अंधे लोगों के बारे में एक कहावत या नीतिवचन कहकर चेतावनी देते हैं। यीशु उन्हें चेतावनी देते हैं कि वे अंधे नेताओं का पालन न करें, अन्यथा वे किसी गड़हे में जा गिरेंगे। यीशु कहते हैं कि एक अच्छे शिक्षक का होना महत्वपूर्ण है। छात्र अपने शिक्षक के उदाहरण का, चाहे वह भला हो या बुरा, अनुसरण करेंगे।

यीशु अपने अनुयायियों को नेतृत्व के बारे में शिक्षा देते हैं। यदि वे पहले अपने ही जीवन की जांच करने के इच्छुक न हों तो उनके शिष्य दूसरों को शिक्षा नहीं दे सकते। उन्हें अपने जीवन में ऐसी चीजें बदलनी होंगी जो यीशु के शिक्षण का पालन नहीं करतीं। तभी वे दूसरों को उनके जीवन की जांच करने और उन्हें बदलने में मदद कर सकते हैं।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में एक भले अग्रणी के क्या गुण होते हैं? जब कोई अग्रणी कोई एक बात कहता है और उसका विपरीत करता है, तो लोग उसे किस तरह देखते हैं?

इस बात पर जोर देने के लिए यीशु आंख के तिनके के एक उदाहरण का इस्तेमाल करते हैं। छोटी कमियों या तिनके को देखने के लिए, जबकि उनकी अपनी जिंदगी में बड़े दोष या लट्ठे होते हैं, यीशु उनकी आलोचना करते हैं। जो लोग अपने ही पाप से अंधे होते हैं, वे दूसरों की मदद नहीं कर सकते। यीशु ने चेतावनी देने के लिए कपटी शब्द का इस्तेमाल किया। एक कपटी ऐसा व्यक्ति होता है जिसकी करनी उसकी कथनी से मेल नहीं खाती है।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 6:37–42

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य कल्पांकित करने में समूह की मदद करेंगे। आप कथा के दृश्यों, विन्यास और चरित्रों को परिभाषित करने में समूह की मदद करेंगे।

इस कथा में दो दृश्य हैं।

पहला दृश्य: यीशु अपने अनुयायियों से कहते हैं कि वे दूसरों का आंकलन न करें, या उन्हें दोषी न ठहराएं।

दूसरा दृश्य: उसके बाद यीशु दो मिसालें देते हैं। पहली मिसाल एक नेत्रहीन व्यक्ति द्वारा दूसरे नेत्रहीन व्यक्ति को मार्गदर्शित करने के बारे में है। दूसरी मिसाल आंख में बड़ी वस्तु वाले एक व्यक्ति द्वारा अपने मित्र की आंख से एक छोटी वस्तु निकालने के प्रयास बारे में है।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- प्रेरितगण या 12 करीबी शिष्य
- उनके शिष्यों की भीड़
- बहुसंख्या में लोग
- दो अंधे लोग
- दो लोग जिनकी आंखों में कुछ होता है

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल (ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप इधर उधर रख सकते हैं जैसे पत्थर, लकड़ियां, बच्चों के खिलौने) का इस्तेमाल करे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु मानवी न्यायाधीशों के बारे में बात नहीं कर रहे हैं, बल्कि भीड़ से सामान्य तौर पर बात कर रहे हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि आंख में तिनका और आंख में लट्ठा ऐसी मिसालें हैं जो किसी के जीवन में पाप को संदर्भित करती हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु अपने शिष्यों से दो ऐसी बातें कह रहे हैं जो उन्हें नहीं करनी चाहिए और दो ऐसी बातें भी जो उन्हें करनी चाहिए। यीशु उन्हें प्रत्येक कार्य के परिणाम बताते हैं। तब यीशु बताते हैं कि बहुलता में देना कैसा दिखता है। यह एक अनाज बेचने वाले की तरह होता है, जो अनाज को मापने वाले पात्र में डालता है। व्यापारी तब उसे संकुलित करने के लिए दबाता है, अनाज को ठीक से बैठाने के लिए उसे हिलाता है, फिर बेचनेवाला उसमें तब तक और अनाज़ डालता रहता है, जब तक कि वह एक ढेर बनकर पात्र को लबालब न भर दे।

तब यीशु नेतृत्व के बारे में एक चेतावनी देने के लिए सवालों का इस्तेमाल करते हैं। यीशु इन सवालों के जवाब की उम्मीद नहीं करते हैं। यीशु इन सवालों का इस्तेमाल यह जाहिर करने के लिए करते हैं कि एक अंधा द्वारा दूसरे अंधे का नेतृत्व करने का कोई अर्थ नहीं है क्योंकि दोनों ही गिर जाएंगे। यीशु सही शिक्षक द्वारा अच्छी तरह प्रशिक्षित होने के महत्व को बताते हैं, क्योंकि छात्र शिक्षक की तरह ही बन जाएगा।

यीशु फिर से अपने शिक्षण को बहुत स्पष्ट करने के लिए एक प्रश्न का इस्तेमाल करते हैं। यीशु आंख में लट्ठे के साथ एक व्यक्ति द्वारा एक अन्य व्यक्ति जिसकी आंख में तिनका है, की मदद करने की कोशिश की परस्पर तुलना करते हैं। किसी और को बदलने के पहले अपने व्यवहार की जांच करके उसमें बदलाव लाने के लिए यह बात यीशु उनसे कहते हैं जो सुन रहे हों।

लूका *6:37–42*

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 6:37–42

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कथा में दो दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- प्रेरितगण या 12 करीबी शिष्य
- उनके शिष्यों की भीड़
- बहुसंख्या में लोग
- दो अंधे लोग
- दो लोग जिनकी आंखों में कुछ होता है

मण्डली से कहानी का दो बार अभिनय करवाएं। पहली बार टीम से बिना रूके कहानी का अभिनय करवाएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है तब उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, तब कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

यह सुनिश्चित करें कि मण्डली एक अंधे व्यक्ति द्वारा दूसरे अंधे व्यक्ति का मार्गदर्शन करने और एक गड़हे में गिरने का अभिनय करे। एक ऐसे व्यक्ति जिसकी आंख में कोई बड़ी वस्तु हो और जो अच्छी तरह से देख नहीं सकता हो, उसकी अदाकारी करें। वह व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति की आंख से एक बहुत छोटी वस्तु निकालने की कोशिश करता रहता है।

दूसरी बार जब मण्डली इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

यीशु अपने अनुयायियों को उनके व्यवहार के लिए दिशानिर्देश देना जारी रखते हैं। यीशु उन्हें कहते हैं कि वे दूसरों का आंकलन न करें और दूसरों की निंदा न करें। तब उनका आंकलन और निंदा नहीं होगी। तब यीशु अपने अनुयायियों से कहते हैं कि वे दूसरों को क्षमा करें, ताकि परमेश्वर उन्हें क्षमा करें। वे उन्हें कहते हैं कि वे देने लगें ताकि वे प्राप्त करें। यीशु कहते हैं कि आप जिस माप से मापते हैं, उसी माप से आपको भी मापा जाएगा। अच्छा माप एक विक्रेता की तरह होगा जो एक मापने वाले पात्र में अनाज को दबाता है, उसे हिलाता है, और फिर उसमें भरता रहता है, ताकि वह लबालब भर जाए।

यीशु एक प्रश्न के रूप में एक ऐसे नेत्रहीन व्यक्ति के उदाहरण, जो दूसरे नेत्रहीन व्यक्ति का मार्गदर्शन करता है, उसका इस्तेमाल करते हुए नेतृत्व के बारे में मिसाल देते हैं। यीशु

बताते हैं कि दोनों ही गिर जाएंगे। यीशु बताते हैं कि एक ऐसा छात्र जो पूरी तरह प्रशिक्षित होता है, किस तरह शिक्षक की तरह बन जाता है। यीशु अपनी आंख में बड़ी वस्तु के साथ किसी व्यक्ति द्वारा उसके मित्र की आंख से एक छोटी वस्तु निकालने में मदद करने की मिसाल का उपयोग करते हैं। तब यीशु इस तरह के लोगों को कपटी कहते हैं। यीशु उन्हें कहते हैं कि वे स्पष्ट रूप से देखने के लिए पहले बड़ी वस्तु की परवाह करें, ताकि वे दूसरी व्यक्ति की आंख से छोटी वस्तु को हटाने में मदद कर सकें।

अभिनय को बंद करें। शिष्यों का किरदार निभा रहे अभिनेताओं से पूछें, आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मैं उसी तरह आंका नहीं जाना चाहता जिस तरह मैं दूसरों का आंकलन करता हूं।" "मुझे बदलने की ज़रूरत है। मुझे लगता है कि मैं एक अंधे व्यक्ति की तरह रहा हूं, जो दूसरों का मार्गदर्शन करता है।" और "मुझे अपने दोस्तों को ठीक करने की कोशिश करना बंद करना चाहिए।"

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 6:37–42

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु अपने **शिष्यों को गलील की झील के** पास शिक्षा दे रहे होते हैं। शिष्यों और गलील की झील का अनुवाद उसी तरह से करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। दोनों शब्दों को प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

यीशु अपने शिष्यों से कहते हैं कि **वे किसी पर कोई दोष न लगाएं**, या किसी पर कोई गलत काम करने का आरोप न लगाएं। यीशु नहीं चाहते थे कि उनके अनुयायी किसी की अनुचित आलोचना करें। यह उन अग्रणियों पर लागू नहीं होता जिन्हें अदालत में निर्णय लेना होता था, कि क्या कुछ सही था या गलत था।

यीशु अपने शिष्यों से कहते हैं कि वे **निंदा** न करें, या किसी ने कोई दुष्टता की हो तो वे यह न कहें कि कोई दोषी है और दंड का हकदार है। इसके बजाय, शिष्यों को **क्षमा** करना चाहिए। क्षमा के लिए उसी अनुवाद का इस्तेमाल करना सुनिश्चित करें जैसा कि आपने पिछले अंशों में किया है। क्षमा शब्द प्रधान शब्दावली में है।

तब यीशु एक व्यापारी का उदाहरण देते हैं। व्यापारी ने अनाज **को दबाया** ताकि वह यथासंभव कम से कम जगह ले सके। इससे उसे और अधिक मात्रा भीतर डालने की गुंजायश मिली। अनाज को ठीक से भरने के लिए उसे **एक साथ हिलाया** गया ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वह पात्र पूरी तरह से भर गया है। **लबालब भरने** का मतलब है कि व्यापारी ने इतना अनाज पात्र में डाल दिया कि वह बाहर गिरने लगा। यीशु का कहना है कि व्यापारी इतना अनाज देता है कि वह **आपकी गोद में गिर जाएगा।** इस संदर्भ में गोद का संदर्भ किसी के रोब को मोड़ कर बनाई गई थैली या पोटली से है। अनाज खरीदने वाले यहूदी लोगों की यह प्रथा थी कि वे थैली बनाने के लिए अपने रोब को मोड़ते थे। व्यापारी अनाज को थैली में डाल देता था और खरीदार अनाज को इस तरह ले जाता था।

यदि आपके यहां यह संस्कृति नहीं है, तो आप अनाज के पात्र के लिए टोकरी जैसे किसी आम शब्द का इस्तेमाल कर सकते हैं।

यीशु दूसरों का आंकलन करने के बारे बताने के लिए एक परस्पर तुलना का इस्तेमाल करते हैं। यीशु **आपके भाई की आंख में तिनका देखने** वाले वाक्यांश का इस्तेमाल लकड़ी का एक छोटा टुकड़ा, भूसा या बुरादे का कण, जो किसी की आंख में फंस जाता है, को संदर्भित करने के लिए करते हैं। भाई एक ही धार्मिक समुदाय के किसी व्यक्ति को संदर्भित करता है, ना कि खून के रिश्ते को। यीशु एक तिनके की तुलना किसी के जीवन के एक छोटे से पाप या दोष से कर रहे हैं। वे इस वाक्यांश **आपकी आंख के लट्ठे** का इस्तेमाल भी करते हैं जिसका मतलब लकड़ी के एक भारी टुकड़े से है जो किसी की नज़र को अवरुद्ध करता है। लकड़ी के एक बड़े लट्ठे का किसी की आंख में होना असंभव है। यीशु इस उदाहरण में अतिश्योक्ति करते हैं ताकि वे कुछ छोटे और कुछ बहुत बड़े के बीच के अंतर पर जोर दे सकें। इस परस्पर तुलना के माध्यम से यीशु यह कह रहे हैं कि किसी मित्र की निंदा करना गलत है, जब कि आपने पहले अपने स्वयं के जीवन की जांच न की हो।

यीशु चेतावनी देने के लिए **कपटी** शब्द का इस्तेमाल करते हैं। इसका मतलब है कि ऐसा कोई व्यक्ति जो कोई और ही व्यक्ति होने का ढोंग करता है। एक कपटी वास्तव में परमेश्वर से प्रेम या उनका आदर किए बिना ही यह मान्यता रख सकता है कि वह परमेश्वर का सम्मान करता है। कपटी शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था,

जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 6:37–42

Audio Content

webm zip (2467010 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (4259506 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 6:43–49

सुनना और मनन करना

लूका 6:43–49 सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे इस कथा को सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 6:43–49

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु अपने शिष्यों को गलील की झील के पास शिक्षा दे रहे होते हैं। यीशु ने अपने अनुयायियों को यह शिक्षा दी कि वे अच्छे अग्रणी कैसे बनें। यीशु अब दो तुलनाओं का इस्तेमाल यह दिखाने के लिए करते हैं कि किसी व्यक्ति के कार्यों से यह पता चलता है कि वे वास्तव में यीशु का अनुसरण कर रहे हैं। यीशु चाहते हैं कि लोग न केवल उनकी शिक्षाओं को सुनें, बल्कि उनका पालन भी करें।

यीशु पेड़ों के एक उदाहरण का इस्तेमाल यह दिखाने के लिए करते हैं कि एक व्यक्ति के कार्यों से यह पता चलता है कि वह किस तरह का व्यक्ति है। यीशु कहते हैं कि एक अच्छा पेड़

खराब फल पैदा नहीं कर सकता है। एक खराब पेड़ से अच्छे फल पैदा नहीं हो सकते हैं। यह ऐसा कहने का एक और तरीका था कि अच्छे लोगों को बुरे कर्म नहीं करना चाहिए। यीशु यह कह रहे हैं कि एक व्यक्ति के कार्यों से यह पता चलता है कि वे वास्तव में कौन हैं।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में एक "अच्छा व्यक्ति" किस तरह के कार्य करता है? आपकी संस्कृति में एक "बुरा व्यक्ति" किस तरह के कार्य करता है?

यीशु कहते हैं कि कंटीली झाड़ियों से अंजीर नहीं बटोरे जा सकते हैं। अंजीर एक ऐसा फल होता है जो एक पेड़ से पैदा होता है। अंजीर ऐसे पौधों पर नहीं उगते जिनमें कांटे होते हैं, इसलिए यह असंभव था। यीशु झड़बेरियों से अंगूर तोड़ने के उदाहरण का इस्तेमाल भी करते हैं। अंगूर मीठे फल होते हैं जो गुच्छों में उगते हैं। झड़बेरियां एक और प्रकार के कंटीले पौधे थे। झड़बेरियां फल नहीं पैदा करती हैं। यीशु यह कहकर सारांश देते हैं कि अच्छे लोग अच्छे काम करते हैं और एक बुरा हृदय बुरे कार्यों का निर्माण करता है। यहूदियों के लिए हृदय व्यक्ति का वह हिस्सा था जो बातों को सोचने, महसूस करने और निर्णय करने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। यीशु का तात्पर्य है कि एक व्यक्ति की मान्यताएं और विचार उसके वचनों और कर्मों को नियंत्रित करते हैं।

रुकें और अपनी टीम को अंजीर की एक तस्वीर, अंगूरों की एक तस्वीर और कंटीली झाड़ी की एक तस्वीर दिखाएं।

यीशु कहते हैं कि कई लोग उनका आदर करने के लिए उन्हें प्रभु या स्वामी कहते हैं, लेकिन वे उनके वचनों का पालन नहीं करते हैं। यीशु एक दृष्टांत या एक लघुकथा का इस्तेमाल करते हैं जो परमेश्वर के बारे में एक गहरे अर्थ की शिक्षा देती है।

यीशु दो निर्माताओं की एक तुलना का इस्तेमाल करते हैं ताकि सुनने और पालन करने के बीच के अंतर को सिखाया जा सके। वे कहते हैं कि एक निर्माता ने गहरी खुदाई की। इससे यह पता चलता है उस व्यक्ति ने यह सुनिश्चित करने के लिए कि उसके घर की नींव मजकूत हो, एक बड़ा प्रयास किया। नींव वह आधार होता है जो घर का समर्थन करता है। चट्टान भूमि की सतह के नीचे पत्थर की एक ठोस परत को संदर्भित करती है। यह ढीले पत्थरों को संदर्भित नहीं करता है। इसकी गहराई 20 सेमी और कई मीटर के बीच कहीं भी हो सकती है। इससे यह पता चलता है कि यह सुनिश्चित करने के लिए कि उसका घर मजबूत और सुरक्षित हो, उस व्यक्ति को बहुत गहरी खुदाई आवश्यक थी।

यदि आपके क्षेत्र में मकान अलग तरीके से बनाए जाते हैं, तो आप दृष्टांत में अपनी संस्कृति के अनुरूप रूपांतरित कर सकते हैं। यह वर्णित करें कि कोई व्यक्ति किस तरह एक ऐसा मकान बनाएगा जो मजबूत हो। फिर एक ऐसे व्यक्ति का वर्णन करें जो गलत तरीके से निर्माण करता है।

दूसरा व्यक्ति अपने घर को बालूरेत पर बनाता है। यह ऐसे व्यक्ति का प्रतीक है जो यीशु की सुनता है, लेकिन उनके शब्दों का पालन नहीं करता है। तूफान आने पर उसका घर पूरी तरह नष्ट हो जाएगा। यीशु इस दृष्टांत का इस्तेमाल यह बताने के लिए करते हैं कि उनके अनुयायियों को न केवल उनकी शिक्षाओं को सुनना, बल्कि उनका पालन भी करना चाहिए।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपके क्षेत्र में किस प्रकार के तूफान या प्राकृतिक आपदाएं होती हैं? तूफान या प्राकृतिक आपदाओं के आने पर जो मकान अच्छे से नहीं बने होते हैं, उनका क्या होता है?

यह यीशु के उपदेश का अंत था।

यीशु के संदेश से यह पता चलता है कि वे चाहते हैं कि अन्य लोग जिस तरह से आमतौर पर रहते हैं, उनके अनुयायी उनसे अलग तरह से रहना चाहिए। यीशु अपने अनुयायियों को यह शिक्षा देते हैं कि वे किस तरह ऐसे तरीके से कार्य और विचार करें, जो परमेश्वर को प्रसन्न करता हो। इसमें शत्रुओं से प्रेम करना और उत्पीड़न का सामना करने पर हर्ष के साथ प्रतिक्रिया करना शामिल था। यीशु उन कठिन परिस्थितियों के लिए अपने अनुयायियों को तैयार कर रहे हैं जो उनके सामने आने वाली हैं।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 6:43–49

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य कल्पांकित करने में समूह की मदद करेंगे। आप कथा के दृश्यों, विन्यास और चरित्रों को परिभाषित करने में समूह की मदद करेंगे।

इस कथा में दो दृश्य हैं।

पहला दृश्य: यीशु बताते हैं कि किस तरह एक अच्छा व्यक्ति अच्छी वस्तुएं उत्पन्न करता है और एक बुरा व्यक्ति बुरी चीजें उत्पन्न करता है। यीशु इसे पेड़ों की मिसाल के द्वारा बताते हैं।

दूसरा दृश्य: यीशु उन लोगों से सवाल करते हैं जो यीशु को "प्रभु" कहते हैं, लेकिन यीशु जो कहते हैं, उसे नहीं करते हैं। यीशु इस सबक को सिखाने के लिए एक घर के निर्माण का उदाहरण देते हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- प्रेरितगण या 12 करीबी शिष्य
- उनके शिष्यों की भीड़
- बहुसंख्या में लोग
- पेड़ों के साथ तुलना किए गए दो लोग
- दो मकान निर्माता

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल (ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप इधर उधर रख सकते हैं जैसे पत्थर, लकड़ियां, बच्चों के खिलौने) का इस्तेमाल करे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि जब यीशु अच्छी वस्तुओं के भंडारण का उल्लेख करते हैं, तो उसका मतलब अच्छी बातों को रखना होता है। यह एक ऐसे व्यक्ति की तरह है जो अच्छी वस्तुओं को रखता है, जैसे उपयोगी वस्तुएं, या अच्छा भोजन, जिसे भविष्य में उपयोग के लिए वे वस्तुएं या खाने के लिए वह भोजन रहेगा। इसी तरह एक ऐसा व्यक्ति जो अपने हृदय या मन में अच्छी वस्तुओं का भंडारण करता है, वह अच्छी बातें कहेगा और करेगा।

यीशु हृदय के विभिन्न परिणामों के बारे में बात करते हैं। यदि किसी व्यक्ति ने अपने हृदय में अच्छी बातें संग्रहित की हैं तो वह अच्छी बातें उभारता है। यदि दुष्ट वस्तुएं हृदय में संग्रहित की जाती हैं, तो वह अपने जीवन में बुरी बातें उत्पन्न करेगा। यीशु ने कहा कि मुंह वह बोलता है जो हृदय में है।

यीशु एक घर का निर्माण करने वाले दो पुरुषों के एक उदाहरण का इस्तेमाल करते हैं। यीशु बताते हैं कि ऐसे लोग जो उनका कहना सुनते और उनका कहा मानते हैं, वे उस व्यक्ति की तरह हैं जो चट्टान पर एक घर बनाता है और वह टिकता है। ऐसा व्यक्ति जो यीशु की सुनता है और वह नहीं करता जो वे कहते हैं, वह ऐसा व्यक्ति है जो अपने घर को बालूरेत पर बनाता है। तूफान आने पर उसका घर नष्ट हो जाएगा।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 6:43–49

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कथा में दो दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

लूका *6:43–49*

- यीशु
- प्रेरितगण या 12 करीबी शिष्य
- उनके शिष्यों की भीड़
- बहुसंख्या में लोग
- पेड़ों के साथ तुलना किए गए दो लोग
- दो मकान निर्माता

मण्डली से कहानी का दो बार अभिनय करवाएं। पहली बार टीम से बिना रूके कहानी का अभिनय करवाएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है तब उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, तब कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

यह सुनिश्चित करें कि मण्डली पेड़ों की तुलना लोगों के साथ करने की मिसाल देने का अभिनय करे। मण्डली को अच्छे फल उत्पन्न करने वाले और बुरे फल उत्पन्न करने वाले पेड़ों का प्रतिनिधित्व करने के लिए कुछ वस्तुओं का इस्तेमाल करने की जरूरत हो सकती है। साथ ही अच्छी वस्तुओं का उत्पादन करने वाले एक व्यक्ति और बुरी वस्तुओं का उत्पादन करने वाले एक व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करें। मण्डली को यह स्पष्ट करना होगा कि वहां एक तुलना की जा रही है।

यह सुनिश्चित करें कि मण्डली उसी समय घर के निर्माण की मिसाल का अभिनय करे, जब कोई व्यक्ति यीशु की सुनता है और उनके कहे अनुसार करता या नहीं करता है। जब कोई व्यक्ति ठोस नींव पर निर्माण करने का अभिनय करे, उस समय यह सुनिश्चित करें कि ऐसा व्यक्ति जो यीशु की सुनता है और यीशु जो कहते हैं उसे करता है, वह भी उसी समय अभिनय कर रहा हो। उसके बाद जब बिना नींव के साथ निर्माण करने वाले व्यक्ति का अभिनय किया जाए, तो यह सुनिश्चित करें कि ऐसा व्यक्ति जो सुनता है, लेकिन कहा हुआ नहीं मानता, वह उसी समय अभिनय कर रहा हो।

दूसरी बार जब मण्डली इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

इस कथा में दो दृश्य हैं।

यीशु ऐसे अच्छे कामों या बुरे कामों को करने वाले व्यक्तियों की तुलना अच्छे फल या बुरे फल उत्पन्न करने वाले पेड़ों से करने की एक मिसाल देते हैं। व्यक्ति के कार्यों से पता चलता है कि उसके हृदय में क्या है।

अभिनय को बंद करें। भीड़ का किरदार निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे, "मेरे अभिप्राय अच्छे हैं, लेकिन मैं गलत करता हूं।" "क्या यह अच्छा नहीं कि मैं यहां सुन रहा

हूं?" और "मैं अच्छे फल पैदा करना चाहता हूं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु उन लोगों से सवाल करते हैं जो उन्हें प्रभु तो कहते हैं, लेकिन यीशु के कहे अनुसार कार्य नहीं करते हैं। यीशु कहते हैं कि जो व्यक्ति उनके पास आता है, उनका कहा सुनता है, और करता है वह एक ऐसे व्यक्ति की तरह होता है जो एक मजबूत नींव पर घर का निर्माण करता है। बाढ़ आने पर घर नींव के कारण खड़ा रहता है। लेकिन ऐसा व्यक्ति जो सुनता है, लेकिन यीशु के कहे अनुसार करता नहीं है, वह एक ऐसे व्यक्ति की तरह होता है जो बिना नींव के निर्माण करता है। बाढ़ आने पर घर नष्ट हो जाता है।

अभिनय को बंद करें। निर्माताओं का किरदार निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे, "शुक्र है कि मुझे निर्माण करने के लिए चट्टान मिली।" "बाढ़ अप्रत्याशित थी", और "मुझे घर के नीचे कम से कम एक अच्छी नींव रखनी चाहिए।"

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 6:43–49

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु अपने **शिष्यों को गलील की झील के** पास शिक्षा दे रहे होते हैं। शिष्यों और गलील की झील का अनुवाद उसी तरह से करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। दोनों शब्दों को प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

यीशु लोगों की तुलना फलों के पेड़ों के साथ करते हैं। यीशु एक अंजीर के पेड़ के उदाहरण का इस्तेमाल करते हैं। **अंजीर** छोटे, स्वादिष्ट फल होते हैं जो एक पेड़ पर से उगते हैं। उन पर कांटे नहीं होते हैं। यीशु अंगूर के उदाहरण का इस्तेमाल भी करते हैं। अंगूर मीठे फल होते हैं जो गुच्छों में उगते हैं। उन पर कांटे नहीं होते हैं।

रुकें और यदि आपने पहले से ही ऐसा नहीं किया है तो अपनी टीम को अंजीर और अंगूर की तस्वीरें दिखाएं। यदि आपके क्षेत्र में अंजीर या अंगूर नहीं होते हैं, तो आप फल जैसे एक सामान्य शब्द का इस्तेमाल कर सकते हैं।

उनका कहना है कि **उसके हृदय के उत्प्लाव से उसका मुंह बोलता** है। व्यापारी के उदाहरण की तरह ही, यह एक पात्र की छवि है जो इतना लबालब भरा है कि यह ऊपर से छलकने लगता है। इस संदर्भ में इसका मतलब है कि एक व्यक्ति के विचार और मान्यताएं उसके कथनों को नियंत्रित करती हैं। यहूदियों के लिए हृदय व्यक्ति का वह हिस्सा होता था जो बातों को सोचने, महसूस करने और निर्णय करने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। एक व्यक्ति के शब्दों में उस व्यक्ति के असली विचार और चरित्र प्रतिबिंबित होते हैं। यह ऐसा वाक्यांश है जिस पर यीशु द्वारा दिए गए पेड़ों के उदाहरण में जोर दिया जाना चाहिए।

यीशु कहते हैं कि लोग उन्हें **प्रभु, प्रभु** कहते हैं। यहां इसका मतलब है स्वामी या एक ऐसा व्यक्ति जिसके पास दूसरों पर अधिकार होता है। लोग उन्हें अपना स्वामी कहते थे, लेकिन वे उनके उपदेशों का पालन नहीं करते थे। प्रभु को उसी तरह अनुवादित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। प्रभु शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

घरों का परीक्षण एक **प्रचंड धारा** द्वारा किया गया था। यह एक मजबूत, तेज बहने वाली नदी या धारा को संदर्भित करता है। चट्टान पर निर्मित मकान तब भी मजबूती से खड़ा रहा जब तेज़ प्रवाह ने उस पर प्रहार किया।

रुकें और यदि आपने पहले से ऐसा नहीं किया है तो अपनी टीम को बाढ़ या प्रचंड प्रवाह का वीडियो दिखाएं।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 6:43–49

Audio Content

webm zip (2388706 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (4094287 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 7:1–10

सुनना और मनन करना

लूका 7:1–10 सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे इस कथा को सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 7:1–10

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु के उपदेश के बाद लूका यीशु के सेवाकाल की अपनी कथा जारी रखते हैं। लूका हमें बताते हैं कि यीशु कफरनहूम वापिस लौटते हैं। लूका भले ही उनका जिक्र नहीं करते हैं, लेकिन हम आने वाली कहानियों से जानते हैं कि यीशु के कुछ शिष्य उनके साथ हैं। लूका एक रोमी अधिकारी का वर्णन करते हैं जो यहूदी नेताओं को यीशु से अपने बीमार सेवक को चंगा करने के लिए निवेदन करने के लिए भेजता है। यीशु उस रोमी अधिकारी के विश्वास से चकित होते हैं।

यीशु अपने उपदेश को इस बात पर पूरा करते हैं कि परमेश्वर किस तरह चाहते हैं कि लोग जीवन जीएं। यीशु कफरनहूम लौट जाते हैं। यीशु ने पहले ही कफरनहूम आराधनालय में शिक्षा दी होती है और इस नगर के कई लोगों को चंगा किया होता है। कफरनहूम गलील की झील के बगल में स्थित है इसलिए यीशु को बहुत दूर तक यात्रा नहीं करनी पड़ती थी। उनके कुछ शिष्य उनके साथ होते हैं। कफरनहूम में एक सूबेदार रहता है जिसका सेवक बहुत बीमार है। सूबेदार एक रोमी अधिकारी होता है जो 100 सैनिकों का प्रभारी होता है। यह सूबेदार एक अन्यजाति है। तथापि, उस अधिकारी का सेवक बीमार होता है। सेवक के लिए यूनानी शब्द का मतलब दास होता है और वह ऐसे व्यक्ति को संदर्भित करता है जो उसके स्वामी के स्वामित्व में होता है। सेवकों के पास कोई अधिकार नहीं होता और वे बिना वेतन के अपने स्वामी के लिए काम करते थे। लूका हमें बताते हैं कि वह अधिकारी इस सेवक का पक्ष लेता है और उसे महत्वपूर्ण के रूप में देखता है। लेकिन सेवक इतना बीमार होता है कि वह मरणासन्न होता है।

रुकें और रोम के एक सूबेदार की तस्वीर दिखाएं।

उस अधिकारी ने यीशु द्वारा लोगों को चंगा करने के बारे में सुना था। वह जानता है कि यीशु एक यहूदी हैं। वह अधिकारी स्वयं को यीशु के पास जाने योग्य नहीं समझता है। वह कुछ यहूदी पुरनियों को अपने प्रतिनिधि के रूप में यीशु के पास भेजने का फैसला करता है। पुरनियों का अनुवाद बुजुर्ग लोगों के रूप में किया जाता है। यहां यह ऐसे लोगों को संदर्भित करता है जो अपने स्थानीय यहूदी समुदाय में सम्मानित नेता होते हैं। चूंकि वह अधिकारी यहूदी नहीं है, इसलिए वह मानता है कि उसकी यीशु तक कोई पहुंच नहीं है। वह अधिकारी अपने स्थान पर पुरनियों को यीशु की मदद मांगने के लिए भेजता है। वह अधिकारी चाहता है कि यीशु उसके सेवक को चंगा करें।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपके समुदाय में ऐसा क्या है जो किसी को बाहरी या विदेशी बनाता है? आपके समुदाय में कोई बाहरी व्यक्ति कैसे किसी अग्रणी या शिक्षक तक सम्मानपूर्वक पहुंच पाता है?

यहूदी पुरनिये यीशु से उस अधिकारी के सेवक को चंगा करने की प्रार्थना करते हैं। वे वर्णित करते हैं कि वह अधिकारी एक अच्छा व्यक्ति है। पुरनिये यीशु को बताते हैं कि वह अधिकारी यहूदी लोगों के प्रति मैत्रीपूर्ण है। वे कहते हैं कि उस अधिकारी ने कफरनहूम आराधनालय या यहूदी पूजा स्थल, जहां यीशु ने पहले शिक्षा दी थी, उसके निर्माण में मदद भी की है। इसका मतलब यह नहीं है कि उसने शारीरिक रूप से इसे बनाया था, लेकिन संभावित तौर पर उसने इसके लिए भुगतान किया होगा या रोम की सरकार से उसे बनाने की अनुमति प्राप्त करी होगी। यीशु के द्वारा सेवक को चंगा करने का उनका अनुरोध सीधा सरल लगता है। लेकिन यहूदी संस्कृति में धार्मिक नेता और शिक्षक किसी अन्यजाति या गैर यहूदी व्यक्ति के घर में प्रवेश नहीं करते थे। उनका मानना था कि यह उन्हें परमेश्वर की सेवा के लिए रिवाज़ी तौर पर अशुद्ध या अयोग्य बनाता था। पुरनियों ने शायद यह उम्मीद की थी कि यीशु उस अधिकारी के घर नहीं जाना चाहेंगे। वे बताते हैं कि उस अधिकारी को यीशु के समय और ध्यान की पात्रता क्यों थी।

यीशु उस अधिकारी के घर जाने पर सहमत होते हैं। यीशु जब घर के करीब होते हैं, तो उस अधिकारी के कुछ मित्र एक संदेश के साथ उससे मिलते हैं। उस अधिकारी ने उन्हें यीशु के लिए यह संदेश दिया था: "प्रभु अपने आप को और अधिक आगे आने की तकलीफ न दें। मैं इस योग्य नहीं हूं कि आप मेरे घर में अतिथि के रूप में आएं। चूंकि मैं इस योग्य नहीं हूं, इसलिए मैंने अपने आप आने के बजाय लोगों को आपके पास भेजा था। केवल एक शब्द बोलें और मुझे पता है कि मेरा सेवक चंगा हो जाएगा। मैं अधिकार इसलिए समझता हूं क्योंकि मैं अपने नेताओं की आज्ञा मानता हूं और मेरे सैनिक मेरी आज्ञा मानते हैं। जब मैं आदेश देता हूं, तो वे मेरी आज्ञा मानते हैं क्योंकि वे मेरे अधिकार के तहत हैं।"

इस भाषण में अधिकारी के मित्र ने यीशु को वह संदेश दिया जो उस अधिकारी ने उन्हें कहने के लिए कहा था। उसने वही सूचना दी जो अधिकारी ने कही थी, मानो वह अधिकारी स्वयं इसे बोल रहा हो।

अधिकारी यीशु को संदर्भित करने के लिए प्रभु उपाधि का इस्तेमाल करते हैं। इसका मतलब है स्वामी या किसी वस्तु पर अधिकार रखने वाला कोई जन। अधिकारी ने यीशु को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में पहचाना जिनके पास परमेश्वर से अधिकार था। अधिकारी नहीं चाहता था कि यीशु उसके घर में प्रवेश करें। वे अशिष्ट नहीं हो रहे थे। उस अधिकारी को पता है कि यीशु, जो एक यहूदी शिक्षक हैं, उनके घर में प्रवेश करके यहूदी रीति के अनुसार अशुद्ध हो जाएंगे। वे अशुद्ध हो जाएंगे क्योंकि वह अधिकारी एक अन्यजाति या गैर यहूदी है.. अधिकारी को विश्वास है कि यीशु का वचन मात्र उनके सेवक को दूरी से ही चंगा कर सकता है। वह अधिकारी यीशु को बताता है कि वह जानता है कि किसी अन्य अधिकारी के अधीन होना या अधिकार रखना, अथवा कार्य करने का स्वत्व होना कैसा होता है। अधिकारी को उसके अधिकारियों की आज्ञा पालन करनी पड़ती है और उनके सैनिकों को उनकी आज्ञा मानना पड़ती थी। उस अधिकारी का मानना है कि परमेश्वर ने यीशु को अधिकार दिया था। वे जानते हैं कि जब यीशु कुछ होने की आज्ञा देते हैं तो ऐसा होगा।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में किसके पास अधिकार होते हैं? यदि कोई किसी अधिकारी द्वारा दी गई आज्ञा का पालन नहीं करता है, तो क्या होता है? किसी आदेश को मानना किस स्थिति में महत्वपूर्ण होता है?

अधिकारियों के वचन यीशु को प्रसन्न और आश्चर्यचकित करते हैं। यीशु प्रसन्न होते हैं कि उस अधिकारी को उन पर ऐसा विश्वास है। यीशु भीड़ की ओर मुड़ते हैं और उन्हें बताते हैं कि उन्होंने इस्राएल में भी ऐसा महान विश्वास नहीं देखा है। इस्राएल कहने से यीशु का मतलब सभी यहूदी लोगों से होता है। यीशु ने यहूदियों द्वारा उन पर विश्वास करने की उम्मीद की थी, लेकिन उन्हें किसी अन्यजाति या गैर यहूदी से उन पर ऐसे विश्वास करने की उम्मीद नहीं थी। लूका यहूदियों के अविश्वास और अन्यजातियों के विश्वास की तुलना करते हैं। वह अधिकारी जानता था कि यीशु का एक शब्द भी उनके सेवक को चंगा कर सकता है। जब अधिकारी के मित्र अधिकारी के घर लौटते हैं, तो वे पाते हैं कि वह सेवक बीमार नहीं है बल्कि चंगा हो गया है।

यहूदी लोगों के समुदाय से बाहर के लोगों को परमेश्वर के राज्य में शामिल करने के बारे में लूका बहुत कुछ लिखते हैं। यह यीशु के बारे में उन कहानियों में से एक है जिसका इस्तेमाल लूका हमें यह याद दिलाने के लिए करते हैं कि यीशु अपने राज्य में सभी लोगों को शामिल करना चाहते थे। ऐसा करने के लिए लोगों को केवल एक ही बात की जरूरत

थी[,]{.mark} वह थी उन पर विश्वास करना। अधिकारी के घर में प्रवेश करने और अधिकारी के विश्वास की प्रशंसा करके यीशु ऐसा विशेष रूप से करते हैं। यह कथा भविष्यद्वक्ता एलिय्याह के समान है जिन्होंने भी एक अन्यजाति सैनिक को चंगा किया था। यीशु परमेश्वर प्रदत्त अपने अधिकार और मसीहा या वादा किए गए उद्धारकर्ता के रूप में अपनी पहचान का प्रदर्शन कर रहे होते हैं।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 7:1–10

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य कल्पांकित करने में समूह की मदद करेंगे। आप कथा के दृश्यों, विन्यास और पात्रों को परिभाषित करने में समूह की मदद करेंगे।

इस कहानी के चार दृश्य हैं।

पहला दृश्य: यीशु शहर के बाहर शिक्षा देने के बाद अपने अनुयायियों के साथ कफरनहूम में प्रवेश करते हैं। यहूदी पुरनिये यीशु के पास पहुंचते हैं। वे एक सूबेदार की ओर से यीशु से उस सूबेदार के बीमार सेवक को चंगा करने के लिए निवेदन करते हैं।

दूसरा दृश्य: यीशु सूबेदार के घर जाने के लिए सहमत होते हैं। जब वे चल रहे होते हैं, तो सूबेदार के मित्र एक संदेश के साथ यीशु से मिलते हैं। सूबेदार यीशु से केवल एक ही शब्द बोलने को कहता है कि उसका सेवक चंगा हो जाएगा।

तीसरा दृश्य: यीशु आश्चर्यचकित हैं। वे अपने अनुयायियों से कहते हैं कि उन्होंने इस्राएल में ऐसा विश्वास नहीं देखा।

चौथा दृश्य: सूबेदार के मित्र उसके घर लौटते हैं और पाते हैं कि सेवक चंगा हो गया है।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- सूबेदार
- सूबेदार का सेवक
- यहूदी पुरनिये
- सूबेदार के मित्र
- यीशु के अनुयायी
- भीड़

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल (ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप इधर उधर रख सकते हैं जैसे पत्थर, लकड़ियां, बच्चों के खिलौने) का इस्तेमाल करे।

लोगों को पढ़ाने के बाद यीशु कफरनहूम वापस जाते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि सामान्य तौर पर यहूदी रोमवासियों को पसंद नहीं करते थे। लेकिन इस नगर के यहूदी इस रोमन अधिकारी को पसंद करते हैं क्योंकि वह उनके प्रति मैत्रीपूर्ण रहा होता है।

एक रोमन अधिकारी है। उनका एक सेवक बीमार है, जो मरणासन्न अवस्था में है। उस अधिकारी ने यीशु के और उनके द्वारा किए गए सामर्थ्य कर्मों के बारे में सुना था। कुछ यहूदी नेता यीशु के पास आते हैं। यहूदी नेता यीशु से रोमन अधिकारी की मदद करने और सेवक को चंगा करने के लिए कहते हैं। यहूदी नेताओं ने बताया कि यह अधिकारी यहूदियों से कितना प्यार करता था।

रोमन अधिकारी यीशु के करीब होने से स्वयं को अयोग्य महसूस करता है। इसीलिए वह यहूदी पुरनियों को भेजता है।

यीशु उस व्यक्ति की मदद करने के लिए सहमत होते हैं। वह यहूदी पुरनियों के साथ अधिकारी के घर की ओर जाने लगता है। रोमन अधिकारी यीशु को रोकने के लिए कुछ मित्रों को भेजता है। मित्र यीशु को बताते हैं कि वह अधिकारी स्वयं को उसके घर में यीशु के आतिथ्य के योग्य नहीं समझता है।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि रोमन अधिकारी इस बात से अत्यंत परिचित हैं कि प्राधिकरण की श्रृंखला किस तरह काम करती है।

रोमन अधिकारी यीशु से केवल बोलने के लिए कहते हैं और उसका सेवक चंगा हो जाएगा।

रोमन अधिकारी अपने ऊपर अधिकार और सैनिकों पर उसके अधिकार की तुलना उस अधिकार के साथ करता है जो यीशु के पास परमेश्वर से है।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु उस अधिकारी के स्पष्ट विश्वास को सार्वजनिक रूप से ज्ञात करा रहे होते हैं। यीशु के वचन इस्राएल में अधिकारी और यहूदियों के बीच की तुलना दर्शाते हैं।

अधिकारी के मित्रों के संदेश को सुनकर यीशु चकित होते हैं। यीशु भीड़ को बताते हैं कि उन्होंने पूरे इस्राएल में ऐसा विश्वास नहीं देखा था। अधिकारी के मित्र जब अधिकारी के घर पहुंचते हैं, तो वे सेवक को चंगा पाते हैं।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 7:1–10

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी के चार दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- सूबेदार / रोमन अधिकारी
- सूबेदार का सेवक
- यहूदी पुरनिये
- सूबेदार के मित्र
- यीशु के अनुयायी
- भीड़

मण्डली से कहानी का दो बार अभिनय करवाएं। पहली बार टीम से बिना रूके कहानी का अभिनय करवाएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है तब उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, तब कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

यह सुनिश्चित करें कि मण्डली इस बात कर अभिनय करे कि सूबेदार यीशु के करीब कभी नहीं होता बल्कि अपने घर में ही रहता है।

यह सुनिश्चित करें कि मण्डली यीशु द्वारा भीड़ से बात करने के लिए मुड़ने का अभिनय करे। इससे अधिकारी के विश्वास के महत्व पर जोर दर्शित होता है।

दूसरी बार जब मण्डली इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

यीशु का कफरनहूम में प्रवेश करने का अभिनय करें। यहूदी पुरनियें उन्हें मार्ग में रोकते हैं। वे सूबेदार के बारे में यीशु को बताते हैं। वे उन्हें अधिकारी के सेवक को चंगा करने के लिए कहते हैं जिसके प्रति अधिकारी प्रेम और सम्मान रखता है। **अभिनय को बंद करें।** पुरनियों का किरदार निभाने वाले कलाकारों से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप सुन सकते हैं, "मुझे उम्मीद है कि यीशु आएंगे।" "मुझे पता है कि यह एक अजीब अनुरोध है।" "यह अधिकारी हमारे लोगों के प्रति इतना सदय है। वह यीशु के ध्यान के योग्य है।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु द्वारा भीड़, उनके चेलों, और यहूदी पुरनियों के साथ सूबेदार के घर तक जाने का अभिनय करें। सूबेदार अपने मित्रों को एक संदेश के साथ यीशु के पास भेजता है। वह यीशु को बताता है कि वह न आए, बल्कि केवल एक शब्द कहे कि उसका सेवक चंगा हो जाएगा। **अभिनय को बंद करें।** सूबेदार का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आपको कैसा महसूस होता है?" आप सुन सकते हैं, "मैं इस योग्य नहीं हूं कि यीशु मेरे घर में प्रवेश करें।" "मुझे पता है कि यीशु के पास परमेश्वर से अधिकार है।" "अगर वे केवल कह ही देंगे, तो भी मेरा सेवक चंगा हो जाएगा।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

सूबेदार के मित्रों का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आपको कैसा महसूस होता है?" आप सुन सकते हैं, "उनके सेवक के बारे में क्या?" "किसी के भी पास दूरी से चंगा करने की शक्ति नहीं है।" "उन्होंने उन्हें घर में आने से क्यों रोका?" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु द्वारा चकित होने की अदाकारी करें। वे अपने अनुयायियों को बताते हैं कि उन्होंने इस्राएल में ऐसा विश्वास नहीं देखा। **अभिनय को बंद करें।** अनुयायियों का किरदार निभाने वाले कलाकारों से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप सुन सकते हैं जैसे "उलझन में हैं।" "एक अन्यजाति को परमेश्वर पर विश्वास कैसे हो सकता है?" "क्या हमने विश्वास नहीं दिखाया?" अभिनय को फिर से शुरू करें।

सूबेदार के मित्र सूबेदार के घर लौट आते हैं और सेवक पूरी तरह चंगा हो जाता है।

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 7:1–10

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु कफरनहूम लौट जाते हैं। एक **सूबेदार** है जो कफरनहूम में रहता है। सूबेदार एक सैन्य अधिकारी होता है जो 100 सैनिकों का नेतृत्व करता है। यह सूबेदार एक अन्यजाति और रोमन था। उसी शब्द का इस्तेमाल करना याद रखें जो आपने पहले भी इस्तेमाल किया है। सूबेदार शब्द प्रधान शब्दावली में हैं।

यदि आपने ऐसा पहले से नहीं किया है तो रुकें और किसी सूबेदार का एक चित्र दिखाएं।

सूबेदार का सेवक बीमार होता है। **सेवक** के लिए यूनानी शब्द दास के रूप में अनुवादित होता है। सेवकों के पास कोई अधिकार नहीं होता था और वे बिना भुगतान पाए अपने स्वामी के लिए काम करते थे। सेवक शब्द प्रधान शब्दावली में है। उसी शब्द का प्रयोग करना याद रखें जिसे आपने पिछले चरणों में इस्तेमाल किया है।

लूका बताते हैं कि सूबेदार उस सेवक को **अत्यधिक मूल्यवान समझता** है। इसका मतलब केवल यही है कि वह बहुमूल्य, सम्मानित और आदरणीय था। सूबेदार अपने सेवक से प्यार करता था और उसे महत्वपूर्ण समझता था।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में इस तरह के एक सेवक के बारे में आप कैसे बात करेंगे? आप किन शब्दों का इस्तेमाल करेंगे?

सूबेदार यहूदी पुरनियों को यीशु से बात करने के लिए भेजता है। वे यीशु से सूबेदार की मदद करने का अनुरोध करते हैं क्योंकि **वह हमारे राष्ट्र से प्यार करता है।** यहां राष्ट्र यहूदी लोगों को संदर्भित करता है न कि एक राजनीतिक राज्य को। **राष्ट्र** शब्द प्रधान शब्दावली में है। इसमें यहूदी **पुरनियें** और यीशु भी शामिल थे। पुरनिये शब्द प्रधान शब्दावली में है। पुरनिये कह रहे हैं कि रोमन अधिकारी मैत्रीपूर्ण है और यहूदी लोगों की मदद करता है। अधिकारी ने जिस एक तरीके से यह दिखाया, वह था यहूदियों को कफरनहूम आराधनालय के निर्माण में मदद करना। **आराधनालय** के लिए उसी अनुवाद का इस्तेमाल करना सुनिश्चित करें जैसा कि आपने पिछले अंशों में किया है। **आराधनालय** शब्द प्रधान शब्दावली में हैं।

यीशु उस अधिकारी के घर जाने पर सहमत होते हैं। वहां पहुंचने से पहले अधिकारी के मित्र सूबेदार का एक संदेश देने के लिए यीशु से मिलते हैं। सूबेदार कहता है, "**प्रभु, अपने आप को परेशान न करें।**" यहां प्रभु का मतलब है स्वामी या एक ऐसा व्यक्ति जिसके पास अधिकार होते हैं। सूबेदार समझता है कि यीशु को परमेश्वर से अधिकार प्राप्त हैं। प्रभु शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है। खुद को परेशान न करें यह कहने का एक शिष्ट तरीका है, "मैं आपको परेशान करना या असुविधा में डालना नहीं चाहता।" अधिकारी नहीं चाहता कि उसके घर में प्रवेश करके यीशु अशुद्ध या परमेश्वर की सेवा के लिए अयोग्य हों, क्योंकि वह एक अन्यजाति हैं। अधिकारी जानता है कि उनके लिए उसके घर में प्रवेश करना आवश्यक नहीं है क्योंकि वे उसके सेवक को दूरी से भी चंगा कर सकते हैं। अधिकारी का मानना है कि यीशु के पास परमेश्वर से चंगा करने का **अधिकार** है। अधिकार का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। अधिकार शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है..

जब सूबेदार इस वाक्यांश का इस्तेमाल करता है, **मेरी छत के तले आना।** इसका मतलब है "मेरे घर में प्रवेश करना।"

एक अतिथि के रूप में किसी व्यक्ति का अन्य व्यक्ति के घर में आने को संदर्भित करने के लिए आपकी भाषा में एक स्वाभाविक वाक्यांश का इस्तेमाल करें।

यीशु **चकित** होते हैं। यह एक सकारात्मक प्रतिक्रिया है। वे सूबेदार के विश्वास पर प्रसन्न और चकित होते हैं। यीशु कहते हैं, "**मुझे इस्राएल में ऐसा महान विश्वास नहीं मिला।**" यहां विश्वास का मतलब है मान्यता या भरोसा कि यीशु कोई एक चीज़ कर सकते हैं। विश्वास का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले किया है। **विश्वास** शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है। जब यीशु इस्राएल कहते हैं, तब वे सम्पूर्ण यहूदी लोगों का जिक्र कर रहे होते हैं। यहूदियों का मानना था कि यीशु किसी को छूने पर चंगा कर सकते थे। लेकिन अन्यजाति अधिकारी का मानना था कि यीशु दूरी पर से केवल एक शब्द बोल कर ही चंगा कर सकते थे।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 7:1–10

Audio Content

webm zip (3256217 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (5601609 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 7:11–17

सुनना और मनन करना

लूका 7:11–17 सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे इस कथा को सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 7:11–17

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

सूबेदार के एक सेवक को चंगा करने के बाद यीशु और उनके शिष्य कफरनहूम से नाईन नामक एक गलीली नगर को जाते हैं। लूका एक विधवा, जिसने अभी-अभी अपने बेटे को खो दिया था, के प्रति यीशु की करुणा पर केंद्रित होते हैं। यीशु उसके बेटे को पुनर्जीवित करते हैं, और लोग अचम्भित होते हैं। यीशु की प्रसिद्धि समूचे यहूदिया और आसपास के क्षेत्रों में फैलती जाती है।

सूबेदार के सेवक को चंगा करने के कुछ समय बाद यीशु कफरनहूम से नाईन नामक एक नगर को जाते हैं। यीशु के शिष्य और एक बड़ी भीड़ उनके पीछे पीछे जाती है। नाईन का छोटा सा नगर नासरत से केवल छह मील या 9.6 किमी की दूरी पर था। यह कफरनहूम से 25 मील या 40.2 किमी की दूरी पर था।

रुकें और अपनी टीम को एक ऐसा नक्शा दिखाएं, जिसमें नाईन, नासरत और कफरनहूम स्थित हों। यीशु ने जो मार्ग लिया होगा उसे विशिष्ट रूप से दर्शाएं।

यीशु नगर के फाटक पर या उस प्रवेश द्वार पर पहुंचते हैं जहां लोग शहर में आते और बाहर जाते थे। यीशु एक मृत व्यक्ति को शहर से बाहर दफनाने के लिए ले जाते हुए देखते हैं। लूका इस बात पर विशेष ध्यान दिलाते हैं कि मृत व्यक्ति एक विधवा का एकमात्र पुत्र था। विधवा एक ऐसी महिला होती थी जिसके पति की मृत्यु हो गई हो। समुदाय के लोगों की एक भीड़ उनके साथ उनके एकमात्र पुत्र के गुज़र जाने पर शोक व्यक्त करती हुई होती है। यहूदी संस्कृति में, पिता के गुज़र जाने पर अपनी मां के लिए प्रावधान करने की ज़िम्मेदारी पुत्र की होती थी। बिना पति या पुत्र के महिला को कोई सहारा नहीं होता था। वे अब अपने समुदाय में एक बहुत निम्न सामाजिक स्थिति में होती थीं।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति विधवाओं के साथ कैसे व्यवहार करती है? उनकी देखभाल करने के लिए कौन जिम्मेदार होता है?

लूका यीशु को प्रभु के रूप में या एक ऐसे व्यक्ति के रूप में संदर्भित करते हैं जिनके पास अधिकार होते हैं। यहूदी इस शब्द का इस्तेमाल परमेश्वर को संदर्भित करने के लिए भी करते थे। यीशु उस स्त्री को देखते हैं और उनके प्रति उन्हें करुणा महसूस होती है। यीशु उनकी मदद करना चाहते हैं।

यीशु उस स्त्री को कहते हैं, "मत रो।" इसका तात्पर्य यह है कि वह स्त्री पहले से ही रो रही थी। यीशु जानते हैं कि वे उनके बेटे को वापस जीवित करेंगे और उसे आनन्द का कारण देंगे। तब यीशु उस ताबूत या शिविका या अर्थी के पास जाते हैं जिसे मृत शरीर को ले जाने के लिए इस्तेमाल किया जा रहा था। वे उस ताबूत को छूते हैं और जो लोग शव को ले जा रहे थे, वे चलना बंद कर ठहर गए। यह महत्वपूर्ण था। यहूदी संस्कृति में एक मृत शरीर को छूना किसी को अशुद्ध या परमेश्वर की सेवा के अनुपयुक्त बना देता था।

रुकें और अपनी टीम को ताबूत/अर्थी का एक चित्र दिखाएं, जिसका इस्तेमाल मृतकों को ले जाने के लिए किया जाता था।

यीशु मृत देह को कहते हैं, "नवयुवक मैं तुमसे कहता हूं, उठ।" यीशु शव को "नवयुवक" कहते हैं। यहूदी संस्कृति में यह शब्द एक ऐसे लड़के को संदर्भित करता है जिसकी आयु 14 वर्ष से अधिक हो, लेकिन जिसका अभी तक विवाह नहीं हुआ हो। चूंकि यीशु ने कहा, "मैं तुमसे कहता हूं।" इससे पता चलता है कि वे एक आदेश दे रहे हैं। उनका आदेश किसी मृत शरीर को वापस जीवित करने के लिए पर्याप्त सामर्थ्यशाली था। यीशु उस युवक के फिर से जीने का कारण बनते हैं और वह उस शिविका पर उठ कर बैठ जाता है। वह युवक बोलने लगता है और यीशु उसे उसकी मां के सामने प्रस्तुत करते हैं।

लोग भय और विस्मय अनुभव करते हैं कि यीशु के पास एक मृत व्यक्ति को वापस जीवित करने का सामर्थ्य है। वे जानते हैं कि परमेश्वर ने यीशु को यह सामर्थ्य दिया होता है, इसलिए वे परमेश्वर की स्तुति करने लगते हैं। लोग यीशु को एक महान भविष्यद्वक्ता या परमेश्वर के लोगों के लिए उनका प्रतिनिधि कहते हैं। उन्होंने यीशु को एक महान भविष्यद्वक्ता कहा क्योंकि यीशु ने उन्हें भविष्यद्वक्ता एलिय्याह की याद दिलाई।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। यदि किसी को वापस जीवित किया जाए तो आपके नगर में क्या होगा?

एलिय्याह यहूदियों के लिए एक प्रसिद्ध भविष्यद्वक्ता थे। एक कारण जिसके लिए वे प्रसिद्ध थे, वह यह था कि उन्होंने परमेश्वर के सामर्थ्य के माध्यम से एक विधवा के मृत पुत्र को पुनर्जीवित किया था। एलिय्याह को लड़के को पुनर्जीवित करने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करनी पड़ी थी। लेकिन यीशु सीधे मृत शरीर से बोलते हैं और लड़के के पुन: जीवित होने का कारण बनते हैं। इससे पता चलता है कि यीशु के पास परमेश्वर का अधिकार और सामर्थ्य है। इसी कारण लूका उन्हें प्रभु कहते हैं।

लोग कहते हैं कि परमेश्वर यीशु को भेजने के माध्यम से उनके लोगों की मदद करने आए हैं। उनके लोग यहूदियों को संदर्भित करता है। यीशु के बारे में समाचार यहूदियों के पूरे देश और उसके आसपास के स्थानों में फैल गया।

लूका इस कथा के माध्यम से दिखाते हैं कि यीशु के पास मृत को जीवित करने का परमेश्वरीय सामर्थ्य और अधिकार है। लूका यीशु को प्रभु कहकर यह भी दर्शाते हैं कि वे एक भविष्यद्वक्ता मात्र से कहीं अधिक हैं। ऐसा एक बड़ा सामर्थ्य कर्म यीशु के बारे में सारे यहूदिया और आसपास के देशों में समाचार प्रसारित होने का कारण बनता है।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 7:11–17

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य कल्पांकित करने में समूह की मदद करेंगे। आप कथा के दृश्यों, विन्यास और पात्रों को परिभाषित करने में समूह की मदद करेंगे।

इस कहानी के चार दृश्य हैं।

पहला दृश्य: यीशु कफरनहूम से नाईन की यात्रा करते हैं। एक बड़ी भीड़ और उसके शिष्य उनके पीछे चलते हैं।

दूसरा दृश्य: यीशु नाईन पहुंचते हैं और शहर के बाहर एक मृत शरीर को ले जाया जा रहा देखते हैं। वह मृतक एक विधवा का एकमात्र पुत्र था। एक भीड़ उसकी गमी का शोक मनाने के लिए साथ होती है।

तीसरा दृश्य: यीशु महिला के प्रति करुणा महसूस करते हैं। वे उन्हें कहते हैं कि वे न रोएं। यीशु ताबूत को छूते हैं और नवयुवक को उठ कर बैठने के लिए कहते हैं। युवक वापस जीवित होकर उठ कर बैठ जाता है। वह बोलने लगता है। यीशु उसे उसकी मां के सामने प्रस्तुत करते हैं।

चौथा दृश्य: लोग चकित होते हैं। वे परमेश्वर की स्तुति करते हैं। वे यीशु के बारे में बात करना शुरू करते हैं और पूरे यहूदिया में उनके बारे में समाचार फैल जाता है।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- भीड़
- शिष्य
- विधवा
- नाईन का जनसमुदाय
- ताबूत उठाने वाले
- युवा पुत्र

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल (ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप इधर उधर रख सकते हैं जैसे पत्थर, लकड़ियां, बच्चों के खिलौने) का इस्तेमाल करे।

यीशु अपने पीछे एक बड़ी भीड़ के साथ गांव के पास पहुंच रहे होते हैं। वे नगर के फाटक पर पहुंचते हैं। यह नाईन का प्रवेश द्वार था जहां से लोग नगर के भीतर और बाहर जाते थे। गांव से बाहर एक शवयात्रा आ रही होती है।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि विधवा का अब उनके समुदाय में निम्न दर्जा था क्योंकि उनका एकमात्र पुत्र मर चुका था। उनके परिवार में उनका ख्याल रखने के लिए कोई नहीं बचा था।

उस विधवा के एकमात्र पुत्र का अभी-अभी निधन हो गया था। नाईन की एक भीड़ उसके साथ होती है। यीशु उसके लिए बहुत करुणा महसूस करते हैं। यीशु उसे कहते हैं कि वे न रोएं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि ताबूत को छूना यहूदी विधान के अनुसार किसी को अशुद्ध बना देता था। यीशु इस कानून की अनदेखी करते हैं और सामर्थ्यशाली ढंग से मृत शरीर में जीवन वापिस लाते हैं। इससे पता चलता है कि उनके पास परमेश्वर का सामर्थ्य और अधिकार है।

यीशु ताबूत को छूते हैं। ताबूत को लेकर चलने वाले लोग ठहर जाते हैं। यीशु मृत व्यक्ति से बोलते हैं। यीशु कहते हैं, नवयुवक उठ जाओ। मृत लड़का उठकर बात करने लगा। यीशु उसे उसकी मां को वापस दे देते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु शारीरिक रूप से लड़के को उसकी मां को वापस नहीं देते हैं। जीवित हो उठने पर यीशु उस लड़के को अब उसकी मां को केवल प्रस्तुत कर रहे होते हैं।

भीड़ यह कहते हुए परमेश्वर की स्तुति करती है कि इस दिन परमेश्वर उनके यहां आए हैं। इस बारे में समाचार यहूदिया और ग्रामीण क्षेत्र में फैल गया।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 7:11–17

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी के चार दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- भीड़
- शिष्य
- विधवा
- नाईन का जनसमुदाय
- ताबूत उठाने वाले
- युवा पुत्र

मण्डली से कहानी का दो बार अभिनय करवाएं। पहली बार टीम से बिना रूके कहानी का अभिनय करवाएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है तब उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, तब कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

यह सुनिश्चित करें कि टीम दो अलग-अलग भीड़ों का अभिनय करे, एक यीशु के पीछे चलने वाली और दूसरी नाईन से।

यह सुनिश्चित करें कि मण्डली यीशु द्वारा ताबूत को छूने के लिए निकट आने पर भीड़ के आश्चर्यचकित होने का अभिनय करती है।

दूसरी बार जब मण्डली इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

यीशु द्वारा नाईन तक यात्रा करने का अभिनय करें। भीड़ और उनके शिष्य उनके पीछे-पीछे चलते हैं। नगर के फाटक से बाहर यीशु लोगों को एक मृत शरीर ले जाते हुए देखते हैं। वह एक विधवा का एकमात्र पुत्र है। **अभिनय को बंद करें।** यीशु का पात्र निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "दया।" "करुणा।" "मैं उसकी मदद करना चाहता हूं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु द्वारा विधवा को न रोने के लिए बताने का अभिनय करें। **अभिनय को बंद करें।** विधवा का पात्र निभाने वाली अभिनेत्री से पूछें, "आप कैसा महसूस करती हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "स्तम्भित हूं।" "उनका क्या मतलब है?" "मैं क्यों न रोऊं? मेरा पुत्र मर चुका है।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु द्वारा ताबूत छूने का अभिनय करें। ताबूत उठाने वाले लोग चलना रोक देते हैं। **अभिनय को बंद करें।** ताबूत उठाने वाले लोगों का पात्र निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "अचम्भित हैं। "वे अशुद्ध क्यों हो रहे हैं?" "वे क्या करने जा रहे हैं?" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु द्वारा उस युवक को उठने का कहने की अदाकारी करें। युवक उठकर बोलने लगता है। यीशु उसे उसकी मां के सामने प्रस्तुत करते हैं। **अभिनय को बंद करें।** विधवा का पात्र निभाने वाली अभिनेत्री से पूछें, "आप कैसा महसूस करती हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "विस्मयाभिभूत हैं।" "मैं जो देख रही हूं उस पर विश्वास नहीं होता!" "मैं इतनी आभारी हूं कि परमेश्वर ने यीशु को मेरे बेटे को मुझे वापस देने का सामर्थ्य दिया।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

भीड़ द्वारा यीशु के प्रति विस्मयाभिभूत होने का अभिनय करें। वे परमेश्वर की स्तुति करते हैं। वे यीशु को एक महान भविष्यद्वक्ता कहते हैं। यीशु के समाचार यहूदिया और आसपास के देशों में फैल जाते हैं। **अभिनय को बंद करें।** भीड़ का पात्र निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "वे एलिय्याह की तरह ही हैं।" "यीशु को सचमुच परमेश्वर की ओर से भेजा गया है।" "आज जो कुछ भी हुआ वह मुझे सभी को बताना होगा।"

लूका *7:11–17*

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 7:11–17

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु कफरनहूम से नाईन की यात्रा करते हैं। उनके **शिष्यों** और करीबी अनुयायियों की एक बड़ी भीड़ उनके साथ होती है। शिष्यों का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने लूका के पिछले अंशों में किया है। शिष्य शब्द प्रधान शब्दावली में हैं।

रुकें और अगर आपने पहले से ऐसा नहीं किया है तो, यीशु ने कफरनहूम से नाईन तक का जो मार्ग तय किया था उसका मानचित्र अपनी टीम को दिखाएं।

यीशु नाईन नगर के फाटक पर पहुंचते हैं। **नगर** का **फाटक** नगर के उस प्रवेश द्वार को संदर्भित करता है जिससे लोग नगर के भीतर और बाहर जाते थे। कई नगरों के आसपास दीवारें होती थीं और नगर का फाटक दीवार का एक द्वार था। तथापि, नाईन का वर्तमान गांव कभी भी उसके आसपास दीवारें होने का कोई संकेत नहीं दिखाता है, इसलिए वह शायद एक प्रवेश द्वार था।

रुकें और अगर आपने पहले से ऐसा नहीं किया है तो अपनी टीम को नगर के फाटक का एक चित्र दिखाएं।

लूका अपने दर्शकों का ध्यान आकर्षित करने के लिए एक ऐसे शब्द का इस्तेमाल करते हैं जिसका मतलब होता है **देखो**। इस शब्द का मतलब है कि वे कुछ महत्वपूर्ण कहने जा रहे हैं। लूका चाहते हैं कि उनके दर्शक उस सामर्थ्य कर्म पर ध्यान दें, जो मृतक को उठाने के लिए यीशु प्रदर्शित करेंगे। हर संस्करण में यह शब्द शामिल नहीं है, लेकिन यह दर्शाने के लिए कि लूका चाहते हैं कि लोग ध्यान दें, आप उसका एक स्वाभाविक तरीका पता करना चाहेंगे।

लूका यीशु को **प्रभु** कहते हैं। इसका मतलब है स्वामी या एक ऐसा व्यक्ति जिसके पास अधिकार होते हैं। यहूदी इस शब्द का इस्तेमाल परमेश्वर को संदर्भित करने के लिए भी करते थे। **प्रभु** का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने उसे पिछले अंशों में किया है। **प्रभु** शब्द प्रधान शब्दावली में हैं।

यीशु विधवा या उस महिला को देखते हैं जिसके पति का निधन हो गया था। **उनका दिल उसके प्रति दया से उमड़ पड़ा।** इस वाक्यांश का मतलब है यीशु ने उसके लिए करुणा महसूस की।

क्या आपकी भाषा में ऐसा वाक्यांश है जो किसी की परिस्थिति के कारण किसी और द्वारा दया या करुणा महसूस कराने को अभिव्यक्त करता है? आप उस वाक्यांश का इस्तेमाल यहां कर सकते हैं।

यीशु उस स्त्री से कहते हैं कि वह न रोएं। फिर वे **ताबूत या अर्थी** को छूते हैं। इस संदर्भ में ताबूत का संदर्भ एक शिविका या टिखठी से है जिसका इस्तेमाल किसी मृत व्यक्ति को उसके दफनाने के स्थान पर ले जाने के लिए किया जाता था। यह शायद लकड़ी का बक्सा नहीं था।

यीशु मृत शरीर से बात करते हैं और उसे उठने का आदेश देते हैं। **मृत व्यक्ति उठ कर बैठ जाता है।** इस वाक्यांश का मतलब है यीशु उस व्यक्ति के पुनः जीवित होने का कारण बनते हैं और परिणामस्वरूप वह उठ कर बैठ जाता है। सुनिश्चित करें कि इसका अनुवाद इस तरह न करें, जिसका तात्पर्य हो कि जब वह उठ कर बैठता है, तब वह मृत ही था।

सामर्थ्य कर्म के कारण लोग चकित होते हैं। वे यीशु को एक महान भविष्यद्वक्ता कहते हैं। **एक महान भविष्यद्वक्ता** ऐसे भविष्यद्वक्ता को संदर्भित करता है जिन्होंने अद्भुत सामर्थ्य कर्म करने के लिए परमेश्वर की सामर्थ्य का इस्तेमाल किया था। यहूदी शायद यीशु की तुलना एलिय्याह और एलीशा से कर रहे थे जिन दोनों ने ही किसी मृत जन को जीवित किया था। भविष्यद्वक्ता का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने लूका के पिछले अंशों में किया है। **भविष्यद्वक्ता** शब्द प्रधान शब्दावली में हैं।

लोग कहते हैं कि **परमेश्वर उनके लोगों की मदद करने आए हैं।** उनके लोग यहूदियों को संदर्भित करता है। लोग यह पहचानते हैं कि परमेश्वर यीशु के माध्यम से उनकी मदद कर रहे थे।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 7:11–17

Audio Content

webm zip (2791101 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (4791495 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 7:18–35

सुनना और मनन करना

लूका 7:18–35 सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे इस कथा को सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 7:18–35

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु ने गलील के क्षेत्र में कई चमत्कार किए थे- उन्होंने बीमारों को चंगा किया, दुष्टात्माओं को निकाला, और यहां तक कि एक युवक को फिर से जीवित भी किया। यूहन्ना जब जेल में थे तब उनके अनुयायियों ने इन बातों की सूचना उन्हें दी थी। यूहन्ना उनके दो अनुयायियों को यीशु से यह पूछने के लिए भेजते हैं कि क्या वे मसीहा या प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता हैं। यीशु इस निहितार्थ के साथ् प्रत्युत्तर देते हैं कि वे ही प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता हैं।

नाईन में यीशु द्वारा एक युवक को वापस जीवित करने के बाद समाचार तेजी से फैल गए थे। नाईन में जो कुछ हुआ था उसके बारे में यूहन्ना के शिष्य या अनुयायियों ने समाचार सुने और उसे यूहन्ना को बताया। पिछले अंश से आपको याद होगा कि यूहन्ना जेल में थे क्योंकि गलील के शासक राजा हेरोदेस ने उन्हें वहां कैद किया था।

रुकें और अपनी टीम से पूछें: आपकी संस्कृति में लोगों को किस तरह दंडित किया जाता है? दण्ड का निष्पादन कौन करता है?

यूहन्ना उनके दो अनुयायियों को प्रभु या यीशु के पास भेजते हैं। लूका इस शीर्षक का इस्तेमाल स्वामी या ऐसे व्यक्ति के लिए करते हैं जिसके पास अधिकार होते हैं। यहूदी इस शब्द

का इस्तेमाल परमेश्वर को संदर्भित करने के लिए भी करते थे। अन्य लोगों द्वारा यीशु की पहचान पर संदेह किए जाने के बावजूद यीशु को प्रभु कह कर लूका उनके दर्शकों को यह पुष्टि करते हैं कि यीशु ही प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता हैं। यूहन्ना अपने अनुयायियों को यीशु से यह पूछने के लिए भेजते हैं कि क्या यीशु "वे ही व्यक्ति है जो आने वाले थे।" यह वाक्यांश प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता को संदर्भित करता है। यूहन्ना परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता या दूत थे, जिन्होंने प्रतिज्ञा किए गए आने वाले उद्धारकर्ता के लिए लोगों को तैयार किया था। यूहन्ना को संशय है कि क्या यीशु ही प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता हैं। यूहन्ना को यह पक्का नहीं है क्योंकि वादा किए गए उद्धारकर्ता की सामान्य उम्मीदों के मान से यीशु खरे नहीं उतरते। यीशु अन्यजातियों या गैर यहूदियों का आंकलन नहीं करते थे और यहूदी धार्मिक नेता उनके सेवाकार्य का विरोध करते थे। यूहन्ना उनके दो अनुयायियों को यीशु से यह पूछने के लिए भेजते हैं कि क्या यहूदी किसी और प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता के आने का इंतज़ार करना होगा।

यूहन्ना को बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना के रूप में जाना जाता था क्योंकि विगत में उन्होंने कई लोगों को बपतिस्मा दिया था। बपतिस्मा देने वाला एक ऐसे व्यक्ति को संदर्भित करता है जो लोगों को बपतिस्मा देता है। जिस समय यूहन्ना के अनुयायी इन सवालों को पूछते हैं, उस समय यीशु बीमार लोगों को चंगा करते हैं, दुष्टात्माओं को निकालते हैं और नेत्रहीन लोगों के लिए फिर से देखने का कारण बनते हैं। उनके प्रश्नों का जवाब देने से पहले यीशु ये बातें करते हैं क्योंकि वे चाहते हैं कि वे सामर्थ्य कर्म को देखें।

यीशु यूहन्ना के अनुयायियों या दूतों को, जो कुछ उन्होंने देखा और सुना, उसे यूहन्ना को बताने के लिए कहते हैं। यीशु कहते हैं कि अन्धे देख सकते हैं। जो चल नहीं सकते थे वे अब चल सकते हैं। जिन्हें कुष्ठ या चर्म रोग था, वे अब शुद्ध हैं। जो सुन नहीं सकते थे, वे अब सुन सकते हैं। मृतकों को वापस जीवित कर दिया जाता है। यीशु कहते हैं कि वे कंगालों को शुभ समाचार बता रहे हैं। यीशु इन चमत्कारों को सूचीबद्ध करते हैं क्योंकि ये ऐसी बातें थीं, जिन्हें यशायाह ने प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता द्वारा किए जाने का कहा था। यशायाह एक प्रसिद्ध भविष्यद्वक्ता या परमेश्वर के संदेशवाहक थे। यीशु यह नहीं कहते कि ये काम कौन कर रहा है, लेकिन यह बहुत स्पष्ट है कि वे इन बातों को घटित कर रहे थे। यीशु इस सूची के माध्यम से प्रतिज्ञा कर रहे होते हैं कि वे प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता हैं।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। किसी घटना को याद करने के लिए जब उनसे पूछा जाता है तो गवाह की साक्षियां कितनी विश्वसनीय होती हैं? अतीत में घटित घटनाओं के विश्वसनीय लेखे के लिए आप अपनी संस्कृति में किससे पूछेंगे?

लूका *7:18–35*

यीशु कहते हैं कि धन्य है वह व्यक्ति जो मेरे कारण ठोकर नहीं खाता या संदेह नहीं करता है। इस वाक्यांश का मतलब है कि जो भी इस बात पर संदेह नहीं करता है कि यीशु ही प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता हैं, परमेश्वर उसका समर्थन करेंगे। यीशु शमौन की भविष्यद्वाणी को पूरा करना जारी रखते हैं। शमौन ने यीशु की मां से कहा कि वे कई लोगों के ठोकर का कारण बनेंगे। यीशु का निहितार्थ यह है कि कई लोग उनके द्वारा अपमानित होंगे क्योंकि वे उस प्रकार के प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता नहीं हैं जिनकी उन्हें अपेक्षा थी। यीशु दोनों अनुयायियों को उनके जवाब के साथ यूहन्ना के पास वापस भेजते हैं।

दोनों अनुयायियों के जाने के बाद यीशु ने यूहन्ना के बारे में लोगों से बात की। यीशु उस समय को संदर्भित करते हैं जब यूहन्ना रेगिस्तान या जंगल में उपदेश दे रहे थे। वे लोगों से तीन सवाल पूछते हैं और जवाब का सुझाव देते हैं। यीशु उनसे पूछते हैं कि वे रेगिस्तान में क्यों गए थे। क्या वे हवा में झूलते हुए सरकंडे या लंबे पौधे देखने गए थे? इस सवाल की व्याख्या दो तरीकों से की जा सकती है। पहली व्याख्या कमजोर चरित्र के एक व्यक्ति को संदर्भित करती है जो अक्सर अपने विचारों को बदलता है। यदि आप इस व्याख्या का अनुसरण करते हैं तो यह कहना आसान हो सकता है कि "आप किस तरह का व्यक्ति देखने के लिए रेगिस्तान में गए थे?" दूसरी व्याख्या शाब्दिक है और हवा में झूलने वाले सरकंडे के पौधे को संदर्भित करता है। दोनों ही व्याख्याओं के लिए यीशु के सवाल का जवाब "नहीं" था।

रुकें और अपनी टीम को रेगिस्तान और सरकंडे के पौधे की तस्वीरें दिखाएं।

यीशु उनसे पूछते हैं कि क्या वे महंगे कपड़ों में सज्जित किसी व्यक्ति को देखने रेगिस्तान में गए थे। तब भी इसका अंतर्निहित जवाब नहीं है। यीशु इस बात पर उनका ध्यान दिलाते हैं कि उत्तम वस्त्र पहनने वाले लोग रेगिस्तान में न तो रहते हैं और न ही जाते हैं। इसके बजाय, वे बड़े, महंगे घरों में रहते हैं जहां वे अपने धन का आनंद लेते हैं।

यीशु तीसरी बार सवाल पूछते हैं कि आप क्या देखने गए थे, लेकिन इस बार वे इसका सही जवाब देते हैं। लोग किसी भविष्यद्वक्ता को देखने के लिए रेगिस्तान में गए थे। यीशु कहते हैं कि यूहन्ना किसी भविष्यद्वक्ता से अधिक थे। यूहन्ना को परमेश्वर ने विशेष रूप से प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता के लिए मार्ग तैयार करने के लिए चुना था। यीशु कहते हैं कि यूहन्ना ही वे व्यक्ति हैं जिनके बारे में भविष्यद्वक्ता मलाकी ने सैकड़ों वर्ष पहले लिखा था। मलाकी ने प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता से परमेश्वर के वार्तालाप के बारे में लिखा था। परमेश्वर कहते हैं कि वे प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता के आने के लिए लोगों को तैयार करने के लिए एक दूत भेजेंगे। यहूदी संस्कृति में एक राजा लोगों को यह बताने के लिए कि वे आ रहे थे, किसी दूत को चुनते थे। यीशु कह रहे हैं कि यूहन्ना ही

वे दूत हैं। यूहन्ना ने लोगों को पश्चाताप करने या परमेश्वर की ओर मन फिराने के लिए कह कर तैयार किया। लोगों का बपतिस्मा यूहन्ना द्वारा यह दिखाने के लिए किया गया कि उन्होंने पाप करना बंद कर दिया था और परमेश्वर की आज्ञा पालन करना चाहते थे।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में लोगों की भीड़ किस प्रकार के लोगों को देखने के लिए जाती है? वे किस तरह कपड़े पहनते हैं या बातचीत करते हैं? आपकी संस्कृति में किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति के आगमन की घोषणा कैसे की जाती है?

यीशु कहते हैं कि पृथ्वी पर यूहन्ना से महान कोई व्यक्ति नहीं है। उनका मतलब है कि ऐसा कोई व्यक्ति नहीं था जिसके पास प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता के लिए मार्ग तैयार करने की तुलना में कोई और महत्वपूर्ण भूमिका थी। तथापि, यीशु यह भी कहते हैं कि परमेश्वर के राज्य में सबसे निम्न दर्जे वाले व्यक्ति की स्थिति यूहन्ना से श्रेष्ठतर होती है। यीशु का निहितार्थ है कि परमेश्वर किसी नए तरीके से लोगों पर शासन और उनकी देखभाल कर रहे हैं जो पुराने तरीके से श्रेष्ठतर है। इस नए तरीके में ऐसे लोगों को विशेषाधिकार और सामर्थ्य प्रदान किया गया जो प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता में विश्वास करते थे और परमेश्वर के शासन के प्रति समर्पित थे। यीशु कह रहे हैं कि परमेश्वर के राज्य का नागरिक होना पृथ्वी पर सबसे महान भविष्यद्वक्ता होने से भी अधिक श्रेष्ठतर है।

कर संग्राहकों सहित साधारण लोगों ने कहा कि यूहन्ना को भेज कर परमेश्वर उचित और सही थे। यूहन्ना के माध्यम से उन्हें पश्चाताप करने, या परमेश्वर की ओर फिरकर बपतिस्मा लेने का कहने में परमेश्वर सही थे। लेकिन फरीसियों या धार्मिक नेताओं ने परमेश्वर की योजना को अस्वीकार कर दिया। उन्होंने पश्चाताप करने या बपतिस्मा लेने से इनकार कर दिया।

यीशु पूछते हैं कि उस पीढ़ी के लोगों का वर्णन करने के लिए वे किस तुलना का इस्तेमाल कर सकते हैं। यीशु अपने ही सवाल का जवाब यह कह कर देते हैं कि वे किसी बाजार में खेलने वाले बच्चों के समान हैं। बच्चे किसी शादी में, जहां संगीत और नृत्य है, वहां होने का नाटक करते हैं, लेकिन उनके दोस्त नहीं खेलेंगे। फिर बच्चे किसी अंतिम संस्कार में होने का स्वांग करते हैं, जहां वे उदासी के गीत गाते और रोते हैं, लेकिन उनके दोस्त अभी भी नहीं खेलेंगे। वे संतुष्ट होने से इनकार करते हैं। यीशु कह रहे हैं कि उनके समय के लोग उनसे या यूहन्ना से संतुष्ट नहीं थे।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में बच्चे आमतौर पर कहां खेलते हैं? वे किस तरह के खेल खेलते हैं? किसी यहूदी बाजार का चित्र दिखाएँ।

यीशु बताते हैं कि जब वे रेगिस्तान या जंगल में उपदेश देते थे, तो यूहन्ना किस तरह रहते थे। यूहन्ना रोटी नहीं खाते थे या दाखरस का सेवन नहीं करते थे। इसका मतलब है कि परमेश्वर के प्रति अपने समर्पण को दिखाने के लिए उन्होंने सामान्य भोजन नहीं खाया और किण्वित पेय नहीं पीया। यीशु उन लोगों को बताते हैं कि उन्होंने यूहन्ना को इसलिए अस्वीकार कर दिया था क्योंकि वे इस तरह रहते थे। धार्मिक नेताओं ने कहा कि यूहन्ना के पास एक दुष्टात्मा है क्योंकि वे किसी सामान्य व्यक्ति की तरह नहीं कार्य करते थे। इस वाक्यांश का मतलब है कि उन्होंने सोचा कि एक दुष्टात्मा उनके कार्यों को नियंत्रित कर रही है। धार्मिक नेता यह नहीं मानते थे कि यूहन्ना परमेश्वर के दूत थे।

यीशु कहते हैं कि मनुष्य का पुत्र रोटी खता और दाखरस पीता हुआ आया है। मनुष्य का पुत्र एक उपाधि है जो यीशु स्वयं को संदर्भित करने के लिए उपयोग करते हैं। इसका मतलब है कि वे दोनों ही हैं, मनुष्य भी और उनके पास परमेश्वर की ओर से सभी सामर्थ्य और अधिकार हैं। यीशु अन्य यहूदियों की तरह ही रोटी खाते थे और दाखरस पीते थे। लेकिन लोगों ने उन्हें पेटू या एक ऐसा व्यक्ति कहा जो बहुत अधिक भोजन खाता है। उन्होंने उन्हें एक पियक्कड़ या एक ऐसा व्यक्ति भी कहा जो बहुत अधिक दाखरस पीता है। लोगों ने पापियों या ऐसे लोग जो आदतन परमेश्वर की अवज्ञा करते थे, उनके साथ मैत्री रखने के लिए यीशु की आलोचना भी की। इसमें कर संग्राहक शामिल थे। धार्मिक नेताओं ने यूहन्ना और यीशु दोनों को विभिन्न तरीकों से अस्वीकार कर दिया।

यीशु एक दृष्टांत या नीति वचन के साथ स्वयं की और यूहन्ना की रक्षा करते हैं। वे बुद्धिमत्ता, या समझ का मानवीकरण कर उनके बारे में बात करते हैं। यीशु कहते हैं कि बुद्धिमत्ता उसके बच्चों द्वारा सही सिद्ध होती है। यीशु का मतलब है कि जो लोग सही मायनों में बुद्धिमत्तापूर्ण हैं, वे जिस तरह जीवन जीते हैं, उनके अच्छे परिणामों द्वारा अपनी बुद्धिमत्ता को दर्शाते हैं।

इस कथा में यीशु न केवल एक भविष्यद्वक्ता के रूप में बल्कि जिसके बारे में मलाकी ने भविष्यवाणी की थी, उसके बारे में भी यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की भूमिका की पुष्टि करते हैं। यूहन्ना ही वे व्यक्ति थे जिन्होंने प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता के आने के लिए लोगों को तैयार किया था। यीशु ने यूहन्ना को दिए अपने प्रत्युत्तर में यह भी निहित किया कि वे ही वह प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता हैं, जिनके लिए यूहन्ना ने लोगों को तैयार किया था। यीशु इस बात पर जोर देते हैं कि धार्मिक नेताओं ने यूहन्ना और स्वयं यीशु, दोनों को ही अस्वीकार कर दिया था।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 7:18–35

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य कल्पांकित करने में समूह की मदद करेंगे। आप कहानी के दृश्यों, विन्यास और पात्रों को परिभाषित करने में समूह की मदद करेंगे।

इस कहानी में पांच दृश्य हैं।

पहला दृश्य: यीशु जो कर रहे होते हैं, उस बारे में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के शिष्य उन्हें बताते हैं। यूहन्ना उनके दो शिष्यों को यीशु से यह पूछने के लिए कहते हैं कि क्या यीशु ही मसीहा हैं, या कि उन्हें किसी और के लिए इंतजार करना है। शिष्य यीशु को ढूंढते हैं और इस सवाल को पूछते हैं।

दूसरा दृश्य: जिस समय यूहन्ना के शिष्य सवाल पूछते हैं, उस समय यीशु बीमारियों से लोगों को चंगा कर रहे होते हैं, दुष्ट आत्माओं को निकाल रहे होते हैं, और अन्धे लोगों को दृष्टि दे रहे होते हैं। जो कुछ उन्होंने देखा और सुना है, उसे यूहन्ना को बताने के लिए यीशु यूहन्ना के शिष्यों को कहते हैं। वे कहते हैं कि कंगालों ने अच्छी खबर सुन ली है। यूहन्ना के शिष्य वहां से चले जाते हैं।

तीसरा दृश्य: यीशु यूहन्ना के बारे में भीड़ से बात करते हैं। यीशु उन्हें बताते हैं कि वे किस तरह के मनुष्य को जंगल में देखने के लिए गए थे। यीशु उन्हें बताते हैं कि यूहन्ना एक भविष्यद्वक्ता थे। यीशु बताते हैं कि शास्त्र उनके बारे में मार्ग तैयार करने वाले के रूप में बात करते हैं।

चौथा दृश्य: यीशु उन्हें कहते हैं कि यूहन्ना से अधिक बड़ा कोई भी व्यक्ति कभी जीवित नहीं रहा। लेकिन यीशु उन्हें यह भी बताते हैं कि परमेश्वर के राज्य में सबसे छोटा भी यूहन्ना से बेहतर है। सभी लोग इस बात पर सहमत थे कि परमेश्वर का मार्ग सही था। फरीसी और धार्मिक विशेषज्ञ परमेश्वर की योजना को अस्वीकार कर देते हैं।

पांचवां दृश्य: यीशु इस पीढ़ी की तुलना उन बच्चों से करते हैं जो बजाए गए संगीत का साथ नहीं देते हैं। उसी तरह यूहन्ना ने दाखरस नहीं पीया था, ना ही रोटी खई थी और लोगों ने उनकी आलोचना की। यीशु दावत करते और दाखरस पीते हैं और लोग उनकी भी आलोचना करते हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- यीशु के शिष्य
- यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले
- यूहन्ना के शिष्य
- स्वस्थ हो रहे लोग, नेत्रहीन, बधिर, कुष्ठरोगी, पंगु, दुष्टआत्माएं।
- भीड़
- फरीसी और धार्मिक विशेषज्ञ

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल (ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप इधर उधर रख सकते हैं जैसे पत्थर, लकड़ियां, बच्चों के खिलौने) का इस्तेमाल करे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि जब उनके शिष्य उन्हें यीशु के समाचार बताने के लिए आते हैं, उस समय यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले जेल में थे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि अधिकांश यहूदी किसी ऐसे मसीहा का इंतजार कर रहे थे जो उन्हें रोम से मुक्त कर देगा।

यीशु जो कर रहे थे उसे बताने के लिए यूहन्ना के शिष्य यूहन्ना से मिलने के लिए आते हैं। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले उनके दो शिष्यों को यीशु से यह पूछने के लिए कहते हैं कि क्या यीशु ही मसीहा या प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता हैं। वे जानना चाहते हैं कि क्या उन्हें किसी और का इंतजार करना होगा। शिष्य यीशु से मिलते हैं और इस सवाल को पूछते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु ने तुरंत जवाब नहीं दिया। यीशु सबसे पहले पुराने विधान में बताए गए मसीहा द्वारा किए जाने वाले कार्यों के भविष्यद्कथनानुसार कार्य करते हैं - लोगों को चंगा करना।

जिस समय यूहन्ना के शिष्य सवाल पूछते हैं, उसी समय यीशु लोगों को बीमारियों, दुष्ट आत्माओं से चंगा करते हैं और नेत्रहीनों को दृष्टि देते हैं। यीशु यूहन्ना के शिष्यों से कहते हैं कि जो कुछ उन्होंने देखा और सुना है, कि चंगाई लोगों के पास आई, वह यूहन्ना को बताएं। गरीबों ने अच्छी खबर सुनी।

यूहन्ना के शिष्य वहां से चले जाते हैं। यीशु यूहन्ना के बारे में भीड़ से बात करते हैं। यीशु उन्हें बताते हैं कि वे किस तरह के मनुष्य को जंगल में देखने के लिए गए थे। क्या वे किसी कमज़ोर को देखने के लिए गए थे, जैसे सरकंडे, जो हवा में एक से दूसरी ओर झूलते हैं? नहीं। महंगे कपड़े पहने किसी को? नहीं। क्या वे किसी भविष्यद्वक्ता की तलाश कर रहे थे?

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि भविष्यद्वक्ता यहूदियों के लिए महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि वे परमेश्वर के वचन को लोगों के पास पहुंचाते हैं।

यीशु उन्हें बताते हैं कि यूहन्ना से बड़ा कोई भी व्यक्ति कभी पृथ्वी पर नहीं रहा। लेकिन यीशु उन्हें यह भी बताते हैं कि परमेश्वर के राज्य में सबसे छोटा भी यूहन्ना से बेहतर है। सभी लोग इस बात पर सहमत थे कि परमेश्वर का मार्ग सही था। फरीसी और धार्मिक विशेषज्ञ परमेश्वर की योजना को अस्वीकार कर देते हैं क्योंकि उन्होंने यूहन्ना के बपतिस्मा को अस्वीकार कर दिया था।

यीशु इस पीढ़ी की तुलना उन बच्चों से करते हैं जो बजाए गए संगीत का साथ नहीं देते हैं। वे शिकायत करते हैं कि हमने जश्न का संगीत बजाया लेकिन तुमने नृत्य नहीं किया, हमने अंतिम संस्कार के गीत गाए और आप रोए नहीं। उसी तरह यूहन्ना ने दाखरस नहीं पीया था, ना ही रोटी खई थी और लोगों

ने उनकी आलोचना की। यीशु दावत करते और दाखरस पीते हैं और लोग उनकी भी आलोचना करते हैं।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 7:18–35

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी में पांच दृश्य हैं।

इस कहानी में पात्रों में ये शामिल हैं:

- यीशु
- यीशु के शिष्य
- यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला
- यूहन्ना के शिष्य
- स्वस्थ हो रहे लोग, नेत्रहीन, बधिर, कुष्ठरोगी, पंगु, दुष्टआत्माएं।
- भीड़
- फरीसी और धार्मिक विशेषज्ञ।

मण्डली से कहानी का दो बार अभिनय करवाएं। पहली बार टीम से बिना रूके कहानी का अभिनय करवाएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है तब उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, तब कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

यह सुनिश्चित करें कि जब यूहन्ना के मित्र यीशु के कार्यों के बारे में बताने के लिए उनके पास आते हैं, तब मण्डली यूहन्ना के जेल में होने का अभिनय करे।

यह सुनिश्चित करें कि मण्डली यूहन्ना के शिष्यों द्वारा यीशु के पास आने और यह पूछने का अभिनय करे, कि क्या वे ही वह मसीहा हैं, जिनकी उम्मीद यहूदी कर रहे हैं। यीशु तब तक जवाब नहीं देते जब तक कि वे यूहन्ना के शिष्यों के देखने के लिए सामर्थ्य कर्म का प्रदर्शन नहीं करते। उसके बाद यीशु जवाब देते हैं।

दूसरी बार जब मण्डली इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

यूहन्ना के शिष्यों ने जो देखा उसे यूहन्ना को बताने के लिए आने का अभिनय करें। यूहन्ना उनके दो शिष्यों को बुलाते हैं और उन्हें यीशु के पास यह पूछने के लिए भेजते हैं कि क्या यीशु ही प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता है या उन्हें किसी और की तलाश करने की ज़रूरत है।

अभिनय को बंद करें। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का पात्र निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मुझे यकीन था कि यीशु ही मसीहा हैं," "क्या मैं आश्वासन की तलाश में कुछ गलत कर रहा हूं?" "अगर किसी और को खोजना है, तो मुझे जानने की जरूरत है।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यूहन्ना के शिष्य यीशु को ढूंढते हैं। यूहन्ना के शिष्य यीशु को बताते हैं कि यूहन्ना ने उन्हें भेजा था। वे पूछते हैं कि क्या वे ही वह मसीहा हैं जिसका लोग इंतजार कर रहे थे या उन्हें किसी और की तलाश करनी चाहिए। यीशु उस क्षण लोगों को उनके रोगों से चंगा करते हैं, दुष्ट आत्माओं को निकालते हैं और अन्धों को दृष्टि देते हैं। फिर यीशु उन्हें यह बताते हैं कि जो कुछ भी उन्होंने देखा उसे जाकर वे यूहन्ना को बताएं। अन्धे देखते हैं, लंगड़े चलते हैं, कोढ़ी ठीक होते हैं, बहिरे सुनते हैं और मरे हुए जीवित हो जाते हैं। गरीब शुभ समाचार सुन रहे होते हैं।

अभिनय को बंद करें। यीशु की भूमिका निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "यूहन्ना कठिन दौर से गुज़र रहे हैं," "उन्हें यह जानने की जरूरत है कि क्या हो रहा है," "शास्त्र ने जंगल में मेरी मदद की थी, यह उनकी मदद करेगा।" "वे जान जाएंगे कि मैं कौन हूँ।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यूहन्ना के शिष्य वहां से चले जाते हैं। यीशु ने यूहन्ना के बारे में भीड़ से बात की। यीशु भीड़ से पूछते हैं कि तुम जंगल में किस तरह के आदमी को देखने गए थे? कोई ऐसा जो सरकंडे के समान हो, जो एक ओर से दूसरी ओर झूलता है। यीशु कहते हैं नहीं। यीशु आगे पूछते रहे कि क्या कोई ऐसा जो किसी धनी व्यक्ति की तरह कपड़े पहनता है? यीशु ने नहीं में उत्तर दिया। तब यीशु ने फिर पूछा, क्या तुम किसी भविष्यद्वक्ता की तलाश करते थे? यीशु कहते हैं, हां। वे कहते हैं कि यूहन्ना किसी भविष्यद्वक्ता से भी अधिक हैं। जो वचन परमेश्वर कहते हैं, उसे यूहन्ना पूरा करते हैं। कोई भी यूहन्ना से बड़ा नहीं है, लेकिन स्वर्ग के राज्य में सबसे छोटा यूहन्ना से बड़ा है।

अभिनय को बंद करें। भीड़ की भूमिका निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मुझे खुशी है कि यूहन्ना ने हमें यीशु की ओर संकेत किया," "कोई और यूहन्ना से बड़ा कैसे हो सकता है?" "मैं स्वर्ग के राज्य में कैसे हो सकता हूं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

जब लोगों ने यह बात सुनी, तो वे इस बात पर सहमत थे कि परमेश्वर का मार्ग सही था, क्योंकि उनके पास यूहन्ना का बपतिस्मा था। लेकिन क्योंकि फरीसियों और धार्मिक विशेषज्ञों ने यूहन्ना के बपतिस्मा को अस्वीकार कर दिया था इसलिए उन्होंने परमेश्वर की योजना को अस्वीकार कर दिया।

अभिनय को बंद करें। फरीसी और धार्मिक विशेषज्ञों का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मुझे लगता है

कि यीशु गलत हैं। मुझे पश्चाताप करने की जरूरत नहीं है," "मुझे क्रोध महसूस होता है क्योंकि यीशु कहते हैं कि यूहन्ना सबसे बड़े भविष्यद्वक्ता हैं," "अगर मैं गलत हुआ तो क्या होगा? मैं यूहन्ना के शब्दों में विश्वास नहीं करता।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु पूछते हैं कि वे इस पीढ़ी की तुलना कैसे कर सकते हैं। यीशु उनकी तुलना एक खेल खेलने वाले बच्चों के साथ करते हैं। बच्चे अपने दोस्तों से शिकायत करते हैं क्योंकि वे हर्ष भरे गानों की आवाज़ पर नृत्य नहीं करते हैं और अंतिम संस्कार के गानों की आवाज़ पर रोते नहीं हैं। यीशु कहते हैं कि यूहन्ना ने न तो रोटी खाई और न ही दाखरस पीया और धार्मिक नेता कहते हैं कि उनमें एक दुष्टात्मा है। यीशु दावत करते और दाखरस पीते हैं और धार्मिक नेता तब कहते हैं कि यीशु एक पेटू और पियक्कड़ हैं।

अभिनय को बंद करें। यीशु की भूमिका निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "जो वे कर रहे हैं उसे समझने में उनकी मदद कैसे करूं? " "ऐसे सभी संकेत जिसकी उन्हें जरूरत है, मैं उन्हें दिखा रहा हूं," "मुझे दुख है कि वे स्पष्ट रूप से नहीं देख सकते कि यूहन्ना कौन हैं और मैं कौन हूँ।"

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 7:18–35

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यूहन्ना के शिष्य या अनुयायी यह सुनते हैं कि यीशु ने किसी को फिर से जीवित किया है। वे यह समाचार यूहन्ना को जेल में पहुंचाते हैं।

यूहन्ना उनके दो अनुयायियों को **प्रभु** या यीशु के पास भेजते हैं। प्रभु का मतलब है स्वामी या कोई ऐसा जिसके पास अधिकार हो। लूका इस उपाधि का इस्तेमाल यह पुष्टि करने के लिए करते हैं कि यीशु ही परमेश्वर हैं। प्रभु का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने उसे पिछले अंशों में किया है। प्रभु शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

यूहन्ना के **शिष्य** यीशु से पूछते हैं कि क्या वे ही **आने वाले** या प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता हैं। शिष्यों का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले किया है। शिष्य शब्द प्रधान शब्दावली में हैं। जवाब देने से पहले यीशु लोगों को चंगा करते हैं और **दुष्ट आत्माओं** को निकालते हैं। दुष्टात्माओं का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने लूका के पिछले अंशों में किया है। दुष्टात्मा शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है। यीशु कहते हैं कि उन्होंने जो कुछ भी देखा और सुना, उसे उन्हें यूहन्ना को बताना चाहिए। तब वे उन बातों को सूचीबद्ध करते हैं जो उन्होंने उनके सेवाकार्य में की होती हैं। यीशु कहते हैं कि जिन लोगों को **कुष्ठरोग** था, वे शुद्ध कर दिए गए हैं। कुष्ठ रोग चर्म रोगों को संदर्भित करता है। **शुद्ध** का मतलब है उन्हें परमेश्वर की सेवा करने के लिए योग्य बनाया गया था। कुष्ठरोग और शुद्ध शब्द प्रधान शब्दावली में पाए जा सकते हैं। दोनों शब्दों का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले किया है।

यीशु यह भी कहते हैं कि शुभ **समाचार** गरीबों को बताया जाता है। शुभ समाचार परमेश्वर के राज्य के बारे में और उन शुभ कार्यों के बारे में था जो परमेश्वर गरीबों की मदद के लिए करते थे। शुभ समाचार का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने लूका के पिछले अंशों में किया है।

यीशु कहते हैं **कि धन्य है वह व्यक्ति जो मेरे कारण गिरता नहीं है**। धन्य का मतलब है परमेश्वर किसी के प्रति उनके समर्थन या सदयता को दिखाते हैं। धन्य शब्द प्रधान शब्दावली में हैं। गिर जाना या ठोकर खाने का अर्थ है संदेह करना या किसी के द्वारा आहत होना। यीशु यह कह रहे हैं कि परमेश्वर उन लोगों का समर्थन करेंगे जो इस बात पर संदेह नहीं करते थे कि वे ही प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता थे।

यीशु भीड़ से तीन बार पूछते हैं कि वे **रेगिस्तान** में क्यों गए थे। रेगिस्तान का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने उसे पिछले अंशों में किया है। रेगिस्तान शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है। यीशु उनके सवाल का जवाब यह कहकर देते हैं कि लोग एक **भविष्यद्वक्ता** को देखने गए थे। भविष्यद्वक्ता को उसी तरह अनुवादित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। भविष्यद्वक्ता शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

यदि आपने पहले से ऐसा नहीं किया है, तो रेगिस्तान का चित्र दिखाएँ।

यीशु कहते हैं कि मलाकी में शास्त्रों ने यूहन्ना के बारे में तब बात की थी जब उन्होंने कहा था "मैं अपने दूत आपके आगे भेजूंगा।" एक **दूत** ने लोगों को मार्ग तैयार करने के लिए कहा क्योंकि एक राजा आ रहा था। यूहन्ना वे दूत थे जिन्होंने यहूदियों को सच्चे राजा - यीशु - के आने के लिए तैयार किया था। दूत ने राजा के लिए मार्ग तैयार किया। इस तुलना का मतलब है कि राजा के आने के लिए मार्ग तैयार किया जाएगा। परमेश्वर ने लोगों को प्रतिज्ञा किए हुए उद्धारकर्ता के लिए तैयार करने के लिए यह कहकर यूहन्ना को भेजा, कि वे पाप करना बंद करें और परमेश्वर की ओर मुंह फिराएं।

यीशु कहते हैं कि **स्त्रियों में जन्मे लोगों में** यूहन्ना सबसे महान हैं। इसका मतलब है सभी लोगों में। **सबसे महान** का मतलब है कि वे सबसे महत्वपूर्ण थे क्योंकि उनकी भूमिका प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता के लिए मार्ग तैयार करना थी। इसका मतलब यह नहीं है कि वे यीशु से भी अधिक महान थे।

यीशु कहते हैं कि मूसा की शिक्षाओं में फरीसी और विशेषज्ञों ने उनके लिए परमेश्वर की योजना को अस्वीकार कर दिया था। **मूसा की शिक्षाओं में विशेषज्ञ** उन विद्वानों को संदर्भित करता है जो अध्ययन, करते, शिक्षा देते और परमेश्वर के कानून की व्याख्या करते हैं। सबसे अधिक संभावना यह थी कि वे वही लोग थे जिन्हें लूका कानून के शिक्षक के रूप में वर्णित करते हैं। यीशु यह कह रहे हैं कि धार्मिक नेताओं ने जो कुछ परमेश्वर चाहते थे उसे करने से इनकार कर दिया था। उन्होंने परमेश्वर की ओर फिरने से इनकार कर दिया था। वे प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता के आने पर उनके राज्य का हिस्सा बनने के लिए तैयार नहीं थे। **फरीसियों** का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने उसे पिछले अंशों में किया है। **फरीसी** शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

यीशु एक **बाजार** में खेलने वाले बच्चों के उदाहरण का इस्तेमाल करते हैं। यह एक ऐसा स्थान था जहां लोग वस्तुएं खरीदते और बेचा करते थे। यह एक बड़ा खुला क्षेत्र था जहां बच्चे खेल सकते थे। यदि आपकी संस्कृति में यह आम नहीं है, तो आप ऐसे शब्द का इस्तेमाल कर सकते हैं जो एक ऐसे स्थान को संदर्भित करता है जहां आमतौर पर बच्चे खेलते हैं।

यदि आपने पहले से ऐसा नहीं किया है, तो यहूदी बाज़ार का चित्र दिखाएँ।

यीशु के उदाहरण में, बच्चे कहते हैं कि उन्होंने **बांसुरी** बजाई थी। यह एक संगीत यंत्र था जिसमें एक या दो नलियां होती थीं। यह आमतौर पर लकड़ी, सरकंडे या हड्डी से बनाया जाता था। इसे बजाने के लिए नलियों में फूंका जाता था। बच्चे एक **विलाप** का भी उल्लेख करते हैं। यह एक दुखद गीत या शोक को संदर्भित करता है जो अंतिम संस्कार के समय होता है।

बांसुरी का एक चित्र दिखाएँ।

यीशु कहते हैं कि यूहन्ना **ने रोटी नहीं खाई या दाखरस नहीं पीया**। **रोटी** का सामान्य अर्थ है भोजन और **दाखरस** एक किण्वित पेय को संदर्भित करता है। इसका मतलब यह नहीं है कि यूहन्ना ने कोई भी भोजन नहीं किया था बल्कि यह कि उन्होंने सामान्य भोजन नहीं खाया। मार्क का सुसमाचार कहता है कि वे टिड्डियां और जंगली मधु खाते थे। रोटी और दाखरस का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने उन्हें पिछले अंशों में किया है।

यीशु स्वयं को **मनुष्य का पुत्र** कहते हैं। इस उपाधि का मतलब है कि वे मनुष्य भी थे और ऐसे व्यक्ति भी जिन्हें परमेश्वर ने सारा सामर्थ्य और अधिकार दिया था। मनुष्य के पुत्र का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने उसे पिछले अंशों में किया है। मनुष्य का पुत्र शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

यीशु कहते हैं कि लोग उन्हें **पेटू** या एक ऐसा व्यक्ति कहते थे जो बहुत खाता है, और **पियक्कड़** या एक ऐसा व्यक्ति भी जो बहुत अधिक दाखरस पीता है। ये अभिव्यक्तियां प्रशंसा की नहीं बल्कि यीशु की आलोचना की थीं। यीशु कहते हैं कि **बुद्धिमत्ता उसके बच्चों द्वारा सही सिद्ध होती है**। इसका मतलब है सच्ची बुद्धिमत्ता, या समझ, अच्छे चरित्र और किसी के जीवन में अच्छे परिणाम द्वारा दर्शायी जाती है।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 7:18–35

Audio Content

webm zip (4868250 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (8388468 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 7:36–8:3

सुनना और मनन करना

लूका 7:36 - लूका 8:3 सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे इस कथा को सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 7.36–8.3

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु द्वारा यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के सवालों का जवाब देने के कुछ समय बाद शमौन नाम के एक फरीसी ने यीशु को उनके घर पर आमंत्रित किया। लूका ने जिस आख़िरी नगर का उल्लेख किया, वह नाईन है। हमें यह नहीं पता कि यीशु अभी भी इस नगर में हैं या वे अन्य स्थानों पर आगे चले गए हैं। लूका हमें यह नहीं बताते कि यह अगली घटना कहां होती है। शमौन के साथ भोजन करते समय पापिन के रूप में जाने जानी वाली एक महिला आती है और यीशु के पैरों को धोती है। लूका इस कहानी का उपयोग उस स्त्री के विश्वास और यीशु के पाप क्षमा करने के अधिकार को दर्शाने के लिए करते हैं।

यीशु द्वारा यूहन्ना के अनुयायियों को यह बताने के बाद कि वे प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता थे, एक फरीसी, या धार्मिक नेता, यीशु को उनके घर में भोजन करने के लिए आमंत्रित करते हैं। फरीसी का नाम शमौन है। यहूदी प्रथा के अनुसार यीशु एक कम ऊंचाई वाली मेज के बगल में एक कुशन पर अधलेटे थे। उनके पांव मेज से दूर थे क्योंकि पैर गंदे माने जाते थे।

रुकें और अपनी टीम को यहूदी भोजन के विन्यास का एक चित्र दिखाएं जिसमें कम ऊंचाई वाली मेज और गादी जिस पर लोग लेटते थे, शामिल हो।

एक धार्मिक शिक्षक के रूप में यीशु मेज़बान शमौन और अन्य आमंत्रित अतिथियों के साथ भोजन कर रहे थे। यहूदी संस्कृति में जो लोग आमंत्रित नहीं किए गए थे, वे चुपचाप आकर शिक्षक द्वारा कही गई बात सुन सकते थे। वे आमंत्रित अतिथियों में शामिल नहीं हो सकते थे। आमतौर पर महिलाएं इस तरह के वातावरण में मौजूद नहीं रहती थीं।

रुकें और लोगों को आपकी संस्कृति में एक घर में आमंत्रित करने के रिवाज़ पर चर्चा करें। वे क्या करने या लाने के लिए बाध्य होते हैं? एक बार वे घर में होते हैं, तो उनके पास घर के अंदर कौन सी स्वतंत्रताएं होती हैं?

जब वे खा रहे होते हैं, तो एक महिला घर में प्रवेश करती है। उन्होंने यह सुना था कि यीशु शमौन के घर में थे। इस महिला की नगर में एक बुरी प्रतिष्ठा थी और उन्हें एक पापिन के रूप में देखा जाता था। सबसे अधिक संभावना उनके एक वेश्या होने की थी। फरीसी इस स्त्री को परमेश्वर की सेवा के लिए अशुद्ध या अयोग्य मानते थे। हमें नहीं पता कि यह स्त्री कौन है, लेकिन यह स्पष्ट है कि यीशु उस स्त्री को किसी पिछली मुलाकात से जानते हैं। यह स्त्री संगमरमर के एक महंगे पात्र में इत्र या सुगंधित तेल लाती है। उस पात्र की गर्दन लंबी थी और उसे मजबूती से बंद किया गया था ताकि कोई भी इत्र बाहर न छलक सके। उस पात्र से इत्र को बाहर निकालने के लिए गर्दन को तोड़ा जाना होता था। संगमरमर एक सुंदर

सफेद और पीला पत्थर था जो मिस्र से आता था। इस तरह के पात्र की लागत 300 दिनों की मजदूरी के बराबर होती थी।

रुकें और अपनी टीम को इत्र के संगमरमरी पात्र की तस्वीर दिखाएं। अपनी टीम के साथ चर्चा करें: आपकी संस्कृति में महिलाओं को क्यों अस्वीकार किया जाता है? उनके साथ सार्वजनिक रूप से किस तरह व्यवहार किया जाता है? क्या आपकी संस्कृति में कोई महिला ऐसा कर सकती है कि उसे और अधिक अस्वीकार न किया जाए?

यह महिला यीशु के पैरों पर रोती हुई खड़ी होती है। वे आभारी हैं क्योंकि यीशु ने उनके पाप या परमेश्वर के खिलाफ अवज्ञा को पहले ही क्षमा कर दिया था। वे यीशु के पैरों के पास झुकती हैं और उनके आंसू उनके पैरों को भिगोने लगते हैं। वे उनके बालों का इस्तेमाल एक तौलिये के रूप में करके आंसुओं को पोंछती हैं। यहूदी संस्कृति में एक महिला के लिए उनके बालों को सार्वजनिक रूप से खुला करना शर्म की बात थी। वह महिला अपने होंठों से यीशु के पैरों को चूमना प्रारंभ करती है और गहरी विनम्रता और श्रद्धा दिखाती है। वे अपने आभार का प्रदर्शन भी कर रही थीं।

यीशु के पैरों पर अपने लाए इत्र को डालकर और तेल को मलने की शुरुआत कर वह स्त्री यीशु को "अभिषिक्त" करती हैं। इस संदर्भ में अभिषेक किसी धार्मिक कृत्य का संकेत नहीं करता है, लेकिन इसका इस्तेमाल यह दिखाने के लिए किया जाता है वह महिला यीशु का सम्मान करती है। आमतौर पर अभिषेक तेल को सिर पर डाल कर किया जाता था। महिला का इरादा शायद इसे यीशु के सिर पर डालना था। लेकिन वे भावावेश में इतनी बह जाती हैं कि वे इसे उनके पैरों पर डाल देती हैं। यीशु के पैरों को धोकर, उनके पैरों को चूम कर, और उनके पैरों पर तेल डाल कर महिला यीशु के प्रति उनकी श्रद्धा और प्रेम को दर्शाती है।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में कोई किसी अन्य व्यक्ति के प्रति कृतज्ञता या श्रद्धा कैसे दिखाता है? आपकी संस्कृति में यदि कोई महिला सार्वजनिक रूप में किसी व्यक्ति के प्रति कृतज्ञता या श्रद्धा दिखाती थी, तो उसे किस तरह देखा जाएगा?

शमौन यीशु को उस महिला को अपने पैरों को साफ करने की अनुमति देते हुए देखते हैं। शमौन सोचते हैं कि यीशु वास्तव में भविष्यद्वक्ता या परमेश्वर के दूत नहीं हैं। शमौन ऐसा इसलिए सोचते हैं क्योंकि एक भविष्यद्वक्ता को पता होगा कि वह महिला पापी थी। एक भविष्यद्वक्ता यह भी जानता होगा कि एक महिला का स्पर्श उन्हें अशुद्ध बना देगा। शमौन यह नहीं सोचते कि यीशु किसी ऐसे व्यक्ति की तरह कार्य करते हैं जिन्हें परमेश्वर ने भेजा था।

लेकिन यीशु शमौन के विचारों को जानते हैं। यीशु शमौन के विचारों का प्रत्युत्तर उन्हें एक दृष्टांत या परमेश्वर के बारे में गहरी बातें समझने के लिए एक विशेष कथा कह कर देते हैं। यीशु दो पुरुषों की कहानी बताते हैं। एक महाजन या एक ऐसा व्यक्ति होता है जो अपने पेशे के रूप में धन कर्ज़ पर देता है। एक महाजन किसी व्यक्ति को दिए गए पैसे की तुलना में अधिक धन प्राप्त करने की उम्मीद में धन देता है। यह महाजन दो पुरुषों को ऋण देता है। एक व्यक्ति 500 दीनार या चांदी के सिक्के का कर्ज़दार था। दूसरा व्यक्ति 50 दीनार का कर्ज़दार था। जब वे भुगतान नहीं कर पाए, तो जिस व्यक्ति ने धन उधार दिया था, उसने दोनों पुरुषों का कर्ज़ या ऋण रद्द कर दिया। इसका मतलब है कि उसने दोनों को बड़े अनुग्रह से क्षमा कर दिया।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में धन उधार लेने वाले लोगों से क्या अपेक्षा होती है? यदि कोई उधार लिए धन को वापस नहीं देता है, तो उसके क्या परिणाम होते हैं?

यीशु शमौन से पूछते हैं कि उन लोगों में से कौन उस महाजन को अधिक प्रेम करेगा। शमौन जवाब देते हैं कि जो व्यक्ति अधिक धन का देनदार था, वह उसे अधिक प्रेम करेगा। यीशु उन्हें बताते हैं कि वे सही हैं। जिस व्यक्ति का बड़ा ऋण माफ होगा, वह उस महाजन के प्रति अधिक भक्ति और स्नेह रखेगा। यीशु स्वयं की तुलना ऋणदाता से और ऋण की तुलना पाप से करते हैं। वह महिला यीशु से बहुत प्रेम करती थी क्योंकि उन्होंने उसके कई पापों को क्षमा कर दिया था। शमौन यीशु को थोड़ा ही प्रेम करते थे क्योंकि उन्होंने सोचा था कि उन्हें यीशु से अधिक क्षमा की जरूरत नहीं है।

यीशु तब उस महिला की ओर मुड़ते हैं और शमौन से बात करते हैं। यीशु उस महिला की तुलना शमौन से करते हैं। यीशु कहते हैं कि शमौन ने उन्हें उनके पैरों को धोने के लिए पानी नहीं दिया। यहूदी संस्कृति में मेहमानों को उनके पैरों से मिट्टी धोने के लिए एक कटोरा पानी देना आम बात थी। अमीर घरों में मेजबान मेहमानों के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के लिए अपने नौकरों से उनके पैरों को धुलवाते थे। उसके बाद वे उन्हें एक तौलिए से सुखाते थे। लेकिन शमौन ने यीशु को उनके पैरों को धोने के लिए न तो पानी दिया न ही कोई सेवक प्रदान किया। इसके विपरीत उस महिला ने यीशु के पैरों को अपने आंसुओं से धोया और उन्हें अपने बालों से सुखा दिया।

यीशु कहते हैं कि शमौन ने एक चुंबन देकर उनका अभिवादन नहीं किया। यहूदी संस्कृति में पुरुषों के लिए एक-दूसरे को गाल पर या हाथ पर चूम कर अभिवादन करने की प्रथा थी। इसके विपरीत उस महिला ने यीशु को उनके पैरों पर चूमा। इस कृत्य ने गाल पर चुंबन देने से भी बड़ा सम्मान और नम्रता प्रदर्शित किया था। यीशु कहते हैं कि उनके घर में प्रवेश करने के बाद से उस महिला ने उनके पैरों को चूमना बंद नहीं किया। इस वाक्यांश का मतलब यह नहीं है कि वह महिला यीशु के आने के बाद से उनके पैरों को लगातार चूम रही थी। महिला उन्हें सुखाने और तेल से उनका अभिषेक करने के लिए बीच में रुकी भी थी। यीशु यह बात शमौन की तुलना में महिला के कृत्यों पर जोर देने के लिए कहते हैं।

यीशु कहते हैं कि शमौन ने उनके सिर पर तेल डाल कर उनका अभिषेक नहीं किया। अतिथि को सम्मानित करने की यह एक यहूदी प्रथा थी। इसके विपरीत महिला ने यीशु के पैरों पर तेल डाला। उसने जिस तेल का इस्तेमाल किया वह किसी के सिर पर डाले जाने वाले तेल से भी कहीं अधिक महंगा था। यीशु कहते हैं कि महिला उन्हें बहुत प्यार करती है क्योंकि उन्होंने उसके कई पापों को क्षमा कर दिया था। यीशु के प्रति उनकी कृतज्ञता और प्रेम यह साबित करते हैं कि यीशु ने उनके पापों को क्षमा कर दिया था। यीशु का निहितार्थ है कि शमौन उन्हें थोड़ा प्यार करते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि उन्होंने थोड़ा पाप किया है और उन्हें बहुत क्षमा की जरूरत नहीं है। यीशु यह दोहराते हैं कि उस महिला के पाप क्षमा किए गए हैं। वे उस महिला को यह आश्वासन दे रहे हैं कि उनके पाप क्षमा किए हुए थे और अन्य अतिथियों को घोषणा करते हैं कि वह स्त्री क्षमा की जा चुकी है।

मेज पर बैठे व्यक्ति आश्चर्य करते हैं और यीशु को यह कहते हुए नामंजूर करते हैं कि उनके पास पापों को क्षमा करने का सामर्थ्य है। उनका मानना है कि केवल परमेश्वर के पास ही पापों को क्षमा करने का सामर्थ्य है। यीशु उस महिला को बताते हैं कि उनके विश्वास ने उन्हें बचाया है। विश्वास का मतलब है परमेश्वर पर विश्वास करना। यीशु ऐसा उस महिला के विश्वास के कारण कह रहे हैं, परमेश्वर ने उन्हें उनके पापी जीवन से बचा लिया है और वे उन्हें उनके पापों के लिए दंड नहीं देंगे। यीशु उस महिला को शांति से या परमेश्वर के आशीर्वाद के साथ जाने के लिए कहते हैं। वह महिला अब परमेश्वर के साथ अपने संबंध का आनंद ले सकती है क्योंकि रिवाज़ के अनुसार वे अब अशुद्ध नहीं थीं।

इसके बाद अपने 12 प्रेरितों या जिन्हें उन्होंने प्रतिनिधि के रूप में चुना था, उनके साथ यीशु इस क्षेत्र के विभिन्न नगरों की यात्रा करते हैं। यीशु परमेश्वर के राज्य के बारे में या परमेश्वर द्वारा राजा के रूप में अपने लोगों पर राज्य करने और उनकी देखभाल करने के समाचार के बारे में शिक्षा देते हैं। कई महिलाएं भी यीशु के साथ यात्रा करती हैं। इनमें से कुछ महिलाएं उन बीमारियों या दुष्ट आत्माओं से ठीक हो गईं थीं जो उन्हें नियंत्रित करती थीं। इनमें से एक महिला मरियम है, जो मगदन की थीं। लूका मरियम के शहर का उल्लेख इसलिए करते हैं ताकि समान नाम वाली अन्य महिलाओं के साथ कोई भ्रम न हो। यीशु ने मरियम से सात दुष्टात्माओं को निकाला था। लूका योअन्ना का उल्लेख करते हैं। उनके पति का काम शायद राजा हेरोदेस के निजी व्यवसाय का प्रबंधन करना था। लूका सुसन्नाह का नाम भी बताते हैं। ये महिलाएं यीशु और 12 के साथ यात्रा करती थीं और उनकी वित्तीय जरूरतों को पूरा करने के लिए अपने धन का इस्तेमाल करती थीं।

लूका इस कहानी का इस्तेमाल यीशु कौन हैं, यह दिखाने के लिए करते हैं। यीशु किसी भविष्यद्वक्ता से अधिक हैं क्योंकि उनके पास पापों को क्षमा करने का अधिकार है। यीशु पर विश्वास के माध्यम से पापों को क्षमा करने की विषय वस्तु भी प्रदर्शित की गई है। आगे की कथाओं में यीशु द्वारा सिखाए गए विशिष्ट दृष्टांतों का पुन: वर्णन करने से पहले, लूका हमें यह बताते हैं कि सम्पूर्ण क्षेत्र में जब यीशु शिक्षा देने के लिए यात्रा करते हैं तो उनके साथ और सहयात्री कौन थे।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 7:36–8:3

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य कल्पांकित करने में समूह की मदद करेंगे। आप कथा के दृश्यों, विन्यास और पात्रों को परिभाषित करने में समूह की मदद करेंगे।

इस कहानी के चार दृश्य हैं।

पहला दृश्य: एक फरीसी ने यीशु को उनके घर पर भोजन करने के लिए आमंत्रित किया। यीशु फरीसी के घर पर भोजन कर रहे होते हैं जब एक पापी महिला भीतर आती है और यीशु के पैरों पर रोती है। उनके आंसू यीशु के पैरों को धोते हैं। वे उनके बालों का इस्तेमाल यीशु के पैरों को पोंछने के लिए करती हैं। वे यीशु के पैरों को चूमती हैं और उन पर इत्र उड़ेलती हैं।

दूसरा दृश्य: शमौन सोचते हैं कि महिला के कार्य असम्मानजनक हैं। शमौन सोचते हैं कि यीशु एक सच्चे भविष्यद्वक्ता की तरह कार्य नहीं कर रहे हैं। यीशु शमौन के विचारों का जवाब एक महाजन के बारे में दृष्टांत बताते हुए देते हैं। यीशु पूछते हैं कि उस महाजन को कौन अधिक प्रेम करेगा? शमौन जवाब देते हैं वह जो सबसे अधिक क्षमा किया गया था। यीशु कहते हैं कि वे सही हैं।

तीसरा दृश्य: यीशु उस महिला की तुलना शमौन से करती हैं। यीशु का तात्पर्य है कि महिला उन्हें अधिक प्रेम करती है। यीशु इस बात की पुष्टि करते हैं कि महिला के पाप क्षमा कर दिए गए हैं और उन्हें शांति से जाने के लिए कहते हैं।

चौथा दृश्य: यीशु एक गांव से दूसरे गांव जाकर उनके 12 प्रेरितों के साथ शिक्षा देते हैं। महिलाएं उनके पीछे-पीछे साथ चलती हैं और उन्हें वित्तीय प्रावधान प्रदान करती हैं।

इस कहानी में पात्रों में ये शामिल हैं:

- यीशु
- यीशु के शिष्य
- शमौन, फरीसी
- पापी महिला
- अतिथि
- महाजन
- दो कर्ज़दार
- महिलाएं (मरियम, योआन्ना, सुसन्नाह)

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल (ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप इधर उधर रख सकते हैं जैसे पत्थर, लकड़ियां, बच्चों के खिलौने) का इस्तेमाल करे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यहूदी संस्कृति में जब एक शिक्षक को भोजन के लिए आमंत्रित किया जाता था, तो अन्य लोग चुपचाप घर में उन्हें सुनने के लिए आ सकते थे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि इस स्थिति में एक महिला की उपस्थिति बहुत असामान्य बात थी।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि आमतौर पर एक मेजबान मेहमानों को उनके पैरों को धोने के लिए पानी प्रदान करता है और यदि हो सके तो ऐसा करने के लिए एक सेवक भी देता था।

एक फरीसी ने यीशु को भोजन के लिए आमंत्रित किया। यीशु वहां जाते हैं और भोजन करने के लिए मेज के पास अधलेट जाते हैं। एक महिला जो पापी मानी जाती है यीशु के पीछे आती है और यीशु के पैरों पर रोती है। उसके आंसू यीशु के पैरों को छूते हैं और वह अपने बालों का इस्तेमाल उन्हें पोंछने के लिए करती हैं। वे यीशु के पैरों को चूमती हैं और यीशु के पैरों पर एक महंगी इत्र उंडेलती हैं।

फरीसी सोचते हैं कि यदि यीशु सच्चे भविष्यद्वक्ता हैं, तो उन्हें पता होगा कि वह पापी हैं।

तब यीशु फरीसी के नाम शमौन का इस्तेमाल करते हैं और उनके विचारों का जवाब देते हैं। यीशु एक दृष्टांत या एक कथा, जो कि एक शिक्षा देने के लिए रोजमर्रा की स्थितियों का इस्तेमाल करती है, उसका उपयोग करते हुए जवाब देते हैं। सोचें कि आप अपनी संस्कृति में एक दृष्टांत कैसे बताएंगे।

एक व्यक्ति ने किसी दूसरे व्यक्ति को 500 टुकड़े चांदी के और एक अन्य व्यक्ति को 50 टुकड़े चांदी के उधार दिए। वे उन्हें वापस नहीं चुका पाते हैं। ऋणदाता दोनों ऋण माफ कर देता है।

तब यीशु पूछते हैं, "आपको क्या लगता है कि ऋणदाता किससे अधिक प्रेम करेगा?"

शमौन जवाब देते हैं, "मुझे लगता है कि एक ऐसा व्यक्ति जिसका ऋण अधिक था।"

यीशु कहते हैं कि वे सही हैं। तब यीशु शमौन को बताते हैं कि किस तरह महिला ने ऐसा कुछ किया था, जो शमौन ने नहीं किया था। उन्होंने यीशु के पैरों को आंसुओं से धोया और अपने बालों से उन्हें सुखा दिया। उन्होंने उन पर इत्र डाला और यीशु के पैरों को चूमना बंद नहीं किया। शमौन ने यीशु के पैरों को धोने के लिए पानी तक नहीं पेश किया था। शमौन ने एक विशेष अतिथि के रूप में सम्मानित करने के लिए यीशु के सिर पर अभिषेक भी नहीं किया था।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु कुछ इस बारे में बात कर रहे हैं जो उस महिला के शमौन के घर यीशु के पास आने से पहले ही घटित हो चुकी थी। यीशु वे व्यक्ति हैं जिन्होंने उस महिला के पापों को तब क्षमा कर दिया था जब वे पहली बार उससे मिले थे।

यीशु शमौन को बताते हैं उस महिला के कई पाप हैं लेकिन उन्हें उनके पापों के लिए क्षमा प्राप्त हो चुकी है। यीशु कहते हैं कि इसीलिए वे यीशु से इतना प्रेम करती हैं। जिसके पास क्षमा करने के लिए कम है, वह थोड़ा प्रेम करता है। तब यीशु उस महिला को बताते हैं कि उनके पाप क्षमा किए गए हैं।

मेज पर बैठे व्यक्ति आश्चर्य करते हैं, "यह ऐसा व्यक्ति कौन है जो पापों को क्षमा करता है?"

यीशु उसे बताते हैं "आपके विश्वास ने आपको बचाया है, कुशल से चले जाओ।"

यीशु निकट गांवों और नगरों में परमेश्वर के राज्य के बारे में सुसमाचार बताते हुए जाते हैं। यीशु उनके बारह शिष्यों और कुछ स्त्रियों के साथ जाते हैं जो अपने संसाधनों से यीशु और उनके शिष्यों को समर्थन करने के लिए योगदान देते हैं।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 7:36–8:3

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी के चार दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- यीशु के शिष्य
- शमौन, फरीसी
- पापी महिला
- अतिथि
- महाजन
- दो कर्ज़दार
- महिलाएं (मरियम, योआन्ना, सुसन्नाह)

मण्डली से कहानी का दो बार अभिनय करवाएं। पहली बार टीम से बिना रूके कहानी का अभिनय करवाएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है तब उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, तब कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

यह सुनिश्चित करें कि मण्डली लोगों द्वारा अपने पैरों को भोजन से दूर रख कर फर्श पर बैठने और खाने का अभिनय करे।

यह सुनिश्चित करें कि मण्डली उस महिला के उस समय आने का अभिनय करे, जब वे पहले से ही मेज पर बैठ चुके होते हैं। वे चुपचाप आती हैं। वे यीशु के पीछे उनके पैरों के पास हैं।

यह सुनिश्चित करें कि मण्डली उस महिला द्वारा एक सुंदर पात्र लाने का अभिनय करे। उस पात्र पूरी तरह से बंद किया होता है। उसे इस्तेमाल करने में सक्षम होने के लिए उसे तोड़ने की जरूरत है।

यह सुनिश्चित करें कि मण्डली कर्ज़दारों का उनके बड़े ऋण के कारण उनके साथ क्या हो सकता है, इस बारे में चिंतित होने का अभिनय करे। ऋणदाता उन कर्ज़दारों के साथ जो कुछ वह चाहता, कर सकता था।

दूसरी बार जब मण्डली इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

एक फरीसी का अभिनय करें जिन्होंने यीशु को उनके घर पर भोजन करने के लिए आमंत्रित किया था। यीशु फरीसी के घर गए और मेज पर बैठ गए। अन्य अतिथि भी वहां थे।

अभिनय को बंद करें। फरीसी का किरदार निभाने वाले लोगों से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मैं उत्साहित हूं, शिक्षक मेरे घर पर हैं," "मुझे महत्वपूर्ण महसूस होता है," "मुझे सम्मानित महसूस होता है," "मुझे इससे कम की उम्मीद नहीं होगी।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

लूका *7:36–8:3*

एक अनैतिक महिला आती है और यीशु के पैरों पर झुक जाती है। वे रोती हैं और उनके आंसू यीशु के पैरों पर गिरते हैं। वे उनके बालों का इस्तेमाल यीशु के पैरों को पोंछने के लिए करती हैं। वे लगातार यीशु के पैरों को चूमती हैं। तब वे महंगे इत्र से भरे संगमरमर के एक सुंदर पात्र को खोलती हैं। वे इत्र को यीशु के पैरों पर उंडेलती हैं।

अभिनय को बंद करें। अतिथियों का किरदार निभाने वाले कलाकारों से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "अगर वे मुझे छूती हैं तो मुझे अशुद्ध होने का डर महसूस होता है। शमौन को उन्हें छोड़ देना चाहिए," "यीशु उन्हें जाने के लिए क्यों नहीं कहते?" "शायद यीशु को पता नहीं होगा कि वह कौन है," "मुझे निराशा हो गई। मैंने सोचा था कि यीशु एक भविष्यद्वक्ता थे।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

फरीसी इसे देखते हैं। वे सोचते हैं कि यदि यीशु एक भविष्यद्वक्ता हैं, तो यीशु जानते होंगे कि जो महिला उन्हें छू रही थी, वह पापी है। यीशु ने फरीसी के विचारों का जवाब दिया। यीशु उन्हें एक कहानी बताते हैं। एक महाजन एक व्यक्ति को 500 टुकड़े चांदी के और एक दूसरे व्यक्ति को 50 टुकड़े चांदी के उधार देता है। दोनों ही उसे वापिस लौटाने में सक्षम नहीं रहते। तो जिस व्यक्ति ने पैसे का भुगतान किया था, उसने दोनों पुरुषों के ऋण माफ कर दिए।

अभिनय को बंद करें। कर्ज़दारों का किरदार निभाने वाले कलाकारों से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मुझे डर लगता था कि ऋणदाता मुझे सजा देगा," "मैंने सोचा था कि मेरे पास अपने ऋण से बाहर निकलने का कोई मार्ग नहीं था," "आश्चर्चकित हूं," "विनम्र हूं। मैं दूसरे व्यक्ति की तुलना में उसका 10 गुना अधिक का देनदार था, लेकिन उसने फिर भी मुझे माफ कर दिया।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु ने शमौन से पूछा, "कौन सा व्यक्ति उस ऋणदाता से अधिक प्रेम करता है?" शमौन ने जवाब दिया, "मेरे विचार में शायद वह व्यक्ति जो बड़ा देनदार था।" यीशु ने शमौन से कहा, "आपने सही कहा है।" तब यीशु उस महिला की ओर मुड़े और उन्होंने शमौन से वह सब देखने के लिए कहा जो उसने किया था। यीशु यह उल्लेख करते हैं कि किस तरह शमौन ने यीशु को पानी नहीं दिया था, न ही यीशु का एक चुंबन के साथ अभिवादन किया था और न ही यीशु के सिर पर तेल से अभिषेक किया था।

अभिनय को बंद करें। शमौन का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मैंने यीशु के लिए तैयार भोजन करके अपना सर्वश्रेष्ठ किया," "वे मेरे विचारों को कैसे जान गए?" "मैं शर्मिंदा हूं," "मुझे शर्म आती है कि यीशु ने यह सब सभी के सामने मुझे कहा।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु शमौन से बात करते रहते हैं और उन्हें बताते हैं कि उस महिला के कई पाप क्षमा कर दिए गए हैं। यही कारण है कि वे यीशु के प्रति बहुत प्रेम दिखाती हैं। लेकिन जो व्यक्ति सोचता है कि उन्हें थोड़ी क्षमा की जरूरत है, वह यीशु के प्रति थोड़ा प्रेम दिखाता है।

मेज पर बैठे व्यक्ति सोचते थे, "यह कौन है जो पापों को क्षमा कर रहा है?"

तब यीशु उस महिला से कहते हैं, "आपके विश्वास ने आपको बचाया है, शांति से जाएं।"

अभिनय को बंद करें। स्त्री का किरदार निभाने वाली अभिनेत्री से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रही हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "यीशु हर किसी के सामने कह रहे हैं कि मुझे क्षमा किया गया है," "मैं स्वीकृत महसूस करती हूं क्योंकि यीशु ने मुझे अस्वीकार नहीं किया था," "जो शांति यीशु ने मुझे दी थी, उसका अनुभव करते हुए मुझे खुशी हो रही है।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

उसके तुरंत बाद यीशु विभिन्न नगरों और गांवों में परमेश्वर के राज्य का शुभ समाचार बताते हुए जाने लगे। बारह शिष्य यीशु के साथ हैं, कुछ महिलाएं भी हैं। यीशु ने इन महिलाओं को दुष्ट आत्माओं और बीमारियों से ठीक किया था। उनमें से कई यीशु और उनके शिष्यों का समर्थन करने के लिए अपने व्यक्तिगत धन में से योगदान दे रही थीं।

अभिनय को बंद करें। यीशु का साथ देने वाली महिलाओं का किरदार निभाने वाली अभिनेत्रियों से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रही हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकती हैं जैसे "मैं यीशु की मदद कर सम्मानित हूं," "यीशु ने मेरे जीवन को बदल दिया," "जिस तरह भी मैं कर सकती हूं, उस तरह मैं यीशु की सेवा करना चाहती हूं।"

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 7:36–8:3

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु को **एक फरीसी** या धार्मिक नेता के घर पर खाने के लिए आमंत्रित किया जाता है। फरीसी का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने उसे पिछले अंशों में किया है। फरीसी शब्द प्रधान शब्दावली में है।

भोजन के दौरान यीशु **मेज पर अधलेटे** हैं। इसका मतलब है कि वे एक कम ऊंचाई वाली मेज के बगल में एक गादी पर लेटे हैं। बाईं कोहनी पर टिक कर बाएं बाजू पर अवलंबित होकर अधलेटे होने की प्रथा थी। इस स्थिति में उनके पैर मेज से सबसे दूर होते हैं। इस कारण उस महिला के लिए यीशु के पैरों तक पहुंचना आसान हो गया होगा।

रुकें और अगर आपने पहले से ही ऐसा नहीं किया है तो अपनी टीम को एक यहूदी भोजन के विन्यास का चित्र दिखाएं।

एक महिला इत्र के एक **संगमरमर के** पात्र के साथ प्रवेश करती है। संगमरमर मिस्र का एक सफेद और पीला पत्थर होता है। वह पात्र एक शीशी या बोतल की तरह का एक महंगा पात्र था। इसकी गर्दन लंबी थी और कोई हत्था नहीं था। इत्र को बाहर निकालने के लिए पात्र के गले को तोड़ना पड़ता था। भीतर के इत्र का संदर्भ सुगंधित तेल से है। यह 300 दीनार या 300 दिनों के वेतन की लागत का एक बहुत महंगा उपहार रहा होगा।

महिला के व्यवहार पर शमौन स्तम्भित हो जाते हैं। वे उस महिला को अपने पैरों को धोने की अनुमति देने के लिए यीशु को नामंज़ूर करते हैं। शमौन यह नहीं सोचते कि यीशु एक **भविष्यद्वक्ता** की तरह कृत्य कर रहे हैं। भविष्यद्वक्ता का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। भविष्यद्वक्ता शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

यीशु शमौन को परमेश्वर के बारे में शिक्षा देने के लिए **एक दृष्टांत** बताते हैं। दृष्टांत एक विशेष प्रकार की कहानी होता है जो लोगों को परमेश्वर के बारे में गहरी बातें सिखाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। दृष्टांत शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है। यीशु का दृष्टांत एक ऋणदाता के बारे में है। एक **ऋणदाता** वह होता है जो अपने व्यवसाय के रूप में दूसरों को धन का ऋण देता है। धन उधार लेने वाले व्यक्ति को ऋणदाता को ऋण की रकम के अतिरिक्त ब्याज या अतिरिक्त धन, लौटाना पड़ता है। इस उदाहरण में वे पुरुष दीनार उधार लेते हैं। **दीनार** का संदर्भ चांदी के सिक्कों से है जो रोमी लोग धन के रूप में इस्तेमाल करते थे। एक सिक्का एक दिन की मजदूरी के बराबर था।

रुकें और अपनी टीम को दीनार की तस्वीर दिखाएं।

जब ऋणदाता **ने उस ऋण को रद्द कर दिया**, तो इसका मतलब है कि दोनों ही व्यक्तियों को ऋणदाता को वापस भुगतान नहीं करना था। रद्द किया जाना किसी भी व्यक्ति के प्रति, जिसने उसे प्राप्त करने के लिए कोई योग्यता नहीं दिखाई हो, सदयता को संदर्भित कर सकता है। यदि हो सके तो रद्द करने के लिए आप ऐसे शब्द का इस्तेमाल कर सकते हैं जो ऋण और पापों दोनों पर लागू हो सकता है। यीशु स्वयं को ऋणदाता से और पाप को ऋण के साथ संबंधित करते हैं। **पाप** और **क्षमा** का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने उन्हें पिछले अंशों में किया है। पाप और क्षमा शब्द प्रधान शब्दावली में पाए जा सकते हैं।

यीशु कहते हैं कि उस महिला के विश्वास ने उन्हें **बचा लिया** है। बचाने का मतलब स्वस्थ किया जाना हो सकता है, लेकिन इस संदर्भ में इसका मतलब है मुक्त किया जाना। उस महिला के विश्वास के कारण परमेश्वर ने उन्हें उसके पापी जीवन से

बचाया और इसके लिए वे उन्हें दंड भी नहीं देंगे। बचाया जाना प्रधान शब्दावली में है। **विश्वास** उस महिला के परमेश्वर पर विश्वास को संदर्भित करता है। यीशु उस महिला को **शांति** से या परमेश्वर के साथ अपने संबंधों में सुरक्षा के साथ जाने के लिए कहते हैं। विश्वास और शांति शब्द प्रधान शब्दावली में पाए जा सकते हैं।

यीशु **परमेश्वर के राज्य के** बारे में **सुसमाचार** का प्रचार करने के लिए एक स्थान से दूसरे की यात्रा करते रहते हैं। सुसमाचार और परमेश्वर के राज्य का उसी तरह अनुवाद करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पिछले अंशों में किया है। दोनों शब्दों को प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

कई महिलाएं भी यीशु का अनुसरण करती हैं। उनमें से एक मरियम है। यीशु ने मरियम में से सात **दुष्टात्माओं** को निकाला था। यहूदी मानते हैं कि दुष्ट आत्माएं एक व्यक्ति के अंदर रहती थीं, इसलिए यीशु को उन्हें बाहर निकालना पड़ा। दुष्टात्मा का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पिछले अंशों में किया है। दुष्टात्मा शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 7:36–8:3

Audio Content

webm zip (4701626 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (8100222 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 8:4–15

सुनना और मनन करना

लूका 8:4–15 सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे इस कथा को सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 8:4–15

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

इस कथा में लूका अपने दर्शकों को यीशु की करूणा और उनकी पहचान की पुष्टि के बारे में बताने के विषय में परिवर्तन करते हैं। लूका अब यीशु द्वारा सुसमाचार का प्रसार करने और इसे अस्वीकार करने के परिणाम पर केंद्रित होते हैं। यीशु दृष्टांत या विशेष कहानियों का इस्तेमाल करके शिक्षा देते हैं जो परमेश्वर के बारे में गहरी बातें वर्णित करती हैं।

यह दृष्टांत उन कुछ कथाओं में से एक है जिन्हें चार सुसमाचारों में से तीन में पाया जा सकता है। यह अद्वितीय है क्योंकि इसमें एक स्पष्टीकरण भी शामिल है। इस कथा का लूका का संस्करण थोड़ा अलग है क्योंकि यह छोटा है।

यीशु गलील के क्षेत्र में एक गांव से दूसरे गांव तक शिक्षा देना निरंतर रखते हैं। यीशु के शिष्य और उनका समर्थन करने वाली महिलाएं उनके साथ हैं। यीशु की शिक्षाओं को सुनने के लिए एक भीड़ उनके आसपास एकत्रित होने लगती है। आसपास के कई गांवों से लोग आए होते हैं। यीशु उन्हें एक दृष्टांत के साथ शिक्षा देते हैं।

यीशु कहते हैं कि एक ऐसा किसान है जो बीज बोने के लिए अपने खेतों में जाता है। बोने का मतलब है कि वह किसान चलते हुए अपने-सामने, अगल-बगल में बीज फेंकेगा। यहूदी किसानों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला यह एक सामान्य तरीका था जो उन्हें शीघ्रता से एक बड़े क्षेत्र में बुआई करने की सुविधा देता था।

यदि आपकी संस्कृति में यह एक आम संकल्पना नहीं है, तो रुकें और बीज बिखेरते हुए किसान का एक चित्र दिखाएं। [आपकी संस्कृति में बीज बोने के लिए किन तरीकों का उपयोग किया जाता है? इस कथा में जिस तरह से उस व्यक्ति ने अपने बीज बोए, उससे यह किस तरह समान या भिन्न हैं?]{.mark}

कुछ बीज मार्ग पर गिर गए। मार्ग एक पगदण्डी को संदर्भित करता है, जो मैदान पर या उसके आसपास चलने के लिए लोग उपयोग में लेते थे। कई लोगों के चलने के कारण मिट्टी कड़ी हो गई थी। जो बीज मार्ग पर गिरते हैं वे लोगों के चलने के कारण कुचल जाते हैं। हवा में उड़नेवाले पक्षी इस बीजों को चाव से खा गए।

रुकें और मैदान में एक फुटपाथ पर मिट्टी का एक चित्र दिखाएं।

अन्य बीज चट्टान पर गिर जाते हैं। इस संदर्भ में मिट्टी के नीचे चट्टान की एक परत थी। जहां उथली मिट्टी थी, वहां चट्टान दिखाई देती होगी। चट्टान पर गिरने वाले बीज छोटे पौधों के रूप में बड़े हुए, लेकिन वे छोटे पौधें मर गए क्योंकि उन्हें उथली मिट्टी से पर्याप्त मात्रा में पानी नहीं मिला। पौधों को विकसित होने के लिए जिस तत्व की आवश्यकता थी, वह उन्हें चट्टानों के कारण नहीं मिला।

रुकें और चट्टानी मिट्टी का एक चित्र दिखाएं।

अन्य बीच वहां गिरते हैं जहां कांटे होते हैं। इसका मतलब है उस मिट्टी पर जहां कांटें या कांटों के पौधे मौजूद थे। कांटे कड़क और तेजी से बड़े होते हैं, जो अनाज के साथ होड़ लगाते हैं ओर किसान उनसे बहुत परेशान होते हैं। वे कांटे अनाज के साथ बड़े हुए और उनके कारण अनाज को ठीक से बढ़ने के लिए पर्याप्त जगह, मिट्टी, पानी या सूर्य की रोशनी नहीं मिली। इसलिए अनाज के पौधे मर गए और उनमें उत्पादन नहीं हुआ।

रुकें और ऐसी मिट्टी का चित्र दिखाएं, जहां कांटे बढ़ रहे हों।

कुछ बीज अच्छी मिट्टी पर गिर गए। अच्छे का मतलब है उपजाऊ या फलदायक। मिट्टी दबी हुई, उथली, या कांटों के साथ मिश्रित नहीं थी। अच्छी मिट्टी बीजों को उन उपजाऊ पौधों में विकसित होने की गुंजाइश देती है, जो अनाज़ उत्पन्न करते हैं। जो पौधे बड़े हुए उनमें किसान द्वारा बोए गए बीजों की तुलना में 100 गुना अधिक बीज पैदा हुए। यह इस्त्राएल में एक असाधारण फसल रही होगी। एक औसत फसल बोए जाने वाले प्रत्येक बीज के लिए लगभग 10 बीज पैदा करती थी।

रुकें और अच्छी मिट्टी का चित्र दिखाएं। अपनी टीम के साथ चर्चा करें: आपकी संस्कृति में आप अच्छी मिट्टी का वर्णन किस तरह करेंगे? आप किस प्रकार जान पाएंगे कि आपको अनुपजाऊ क्षेत्रों की तुलना में किन क्षेत्रों में पौधे लगाने चाहिए?

यीशु दृष्टांत को यह कहते हुए समाप्त करते हैं, "जिसके पास कान हैं, वे सुनें।" यीशु यह कह रहे हैं कि उन्होंने जो कहा उसके बारे में भीड़ को सावधानी से विचार करना चाहिए।

लूका *8:4–15*

यीशु चाहते हैं कि वे न केवल सोचें बल्कि कथा से उन्होंने जो कुछ भी सीखा, उस पर आचरण भी करें।

रुकें और अपनी टीम से पूछें: आपकी संस्कृति में एक शिक्षक अपने दर्शकों का ध्यान आकर्षित करने के लिए क्या कहेगा?

यीशु के शिष्य या अनुयायी उनसे पूछते हैं कि दृष्टांत का मतलब क्या है। यीशु अपने शिष्यों की तुलना कथा सुनने वालों अन्य लोगों से करते हैं। यीशु कहते हैं कि वे दृष्टांतों के साथ शिक्षा देते हैं क्योंकि उनमें परमेश्वर के राज्य के बारे में छिपा हुआ सत्य है। यीशु वे सत्य कुछ ही लोगों को प्रकट करते हैं। यीशु अपने शिष्यों को दृष्टांतों के अर्थ प्रकट करने के लिए चुनते हैं। दृष्टांत सुनने वाले अन्य लोग परमेश्वर के राज्य के बारे में सत्य समझ नहीं पाते थे।

यीशु शास्त्र, या यहूदी पवित्र लेखन का उद्धरण देकर दृष्टांतों में शिक्षा देने की वजह प्रदान करते हैं। यीशु प्रसिद्ध भविष्यद्वक्ता या परमेश्वर के दूत यशायाह को उद्धृत करते हैं। यशायाह ने कहा था,

"हालांकि वे देख सकते हैं, वे शायद देख नहीं पाएंगे,

हालांकि वे सुन सकते हैं, वे संभवत: समझ नहीं

पाएंगे।"

देखने के पहले संदर्भ का मतलब किसी व्यक्ति या वस्तु की तरह कुछ देखने से है। देखने के दूसरे संदर्भ का अर्थ न केवल देखने से है बल्कि जो भी देखा जा रहा है उसका अर्थ समझने से है। यही बात सुनने पर भी लागू होती है। पहले संदर्भ का मतलब शारीरिक श्रवण के कृत्य से है, जबकि श्रवण के दूसरे सुनने का अर्थ जो सुना गया, उसे समझने से है। यीशु यह कह रहे हैं कि कुछ लोग उन पर विश्वास करना या उनका कहा नहीं मानना चाहते हैं। यीशु उन्हें परमेश्वर के राज्य के सत्य नहीं सिखाएंगे।

यीशु अपने शिष्यों को दृष्टांत समझाते हैं। दृष्टांत की मूल व्याख्या यह है कि बीज परमेश्वर से संदेश का प्रतिनिधित्व करते हैं, बुआई करना लोगों को संदेश बताने का द्योतक है, और विभिन्न प्रकार की मिट्टी उन भिन्न-भिन्न तरीकों को दर्शाती है जिस प्रकार लोग संदेश सुनते हैं।

यीशु बताते हैं कि जो बीज भूमि पर गिरते हैं, वह शैतान द्वारा लोगों ने जो संदेश सुना है, उसे ले जाने का द्योतक है। उसके बाद यीशु समझाते हैं कि जो बीज चट्टानी मिट्टी पर पड़े वे उन लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो संदेश को हर्षपूर्वक प्राप्त करते हैं, लेकिन परीक्षण, या प्रलोभनों के समय वे बहक जाते हैं।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में लोग किस तरह के प्रलोभन या परीक्षण का सामना करते हैं?

उसके बाद यीशु समझाते हैं कि कांटों के बीच गिरने वाले बीज ऐसे लोगों का प्रतीक हैं, जो संदेश को सुनते हैं लेकिन चिंता और धन से अभिभूत हो जाते हैं।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में आप धन का वर्णन किस तरह करेंगे? आपकी संस्कृति में किस तरह की स्थितियां लोगों की चिंता का कारण बनती हैं?

यह ध्यान में लेना महत्व का है कि बीजों को बोने के बाद उनके कई भिन्न-भिन्न प्रकार के भावार्थ हैं। कुछ विद्वानों का मानना है कि बीज परमेश्वर के संदेश को संदर्भित करते रहते हैं, और मिट्टी चार ऐसे अलग-अलग तरीकों की द्योतक है, जिन तरीकों से लोग परमेश्वर के संदेश को सुन सकते और उन पर प्रत्युत्तर दे सकते हैं। अन्य विद्वान मानते हैं कि मिट्टी विभिन्न प्रकार के लोगों को संदर्भित करती है।

यीशु यह नहीं समझाते कि परमेश्वर के वचन को सुनने और स्वीकार करने के बारे में वे अपने उन अनुयायियों के विषय में बात कर रहे हैं, जिन्हें आध्यात्मिक रूप से बढ़ने की आवश्यकता है या फिर उनके विषय में जो उनके अनुयायी नहीं हैं। कई बार दृष्टांतों का किसी विशिष्ट स्थिति या समयावधि की तुलना में एक व्यापक अर्थ होता है। ऐसे दृष्टांत को अर्थ या स्पष्टीकरण प्रदान न करें जो शास्त्र में दिया गया नहीं है।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 8:4–15

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य कल्पांकित करने में समूह की मदद करेंगे। आप कथा के दृश्यों, विन्यास और पात्रों को परिभाषित करने में समूह की मदद करेंगे।

इस कहानी के चार दृश्य हैं।

पहला दृश्य: लोग यीशु को सुनने के लिए कई शहरों से आते हैं। यीशु एकत्रित जनसमूह को दृष्टांत के रूप में एक कथा कहते हैं।

दूसरा दृश्य: कथा बुआई करने वाले एक किसान द्वारा बीजों को बिखेरने के बारे में है। यीशु बताते हैं कि मैदान के विभिन्न क्षेत्रों में गिरने वाले बीजों के साथ क्या हुआ। अंत में यीशु कहते हैं कि जिसके भी पास सुनने को कान हों वह सुने और समझ जाए।

तीसरा दृश्य: यीशु के शिष्य यीशु से दृष्टांतों का अर्थ पूछते हैं। यीशु उन्हें समझाते हैं कि उन्हें शास्त्रों को पूरा करने के लिए दृष्टांत समझने की अनुमति है।

चौथा दृश्य: यीशु दृष्टांत के अर्थ का स्पष्टीकरण देते हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- भीड़
- शिष्य
- पथ का प्रतिनिधित्व करने वाला व्यक्ति
- चट्टानों के साथ क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाला व्यक्ति
- कांटे वाले क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाला व्यक्ति
- उपजाऊ मिट्टी के साथ क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाला व्यक्ति
- पक्षी
- शैतान

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल (ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप इधर उधर रख सकते हैं जैसे पत्थर, लकड़ियां, बच्चों के खिलौने) का इस्तेमाल करे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि किसान के लिए चलने के लिए एक पगड़ंडी है। किसान उस मार्ग पर बीज बिखेरेगा। क्योंकि यह मार्ग हमेशा इस्तेमाल किया जाता है, इसलिए यह कठिन है।

कई शहरों से लोग यीशु को सुनने के लिए एकत्र होकर आ रहे हैं। उसके बाद यीशु दृष्टांत के रूप में एक कथा सुनाते हैं। दृष्टांत में इस बात को दर्शाने के लिए कि बीज पहले विभिन्न मिट्टियों पर गिरते हैं, टीम घटनाक्रम को संभवत: पुन: कालक्रमित करना चाहे। कुछ समय बाद, जो बीज मार्ग पर गिरते हैं, वे कुचल जाते हैं और पक्षियों द्वारा खाए जाते हैं। जो बीज चट्टान पर गिरते हैं, वे कुछ समय बाद बढ़ते हैं लेकिन नमी की कमी के कारण मर जाते हैं। जो कांटों के बीच गिरते हैं, वे कुछ समय बाद बढ़ते हैं, लेकिन कांटें उन्हें मार देते हैं। जो बीज उपजाऊ मिट्टी में गिरते हैं, वे कुछ समय बाद उत्पन्न होते हैं और सौ गुना फल लाते हैं।

दृष्टांत कहने के बाद यीशु ने कहा, "जिसके भी कान हो वह इसे सुने और समझ जाए।"

यीशु के शिष्य दृष्टांत का अर्थ पूछते हैं। यीशु अपने शिष्यों की ओर उन्हें दृष्टांत समझाने के लिए मुड़ते हैं। यीशु अपने शिष्यों से कहते हैं, "आपको परमेश्वर के राज्य के रहस्यों को समझने की अनुमति है।" यीशु कहते हैं कि वे दृष्टांतों का उपयोग करते हैं ताकि शास्त्र पूरे हो जाएं। यीशु कहते हैं कि लोग देखेंगे लेकिन वे वास्तव में देखेंगे नहीं, वे सुनेंगे लेकिन वास्तविकता में वे समझ नहीं पाएंगे।

यीशु दृष्टांत का भावार्थ बताते हैं।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 8:4–15

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी के चार दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- भीड़
- शिष्य
- पथ का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्ति
- चट्टानों के साथ क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाला व्यक्ति
- कांटे वाले क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाला व्यक्ति
- उपजाऊ मिट्टी के साथ क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाला व्यक्ति
- पक्षी
- शैतान

मण्डली से कहानी का दो बार अभिनय करवाएं। पहली बार टीम से बिना रूके कहानी का अभिनय करवाएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है तब उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, तब कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

यह सुनिश्चित करें कि टीम विभिन्न शहरों से यीशु को सुनने के लिए आने वाले लोगों का अभिनय करे। यीशु एक दृष्टांत बताते हैं।

यह सुनिश्चित करें कि टीम अपने क्षेत्र में बोने के लिए बीज फेंकते हुए, एक पगडंडी पर चलने वाले किसान का अभिनय करे।

जैसे ही किसान बीज फेंकता है, कुछ मार्ग पर गिर जाते हैं, कुछ चट्टानों पर गिरते हैं, कुछ कांटों में गिरते हैं, और अन्य उपजाऊ मिट्टी पर गिर जाते हैं। बीज बढ़ते हैं। मार्ग पर गिरे बीज पक्षी खा जाते हैं। चट्टान के पौधे नमी की कमी के कारण मर जाते हैं। कांटों के साथ के पौधे मर जाते हैं क्योंकि कांटे उनके विकास को बाधित करते हैं। उपजाऊ मिट्टी पर के पौधे जो बोया गया था उसका सौ गुना फल उत्पन्न करते हैं।

यह सुनिश्चित करें कि टीम एक बार और बीज बोने वाले का अभिनय करे। परंतु इस बार, यीशु द्वारा दिए जाने वाले स्पष्टीकरण का अभिनय करते हुए उसी समय विभिन्न प्रकार के लोगों को दिखाएं।

दूसरी बार जब मण्डली इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

यीशु को सुनने के लिए विभिन्न शहरों से आने वाले लोगों का अभिनय करें। यीशु बीज बोने वाले एक किसान के बारे में दृष्टांत बताते हैं।

जब यीशु कथा के इस हिस्से को बता रहे होते हैं, तो मिट्टी का प्रतिनिधित्व करने वाले चारों लोग ऐसी अदाकारी करते हैं जैसे वे बीज प्राप्त कर रहे हों। मार्ग के रूप का अभिनय करने वाले व्यक्ति के लिए बीज उस पर गिरने दें लेकिन बीज सतह पर ही रहे। चट्टानों के क्षेत्र का अभिनय करने वाले व्यक्ति के लिए बीज उस पर गिरने दें, लेकिन बीज सतह पर नहीं रहें। यह चट्टानों के बीच जड़ पकड़ने का प्रतीक है। कांटों के क्षेत्र के रूप में अभिनय करने वाले व्यक्ति के लिए, बीज सतह पर गिरें परंतु उसके बाद वे कांटों के बीच जड़ पकड़ें। उपजाऊ मिट्टी के क्षेत्र के रूप में अभिनय करने वाले व्यक्ति के लिए बीज सतह पर उतरें और जड़ भी पकड़ें। कुछ समय बाद, पक्षी का प्रतिनिधित्व करने वाला अभिनेता आता है और मार्ग पर गिरे बीज ले जाता है। उसके बाद चट्टानों के साथ वाले क्षेत्र पर जो पौधा उगता है वह मर जाता है क्योंकि वहां पानी नहीं था। उसके बाद जो पौधे कांटों के बीच बढ़ते हैं वे मर जाते हैं क्योंकि कांटें पौधों को जीवित नहीं रहने देते हैं। जो पौधे उपजाऊ मिट्टी पर उगते हैं, वे जो बोआ गया था उसका सौ गुना उत्पादन करते हैं।

जब यीशु समापन करते हैं तो वे कहते हैं, "जिसके भी कान हों वह सुनें और समझे।"

अभिनय को बंद करें। जनसमूह का किरदार निभाने वाले कलाकारों से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं, जैसे, "जो यीशु ने हमें बताया वह मैं समझ गया," "यीशु खेती के बारे में बातें क्यों कर रहे हैं," "मैं यीशु का बोलना पसंद करता हूं," "मैं भ्रमित हूं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

दृष्टांत के अर्थ के बारे में शिष्यों द्वारा यीशु से पूछे जाने का अभिनय करें। यीशु यह कह कर जवाब देते हैं कि शिष्यों को परमेश्वर के राज्य के रहस्यों को समझने की अनुमति है। यीशु उन्हें यह भी समझाते हैं कि यीशु दृष्टांतों का उपयोग इसलिए करते हैं ताकि शास्त्र पूरे हो सकें। यीशु जिस शास्त्र के बारे में बात करते हैं, वह कहता है, "जब वे देखेंगे तो वे देखेंगे नहीं, जब वे सुनेंगे तो वे समझेंगे नहीं।"

अभिनय को बंद करें। शिष्यों का पात्र अदा करने वाले कलाकारों से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं, जैसे "मुझे यीशु से स्पष्टीकरण पाकर सम्मानित महसूस होता है," "मुझे खुशी है कि यीशु ने मुझे करीबी के रूप में अपना अनुसरण करने के लिए चुना है," "मैं अब समझता हूं कि मुझे यीशु की कहानियों को बारीकी से सुनना होगा।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

दृष्टांत का अर्थ समझाते हुए यीशु का अभिनय करें। मार्ग पर जो बीज गिरते हैं, वे संदेश सुनने वाले लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं लेकिन शैतान परमेश्वर के वचन को ले जाता है। इसके साथ ही, मार्ग को दर्शाने वाले व्यक्ति शैतान द्वारा परमेश्वर के वचन को ले जाने का अभिनय करें।

अभिनय को बंद करें। संदेश को सुनने वाले परंतु शैतान द्वारा उसे ले जाने वाले व्यक्ति का किरदार अदा करने वाले अदाकार से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं, जैसे "जो यीशु ने कहा था, वह मैं कैसे भूल गया," "यह ठीक है, दूसरे शिक्षक आएंगे," "वह संदेश तो ऐसे किसी के लिए है जो बहुत बुरा है, मेरे लिए नहीं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु द्वारा यह समझाने का अभिनय करें कि जो बीज चट्टानों पर गिरते हैं, वे ऐसे लोगों के द्योतक हैं जो संदेश को सुनते हैं, हर्ष के साथ उसे प्राप्त करते हैं लेकिन प्रलोभन आने पर वे बहक जाते हैं। इसके साथ ही, चट्टानी मिट्टी का अभिनय करने वाले व्यक्ति को हर्षपूर्ण होने का अभिनय कराएं, परंतु प्रलोभन के कारण छोटा विकास रुक कर मर जाता है।

अभिनय को बंद करें। प्रलोभन के कारण जो व्यक्ति बहक जाता है, उसका किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं, जैसे मैं लंबे समय से ऐसे संदेश की उम्मीद कर रहा था," "मैंने संदेश सुना था, लेकिन मुझे परिवर्तित होने की ज़रूरत नहीं है," "यह एक सुंदर संदेश था, लेकिन मेरा अपना जीवन है।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु द्वारा यह समझाने का अभिनय करें कि जो बीज कांटों के बीच गिरते हैं, वे ऐसे लोगों को दर्शाते हैं जो संदेश को सुनते हैं, लेकिन उसके बाद जीवन की चिंताएं, धन और आमोद उन्हें परिपक्व होने से रोक देते हैं। इसके साथ ही कांटो वाली मिट्टी का अभिनय करने वाले व्यक्ति को संदेश सुनवाएं। धन और आमोद से प्रेम करने वाले इस व्यक्ति का अभिनय करें। किसी भी फल को पैदा करने से पहले इस व्यक्ति का किस तरह निधन हो जाता है, इसका अभिनय करें।

अभिनय को बंद करें। जो व्यक्ति परिपक्व नहीं है, उसका पात्र अदा करने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं, जैसे "यीशु ने जो कहा वह मैंने सुना, परंतु मुझे अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखना आवश्यक है।" "मुझे पार्टियों में जाना पसंद है, यीशु ने जो कहा, वह शायद मैं बाद में कर सकता हूं," "मैं अपने सभी लक्ष्यों तक पहले पहुंच जाना चाहता हूं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु द्वारा यह समझाए जाने का अभिनय करें कि जो बीज उपजाऊ मिट्टी पर गिरते हैं, वे सच्चे और अच्छे दिल वाले ऐसे लोग, जो परमेश्वर का वचन सुनते हैं, उसे थामे रखते हैं और विशाल फसल उत्पन्न करते हैं, ऐसे लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसके साथ ही, अच्छी मिट्टी का अभिनय करने वाले व्यक्ति द्वारा परमेश्वर के वचन को सुनने और उसे जाने नहीं देने का अभिनय कराएं। कई फल उत्पन्न करवाने का अभिनय करवाएं।

अभिनय को बंद करें। विशाल फसल का पात्र निभाने वाले व्यक्ति का पात्र निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं, जैसे, "यही है वह जिसका मैं इतने समय से इंतज़ार कर रहा था," "मुझे खुशी महसूस हो रही है, जो कुछ भी यीशु मुझे कहेंगे वह मैं करूंगा।" "मैं दूसरों को यीशु के बारे में बताना चाहता हूं।"

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 8:4–15

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु एक दृष्टांत का उपयोग करके भीड़ को सिखाते हैं। **दृष्टांत** एक विशेष प्रकार की कथा होती है, जो रोज़मर्रा की बातों का उपयोग परमेश्वर के बारे में गहरी बातें बताने के लिए करती है। कई बार दृष्टांत तब तक समझना कठिन होते हैं जब तक कि लोग इन्हें वास्तव में सुनने की कोशिश न करें। दृष्टांत कर अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जैसा कि आपने पिछले अंशों में किया है। दृष्टांत शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

यह दृष्टांत एक ऐसे किसान के बारे में है जो बीज बोता है। **बोना** अर्थात् किसान द्वारा चलते हुए बीजों को आजू-बाजू में फेंकना। यहूदी किसानों के लिए अनाज के बीज को बोने का यह एक सामान्य तरीका था। [बीज को बोना इस आधार पर किया जाता था कि किसान ने या तो पहले ही जुताई कर दी थी या बीज बोने के बाद जुताई करेगा।]{.mark} यह विधि किसानों को एक बड़े क्षेत्र में जल्दी से रोपने की गुंजायश देती है।

अगर आपने पहले ही ऐसा नहीं किया है तो रुकें और बीज बोने वाले किसान का चित्र दिखाएं।

यीशु यह कहकर अपने दृष्टांत को समाप्त करते हैं कि, "**जिसके पास सुनने के लिए कान हों, वह सुन ले**।" यीशु चाहते हैं कि भीड़ न केवल सुने लेकिन वे जो कह रहे हैं उसे समझने के प्रयास में उसे ध्यान देकर सुनें। यीशु चाहते हैं कि लोगों ने दृष्टांत से जो शिक्षा पाई है, उसे सुनें और तद्नुसार कर्म करें।

यीशु के **शिष्य** या अनुयायी उनसे पूछते हैं कि दृष्टांत का मतलब क्या है। शिष्यों का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने लूका के पिछले अंशों में किया है। शिष्य शब्द प्रधान शब्दावली में हैं।

यीशु अर्थ को समझाकर **परमेश्वर के राज्य के रहस्यों** का ज्ञान अपने शिष्यों को देते हैं। **भेद** या सत्य परमेश्वर के राज्य के बारे में है। केवल परमेश्वर ही परमेश्वर के राज्य के बारे में इस गुप्त सत्य को प्रकट कर सकते हैं। यह सुनिश्चित करें कि भेद का अनुवाद नकारात्मक अर्थ के साथ न किया जाए।

परमेश्वर का राज्य परमेश्वर द्वारा अपने लोगों के दिलों पर राज करने को संदर्भित करता है। लोग अगर अच्छी मिट्टी हैं, तो यीशु लोगों को परमेश्वर के भेदों को दिखाएंगे, जिसका अर्थ है कि यदि वे वाकई उन्हें सुन रहे हों और वाकई उन पर विश्वास कर रहे हों तो। यदि लोग बुरी मिट्टी की तरह हैं, तो वे भ्रमित हो जाएंगे या यीशु जो कहते हैं, उसे भूल जाएंगे। परमेश्वर के राज्य का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पिछले अंशों में किया है। परमेश्वर का राज्य प्रधान शब्दावली में है।

यीशु कहते हैं कि बीज परमेश्वर का वचन है। मूल भाषा में **बीज** एकवचन है, लेकिन यह एक ही प्रकार के पौधे के अनेकों बीजों को संदर्भित कर सकता है। इस संस्कृति में अनाज का बीज सबसे आम था।

रुकें और अपनी टीम को अनाज के बीज का चित्र दिखाएं।

परमेश्वर के वचन का अर्थ परमेश्वर से आए संदेश से है। यीशु अपने ही शिक्षण को संदर्भित कर रहे हैं। विशेष रूप से, परमेश्वर के राज्य के बारे में शिक्षा।

यीशु **शैतान** द्वारा आकर लोगों के दिलों में से वचन को ले जाने की उल्लेख करते हैं। शैतान का संदर्भ इब्लीस से है, जो सभी दुष्ट आत्माओं का प्रधान है। सुनिश्चित करें कि शैतान का अनुवाद आप उसी तरह से करें जिस तरह आपने पिछले अंशों में किया है। शैतान शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 8:4–15

Audio Content

webm zip (3815657 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (6569073 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 8:16–18

सुनना और मनन करना

लूका 8:16–18 सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे इस कथा को सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 8:16–18

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

लूका यीशु द्वारा एक अन्य दृष्टांत या एक विशेष कथा कहते हैं, जो परमेश्वर के बारे में गहरी बातें सिखाती है। ठीक उसी प्रकार जिस तरह यीशु ने पहले दृष्टांतों को सिखाया था, यह दृष्टांत यीशु के शिष्यों को सिखाता है कि जो वे सिखाते हैं, उसे उन्हें ध्यान से सुनना चाहिए। जो यीशु ने अपने शिष्यों को दृष्टांतों के बारे में बताया था, यह कहावतें उन्हें भी प्रदर्शित करती हैं। कुछ लोगों के लिए यह अर्थ छिपा रहेगा, लेकिन उनके शिष्यों को इसे समझना चाहिए।

यीशु ने चार तरह की मिट्टी के दृष्टांत को अभी-अभी एक भीड़ को बताया है, जिनमें उनके शिष्य या अनुयायी भी शामिल थे।

यीशु ने अपने शिष्यों को यह दृष्टांत बताते हुए कहा कि वे जो कुछ भी सिखाते हैं, उसे उन्हें ध्यान ने सुनना चाहिए। उसके बाद यीशु एक दीपक का दृष्टांत बताते हैं।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में महत्वपूर्ण शिक्षाएं किस तरह दी जाती हैं? क्या शिक्षाओं के अर्थ हमेशा स्पष्ट होते हैं या कभी-कभी वे छिपे हुए भी होते हैं? छिपे हुए अर्थों को किस तरह के लोग समझते हैं?

यह स्पष्ट नहीं है कि यीशु पूरे जनसमुदाय से संबोधित होते हैं, या केवल अपने शिष्यों के साथ।

यीशु एक ऐसे कृत्य का वर्णन करते हुए प्रारंभ करते हैं जो कोई भी नहीं करेगा। लोग एक दीपक को प्रकाशित कर ऐसे स्थान पर नहीं रखेंगे जहां प्रकाश छिप जाए। मिट्टी का पात्र या बिस्तर के नीचे ऐसे उदाहरण हैं जहां प्रकाश छिपाया जा सकता है। यहूदी संस्कृति में, दीपक एक छोटा मिट्टी का दीपक होता था जिसे जैतून के तेल से जलाया जाता था। यीशु के समय में हर किसी के पास ऐसा एक (दीपक) घर में होगा। इसके विपरीत, यीशु कहते हैं कि लोग अपने दीपक को दीवट पर रखते हैं ताकि हर कोई प्रकाश को देख सके।

रुकें और तेल के एक दीपक और दीवट का चित्र दिखाएं। अपनी टीम के साथ चर्चा करें, आपकी संस्कृति में आप यह कैसे सुनिश्चित करेंगे कि प्रकाश दिखाई दे? आपकी संस्कृति में ऐसे कौन से तरीके हो सकते हैं, जो प्रकाश को छिपा सकते हैं?

यीशु कहते हैं कि ऐसा कुछ भी छिपा हुआ नहीं है जो परमेश्वर प्रकट नहीं करेंगे या प्रकाश में नहीं लाएंगे। वे इसे दो अलग-अलग तरीकों से कहते हैं। संभवत: इसका अर्थ है कि परमेश्वर नहीं चाहते कि उनका सत्य मिट्टी के पात्र में या बिस्तर के नीचे एक दीपक की तरह छिपा हुआ रहे। यह कहावत परमेश्वर के राज्य के बारे में यीशु के शिक्षण पर भी लागू होती है। परमेश्वर अपने समय में लोगों को उनके राज्य के अर्थ को प्रकट करेंगे।

चूंकि परमेश्वर अपने सत्य को प्रकट करते हैं, यीशु कहते हैं कि लोगों को उनके शिक्षण को ध्यान से सुनना चाहिए और उस पर विश्वास करने और उसका पालन करने के लिए तैयार रहना चाहिए। जो लोग उन्हें सुनते हैं और अधिक समझना चाहते हैं, वे अधिक समझ जाएंगे। इसके विपरीत, जो लोग यीशु के शिक्षण को समझना नहीं चाहते वे ऐसा सोचेंगे कि वे परमेश्वर के राज्य को समझते हैं लेकिन बाद में समझेंगे कि वे गलत थे।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 8:16–18

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य कल्पांकित करने में समूह की मदद करेंगे। आप कहानी के दृश्यों, विन्यास और पात्रों को परिभाषित करने में ग्रुप की मदद करेंगे।

इस कहानी में तीन दृश्य हैं।

पहला दृश्य: यीशु एक दीपक रखने वाले व्यक्ति के दृष्टांत को बताते हैं। एक व्यक्ति द्वारा एक दीपक को प्रकाशित करने के बाद, वह उसे मिट्टी के पात्र से ढंक देता है। जो लोग घर में आते हैं, वे देख नहीं सकते। उसके बाद वह व्यक्ति दीपक को बिस्तर के नीचे रखता है। जो लोग अंदर आते हैं, वे देख नहीं सकते। उसके बाद वह व्यक्ति दीपक को ले जाता है और उसे एक दीवट पर रखता है। घर में प्रवेश करने वाला हर कोई देख सकता है।

दूसरा दृश्य: यीशु कहते हैं कि जो कुछ छिपा है, उसे प्रकाश में लाया जाएगा।

तीसरा दृश्य: यीशु अपने शिक्षण को ध्यान से सुनने के लिए कहते हैं, ताकि लोग समझ सकें। जो लोग नहीं सुनेंगे वे वह भी खो देंगे जो वे सोचते हैं कि वे समझते हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- जो सुन रहे हैं
- दीपक के साथ एक व्यक्ति
- जो व्यक्ति यीशु को सुनता है
- वह व्यक्ति जो यीशु को नहीं सुनता

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल (ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप इधर उधर रख सकते हैं जैसे पत्थर, लकड़ियां, बच्चों के खिलौने) का इस्तेमाल करे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यह स्पष्ट नहीं है कि यीशु केवल अपने शिष्यों से संबोधित हैं या समूची भीड़ से।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु ऐसे कृत्यों का सुझाव देते हैं जो उन्हें पता है कि उनके दर्शक नहीं करेंगे। कोई भी एक दीपक को प्रकाशित करने के बाद उसमें से आने वाले प्रकाश को छिपाएगा नहीं। यीशु अपने उपदेशों के बारे में ध्यान आकर्षित करने के लिए ऐसा करते हैं।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 8:16–18

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी में तीन दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- जो सुन रहे हैं
- दीपक के साथ एक व्यक्ति
- यीशु को सुनने वाला एक व्यक्ति
- ऐसा व्यक्ति जो यीशु को नहीं सुनता

मण्डली से कहानी का दो बार अभिनय करवाएं। पहली बार टीम से बिना रूके कहानी का अभिनय करवाएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है तब उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, तब कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

यह सुनिश्चित करें कि टीम भीड़ और शिष्यों द्वारा यीशु को सुनने का अभिनय करती है।

दूसरी बार जब मण्डली इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

एक व्यक्ति द्वारा एक दीपक को प्रकाशित करने और उसके बाद उसे मिट्टी के पात्र से ढंकने का अभिनय करें। जबकि ऐसा हो रहा होता है, तक यीशु यह स्पष्ट करते हैं कि ऐसा कोई भी नहीं करेगा। कोई घर में आता है और कुछ भी नहीं देख सकता। उसके बाद वह व्यक्ति दीपक को बिस्तर के नीचे रखता है। यीशु यह स्पष्ट करते हैं कि कोई भी ऐसा नहीं करेगा। कोई घर में आता है और देख नहीं सकता। एक व्यक्ति दीपक को एक दीवट पर रखता है और उसके बाद हर कोई सब कुछ देख सकता है। यीशु यह स्पष्ट करते हैं कि यही दीपक का उद्देश्य है, प्रकाश देना।

अभिनय को बंद करें। दीपक के साथ वाले व्यक्ति का पात्र निभाने वाले व्यक्ति से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बाते सुन सकते हैं, जैसे, "मुझे लगता है मेरे दो विचार थे जो काम नहीं किए," "मैं दीपक को दीवट पर रख कर देख पा सकने को लेकर खुश हूं," "मुझे खुशी है कि लोग जब मेरे घर के अंदर आते हैं तो वे देख सकते हैं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु कहते हैं कि जो कुछ भी छिपा है, वह छिपा नहीं रहेगा। वे कहते हैं कि जो भी रहस्य है वह प्रकाश के कारण प्रकट होगा।

अभिनय को बंद करें। शिष्यों का किरदार निभा रहे अभिनेताओं से पूछें, आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे, "मुझे समझ नहीं आता कि यीशु किन रहस्यों के बारे में बात कर रहे हैं," "मुझे लगता है वे मेरे रहस्यों के बारे में बात कर रहे हैं। मुझे शर्म महसूस होती है," "मैं जानना चाहता हूं कि क्या छिपा हुआ है।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

वे किस तरह सुनते हैं, यीशु इस पर ध्यान देने के लिए कहते हैं। जो व्यक्ति सुनता है, उसे अधिक समझ होगी। लेकिन जो व्यक्ति नहीं सुनता है, उससे उसकी वह समझ जो उसके पास है, वह भी ले ली जाएगी। जब यीशु यह कह रहे होते हैं, एक ऐसे व्यक्ति का अभिनय करें जो सुन रहा हो और समझ हासिल करने वाले व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करें। उसके बाद एक ऐसे व्यक्ति का अभिनय करें जो नहीं सुनता और ऐसा सोचता है कि उसमें समझ है। बाद में वे उस समझ को खो देते हैं।

अभिनय को बंद करें। समझ खो देने वाले व्यक्ति का किरदार अदा करने वाले अदाकार से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं, जैसे, "मुझे और अधिक सुनने की आवश्यकता नहीं है," "मैंने पहले भी ऐसा ही कुछ सुना था," "यीशु का शिक्षण मुझ पर लागू नहीं होता है।"

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 8:16–18

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु कहते हैं कि कोई भी दीपक को मिट्टी के पात्र में या बिस्तर के नीचे नहीं रखता है। यहूदी संस्कृति में, **दीपक** मिट्टी से बने तेल के एक छोटे से दीपक को संदर्भित करता है। यह जैतून के तेल से जलता था। यीशु के समय काल में हर किसी के घर में ऐसा एक (दीपक) रहा होगा।

दीपक का अर्थ उसके प्रकार की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है। अगर आप आपकी संस्कृति में दीपक का इस्तेमाल नहीं करते हैं, तो आप प्रकाश देने वाली किसी वस्तु को दर्शाने वाले किसी सामान्य शब्द का उपयोग कर सकते हैं।

जब यीशु एक **पात्र** का उल्लेख करते हैं, तो उनका अर्थ किसी भी प्रकार के कटोरे, प्याले या भाजन से होता है जो प्रकाश को छिपा सकता है। पात्र कांच के एक पारदर्शी पात्र को संदर्भित नहीं करता है। इसके बजाय, इसका अर्थ किसी भी ऐसे पात्र से है जो दीपक को ढंक कर प्रकाश को छिपा दे।

यहूदी संस्कृति में **बीज** उपस्कर की एक वस्तु को संदर्भित करते हैं जिन पर लोग सोने या खाने के लिए लेटते, या अधलेटे होते थे। इस प्रसंग में निहितार्थ है कि बिस्तर फर्श से ऊपर उठा रहा होगा, ताकि उसके नीचे एक दीपक छिप सके।

यदि आपकी संस्कृति में बिस्तरों को फर्श पर रखा जाता है, तो सुनिश्चित करें कि इसके अनुवाद का निहितार्थ ऐसा हो जिसमें बिस्तर फर्श से ऊपर उठा हो।

यीशु कहते हैं कि इसके बजाय लोग अपने दीपक को **दीवट** पर रखते हैं। यह उपस्कर की एक चल वस्तु थी। आमतौर पर एक दीवट धातु या लकड़ी से बना होता है और इसका उपयोग दीपक को ऊंचा करने और सहारा देने के लिए किया जाता था।

यदि इस दृष्टांत में प्रयुक्त तेल के दीपक, दीवट, और ऊंचे पलंग जैसी वस्तुएं आपके क्षेत्र में सामान्य नहीं हैं, तो आप इसी तरह की अन्य वस्तुओं के साथ इन्हें प्रतिस्थापित कर सकते हैं। अर्थ हमेशा यह दिखाना चाहिए कि लोग प्रकाश के अपने स्त्रोत को ढंकते या छिपाते नहीं हैं।

यीशु कहते हैं कि जिसके पास नहीं हैं, वह **जो सोचता है कि उसके पास है, वह भी उससे ले लिया जाएगा**। इसे समझना कठिन हो सकता सकता है, जब किसी व्यक्ति के लिए जो अस्तित्व में नहीं है, उसे ले जाना असंभव लगता है। परंतु यीशु कह रहे हैं कि वे लोग उस छोटे ज्ञान या समझ को खो देंगे, जो उनके पास है।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 8:16–18

Audio Content

webm zip (2043491 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (3529142 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 8:19–21

सुनना और मनन करना

लूका 8:19–21

लूका 8:19–21 को सुनें और उसे अपने हृदय में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

1. आपको इस कथा में क्या पसंद है?
2. आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?

लूका *8:19–21*

3. यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
4. यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
5. यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
6. आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे इस कथा को सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 8:19–21

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु गलील के क्षेत्र में एक भीड़ को सिखाते रहे हैं। उनके शिष्य, या करीबी अनुयायी, और महिलाओं का एक समूह जो उनकी सहायता करता रहा है, वे भी वहां है। लूका हमें ठीक से नहीं बताते कि यीशु कहां हैं, लेकिन वे दृष्टांतों का उपयोग करते हुए सिखाते हैं। दृष्टांत विशेष कथाएं होती हैं, जो परमेश्वर के बारे में गहरी शिक्षाएं सिखाती हैं। यीशु इन दृष्टांतों का उपयोग लोगों को यह सिखाने के लिए करते थे कि उन्हें न केवल उनकी शिक्षाओं को सुनना चाहिए, बल्कि उनका अनुपालन भी करना चाहिए। यीशु का परिवार उनसे बात करने के लिए आता है। यीशु इसका उपयोग भीड़ को सिखाने के लिए एक तरीके के रूप में करते हैं। यीशु के दृष्टांतों ने उनके अनुपालन करने के महत्व को दिखाया। यीशु उनके परिवार के आगमन का भीड़ को यह सिखाने के लिए उपयोग करते हैं कि उनका अनुपालन करने वालों को वे किस तरह देखते हैं।

यीशु शिक्षा दे रहे होते हैं और उनके आसपास एक बड़ी भीड़ होती है। यीशु की मां, मरियम, और उनके भाई उन्हें देखने के लिए आए। इब्रानी में, सगे भाई और रिश्ते के भाई के लिए एक ही शब्द का उपयोग किया जाता है। भाई शब्द, यूसुफ के अन्य बच्चों को भी संदर्भित कर सकता है जो यीशु से छोटे थे। लेकिन यह यीशु के रिश्ते के भाई को भी संदर्भित कर सकता है। यदि संभव हो, तो एक ऐसे सामान्य शब्द का उपयोग करना सर्वश्रेष्ठ होगा जो दोनों को संदर्भित कर सकता हो।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। कितनी बार और किन स्थितियों में रिश्तेदार परिवार के अन्य सदस्यों से मिलने के लिए जाते हैं?

यीशु की मां और भाई उनसे बात करना चाहते हैं, लेकिन वे भीड़ के कारण उनके पास पहुंच नहीं पाते। इससे यह संकेत मिलता है कि यीशु के पास और आसपास कई लोग उस समय बैठे थे जब वे शिक्षा दे रहे थे। कोई यीशु से कहता है कि उनके परिजन उनसे मिलने आए हैं और वे बाहर खड़े हैं। हमें नहीं पता कि यह व्यक्ति कौन है। इससे यह संकेत मिलता है कि उनके परिजन भीड़ की बाहरी परिधि पर या छोर पर खड़े थे। यीशु का उत्तर न केवल संदेशवाहक के लिए वरन् पूरी भीड़ के लिए होता है। वे ऐसा एक शिक्षा देने के लिए करते हैं। यीशु कहते हैं कि जो कोई भी उनकी शिक्षाओं या परमेश्वर के वचन को सुनता है, और उनका अनुपालन करता है, वह उनकी माता और भाई के समान है। लोगों को अपना परिजन मानने के लिए यीशु की उनके साथ रिश्तेदारी होने की आवश्यकता नहीं थी।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। किसे और कैसे किसी को परिवार का एक अंग माना जा सकता है? आपकी संस्कृति में परिजन माने जाने का अर्थ क्या होता है?

बाद में क्या हुआ इस बारे में लूका हमें नहीं बताते हैं। यीशु के परिजन उनसे बात कर पाए अथवा नहीं, इसे खुला ही छोड़ दिया गया है। हम यह जानते हैं कि यीशु अपने परिजनों के आगमन को परमेश्वर के राज्य से संबंधित होने या उसका परिजन होने के लिए शिक्षा देने के एक तरीके के रूप में उपयोग करते हैं। किसी का परिजन होना किसी व्यक्ति के पूर्वजों पर अधारित नहीं होता, लेकिन यह किसी के द्वारा यीशु की शिक्षाओं को सुनने और मानने पर आधारित है।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 8:19–21

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य कल्पांकित करने में समूह की मदद करेंगे। आप कथा के दृश्यों, विन्यास और चरित्रों को परिभाषित करने में समूह की मदद करेंगे।

इस कथा में एक दृश्य है।

पहला दृश्य: जब यीशु शिक्षा दे रहे होते हैं, तब यीशु की माता और भाई उन्हें देखने के लिए आते हैं। कोई व्यक्ति यीशु को उनके परिजनों के आगमन के बारे में बताता है। यीशु कहते हैं कि उनके भाई और माता वे हैं जो परमेश्वर के वचन को सुनते हैं और उनका पालन करते हैं।

इस कहानी के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- यीशु की माता
- यीशु के भाई
- भीड़

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल (ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप इधर उधर रख सकते हैं जैसे पत्थर, लकड़ियां, बच्चों के खिलौने) का इस्तेमाल करे।

यह स्मरण रखना महत्व का है कि परमेश्वर की संतान के रूप में किस तरह व्यवहार करना चाहिए, यीशु इस बारे में शिक्षा दे रहे हैं। उनके अनुयायियों की प्रवृत्ति कैसी होनी चाहिए, इस बारे में यीशु उदाहरण देते हैं।

एक भीड़ यीशु को सुन रही होती है। यीशु की माता और भाई के भीड़ की बाहरी परिधि पर होते हैं। वे यीशु से बात करना चाहते हैं, लेकिन वे उन तक पहुंच नहीं सकते। कोई यीशु को बताता है कि उनकी माता और भाई आए हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु इस अवसर का उपयोग उनके परिजन होने का क्या अर्थ होता है, इसके बारे में बात करने के लिए करते हैं। यीशु बताते हैं कि उनके अनुयायियों का परिवार भौतिक संबंधों पर आधारित नहीं है, परंतु परमेश्वर के वचन को सुनने और जो कुछ परमेश्वर का वचन कहता है, उस पर आधारित है। इस तरह यीशु अपनी शिक्षाओं को एक निष्कर्ष पर लाते हैं।

यह याद रखना महत्व का है कि यीशु अपने परिजनों की अवहेलना नहीं कर रहे हैं, परंतु जो हुआ उसे परमेश्वर के राज्य के बारे में सिखाने के लोगों को सिखाने के लिए एक अवसर के रूप में उपयोग कर रहे हैं।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 8:19–21

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

इस सत्र में टीम कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कथा में एक दृश्य है।

इस कहानी के पात्रों में ये शामिल हैं:

- यीशु
- यीशु की माता
- यीशु के भाई
- भीड़

मण्डली से कहानी का दो बार अभिनय करवाएं। जिस भाषा में वे अभिनय कर रहे हैं, उन्हें उसकी भाषा में अनुवाद करना चाहिए। पहली बार मण्डली से बिना रूके कहानी का अभिनय करवाएं। टीम दूसरी बार कथा पर जब अभिनय करके दिखाती है, उन्हें कथा में अलग अलग जगह पर रोकें।

जब टीम कथा को पहली बार पेश करती है, कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें। कथा या गद्यांश के उन अहम या मुश्किल हिस्सों पर नज़र रखें जिन पर अभिनय करना है और वह छूट न जाएँ। कथा के अंशों को याद करने में मण्डली की मदद करें।

यह सुनिश्चित करें कि जब यीशु के माता और भाई उनसे मिलने के लिए आते हैं तब यीशु शिक्षा दे रहे हों, इस बात का अभिनय टीम करे।

दूसरी बार जब मण्डली इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

जब उनके माता और भाई उनसे मिलने के लिए आते हैं, उस समय यीशु लोगों की बड़ी भीड़ को शिक्षा दे रहे होते हैं। कोई यीशु को बताता है कि उनकी माता और भाई बाहर हैं और वे उनसे मिलना चाहते हैं। यीशु यह कहते हुए उत्तर देते हैं कि जो परमेश्वर के वचन सुनते और उनका पालन करते हैं वे यीशु के माता और भ्राता हैं।

अभिनय बंद कर दें। यीशु की मां की भूमिका निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?"

आप ऐसी बातें सुन सकते हैं, जैसे "यीशु ने ऐसा कुछ क्यों कहा? यह मुझे उस समय की याद दिलाता है जब वे मंदिर में पीछे रुके थे।" "मैं इसे व्यक्तिगत तौर पर नहीं ले सकता। यीशु इस स्थिति का उपयोग शिक्षा देने के लिए कर रहे हैं।" "मैं यीशु के पास जाना चाहता हूं ताकि मैं उनसे बात कर सकूं।"

यीशु के भाई की भूमिका अदा करने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे, "यीशु का अर्थ क्या है?" "इतने सारे लोग यीशु का अनुसरण क्यों कर रहे हैं?" यीशु सोचते हैं कि वे बहुत महत्वपूर्ण हैं।"

भीड़ की भूमिका अदा करने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे, "मैं इस बात से उत्साहित हूं कि अगर में परमेश्वर के वचन का पालन करूंगा, तो मैं उनका परिजन बन जाऊंगा," "मुझे जानने की उत्सुकता है कि यीशु का परिजन होने का क्या अर्थ

होता है?" "मैं निराश हूं। परमेश्वर के वचन का पालन करना असंभव लगता है।"

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 8:19–21

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु एक भीड़ को शिक्षा दे रहे हैं। यीशु **की माता और भाई** का आगमन होता है और वे यीशु को देखना चाहते हैं। इब्रानी भाषा में सगे और रिश्ते के भाई दोनों ही के लिए भाई शब्द का उपयोग किया जाता है। यह यूसुफ और मरियम के उन पुत्रों को संदर्भित कर सकता है जो यीशु के बाद उत्पन्न हुए थे। यह यीशु के रिश्ते के भाईयों को संदर्भित कर सकता है, या यह किसी पिछले विवाह से उत्पन्न यूसुफ के बच्चों के बारे में सूचित कर सकता है।

अगर आपकी भाषा में संभव हो, तो एक ऐसे सामान्य शब्द को चुनें जो किसी भी भिन्न दृष्टिकोण पर लागू हो सकता है। अगर आपको बड़े भाई और छोटे भाई के बीच भेद करने की आवश्यकता हो तो छोटे भाई के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द सर्वश्रेष्ठ होगा।

यीशु के परिजन **उन्हें देखने के लिए आए**। इसका मतलब है कि वे यीशु को देखना और उनसे बात करना चाहते थे। वे उन्हें दूरी से देखना नहीं चाहते थे।

यीशु ने कहा, "मेरी माता और भाई वे हैं जो **परमेश्वर के वचन** को सुनते हैं और **उसे अपने आचरण में लाते** हैं।" परमेश्वर का वचन एक वाक्यांश होता है, जिसका अर्थ है एक संदेश जो परमेश्वर से आता है। इस मामले में यह यीशु का शिक्षण था। आचरण में लाना का अर्थ है जो यीशु कहें उसे मानना या करना।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 8:19–21

Audio Content

webm zip (1875941 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (3220107 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 8:22–25

सुनना और मनन करना

लूका 8:22–25

लूका 8:22–25 को सुनें और उसे अपने हृदय में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे इस कथा को सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 8:22–25

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

पिछली कथाओं में, लूका ने यीशु के शिक्षण और उपदेश पर ध्यान केंद्रित किया। इस कथा में, लूका प्रकृति पर यीशु के सामर्थ्य को दर्शाते हैं। यीशु और उनके शिष्य एक नाव पर गलील की झील को पार करते हैं। जब एक तूफान नाव को डुबोने की कगार पर ले आता है, उस समय यीशु सो रहे होते हैं। यीशु तूफान को शांत करके अपने सामर्थ्य को दर्शाते हैं।

यीशु गन्नेसरत, या गलील की झील पर अपने शिष्यों के साथ होते हैं। यीशु अपने शिष्यों, या करीबी अनुयायियों से कहते हैं कि वे दूसरे तट पर पार जाना चाहते हैं। इसका मतलब उत्तर-पश्चिमी तट पर स्थित कफरनहूम से चलकर झील के पूर्वोत्तर तट पर पार करना रहा होगा। यह एक ऐसा क्षेत्र था जहां केवल अन्यजाति के लोग रहते थे।

रुकें और अपनी टीम को गलील की झील का एक चित्र दिखाएं। यीशु और उनके शिष्यों ने जो मार्ग लिया होगा, उसे एक मानचित्र पर दिखाएं।

यीशु और उनके शिष्य नाव पर जाते हैं और झील के दूसरे किनारे की ओर जाने लगते हैं। यह नाव शायद लकड़ी की मछली पकड़ने वाली एक नाव थी, जिसमें पाल और पतवार थे। यह संभवत: 9 मीटर लंबी और 2.5 मीटर चौड़ी या 30 फीट लंबी और 8 फीट चौड़ी थी।

रुकें और अपनी टीम को पाल और पतवार के साथ मछली पकड़ने वाली नाव का एक चित्र दिखाएं।

वे नाव खेते हैं, जिसका मतलब है शिष्यों ने पाल खोल दी है ताकि हवा नाव को बहा ले चले या उन्होंने नाव को खेने के लिए पतवार का इस्तेमाल किया होगा। यीशु नाव में ही सो जाते हैं। वे अपने शिष्यों से कुछ ही फीट की दूरी पर लेटे हुए हैं। एक आंधी, या बहुत तेज़ हवा, झील के आसपास की पहाड़ियों से नीचे आती है। हवा झील पर बड़ी लहरें उत्पन्न करती है। ये लहरें इतनी प्रचण्ड और बड़ी थीं कि पानी नाव में भरने लगा। नाव में इतना पानी था कि नाव डूबने ही वाली थी। अगर नाव डूब जाती, तो लोग डूबने या पानी में मर जाने के खतरे में थे।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में तूफान कैसे दिखते हैं? जब लोग तूफान में फंस जाते हैं, तो वे कैसा महसूस करते हैं? तूफान के मध्य बाहर होने के क्या खतरे होते हैं?

शिष्य यीशु के पास आते हैं और उन्हें जगाते हैं। वे कहते हैं, स्वामी, स्वामी। यह एक ऐसी उपाधि थी जो सम्मान प्रदर्शित करती थी और किसी ऐसे व्यक्ति को संदर्भित करती थी जिसके पास अधिकार था। दो बार स्वामी कहना शिष्यों की दहशत और मायूसी को दर्शाता है। वे यीशु से कहते हैं, "हम डूबने वाले हैं।" शिष्य इस कथन में यीशु को भी शामिल करते हैं। शिष्य चाहते हैं कि यीशु उनकी मदद करें और उन्हें बचाएं।

यीशु जागते हैं और हवाओं और पानी को डांटते हैं। इस संदर्भ में, डांटने का मतलब रुकने के लिए आज्ञा देना है। यीशु हवाओं और पानी को दृढ़ता से इस तरह बोलते हैं मानो वे लोग थे। तुरंत हवा बहना बंद हो गई और लहरें थम गईं। सब कुछ फिर से प्रशांत हो गया, सब कुछ शांत और थम गया।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में लोग मौसम के बारे में क्या विश्वास करते हैं? क्या ऐसे लोग हैं जो मौसम को नियंत्रित कर सकते हैं? मौसम को बदलने की कोशिश करने के लिए लोग क्या करते हैं?

यीशु अपने शिष्यों से पूछते हैं, "आपका विश्वास कहां है?" यीशु ने यह प्रश्न अपने शिष्यों की उनपर विश्वास या भरोसे या असंशय की कमी के लिए झिड़कने के लिए उपयोग किया। यीशु का तात्पर्य है कि शिष्यों को यह विश्वास होना चाहिए था कि तूफान में वे उनकी रक्षा करेंगे। शिष्यों की प्रतिक्रिया भय और अचम्भे की थी। वे अचम्भित होते हैं कि यीशु के पास तूफान को शांत करने का ऐसा सामर्थ्य और ऐसा अधिकार था कि तूफान तुरंत उनके आदेश का प्रत्युत्तर देता है। शिष्य पूछते हैं, "यह ऐसा कौन है?" इसलिए नहीं कि वे यह नहीं जानते कि यीशु कौन हैं, परंतु इसलिए कि वे उनके द्वारा किए गए सामर्थ्य के काम पर अपना विस्मय व्यक्त करें।

लूका इस कथा का उपयोग यीशु द्वारा प्रकृति पर उनके सामर्थ्य और अधिकार को दर्शाने के लिए करते हैं। वे यह भी दर्शाने के लिए इसका उपयोग करते हैं, कि शिष्यों ने यीशु के सामर्थ्य और प्रयोजन को पूरी तरह पहचाना नहीं था। यह सामर्थ्य कर्म यीशु द्वारा झील के दूसरे किनारे पर प्रदर्शित किए जाने वाले अगले अद्भुत कर्म के साथ निकटता से संबंधित है।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 8:22–25

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य कल्पांकित करने में समूह की मदद करेंगे। आप कहानी के दृश्यों, विन्यास और पात्रों को परिभाषित करने में ग्रुप की मदद करेंगे।

इस कहानी में तीन दृश्य हैं।

पहला दृश्य: यीशु अपने शिष्यों से झील के दूसरे तट पर जाने के लिए कहते हैं। सभी एक नाव पर सवार हो जाते हैं। यीशु एक झपकी लेते हैं जबकि शिष्य नाव खेते हैं।

दूसरा दृश्य: एक बड़ा तूफान झील पर शुरू होता है। पानी नाव में भर रहा है। शिष्य वास्तविक खतरे में होते हैं।

तीसरा दृश्य: शिष्य यीशु को जगाने के लिए जाते हैं और कहते हैं कि वे डूबने की कगार पर हैं। यीशु उठे और उन्होंने हवा और लहरों को डांटा। अब सब कुछ शांत हो गया है। यीशु अपने शिष्यों से पूछते हैं, "आपका विश्वास कहां है?" शिष्य एक दूसरे से पूछते हैं, "यह व्यक्ति कौन है? लहरों और हवाओं ने भी उनके आदेश को माना है।"

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- शिष्य

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल (ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप इधर उधर रख सकते हैं जैसे पत्थर, लकड़ियां, बच्चों के खिलौने) का इस्तेमाल करे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु के कुछ शिष्य अतिकुशल मछुआरे थे।

यह भी याद रखना महत्व का है कि जब वे उन्हें जगाने के लिए गए थे, तब यीशु अपने शिष्यों से कुछ फीट की दूरी पर ही थे।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 8:22–25

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी में तीन दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- शिष्य

मण्डली से कहानी का दो बार अभिनय करवाएं। पहली बार टीम से बिना रूके कहानी का अभिनय करवाएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है तब उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, तब कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

यह सुनिश्चित करें कि टीम शिष्यों द्वारा नाव में जाने का अभिनय आत्मविश्वास के साथ करे क्योंकि उनमें से कुछ मछुआरे थे।

यह सुनिश्चित करें कि टीम इतने लोगों को शिक्षा देने और चंगा करने के बाद यीशु के थके होने का अभिनय करे।

दूसरी बार जब मण्डली इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

यीशु का अपने शिष्यों को यह कहने का अभिनय करें कि वे झील के पार जाने वाले हैं। वे सभी नाव पर सवार होते हैं और नाव को खेने लगते हैं। जब वे नौकायन कर रहे होते हैं, उस समय यीशु एक झपकी लेते हैं।

अभिनय को बंद करें। यीशु का पात्र निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं, जैसे "मैं खुश हूं कि मेरे शिष्य मेरे साथ हैं," "मैं थका हुआ हूं। नाव खेने का काम मैं अपने शिष्यों के हवाले छोड़ दूंगा," "मुझे बहुत खुशी है कि मैं आराम कर सकता हूं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

जल्द ही एक बड़ा तूफान झील पर शुरू हो जाता है। पानी नाव को भर रहा था। शिष्य वास्तविक खतरे में होते हैं।

अभिनय को बंद करें। शिष्यों का किरदार निभा रहे अभिनेताओं से पूछें, आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मैं मायूस हूं," "मैंने कभी ऐसा बुरा तूफान नहीं देखा," "यीशु कैसे सो सकते हैं?" अभिनय को फिर से शुरू करें।

शिष्य यीशु को यह कहते हुए जगाते हैं, "स्वामी, स्वामी, हम डूबने वाले हैं।" जब यीशु जागते हैं, तो वे हवाओं और लहरों को झिड़कते हैं। तूफान थम जाता है और सब कुछ शांत हो जाता है। यीशु उनके पूछते हैं, "आपका विश्वास कहां है?" शिष्य आश्चर्य करते हैं कि यीशु ऐसे कौन हैं कि हवाएं और लहरें भी उनकी आज्ञा मानती हैं।

अभिनय को बंद करें। यीशु की भूमिका निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "और कितना समय वे संदेह करेंगे?" "उन्हें विश्वास करने के लिए और क्या देखने की ज़रूरत है," "मुझे उन्हें शिक्षा देते रहने की ज़रूरत है। मुझे पता है कि वे सीख लेंगे।"

शिष्यों का किरदार निभा रहे अभिनेताओं से पूछें, आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे, "आश्चर्यचकित हैं," "यीशु के पास इतना सामर्थ्य कैसे हो सकता है?" "मैं शर्मिंदा हूं कि मैने यीशु पर मेरा ध्यान रखने के लिए भरोसा नहीं किया।"

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 8:22–25

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु अपने शिष्यों से कहते हैं कि वे झील के दूसरे छोर पर पार जाना चाहते हैं। **शिष्यों** का संदर्भ यीशु के करीबी अनुयायियों से है। नाव के आकार के कारण यह सबसे अधिक संभव है कि उसमें केवल 12 प्रेरित ही थे। शिष्यों का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने लूका के पिछले अंशों में किया है। शिष्य शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

झील का संदर्भ, गन्नेसरत या गलील की झील से है। यह झील लगभग 21 किलोमीटर लंबी और 10 किलोमीटर चौड़ी है। यीशु और उनके शिष्य कफरनहूम के पास नाव में प्रवेश करे होंगे और वे झील के पूर्वोत्तर तट की ओर जा रहे थे। गलील की झील का अनुवाद उसी तरह से करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। गलील की झील को प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

रुकें और यदि आपने ऐसा पहले ही नहीं किया है तो अपनी टीम को झील का एक नक्शा और चित्र दिखाएं। इस बात पर चर्चा करें कि आप इस जलाशय के लिए किस शब्द का उपयोग करेंगे।

यीशु और उनके शिष्य **एक नाव** पर होते हैं। यह नाव लकड़ी की एक मछली पकड़ने वाली नाव थी, इस बात की सर्वाधिक संभावना है। यह नाव लगभग 8 मीटर लंबी और 2 ½ मीटर चौड़ी थी। यह लगभग 1 1/4 मीटर गहरी थी। इतने बड़े आकार की नाव में तेरह लोग आराम से आ सकते थे। नाव का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। नाव शब्द प्रधान शब्दावली में है।

अपने अनुवादकों को नाव की तस्वीर दिखाएं और नाव का आकार दिखाने के लिए एक तरीका चुनें। आप एक छड़ी से जमीन पर आयाम खींचकर और लोगों से खींची हुई लाइनों के अंदर खड़े होने के लिए कहकर, ऐसा कर सकते हैं।

यीशु और उनके शिष्य नाव पर नौकायन करते हैं। नौकायन करने का **अर्थ** पानी पर नाव में यात्रा करना है। शिष्यों ने या तो पाल खोले होंगे ताकि हवाएं नाव को बहा ले जाएं या फिर उन्होंने चप्पू चलाएं होंगे।

जब वे नाव पर जा रहे थे, तो एक प्रचंड आंधी झील पर नीचे आ गई। प्रचंड आंधी एक बहुत तेज़ हवा है जो झील के आसपास की पहा**ड़ियों** से नीचे आई होगी। वह हवा पानी के पार प्रबलता से बही जिसके कारण बड़ी लहरें उत्पन्न हुईं। उन लहरों के कारण पानी नाव में घुस गया। इतना पानी था कि नाव **पानी से भर** गई। इसका मतलब है कि नाव डूबने ही वाली थी क्योंकि उसमें पानी भर रहा था।

तूफान के दौरान यीशु नाव पर सो रहे होते हैं। उनके शिष्य उन्हें जगाने के लिए उनके पास जाते हैं। वे उन्हें स्वामी कहते हैं। **स्वामी** एक ऐसा शीर्षक है जो सम्मान को दर्शाता है और जिसका उपयोग किसी ऐसे जन के लिए किया जाता है जिसके पास अधिकार हों। स्वामी का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। स्वामी शब्द प्रधान शब्दावली में है।

शिष्य डरते हैं कि वे डूबने वाले हैं। **डूबने** का मतलब जलमग्न होकर मरना है। यीशु जागते हैं और तूफान को डांटते हैं। इस संदर्भ में **डांटने** का अर्थ थमने के लिए आज्ञा देना है। यह किसी जन के लिए भी एक कड़ी अस्वीकृति व्यक्त कर सकता है जो गलत काम करता है। यीशु वायु और लहरों से इस तरह बात करते हैं मानों वे कोई व्यक्ति हों।

यीशु शिष्यों द्वारा **उन** पर विश्वास या भरोसे पर प्रश्न करते हैं। विश्वास का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले किया है। विश्वास शब्द प्रधान शब्दावली में है।

शिष्य **भय और विस्मय** के साथ प्रतिक्रिया करते हैं। शिष्य यीशु के बड़े सामर्थ्य के कारण भयभीत थे। वे इस बात से नहीं डरते थे कि यीशु उन्हें हानि पहुचांएगे, परंतु इस बात से विस्मयाभिभूत थे कि किस तरह हवाओं और लहरों ने यीशु के आदेश पर प्रतिक्रिया की।

जब शिष्यों ने पूछा, "**यह कौन है?**" ऐसा इसलिए नहीं है कि वे यह नहीं जानते कि यीशु कौन हैं। वे यह प्रश्न यीशु के सामर्थ्य और अधिकार पर अपने विस्मय को दर्शाने के लिए पूछते हैं।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 8:22–25

Audio Content

webm zip (2377399 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (4093140 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 8:26–39

सुनना और मनन करना

लूका 8:26–39

लूका 8:26–39 सुनें और इसे अपने हृदय में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे इस कथा को सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 8:26–39

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यह कथा गलील झील पर यीशु द्वारा एक तूफान को शांत किए जाने के तुरंत बाद होती है। यीशु और उनको शिष्यों द्वारा गलील की झील को पार करने के बाद का वृत्तांत वर्णन लूका निरंतर रखते हैं। यीशु झील के उस पार पहुंचते हैं जहां अन्यजाति रहते थे। यीशु एक दुष्टात्माओं से ग्रस्त व्यक्ति से मिलते हैं और उन्हें निकाल देते हैं। अन्यजाति भय के साथ प्रतिक्रिया करते हैं और यीशु को अस्वीकार कर देते हैं। इस कथा में लूका हमें यह दर्शाते हैं कि बोने वाले की शिक्षा अन्यजातियों पर भी लागू होती है।

रुकें और अपनी टीम को गलील की झील और मछली पकड़ने वाली नाव का एक चित्र दिखाएं।

तूफान को शांत करने के बाद, यीशु और उनके शिष्य गलील की झील के पूर्वोत्तर तट पर पहुंचते हैं। यह गिरासेनियों अथवा गिरासेना के नगर के लोगों को क्षेत्र था। वहां रहने वाले अधिकांश लोग अन्यजाति या गैर-यहूदी थे। यह क्षेत्र गलील की झील की विपरीत दिशा में था।

रुकें और अपनी टीम को गलील की झील, गलील और गिरासेना का एक मानचित्र दिखाएं। यीशु और उनके शिष्यों ने जो मार्ग लिया होगा, उसे चिन्हांकित करें।

जबकि लूका कथा कहते हैं, अक्सर वे पृष्ठभूमि की जानकारी को जोड़ते हैं जो विगत में हो चुकी होती है। अपनी भाषा में होने वाले कृत्यों और पृष्ठभूमि की जानकारी के बीच के भेद को बताने के लिए सर्वश्रेष्ठ तरीके के बारे में विचार करें।

यीशु और उनके शिष्य, या करीबी अनुयायी नाव से बाहर निकलकर सूखी भूमि पर कदम रखते हैं। दुष्टात्माओं या बुरी आत्माओं से ग्रस्त एक व्यक्ति, जो उसी नगर का था, वहां आता है जहां यीशु होते हैं। ग्रस्त होने का अर्थ होता है कि उस मनुष्य के कार्य और विचार बुरी आत्माओं द्वारा नियंत्रित थे। यह व्यक्ति एक अन्यजाति था। क्योंकि वह व्यक्ति दुष्टात्मा ग्रस्त था, यहूदी लोग उसे परमेश्वर की सेवा करने के लिए अस्वच्छ, या अयोग्य समझते थे। यह व्यक्ति संभवत: पहले गिरासेना का निवासी था, लेकिन दुष्टात्माओं के कारण वह अब वहां नहीं रहता था। उसके बाद लूका उस व्यक्ति के विषय में पृष्ठभूमि की जानकारी देते हैं।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में दुष्टात्मा से नियंत्रित लोगों के साथ किस तरह पेश आया जाता है? कोई व्यक्ति किसी दुष्टात्मा से ग्रस्त है, यह आप कैसे बता सकते हैं?

उस व्यक्ति ने लम्बे समय से ना तो कपड़े पहने थे, ना ही वह किसी घर में रहा था। इसके बजाय, वह कब्रों या गुफाओं में रहता था जहां लोग शव डालते थे। यह एक और बात थी जो उस व्यक्ति को यहूदियों के लिए अशुद्ध बनाती थी। बुरी आत्माएं उस व्यक्ति को उसके समुदाय और परिवार से अलग करने का कारण बनती थीं।

रुकें और अपनी टीम को दफनाने वाली एक कब्र की तस्वीर दिखाएं। अपनी टीम के साथ चर्चा करें, आपकी संस्कृति में लोग जब मर जाते हैं तो उनके शव कहां रखे जाते हैं? जहां मृतकों को रखा जाता है, उस स्थान के बारे में क्या मान्यताएं होती हैं?

उस व्यक्ति को नियंत्रित करने वाली दुष्टात्माएं यीशु की ओर शत्रुतापूर्ण होती हैं। वे उस व्यक्ति को चिल्ला कर यीशु के पैरों में गिरने का कारण बनती हैं। उस व्यक्ति के भीतर की दुष्टात्मा यीशु को परम प्रधान परमेश्वर का पुत्र कहती हैं क्योंकि वे यह पहचानतीं हैं कि यीशु में उनसे अधिक सामर्थ्य था। यीशु द्वारा दुष्टात्माओं को उस व्यक्ति को छोड़ने की आज्ञा देने के बाद, दुष्टात्माएं यीशु से उन्हें प्रताड़ित न करने की प्रार्थना करती हैं। इस संदर्भ में प्रताड़ित करने का अर्थ कष्ट और पीड़ा देकर सज़ा देने से है।

उसके बाद लूका उस व्यक्ति के विषय में पृष्ठभूमि की जानकारी देते हैं। लूका बताते हैं कि दुष्टात्माओं ने विगत में कई बार उस व्यक्ति को उग्र रूप से नियंत्रित किया था। जब वह दुष्टआत्माओं द्वारा नियंत्रित किया जाता था तो नगरवासी उस व्यक्ति की कलाई और पैरों में जंजीरें डाल कर उसे रोकते थे। लोगों को उस ग्रसित व्यक्ति की रक्षा करनी पड़ती थी ताकि वह बच कर लोगों को हानि न पहुंचाए। लेकिन उस व्यक्ति के भीतर की दुष्टात्माओं ने उसे इतना बलवान कर दिया कि वह जंजीरे तोड़ कर मुक्त हो जाता था। वे उस व्यक्ति को ऐसे स्थानों पर जाने और रहने का कारण बनती थीं जहां कुछ ही लोग रहते थे।

रुकें और अपनी टीम को जंजीरों की एक तस्वीर दिखाएं।

उसके बाद लूका कहानी पर वापस लौटते हैं। यीशु पूछते हैं कि उस व्यक्ति का नाम क्या है और दुष्टात्माएं उसे व्यक्ति के माध्यम से यीशु को जवाब देती हैं। वे कहती हैं "सेना" सेना एक सैन्य शब्द है जो रोम की फौज की सबसे बड़ी इकाई को संदर्भित करता है। एक सेना में चार से छ: हज़ार सैनिक होते थे। इसका अर्थ यह नहीं हे कि उस व्यक्ति के अंदर चार से छ: हजार दुष्टात्माएं थीं। दुष्टात्मा स्वयं को सेना कहती है क्योंकि उसके साथ कई अन्य दुष्टात्माएं भी उस व्यक्ति को नियंत्रित कर रही हैं। दुष्टात्माएं यीशु को बार-बार उन्हें गहन गर्त में या एक ऐसी जगह जहां दुष्टात्माओं को उनके अंतिम दंड की प्रतीक्षा करने के लिए रखा जाता था, वहां न भेजने की विनती करती हैं, यहूदियों का मानना था कि यह स्थान भूमि में कहीं गहरा था। गहन गर्त वह "प्रताड़ना" थी जिसका संदर्भ दुष्टात्माएं यीशु से बात करते समय दे रही थीं।

लूका पुन: हमें पृष्ठभूमि की जानकारी देते हैं कि पास की एक पहाड़ी के पास कुछ सूअर चर रहे थे। किनाने पर जहां यीशु अपने शिष्यों और दुष्टात्मा ग्रस्त लोगों के साथ खड़े थे वहां से

वे उन दुष्टात्माओं को देख सकते थे। हमें अन्य सुसमाचारों से पता हे कि वहां लगभग 2000 सूअर थे।

रुकें और अपनी टीम को सूअरों की एक तस्वीर दिखाएं।

चूंकि यीशु ने दुष्टात्माओं को उस व्यक्ति को छोड़ने की आज्ञा दी थी, इसलिए दुष्टात्माएं यीशु को सूअरों में जाने की अनुमति देने की विनती करती हैं। यीशु उन्हें सूअरों को नियंत्रित करने की अनुमति दे देते हैं। वे दुष्टात्माएं उस व्यक्ति से निकल कर सूअरों के समूह को ढलुआ पहाड़ी से नीचे गिरने का कारण बनती हैं। वे इतनी तेजी से दौड़ते हैं कि वे झील में गिर कर डूब जाते या जलमग्न होकर मर जाते हैं। झुण्ड के रखवाले, या सूअरों की देखभाल करने वाले लोगों ने जो हुआ वह देखा और वे डर कर भाग गए। जो कुछ हुआ उसे बताने के लिए वे अन्य नगरवासियों और गांव के लोगों को बताने के लिए दौड़ कर गए। लोगों ने झुंड के रखवालों का वृतांत सुना और वे खुद उसे देखने के लिए गए। वे आते हैं और दुष्टात्माओं से ग्रस्त व्यक्ति को यीशु के पैरों में बैठा पाते हैं। वह व्यक्ति कपड़े पहने शांतिपूर्ण ढंग से बैठा था। वह अब उग्र और अनियंत्रित नहीं था, बल्कि अपने सही मन में था। इसका मतलब केवल इतना है कि वह सामान्य रूप से व्यवहार कर रहा था और अब पागल नहीं था। यहूदी संस्कृति में अक्सर लोग शिक्षकों के पैरो पर बैठ जाते थे। यह उनके समर्पण और विनम्रता को दर्शाता है।

नगरवासी यीशु से भयभीत हो गए क्योंकि उस व्यक्ति को दुष्टात्माओं से छुटकारा दिलाकर उन्होंने अलौकिक सामर्थ्य प्रदर्शित किया था। जो घटित हुआ था उसके प्रत्यक्षदर्शियों ने भीड़ को बताया कि यीशु ने उस व्यक्ति को दुष्टात्माओं से किस तरह चंगा या मुक्त कर दिया था। इसमें झुंड के रखवाले और यीशु के शिष्य दोनों शामिल हो सकते हैं। इसलिए उस क्षेत्र के लोग डर गए और उन्होंने यीशु को जाने को कहा। उनकी प्रतिक्रिया से पता चलता है कि भले ही कुछ लोगों ने यीशु के सामर्थ्य को देखा, लेकिन तब भी वे प्रतिज्ञा किए हुए उद्धारकर्ता के रूप में उन्हें नहीं मानेंगे या स्वीकार नहीं करेंगे।

यीशु अपने शिष्यों के साथ नाव पर सवार हो जाते हैं और जाने के लिए तैयार होते हैं। वह व्यक्ति जो दुष्टात्माओं से ग्रस्त था, वह भी यीशु के साथ जाना और उनका अनुयायी बनना चाहता था। लेकिन इसके स्थान पर यीशु ने उस व्यक्ति को एक कार्य दिया। यीशु चाहते हैं कि वह व्यक्ति अपने नगर वापस चला जाए और उसके क्षेत्र में सभी को बताए कि परमेश्वर ने उसके लिए क्या किया है। वह व्यक्ति अनुपालन करता है और अपने नगर को वापिस लौट जाता है। वह सभी को यीशु के सुसमाचार के बारे में बताता है।

इस कथा में लूका दुष्टात्माओं के ऊपर यीशु के सामर्थ्य और अधिकार को दर्शाते हैं। लूका यह भी दर्शाते हैं कि यीशु की शिक्षा और चिकित्सा न केवल यहूदियों के लिए बल्कि अन्यजातियों के लिए भी है। हम न केवल एक अन्यजाति को यीशु का अनुयायी बनते देखते हैं, लेकिन यीशु द्वारा एक अन्यजाति को उनके बारे में बताने के लिए भेजते हुए भी देखते हैं।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 8:26–39

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य कल्पांकित करने में समूह की मदद करेंगे। आप कथा के दृश्यों, विन्यास और पात्रों को परिभाषित करने में समूह की मदद करेंगे।

इस कहानी में छ: दृश्य हैं।

पहला दृश्य: दुष्टात्माओं से ग्रस्त एक व्यक्ति कब्रों में रह रहा होता है। वह खुद को काट लेता था और कपड़े नहीं पहनता था। जब वह नगर के लोगों को परेशान करता था, तो वे उसे जंजीरों से बांध देते थे और उसकी पहरेदारी करते थे। वह व्यक्ति लोगों से दूर रहने के लिए जंजीरें तोड़ देता है।

दूसरा दृश्य: यीशु और उनके शिष्य गलील की झील में एक नाव पर सवार थे। वे तट पर पहुंचते हैं। यीशु नाव से बाहर निकलते हैं। यीशु दुष्टात्माओं को उस व्यक्ति से बाहर निकलने के लिए कहते हैं। दुष्टात्मा ग्रस्त व्यक्ति उनसे मिलने के लिए दौड़ कर जाता है। दुष्टात्माओं और यीशु के बीच एक बातचीत होती है।

तीसरा दृश्य: यीशु दुष्टात्माओं को उस व्यक्ति को छोड़ने और सूअरों में प्रवेश करने की अनुमति देते हैं। दुष्टात्माएं सूअरों में प्रवेश कर जाती हैं और उन्हें झील से नीचे गिरने और झील में डूबने का कारण बनती हैं। झुंड के रखवाले भाग जाते हैं और जो कोई भी उनको मिलता है, उसे बताते हैं कि क्या हुआ।

चौथा दृश्य: नगर के निवासी वहां आते हैं जहां यीशु उस व्यक्ति के साथ होते हैं। दुष्टात्माओं से ग्रस्त व्यक्ति शांत, कपड़े पहने और यीशु के पैरों पर बैठा हुआ होता है। लोग डर जाते हैं और यीशु से जाने के लिए कहते हैं।

पांचवां दृश्य: यीशु और उनके शिष्य जाने के लिए नाव पर सवार होते हैं। वह व्यक्ति यीशु के साथ जाने के लिए कहता है। यीशु उसे पीछे रहने के लिए और जो कुछ हुआ उसे सभी को बताने के लिए कहते हैं।

छठा दृश्य: वह व्यक्ति पीछे रहता है और यीशु का कहा मानता है। यीशु ने उसके लिए जो कुछ किया वह सभी को बताता है।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- यीशु के शिष्य
- दुष्टात्माग्रस्त व्यक्ति
- राक्षस
- सूअर
- झुंड के रखवाले
- नगरवासी
- दुष्टात्माग्रस्त व्यक्ति के पहरेदार

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल (ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप इधर उधर रख सकते हैं जैसे पत्थर, लकड़ियां, बच्चों के खिलौने) का इस्तेमाल करे।

इस बात पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि लूका के वृत्तांत के इस हिस्से में, लूका तीन बार घटनाक्रम की जानकारी देने से हटकर पृष्ठभूमि की जानकारी देते हैं। पहली दो बार पृष्ठभूमि की जानकारी उस दुष्टात्मा से ग्रस्त व्यक्ति के जीवन के बारे में होती है। तीसरी बार यह सूअरों के बारे में होती है।

तुफान को शांत करने के बाद यीशु और उनके शिष्य झील के दूसरी ओर पहुंचे।

यह जानना महत्वपूर्ण है कि कुछ भाषाओं में किसी घटना के वृत्तांत से पृष्ठभूमि की जानकारी तक जाना मुश्किल हो सकता है। जब लूका दुष्टात्मा ग्रस्त व्यक्ति जिस नगर में रहता है उसका परिचय देते हैं तब उस व्यक्ति के बारे में पृष्ठभूमि की सम्पूर्ण जानकारी का समूह बनाकर टीम कालक्रम को पुन:व्यवस्थित कर सकती है।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि शव के कारण यहूदियों द्वारा कब्रें अशुद्ध मानी जाती थीं।

यह स्मरण में रखना महत्व का है कि जंजीरें धातु की थीं, इसलिए उस व्यक्ति को उनमें से बार-बार बाहर निकलने के लिए अलौकिक शक्ति की आवश्यकता थी।

दुष्टात्माओं से ग्रस्त एक व्यक्ति था। लंबे समय से वह बेघर और नंगा, शहर के बाहर की कब्रों में रहता था। इस आत्मा ने अक्सर उस व्यक्ति पर नियंत्रण किया था। भले ही उसे पहरे में, जंजीरों और बेड़ियों में क्यों न रखा जाता था, वह दुष्टात्माओं के सामर्थ्य के पूरे प्रभाव में उन्हें तोड़ कर जंगल में भाग जाता था।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि जब यीशु के शिष्य, भले ही उनका उल्लेख न किया गया हो, तब उनके साथ होते हैं जब वे उस व्यक्ति से मिलते हैं।

जब यीशु नाव से बाहर चढ़ रहे होते हैं, तो दुष्टात्माओं से ग्रस्त व्यक्ति यीशु से मिलने के लिए बाहर आया।

यह स्मरण में रखना महत्व का है कि जिस कारण से दुष्टात्मा शिकायत करती हैं, वह इसलिए है कि यीशु ने पहले ही उन्हें उस व्यक्ति से बाहर आने के लिए कहा था। यीशु द्वारा दुष्टात्माओं को उनके शिकायत करने से पहले बाहर आने के लिए कहने के कृत्य के घटनाक्रम के इस भाग को टीम संभवत: पुन कालक्रमित करना चाहे। इस मामले में यह कहा जा सकता है: "जब यीशु ने दुष्टात्मा को उस व्यक्ति से बाहर आने के लिए बताना शुरू किया था, तो दुष्टात्माओं से ग्रस्त व्यक्ति यीशु से मिलने के लिए दौड़ कर आया था।"

यीशु ने दुष्टात्माओं को उस व्यक्ति से बाहर आने की आज्ञा दी।

जैसे ही उसने यीशु को देखा, वह चिल्लाया और यीशु के सामने नीचे गिर गया। उसके बाद वह चिल्लाया, "परम प्रधान के पुत्र यीशु, आप मेरे साथ हस्तक्षेप क्यों कर रहे हैं? कृपया, मैं आपसे बिनती करता हूं, मुझे प्रताड़ित मत करो!

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यहूदी लोग सूअरों को अस्वच्छ जानवरों के रूप में देखते थे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि सूअर पहले से ही पास की एक पहाड़ी पर चर रहे थे, वे झील के तट पर, जहां यीशु और दुष्टात्मा ग्रस्त व्यक्ति खड़े थे, वहां नहीं थे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि दुष्टात्माओं को कुछ भी करने से पहले यीशु की अनुमति लेनी पड़ती थी। यह उन पर यीशु के अधिकार को दर्शाता है।

यीशु उस व्यक्ति के नाम के बारे में पूछते हैं। वह व्यक्ति जवाब देता है 'सेना' क्योंकि उस व्यक्ति के अंदर कई दुष्टात्माएं थीं। दुष्टात्माएं यीशु से उन्हें गहरे गर्त में नहीं भेजने के लिए निवेदन करती हैं। दुष्टात्माएं पास की पहाड़ियों पर चर रहे सूअरों के एक बड़े झुंड के कुछ सूअरों में प्रवेश करने की अनुमति भी मांगती हैं।

यीशु उन्हें अनुमति देते हैं। दुष्टात्माएं उस व्यक्ति से बाहर निकलकर सूअरों में प्रवेश करती हैं, और पूरा झुंड ढलुआ पहाड़ी की ओर झील में नीचे गिर कर डूब जाता है।

जो कुछ उन्होंने देखा उसे लोगों को बताने के लिए झुंड के रखवाले भाग कर जाते हैं। यीशु को देखने शीघ्र ही लोग आकर उनके आसपास जमा हो जाते हैं। जब लोग यह देखते हैं कि वह व्यक्ति दुष्टात्माओं से मुक्त था, तो वे डर जाते हैं। क्षेत्र के लोग यीशु को चले जाने और उन्हें अकेले छोड़ने के लिए विनती करते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यदि टीम यह स्पष्ट करती है कि यीशु के शिष्य यीशु के साथ नाव से बाहर आते हैं, तो टीम को यह भी स्पष्ट करना होगा कि यीशु के शिष्य यीशु के साथ नाव में वापस प्रवेश करते हैं।

इसलिए यीशु वापस नाव पर चढ़ जाते हैं। जिस व्यक्ति में दुष्टात्माएं थीं, उसने उनके साथ जाने की विनती की। लेकिन यीशु ने उनसे कहा, "नहीं, अपने परिवार में वापस जाओ, और परमेश्वर ने आपके लिए जो किया है उन्हें वह सब कुछ बताओ।" वह व्यक्ति उनका कहा मानता है और नगर में जाकर यीशु द्वारा की गई महान बातों की घोषणा करता है।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 8:26–39

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी में छ: दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- यीशु के शिष्य
- दुष्टात्माग्रस्त व्यक्ति
- दुष्टात्माएं
- सूअर
- झुंड के रखवाले
- नगरवासी
- दुष्टात्माग्रस्त व्यक्ति के पहरेदार

मण्डली से कहानी का दो बार अभिनय करवाएं। पहली बार टीम से बिना रूके कहानी का अभिनय करवाएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है तब उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, तब कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

यह सुनिश्चित करें कि टीम उस दुष्टात्माग्रस्त व्यक्ति द्वारा उस तरह रहने का अभिनय करती है जिसका वर्णन लूका कृत्य की शुरुआत से ही करते हैं।

यह सुनिश्चित करें कि टीम कृत्य की शुरुआत से ही पहाड़ के नज़दीक सूअरों की देखभाल करने वाले चरवाहों का अभिनय करती है।

यह सुनिश्चित करें कि टीम यीशु के साथ नाव से बाहर आने का अभिनय करे। इसके साथ ही, यदि शिष्य शुरुआत में बाहर आते हैं, तो अंत में टीम को उनका यीशु के साथ नाव में वापिस सवार होने को अभिनय करना चाहिए।

दुष्टात्माओं द्वारा यीशु से शिकायत करने के पहले ही यीशु दुष्टात्माओं को बाहर निकलने की आज्ञा देते हैं, इसका अभिनय सुनिश्चित करें।

दूसरी बार जब मण्डली इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

कब्रों में रहने वाले दुष्टात्मा से ग्रस्त व्यक्ति का अभिनय करें। नगर के लोग उसे जंजीरों से बांधने की कोशिश करते हैं, लेकिन दुष्टात्माएं उन्हें मजबूत बनाती हैं और वह मुक्त हो जाता है। वह नगर के लोगों से दूर रहता है। **अभिनय को बंद करें।** दुष्टात्मा ग्रस्त व्यक्ति का किरदार निभा रहे अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "थका हुआ हूं.", "अकेला", "फंसा हुआ", और "आशाहीन हूं।"

ग्रामीणों का किरदार निभाने वाले कलाकारों से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "डरे हुए हैं।" "उम्मीद है कि वह वापस नहीं आएगा।" और "वह इतना सामर्थ्यशाली कैसे है?" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु और उनके शिष्यों का तट पर पहुंचने का अभिनय करें। एक दुष्टात्मा ग्रस्त व्यक्ति यीशु की ओर दौड़ता है और उन्हें पुकारता है। **अभिनय को बंद करें।** शिष्यों का किरदार निभा रहे अभिनेताओं से पूछें, आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "डरे हुए हैं।" "यह व्यक्ति पागल और अशुद्ध है!" "क्या हम खतरे में हैं?" और "यीशु क्या करेंगे?" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु द्वारा उस व्यक्ति से बात करने और उसके नाम के बारे में पूछने का अभिनय करें। दुष्टात्माएं प्रतिक्रिया करती हैं और सूअरों में जाने की अनुमति मांगती हैं। यीशु उन्हें अनुमति देते हैं और दुष्टात्माएं सूअरों को एक चट्टान से नीचे गिरने और डूबने का कारण बनती हैं। झुंड के रखवाले डर जाते हैं और जो कुछ हुआ उसे दूसरों को बताने के लिए दौड़ते हैं। **अभिनय को बंद करें।** गड़ेरिए का किरदार निभा रहे अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मुझे विश्वास नहीं होता कि वे सब मर चुके हैं। मैं अब अपने परिवार को कैसे खिलाऊंगा?" "सूअर पागल हो गए!" "नाराज हूं।" और "उस व्यक्ति ने ऐसा किया!" अभिनय को फिर से शुरू करें।

जो कुछ हुआ उसे सुनने और यीशु को देखने के लिए बाहर आने वाले नगरवासियों का अभिनय करें। वे दुष्टात्मा ग्रस्त व्यक्ति को शांत और सही मन में देखते हैं। **अभिनय को बंद करें।** जो व्यक्ति दुष्टात्मा ग्रस्त था, उसका अभिनय करने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मुझे बहुत राहत मिली है। यीशु ने मुझे बचाया!" "आखिरकार मैं अपने जैसा फिर से महसूस करता हूं।" "यीशु जहां भी जाते हैं, मैं भी वहीं जाना चाहता हूं।" और

"मैं कभी ऐसे किसी सामर्थ्यशाली व्यक्ति से नहीं मिला।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

नगर वासियों के डरे होने का अभिनय करें। वे यीशु को जाने के लिए कहते हैं।

अभिनय को बंद करें। नगरवासियों का किरदार निभा रहे अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मुझे खुशी है कि वह जा रहा है। मुझे उम्मीद है कि वह उस व्यक्ति को भी अपने साथ ले जाएगा।" "यीशु बहुत सामर्थ्यशाली हैं।" और "उन्होंने उस व्यक्ति की मदद क्यों की?" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु जाने के लिए नाव में सवार होते हैं और जो व्यक्ति दुष्टात्मा ग्रस्त था वह भी उनके साथ जाना चाहता है। यीशु उसे पीछे रहने के लिए और परमेश्वर ने उसके लिए जो भी किया वह दूसरों को बताने के लिए कहते हैं। **अभिनय को बंद करें।** जो व्यक्ति दुष्टात्मा ग्रस्त था, उसका अभिनय करने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मुझे दुख है कि मैं यीशु के साथ नहीं जा सकता।" "मैं दूसरों को यह बताने के लिए उत्साहित हूं कि उन्होंने मुझे कैसे चंगा किया," "मैं चाहता हूं कि मेरा परिवार यीशु के बारे में जान ले।" और "यीशु ने जो कुछ भी किया उसे मैं कभी नहीं भूलूंगा।"

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 8:26–39

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु और उनके शिष्य नाव पर गिरा**सेना के क्षेत्र** में गए। शिष्यों का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले किया है। **शिष्य** शब्द प्रधान शब्दावली में हैं। गिरासेना का संदर्भ गिरासेना के शहर में रहने वाले लोगों से है। ये लोग अन्यजाति या गैर-यहूदी थे। यह क्षेत्र गलील की झील के पार या उसके विपरीत स्थित था। गलील की झील प्रधान शब्दावली में है।

रुकें और अपनी टीम को गलील, गलील की झील और गिरासेना का एक मानचित्र दिखाएं।

यीशु एक दुष्टात्मा **ग्रस्त व्यक्ति** से मिलते हैं। इसका अर्थ है कई दुष्टात्माएं, या अशुद्ध आत्माएं उस व्यक्ति के विचारों और कार्यों पर नियंत्रण करती थीं। दुष्टात्मा का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जैसा कि आपने पिछले अंशों में किया है। दुष्टात्माएं और बुरी आत्माएं प्रधान शब्दावली में हैं।

यह व्यक्ति **कब्रों** में रह रहा था। इस संदर्भ में कब्रें या तो एक गुफा या किसी चट्टान की पहाड़ी में से काट कर निकाले गए एक छोटे कक्ष का उल्लेख करती है। कब्र वे होती थीं जहां शव रखे जाते थे। जहां शव दफन हों या हड्डियों को रखा जाता है, वहां किसी का रहना स्वाभाविक नहीं था। यहूदी इन स्थानों को मृत शरीरों के कारण अशुद्ध मानते थे। कब्र शब्द प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

रुकें और अगर आपने पहले से ही ऐसा नहीं किया है तो अपनी टीम को कब्रों की तस्वीरें दिखाएं।

दुष्टात्मा ग्रस्त व्यक्ति यीशु **को परमप्रधान परमेश्वर का पुत्र** कहता है। यह यीशु के लिए एक उपाधि है। यीशु को पुत्र कहना यह दर्शाता है कि परमेश्वर के साथ उनका संबंध एक पिता और एक पुत्र के संबंध की तरह है। यह व्यक्त करता है कि यीशु का स्वभाव परमेश्वर की तरह ही है। परम प्रधान परमेश्वर का अर्थ है कि परमेश्वर किसी भी अन्य सामर्थ्य या देवता की तुलना में अधिक सामर्थ्यशाली और महान हैं। परमेश्वर का पुत्र प्रधान शब्दावली में है।

अतीत में उस व्यक्ति को जंजीरों में रखा गया था। **जंजीरें** या बेड़ियां किसी को रोकने के लिए उपयोग में लाने जाने वाली किसी वस्तु को संदर्भित करती हैं। यह शब्द धातु की उन जंजीरों पर, जो उस व्यक्ति के हाथों को बांधने के लिए, और धातु की उन बेड़ियों पर जो उसके टखनों को एक साथ बांधने के लिए, इस्तेमाल की गई थीं, उन पर लागू होता है। दुष्टात्माओं ने उस व्यक्ति को इतना बलवान बना दिया कि वह जंजीरों को तोड़ कर **एकांत स्थानों** या जंगल में भाग जाता था। जंगल का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। जंगल शब्द प्रधान शब्दावली में है।

यदि आपने पहले से ऐसा नहीं किया है तो रुकें और अपनी टीम को जंजीरों की एक तस्वीर दिखाएं।

जब यीशु उस व्यक्ति का नाम पूछते हैं, तो दुष्टात्माएं जवाब देती हैं "**सेना**"। सेना एक रोमन शब्द है जो 4,000 से 6,000 सैनिकों के एक दल को संदर्भित करता है। दुष्टात्मा ने खुद को यह इसलिए कहा क्योंकि उस व्यक्ति में कई दुष्टात्माएं थीं, इसलिए नहीं कि उस व्यक्ति में विशिष्ट संख्या में 4,000 से 6,000 दुष्टात्माएं थीं।

दुष्टात्माएं यीशु से गहरे गर्त में उन्हें नहीं भेजने की भीख **मांगत**ी हैं। गहरे गर्त के लिए जो यूनानी शब्द है, वह एक बहुत गहरे गड्ढे के रूप में अनुवाद करता है जिसमें कोई तल नहीं होता। इस संदर्भ में यह एक ऐसी जगह को संदर्भित करता है जहां दुष्टात्माएं परमेश्वर के न्याय की प्रतीक्षा करने के लिए रखी जाती हैं। यहूदियों का मानना था कि यह स्थान भूमि में कहीं गहरा था। गहन गर्त वह "प्रताड़ना" थी जिसका संदर्भ दुष्टात्माएं यीशु से बात करते समय दे रही थीं।

सूअरों के पानी में डूब जाने या मर जाने के बाद रखवाले, जो कुछ हुआ वह नगर वासियों को बताते हैं। नगर के निवासी वहां आते हैं जहां यीशु हैं और दुष्टात्मा ग्रस्त व्यक्ति को अपने **सही मन में देखते हैं।** इसका मतलब है कि उस व्यक्ति का मन सामान्य हो गया था और वह अब और पागल नहीं था।

उसके विचार और कृत्य अब दुष्टात्माओं द्वारा नियंत्रित नहीं थे। लोगों ने देखा कि वह व्यक्ति **चंगा** हो गया है। बाइबल में चंगा होना वही शब्द है जो बचाने या छुड़ाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। आध्यात्मिक अर्थ में प्रयुक्त होने पर इसका अर्थ है पापों से छुटकारा। इस संदर्भ में इसका अर्थ दुष्टात्माओं के नियंत्रण से बचना है।

यदि आपकी भाषा में एक ऐसा शब्द है जिसका अर्थ पाप से छुटकारा और दुष्टात्माओं से छुटकारा दोनों ही हो सकता है तो आप उस शब्द का उपयोग यहां कर सकते हैं।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 8:26–39

Audio Content

webm zip (4124203 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (7097972 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 8:40–56

सुनना और मनन करना

सुनें और हृदय

लूका 8:40–56

लूका 8:40–56 सुनें और इसे अपने हृदय में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे इस कथा को सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 8:40–56

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु ने अभी ही एक अन्यजाति व्यक्ति या गैर-यहूदी को ठीक किया होता है जो दुष्टात्माओं से ग्रस्त था। लूका यीशु और उनके शिष्य जब नौकायन कर गलील की झील पार कर गलील के क्षेत्र में पहुंचते हैं, उसके बाद की यीशु की कथा जारी रखते हैं। लूका एक ही कथा के भीतर यीशु द्वारा किए गए दो सामर्थ्य कर्म की कथा बताते हैं। यीशु के सामर्थ्य कर्म उनकी विशेष सामर्थ्य और अधिकार को दर्शाते हैं जो परमेश्वर ने उन्हें प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता के रूप में दिए होते हैं।

यीशु और उनके शिष्य या करीबी अनुयायी उस क्षेत्र से लौटते हैं जहां अन्यजाति रहते थे और गलील की झील को नाव में पार करके वापिस गलील के क्षेत्र में जाते हैं। जब यीशु पहुंचते हैं तो वहां यहूदियों की भीड़ यीशु की प्रतीक्षा कर रही होती है। लूका का तात्पर्य है कि यीशु उसी स्थान के पास पहुंचे जहां से वे चले थे, क्योंकि भीड़ वहां उम्मीद कर रही थी। वे यीशु की वापसी की प्रतीक्षा कर रहे और उनकी बाट जोह रहे थे। यीशु गलील की झील के उत्तर-पश्चिमी तट पर पहुंचते हैं। अधिकांश विद्वान मानते हैं कि नगर का नाम कफरनहूम था।

रुकें और यीशु और उनके शिष्यों ने गिरासेना से गलील की झील के उत्तर-पश्चिमी तट तक का जो मार्ग लिया होगा, उसका एक नक्शा दिखाएं।

एक महत्वपूर्ण व्यक्ति है जो भीड़ का हिस्सा होता है। उसका नाम याईर है और वह एक स्थानीय आराधनालय या उपासना के यहूदी स्थान में एक नेता है। हर आराधनालय में एक या दो नेता होते थे जो भवन की देखभाल करने और आराधनालय में गतिविधियों का आयोजन करने के लिए जिम्मेदार थे। पिछली कहानियों में लूका ने यह दिखाया कि धार्मिक नेताओं ने किस तरह यीशु का विरोध किया। इसके विपरीत याईन नम्रता से यीशु के पास आते हैं और उनके पैरों पर झुकते हैं। यहूदी संस्कृति में झुकना गहरे सम्मान और आदर को दर्शाता है। याईर यीशु से अपने घर आने और उनकी बेटी को चंगा करने की विनती करते हैं। उनकी बेटी लगभग 12 वर्ष की, या वयस्क बनने की आयु की थीं और यहूदी संस्कृति में विवाह योग्य थीं। याईर कहते हैं कि उनकी एकमात्र बेटी बहुत बीमार है और मरने के करीब है।

यीशु याईर के साथ जाने के लिए सहमत होते हैं और वे और उनके शिष्य याईर के साथ उनके घर की ओर जाने लगते हैं। नगर में संकीर्ण सड़कें थीं। भीड़ में इतने लोग होते हैं कि वे यीशु को लगभग कुचल देते हैं। यह एक अलंकारिक कथन है जिसका अर्थ है कि लोग यीशु के आसपास उनको लगभग दबाते हुए चल रहे थे। कुचलने के लिए प्रयुक्त यूनानी शब्द का अर्थ "दम घोटना" भी है। यह वही शब्द है जो कि यीशु की बोने के दृष्टांत में प्रयुक्त किया गया था जब उन्होंने कांटों द्वारा पौधों के कुचले जाने का वर्णन किया था।

रुकें और अपनी टीम को कफरनहूम की संकीर्ण सड़कों की तस्वीर दिखाएं।

उसके बाद लूका याईर की कहानी के दौरान भीड़ में उपस्थित एक महिला की कथा बताते हैं। लूका उस स्त्री के बारे में पृष्ठभूमि की जानकारी देते हैं। वे एक स्त्रीरोग से ग्रस्त थीं, जिसके कारण उन्हें 12 वर्षों से लगातार खून बह रहा था। रक्तस्त्राव वाली स्त्रियों को यहूदी परमेश्वर की सेवा के लिए अशुद्ध या अयोग्य मानते थे। कोई भी उन्हें चंगा नहीं कर सका था।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में किस तरह की बीमारियां लोगों को दूसरों से अलग रखती हैं? अगर कोई अपनी बीमारी का इलाज पाने में असमर्थ हो तो वह व्यक्ति कैसे जीवित रह सकता है?

जब तक वह यीशु के पीछे न हो, तब तक वह स्त्री भीड़ के बीच से अपना मार्ग बनाती है। वह लोगों की नज़रों में आना नहीं चाहती है। मरकुस के सुसमाचार के अनुसार वह स्त्री यीशु के चोगे या उनके बाहरी लंबे वस्त्र के किनारे को छू लेती है क्योंकि वह चंगा होना चाहती है। चोगे का छोर या किनारे का संदर्भ विशेष रूप से चोगे की झालर या लटकन के लिए हो सकता है जो यहूदी लोग आमतौर पर पहनते थे। झालरें लोगों को परमेश्वर के प्रति समर्पित रहने की याद दिलाती थीं।

रुकें और किसी यहूदी व्यक्ति के चोगे की लटकन या झालर की तस्वीर दिखाएं।

जैसे ही उस स्त्री ने यीशु के कपड़ों को छुआ वह चंगी हो गई और उसका खून बंद हो गया। यह एक महत्वपूर्ण तब्दीली है। आमतौर पर यहूदी संस्कृति में जब कोई व्यक्ति किसी अशुद्ध व्यक्ति को छू लेता था, तो वह भी अशुद्ध हो जाता था। इसके

बजाय वह स्त्री यीशु को छू लेती है और उसे जो कुछ अशुद्ध बना रहा था उससे वह तुरंत चंगी हो जाती है।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में स्पर्श को किस तरह देखा जाता है? क्या केवल कुछ ही लोगों को छूने की अनुमति होती है? अपने क्षेत्र के एक व्यस्त शहर में जहां कई लोग रहते हैं, वहां चलने का वर्णन आप किस तरह करेंगे?

यीशु अपने आसपास के लोगों से बात करते हैं और पूछते हैं कि "किसने मुझे छुआ था?" यीशु चाहते हैं कि वह व्यक्ति सामने आए। यीशु के आसपास के लोग कहते हैं कि उन्होंने उन्हें नहीं छुआ। यीशु के पतरस नामक शिष्य यह समझ नहीं पाते कि यीशु यह सवाल क्यों पूछ रहे हैं। पतरस यीशु को स्वामी कहते हैं, जो एक ऐसा शब्द है जो सम्मान दर्शाता है। वे यीशु को बताते हैं कि हर कोई उन्हें छू रहा है क्योंकि भीड़ उन पर चारों ओर से धक्कम-धक्का कर रही थी।

यीशु पतरस को प्रत्युत्तर देते हैं और उनका तात्पर्य होता है कि किसी ने जानबूझकर उन्हें छुआ था न कि दुर्घटनावश। यीशु बताते हैं कि उन्हें ऐसा महसूस हुआ या अनुभव हुआ कि चंगा करने का सामर्थ्य उनके शरीर से बाहर गया है। यह सामर्थ्य शारीरिक बल को नहीं बल्कि चंगा करने और सामर्थ्य कर्म करने के लिए परमेश्वर से आने वाले सामर्थ्य को संदर्भित करता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि यीशु उस स्त्री को चंगा करने से पहले जितने सामर्थ्यशाली थे उससे कम हो गए।

स्त्री को एहसास होता है कि यीशु उनके बारे में बात कर रहे हैं। भय से कांपते हुए वह यीशु के पैरों पर अपना मुंह भूमि पर झुका देती हैं। यह बड़ा सम्मान और नम्रता दर्शाता है। उस स्त्री ने अपनी कथा भीड़ के सामने यीशु को बताई। स्त्री ने बताया कि किस तरह यीशु के वस्त्र को छूने पर वह तुरन्त चंगी हो गई थी। यीशु उनके प्रति अपनी परवाह दिखाने के लिए उन्हें प्रत्युत्तर में "बेटी" कह कर बुलाते हैं। यीशु जैसे शिक्षक के लिए किसी स्त्री को करुणापूर्वक संबोधित करने के लिए यह एक उपयुक्त शब्द था। यीशु उन्हें बताते हैं कि यीशु के सामर्थ्य में उनके विश्वास या आस्था ने उन्हें चंगा किया है। क्योंकि उस स्त्री ने यीशु पर विश्वास किया, इसलिए वह उनकी बीमारी से बचाई या छुड़ाई जा सकी। उसके बाद यीशु एक सामान्य यहूदी आशीष बोलते हैं जो कोई किसी स्त्री को छोड़ते समय कहता है। वे उन्हें कहते हैं, "कुशल से जाओ।"

उसके बाद लूका अपना ध्यान याईर पर वापस लाते हैं और उनकी कहानी जारी रखते हैं। उस स्त्री के साथ यीशु की मुलाकात के दौरान याईर भीड़ में प्रतीक्षा कर रहे थे। जबकि यीशु अभी भी उस स्त्री के साथ बात कर रहे होते हैं, एक संदेशवाहक आकर याईर को बताता है कि उनकी बेटी मर चुकी है। संदेशवाहक यह सुझाव देता है कि याईर को अब शिक्षक को और अधिक कष्ट नहीं देना चाहिए या उनसे यह उम्मीद नहीं करनी चाहिए कि वे याईर के घर पर आएं। शिक्षक का संदर्भ यीशु से है जो किसी यहूदी धार्मिक नेता के लिए एक सम्मानसूचक उपाधि थी। संदेशवाहक ने यह मान लिया था कि यीशु मरे हुओं के लिए कुछ नहीं कर सकते थे।

संदेशवाहक ने जो कुछ याईर से कहा था उसे यीशु ने सुना और याईर को जवाब दिया। यीशु याईर को प्रोत्साहित करते हैं और उन्हें कहते हैं कि वे डरे नहीं, परंतु यह विश्वास करें कि यीशु अभी भी उनकी बेटी की मदद कर सकते थे। यीशु कहते हैं कि यदि याईर विश्वास करें तो उनकी बेटी चंगी हो जाएगी। यीशु याईर के घर पर पहुंचते हैं। वहां शोक करनेवालों की भीड़ थी जो उस युवती की मृत्यु को लेकर शोक संतप्त थी। ये लोग पड़ोसी, मित्र, रिश्तेदार, या पेशेवर शोक करने वाले हो सकते थे। यहूदी संस्कृति में जोर से रोकर और विलाप कर शोक प्रकट करने वालों को किराए पर लिया जाता था। यीशु लोगों को रोने से रोकते हैं और कहते हैं कि वे उस लड़की के लिए शोक न करें। यीशु कहते हैं कि वह केवल सो रही है। यीशु जानते थे कि वह लड़की वास्तव में मर चुकी थी, लेकिन वे कहते हैं कि वह केवल सो रही थी क्योंकि उन्हें पता था कि वे उसे फिर से जीवित कर देंगे।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में लोग मरे हुओं के लिए कैसे शोक करते हैं? जो अभी अभी मरा हो उसके लिए आप किस अभिव्यक्ति का उपयोग करते हैं?

शोक करने वाले लोग तुरंत ही रोने की जगह हंसी उड़ाने लगते हैं। वे यीशु पर हंसते हैं क्योंकि वे यह नहीं समझते कि यीशु का मतलब क्या है। उन्होंने सोचा कि वे एक मूर्ख हैं क्योंकि उन्हें यकीन था कि वह लड़की मर चुकी थी। उसके बाद केवल पतरस, याकूब, यूहन्ना और याईर की पत्नी को अपने साथ लेकर, यीशु उस कमरे में प्रवेश करते हैं जहां उस लड़की का शरीर था। यीशु उस लड़की के पास जाते हैं, उसका हाथ पकड़ते हैं और उसे उठने के लिए या मरे हुए में से जी उठने के लिए कहते हैं। जब वह मर गई थी तब उस लड़की की आत्मा ने उसे छोड़ दिया था लेकिन अब वह उसके पास लौट आई और वह फिर से जीवित हो गई। छोटी लड़की उठ कर खड़ी हो जाती है और यीशु किसी को उसके लिए भोजन लाने के लिए कहते हैं। उनकी बेटी को पुन: जीवित करने के यीशु द्वारा किए सामर्थ्य कर्म पर याईर और उनकी पत्नी भय और विस्मय से भरे होते हैं। लेकिन यीशु उन्हें कहते हैं कि जो कुछ हुआ उसे वे किसी को न बताएं।

लूका यीशु द्वारा किस गए सामर्थ्य कर्म की दोनों कथाओं को जोड़ते हैं। दोनों मामलों में यीशु ने ऐसे लोगों को छुआ जो अशुद्ध थे, जिनसे खून बह रहा था और जो मर चुके थे। यीशु अशुद्ध नहीं होते उसके स्थान पर बल्कि वे उन्हें चंगा करके प्रथानुसार शुद्ध बना देते हैं। दोनों ही कथाओं में, यीशु कहते हैं कि यह विश्वास है जो चंगाई की ओर या मृत्यु से छुटकारा दिलाने की ओर ले जाता है। उस स्त्री ने विश्वास किया और यीशु ने उन्हें चंगा कर दिया। याईर ने विश्वास किया और यीशु उनकी बेटी को वापस जीवन में ले आए।

लूका *8:40–56*

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 8:40–56

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य कल्पांकित करने में समूह की मदद करेंगे। आप कहानी के दृश्यों, विन्यास और पात्रों को परिभाषित करने में समूह की मदद करेंगे।

इस कहानी में पांच दृश्य हैं।

पहला दृश्य: यीशु गलील की झील पार करके पहुंचते हैं। एक भीड़ इंतजार कर रही होती है। भीड़ में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति याईर, अपनी बेटी को चंगा करने के लिए यीशु से उनके साथ जाकर उसे छूने की विनती करते हैं। याईर की बेटी इतनी बीमार होती है कि वह मर रही होती है।

दूसरा दृश्य: यीशु अपने शिष्यों और याईर के साथ याईर के घर की ओर चल रहे होते हैं। भीड़ उन्हें चारों ओर से दबा रही होती है। भीड़ में एक बीमार महिला यीशु के कपड़ों को छू लेती है। सामर्थ्य यीशु से बाहर जाती है और वह स्त्री तुरन्त चंगी हो जाती है।

तीसरा दृश्य: यीशु पूछते हैं कि "किसने मुझे छुआ था?" पतरस यीशु को कहते हैं कि भीड़ में बहुत से लोग होते हैं, हर कोई उन्हें छू रहा होता है। वह स्त्री यीशु के आगे झुकती है और उसकी कहानी बताती है। यीशु उसे कुशल से जाने के लिए कहते हैं।

चौथा दृश्य: याईर का एक संदेशवाहक पहुंचता है और उसे बताता है कि याईर की बेटी मर चुकी है। यीशु संदेशवाहक को सुनते हैं और याईर को विश्वास रखने के लिए कहते हैं। वे याईर के घर की ओर चलते रहते हैं।

पांचवां दृश्य: यीशु पतरस, यूहन्ना और याकूब को अपने साथ ले जाते हैं और वे याईर के घर में उनके और उनकी पत्नी के साथ प्रवेश करते हैं। घर के अंदर के शोक करने वाले यीशु की हंसी उड़ाते हैं। यीशु उस लड़की को उठने के लिए कहते हैं। यीशु उस लड़की को फिर से जीवन देते हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- नाव में सवार शिष्य
- यीशु की प्रतीक्षा में भीड़
- याईर
- याईर की बेटी
- खून की समस्या से ग्रस्त स्त्री
- पतरस
- याईर के घर से संदेशवाहक
- यूहन्ना
- याकूब
- छोटी लड़की की मां
- शोक करने वाले

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल (ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप इधर उधर रख सकते हैं जैसे पत्थर, लकड़ियां, बच्चों के खिलौने) का इस्तेमाल करे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु झील के दूसरे किनारे से वापस आए थे जहां उन्होंने एक व्यक्ति को दुष्टात्माओं से मुक्त किया था।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि धार्मिक नेता आमतौर पर यीशु के खिलाफ थे। याईर सामान्य धार्मिक नेताओं से अलग थे। याईर स्वयं को यीशु के आगे नम्र बनाते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि लोग यीशु की वापसी की प्रतीक्षा कर रहे होते थे। इन लोगों ने यीशु को सुना या दूसरों से यीशु के बारे में सुना था।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि रक्तस्त्राव से पीड़ित स्त्री को यहूदी अशुद्ध के रूप में देखते थे। इसका मतलब है कि यहूदी उन्हें छू नहीं सकते थे। लोग उनसे व्यवहार करने से बचते थे। उसे भीड़ में नहीं होना चाहिए था।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि जब यह कहा जाता है कि कोई भी उस स्त्री को चंगा नहीं कर सकता था, तो इसका मतलब था कि वह चंगा होने की तलाश कर रही थी, लेकिन उसे चंगाई मिल नहीं रही थी।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि याईर की बेटी का शव प्रथानुसार अशुद्ध था। जो कोई भी शव को छू लेता था, वह अशुद्ध हो जाता था।

टीम उस महिला की हालत और उनके द्वारा मदद खोजने के प्रयास और मदद न मिल पाने की स्थिति को दर्शाने के लिए

घटनाक्रम को संभवत: पुन: कालक्रमित करना चाह सकती है। साथ ही टीम यीशु के किनारे पहुंचने से पहले लड़की की होने वाली स्थिति को दिखा सकती है।

यीशु के याईर के घर पहुंचने वाले घटनाक्रम को भी पुनर्व्यवस्थित करना सहायक हो सकता है। यीशु पहले शोक करने वालों से बात करते हैं, उसके बाद वे याईर, याईर की पत्नी, पतरस, याकूब और यूहन्ना को उस कमरे में ले जाते हैं जहां उस लड़की का शरीर था और उसे वापस जीवित कर देते हैं।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 8:40–56

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी में पांच दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- नाव में सवार शिष्य
- यीशु की प्रतीक्षा में भीड़
- याईर
- याईर की बेटी
- खून की समस्या से ग्रस्त स्त्री
- पतरस
- याईर के घर से संदेशवाहक
- यूहन्ना
- याकूब
- छोटी लड़की की मां
- शोक करने वाले

मण्डली से कहानी का दो बार अभिनय करवाएं। पहली बार टीम से बिना रूके कहानी का अभिनय करवाएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है तब उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, तब कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

यह सुनिश्चित करें कि टीम यीशु पर दबाव डालने वाली भीड़ का अभिनय करे।

लूका *8:40–56*

यह सुनिश्चित करें कि जब याईर उस स्त्री से बात कर रहे होते हैं, उसी समय टीम संदेशवाहक के आने और याईर से बात करने का अभिनय करे।

दूसरी बार जब मण्डली इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

12 साल से लगातार रक्तस्त्राव वाली स्त्री का अभिनय करें। वह मदद की तलाश कर रही थी, लेकिन कोई भी उसकी मदद नहीं कर पा रहा था। **अभिनय को बंद करें।** रक्तस्त्राव से ग्रस्त स्त्री की भूमिका निभाने वाली अभिनेत्री से पूछें, "आपको कैसा महसूस होता है?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मैं उदास हूं। मुझे अपने परिवार और दोस्तों की याद आती है।" "मैं इस बीमारी से लड़ कर थक गई हूं।" "मैं अकेली हूं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

12 साल की एक लड़की बीमार होती है। उसके पिता याईर हैं। वह आराधनालय के एक नेता हैं। वह उनकी एकमात्र बेटी हैं।

अभिनय को बंद करें। याईन का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मुझे अपनी बेटी के लिए मदद की जरूरत है।" "मैं उदास हूं, वह कितनी छोटी है।" "अगर मैं प्रभु की सेवा करता हूं तो वह बीमार क्यों है?" अभिनय को फिर से शुरू करें।

भीड़ यीशु का स्वागत करती हैं, उसके बाद याईर यीशु के पैरों पर गिर जाते हैं और यीशु के साथ उनके घर आने की विनती करते हैं क्योंकि उनकी 12 साल की बेटी मरणासन्न होती है।

अभिनय को बंद करें। स्त्री का किरदार निभाने वाली अभिनेत्री से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रही हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "यीशु याईर से अधिक महत्वपूर्ण हैं।" "मैं प्रभावित हूं कि याईर ने खुद को यीशु के सामने नम्र बनाया।" "यीशु मदद के लिए तैयार हैं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु याईर के साथ उनके घर की ओर जाते हैं। एक भीड़ यीशु के आसपास होती है। रक्तस्त्राव वाली एक स्त्री यीशु के पीछे आती है और उनके चोगे के किनारे को छूती है। खून का बहाव तुरंत बंद हो जाता है।

अभिनय बंद कर दें। स्त्री का किरदार निभाने वाली अभिनेत्री से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रही हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "जो अभी हुआ उस पर मैं अचम्भित हूं।" "अंतत: मेरी प्रार्थनाओं का जवाब मिल रहा है।" "मैं यीशु की सामर्थ्य और अधिकार पर चकित हूं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु पूछते हैं कि उन्हें किसने छुआ था। हर कोई इसे नकारता है। पतरस यीशु को कहते हैं कि पूरी भीड़ उन्हें दबा रही है।

अभिनय बंद कर दें। यीशु के शिष्यों का किरदार निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "उलझन में हैं कि यीशु ने ऐसा पूछा। उन्हें पता है कि बहुत से लोग हैं।" "उनके सवाल का एक और अर्थ होना चाहिए।" "जिस व्यक्ति ने यीशु को छुआ वह विशेष होना चाहिए।"

अभिनय को फिर से शुरू करें।

लेकिन यीशु ने कहा कि किसी ने एक प्रयोजन से उन्हें छुआ था क्योंकि चंगा करने की सामर्थ्य यीशु से बाहर हो गई थी। स्त्री को पता था कि वह छिप नहीं सकती है। वह कांपने लगी, और यीशु के सामने घुटनों के बल गिर गई। सभी ने यह स्पष्टीकरण सुना कि उसने यीशु को क्यों छुआ था और यह कि वह तुरंत स्वस्थ हो गई थी।

अभिनय को बंद करें। याईर का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मैं व्याकुल हूं, मेरी बेटी बहुत बीमार है और यीशु अचरज कर रहे हैं कि किसने उन्हें छुआ?" "इसी वक्त इसे रोकना उनके लिए यह बहुत महत्वपूर्ण होगा।" "मुझे उम्मीद है कि यीशु भी मेरी बेटी को चंगा कर सकते हैं।"

अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु ने स्त्री से कहा, "बेटी, आपके विश्वास ने आपको चंगा किया है, कुशल से जाओ।"

जब यीशु अभी भी उस स्त्री से बात कर रहे थे, तो एक संदेशवाहक आता है। संदेशवाहक याईर से कहता है कि उनकी बेटी मर चुकी है, इसलिए वे यीशु को और अधिक परेशान न करें। जब यीशु ने बच्चे के बारे में सुना तो उन्होंने याईर से कहा, मत डरो। विश्वास रखो, और वह जीवित रहेगी। तब यीशु घर में आए। घर में हर कोई जोरों से विलाप कर रहा था और उदास था। इनमें पेशेवर शोक करने वाले शामिल थे। यीशु उनसे कहते हैं कि वे रोएं नहीं, वह मरी नहीं है, वह सो रही है। लोग यीशु पर हंसते हैं क्योंकि उन्हें यकीन है कि वह मर चुकी है।

अभिनय को बंद करें। शोक करने वाले लोगों का किरदार निभा रहे अभिनेताओं से पूछें, आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "यह व्यक्ति हमारे शोक को बाधित करने के लिए क्यों आया है?" "मुझे अपमानजनक लगता है। मैं मरे हुए और सोने वाले के बीच के अंतर को देख सकता हूं।" "यह व्यक्ति ज़रूर पागल ही है।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु यूहन्ना, पतरस, याकूब और बच्चे की मां और पिता को छोड़कर उस कमरे में किसी को जाने नहीं देते। उसके बाद यीशु बच्चे का हाथ पकड़कर उसे जाग कर उठने के लिए कहते हैं। तुरंत उसकी आत्मा उस में आ जाती है और वह उठ जाती है। उसके बाद यीशु उसे खिलाने के लिए निर्देश देते हैं। यीशु उसके माता-पिता से कहते हैं कि जो कुछ हुआ उसके बारे में किसी को न बताएं।

अभिनय को बंद करें। रोते हुए अभिभावकों का किरदार निभा रहे अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "आभारी।" "मैं अचम्भित हूं। मैं जानता हूं कि यीशु उसे चंगा कर रहे हैं, लेकिन यीशु उससे अधिक करते हैं।" "मुझे शर्म आती है। मैं नाराज था कि यीशु उस स्त्री से बात करने के लिए रुक गए थे।"

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 8:40–56

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

जब यीशु अपने शिष्यों के साथ गलील वापिस पहुंचते हैं, तो एक भीड़ वहां उनके लिए प्रतीक्षा कर रही होती है। भीड़ में शामिल लोगों में से एक का नाम याईर है। याईर **एक आराधनालय** या पूजा के एक यहूदी स्थान का शासक होता है। प्रत्येक यहूदी शहर में एक आराधनालय होता था और प्रत्येक आराधनालय में एक या अधिक नेता होते थे। ये लोग आराधनालय के भवन की देखभाल करने के लिए और गतिविधियों और सेवाओं का इंतजाम करने के लिए प्रभारी थे। ये लोग याजक या रब्बी नहीं थे। आराधनालय का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जैसा कि आपने पिछले अंशों में किया है। आराधनालय शब्द प्रधान शब्दावली में हैं।

याईर यीशु के पास आते हैं और यीशु के **पैरों पर गिर जाते हैं।** इसका मतलब है वे घुटनों पर बैठ कर अपना चेहरा भूमि पर झुकाते हैं। वे दुर्घटनावश गिर नहीं पड़े। यहूदी संस्कृति में इस तरह से झुकना उच्च पद के किसी व्यक्ति के प्रति सम्मान को दर्शाता है। यीशु अपनी मरने वाली बेटी को चंगा करने के लिए याईर के घर जाने के लिए सहमत होते हैं।

भीड़ में एक महिला होती है जो **12 साल से रक्तस्राव से पीड़ित थीं।** यह गर्भ या गर्भाशय से लगातार मासिक धर्म रक्तस्राव को संदर्भित करता है जो सामान्य नहीं था। इसका मतलब है कि यहूदी संदर्भ में उस स्त्री को 12 साल से परमेश्वर की सेवा करने के लिए अशुद्ध या अयोग्य माना गया था।

अपनी टीम के साथ चर्चा करें कि क्या आपकी संस्कृति में इस तरह की बीमारी के बारे में बात करना उचित है। यदि यह नहीं है, तो आप उनकी स्थिति का उल्लेख अधिक सामान्य शब्दों में कर सकते हैं, जैसे "वह लगातार रक्तस्राव से 12 साल से पीड़ित थीं।"

स्त्री यीशु के पीछे आती है और **उनके चोगे के किनारे को छूती है।** चोगा एक लंबे बाहरी कपड़े को संदर्भित करता है।

चोगे का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। चोगा शब्द प्रधान शब्दावली में है। विशेष रूप से चोगे का किनारा एक झालर या लटकन को संदर्भित करता है जो कभी-कभी यहूदी लोगों के चोगे का हिस्सा होती थी। लटकनें उस व्यक्ति के लिए एक स्मरण होती थीं कि उन्हें परमेश्वर के प्रति समर्पित रहना चाहिए।

रुकें और यदि आपने पहले से ही ऐसा नहीं किया है तो किनारे पर लटकन वाले चोगे की तस्वीर दिखाएं।

वह स्त्री तुरन्त चंगी हो गई। यीशु रुकते हैं और पूछते हैं कि उन्हें किसने छुआ था। पतरस जवाब देते हैं और यीशु से कहते हैं "**स्वामी**" यह शब्द सम्मान दर्शाता है और जिसका इस्तेमाल उच्च दर्जा रखने वाले किसी व्यक्ति को संबोधित करने के लिए किया जाता था। स्वामी का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। स्वामी शब्द को प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है। पतरस का तात्पर्य है कि भीड़ में प्रत्येक व्यक्ति यीशु को छू रहा होता है। स्त्री खुद को उजागर करती है और डर से कांपती हुई उनके पैरों पर झुकती है। जब वे उनकी कहानी कह चुकी होती हैं, तो यीशु उन्हें "**बेटी**" कहते हैं। यह शब्द यीशु की स्त्री के लिए परवाह को दर्शाता है और यह उन्हें आश्वस्त करने के लिए था। यीशु जैसे शिक्षक के लिए किसी स्त्री को करुणापूर्वक संबोधित करने के लिए यह एक उपयुक्त शब्द है। इसका मतलब यह नहीं है कि वह स्त्री वस्तुत: यीशु की बेटी थी। यह भी स्पष्ट नहीं है कि वह स्त्री यीशु से छोटी या बड़ी थी।

यदि आपकी संस्कृति में बेटी का उपयोग करना स्वाभाविक नहीं है, तो आप अपनी भाषा से एक उपयुक्त शब्द का उपयोग कर सकते हैं।

यीशु उस स्त्री से कहते हैं, "**आपके विश्वास ने आपको चंगा किया है**।" विश्वास यीशु पर स्त्री के विश्वास और उन्हें चंगा करने की उनकी क्षमता को संदर्भित करता है। विश्वास का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने लूका के पिछले अंशों में किया है। विश्वास शब्द प्रधान शब्दावली में है। **चंगा** करने के लिए यूनानी भाषा का शब्द वही शब्द है जो आमतौर पर बाइबल में इस्तेमाल किया जाता है, जिसका मतलब बचाना या छुड़ाना हो सकता है। इस संदर्भ में इसका मतलब बीमारी से बचाया जाना हो सकता है।

यदि आप अपनी भाषा में ऐसी कोई अभिव्यक्ति हो जो पापों से बचाव और बीमारी से बचाव दोनों के लिए इस्तेमाल की जा सकती हो, तो यहां उसका उपयोग करने पर विचार करें।

एक संदेशवाहक याईर से कहता है कि उनकी बेटी मर चुकी है; वे कहते हैं कि याईर को शिक्षक को परेशान नहीं करना चाहिए। यहां **शिक्षक** यीशु को संदर्भित करता है। यह किसी यहूदी धार्मिक नेता के लिए एक विनम्रतापूर्ण उपाधि थी। शिक्षक का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जैसा कि आपने पिछले अंशों में किया है। शिक्षक शब्द प्रधान शब्दावली में है।

यीशु याईर को प्रोत्साहित करते हैं और उन्हें सिर्फ **विश्वास** करने के लिए कहते हैं। यीशु विशेष रूप से यह नहीं कहते कि उन्हें कौन या क्या विश्वास करना चाहिए, लेकिन यह बात निहित है कि याईर को यह विश्वास करना जारी रखना चाहिए कि यीशु उनकी बेटी की मदद कर सकते हैं। यीशु का मतलब है कि याईर को उन पर विश्वास होना चाहिए और उन्हें भयभीत या संदेहपूर्ण नहीं होना चाहिए।

यीशु घर में प्रवेश करते हैं। वे उस युवती के पास पहुंचते हैं, उसका हाथ पकड़ते हैं और उसे उठने के लिए कहते हैं। उस स्त्री की **आत्मा लौट आती है**। इसका मतलब है कि वह लड़की वापस जीवित हो जाती है। जब वह मरती है तब उसकी आत्मा उस लड़की को छोड़ देती है, लेकिन जब वह लौट जाती है, तो वह फिर से जीवित हो जाती है।

अपनी टीम के साथ चर्चा करें। जब कोई व्यक्ति मर जाता है, तो आप उसके जीवन या आत्मा का शरीर छोड़ने को संदर्भित करने के लिए किस अभिव्यक्ति का उपयोग करते हैं? किसी व्यक्ति द्वारा जीवन में वापस आने का वर्णन करने के लिए इसी तरह की अभिव्यक्ति का उपयोग करने के बारे में सोचें। एक उदाहरण होगा, "उसकी सांस लौट आई।"

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 8:40–56

Audio Content

webm zip (4494187 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (7735197 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 9:1–17

सुनना और मनन करना

सुनें और हृदय

लूका 9:1–17

लूका 9:1–17 सुनें और इसे अपने हृदय में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे इस कथा को सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 9:1–17

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु द्वारा किसी युवती को वापस जीवित करने के कुछ समय बाद लोगों को परमेश्वर के राज्य के बारे में शिक्षा देने और लोगों को चंगा करने की लिए यीशु अपने 12 चुने हुए प्रेरितों को भेजते हैं या रवाना करते हैं। जब वे वापस लौटते हैं, तो बैतसैदा नगर के बाहर यीशु को सुनने के लिए एक भीड़ इकट्ठी होती है। यीशु भीड़ को खिलाने के लिए एक सामर्थ्य कर्म करते हैं। इस दौरान गलील के शासक हेरोदेस यह सवाल करने लगते हैं कि यीशु सचमुच कौन हैं।

यीशु बारहों या प्रेरितों को इकट्ठे करते हैं। लूका प्रेरितों और शिष्यों का उपयोग यीशु के 12 करीबी अनुयायियों के एक ही समूह को संदर्भित करने के लिए करते हैं। हालांकि, लूका उन्हें प्रेरितों या भेजे गए कह कर प्रारंभ करते हैं, क्योंकि यीशु उन्हें एक विशिष्ट मिशन पर भेज रहे हैं। जो कुछ करने के लिए वे उन्हें भेजने वाले थे, उसकी तैयारी के लिए यीशु प्रेरितों को इकट्ठा करते हैं। यीशु उन्हें सामर्थ्य या कुछ करने की क्षमता, अधिकार या कुछ करने की पात्रता प्रदान करते हैं। यह सामर्थ्य और अधिकार उन्हें उन लोगों को दुष्टात्माओं द्वारा नियंत्रित लोगों को मुक्त करने और बीमारों को चंगा करने की अनुमति प्रदान करेगा। यीशु चाहते हैं कि उनके प्रेरित लोगों को परमेश्वर के राज्य के बारे में या यीशु में उनके राजा के रूप में विश्वास के द्वारा परमेश्वर द्वारा लोगों के दिलों पर शासन करने के बारे में बताएं, और लोगों को चंगा करें।

यीशु अपने प्रेरितों को विभिन्न शहरों में भेजने से पहले विशिष्ट निर्देश देते हैं। यीशु उन्हें उनकी यात्रा पर कुछ भी नहीं ले जाने के लिए कहते हैं - न तो कोई लाठी, न झोली, न भोजन, न धन

और न ही अतिरिक्त कुरता या कपड़े। [यीशु शायद प्रेरितों को केवल परमेश्वर पर ही निर्भर रहने के लिए प्रोत्साहित करना चाहते थे। वे चाहते थे कि वे अन्य यहूदियों के आतिथ्य पर भरोसा करें।]{.mark}

रुकें और अपनी टीम को एक कुरते की तस्वीर दिखाएं। अपनी टीम के साथ चर्चा करें: आप अपनी संस्कृति में लंबी यात्रा की तैयारी कैसे करते हैं? आप क्या वस्तुएं अपने साथ ले जाते हैं?

यीशु अपने प्रेरितों को यह भी कहते हैं कि जब वे किसी नगर में हों तब उन्हें उसी जगह पर रहना चाहिए जहां सबसे पहले उन्हें आमंत्रित किया गया था। इसका तात्पर्य यह है कि यीशु नहीं चाहते थे वे वहां से किसी बेहतर स्थान की तलाश में जाएं।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में आतिथ्य किस तरह काम करता है? जब वे पहुंचते हैं और वहां रहने के लिए किसी जगह की तलाश में किसी गांव में अजनबियों के साथ किस तरह व्यवहार किया जाता है?

तब भी, यदि किसी शहर में लोग प्रेरितों के संदेश को स्वीकार नहीं करते थे, तो यीशु अपने प्रेरितों से कहते हैं कि वे उस नगर की धूल को उनके पैरों या पादुकाओं में से झाड़ दें। यहूदी संस्कृति में किसी व्यक्ति के पैरों से एक स्थान की धूल झाड़ना इस बात का प्रतीक था कि उस स्थान में उस व्यक्ति का लोगों के साथ कोई संबंध नहीं है। इसमें यह निहित था कि वे लोग परमेश्वर के लोग नहीं थे। ऐसा करके प्रेरितों ने यह दिखाया कि वे उनके संदेश को स्वीकार नहीं करने के लिए उस नगर पर परमेश्वर के न्याय के लिए जिम्मेदार नहीं थे। प्रेरितों ने यीशु की आज्ञा मानी। वे एक से दूसरे नगर यात्रा करते हुए, लोगों को चंगा करते थे और सार्वजनिक रूप से परमेश्वर के राज्य के बारे में सुसमाचार बताते थे।

रुकें और अपनी टीम को यहूदी कुरते की तस्वीर दिखाएं। अपनी टीम के साथ चर्चा करें: आप अपनी संस्कृति में किन्हीं लोगों या किसी नगर की अस्वीकृति को किस तरह दिखाते हैं? आप जहां रहते हैं, वहां यदि किसी को सांस्कृतिक रूप से अस्वीकार किया गया हो तो उनके साथ किस तरह व्यवहार किया जाता है?

"अब" शब्द का उपयोग करके लूका, विषय को गलील के शासक हेरोदेस की चर्चा करने के लिए परिवर्तित कर देते हैं। "अब" शब्द का संदर्भ समय के एक ही क्षण में होने को संदर्भित नहीं करता है। चतुरादिदारुक या देश के चौथे भाग के शासक हेरोदेस ने यीशु और उनके प्रेरितों द्वारा की जाने वाली आश्चर्यजनक बातों के बारे में सुना। लोग यीशु के बारे में अलग-अलग बातें कह रहे थे। कुछ लोग सोचते थे कि वे भविष्यद्वक्ता या परमेश्वर के दूत थे। दूसरों ने सोचा कि यीशु बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना थे, जो पुन: जीवित हो गए थे। हालांकि लूका इसका उल्लेख नहीं करते हैं, लेकिन हेरोदेस ने इन घटनाओं के घटित होने से पहले ही यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को मार दिया था। हेरोदेस उलझन में थे क्योंकि उन्हें पता था कि उन्होंने अपने सैनिकों को यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के सिर को काट डालने की आज्ञा दी थी। अन्य लोगों का मानना था कि यीशु वास्तव में यहूदी भविष्यद्वक्ता एलिय्याह थे, जो यीशु के व्यक्तित्व के रूप में स्वर्ग से वापस आए थे। एलिय्याह एक प्रसिद्ध यहूदी भविष्यद्वक्ता थे, जिन्होंने परमेश्वर की सामर्थ्य के माध्यम से कई चमत्कार किए थे। एलिय्याह की कभी मृत्यु नहीं हुई, बल्कि उन्हें रथ में या घोड़ों द्वारा खींचे जाने वाले परिवहन में स्वर्ग में ले जाया गया था। यहूदियों का मानना था कि मसीहा के आने से पहले एलिय्याह प्रकट होंगे। हेरोदेस को यह नहीं पता था कि यीशु के बारे में क्या सोचना चाहिए और वे उनसे मिलना चाहते थे।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। जहां आप रहते हैं, वहां समाचार किस तरह फैलते हैं? जो घटना हुई है, उसके बारे में लोगों को सटीक जानकारी कैसे मिलती है?

विभिन्न शहरों में उपदेश देने और चिकित्सा करने के बाद प्रेरित यीशु के पास लौट आते हैं। यीशु ने जो कुछ भी किया होता है, वह सभी वे यीशु को कहते हैं। यीशु अपने प्रेरितों को ऐसे स्थान पर ले जाते हैं जहां वे अकेले हो सकते हैं। वे उन्हें बैतसैदा नाम के एक शहर की ओर ले जाते हैं। यह नगर गलील सागर के पूर्वोत्तर तट पर स्थित था। यीशु अपने प्रेरितों को नगर से कुछ दूरी पर एक शांत, निर्जन स्थान में ले गए।

रुकें और अपनी टीम को बैतसैदा नक्शे पर कहां स्थित है, यह दिखाएं।

तब भी, लोगों की भीड़ यह जान जाती है कि यीशु कहां हैं और वह उनका अनुसरण करती है। मत्ती और मरकुस के सुसमाचार यीशु और उनके शिष्यों द्वारा नाव में गलील की झील को पार करने का उल्लेख करते हैं, इसलिए यह सुनिश्चित करें कि आपका अनुवाद यह संकेत न दे कि भीड़ यीशु के पीछे चल रही थी। इसका मतलब है कि यीशु जहां भी गए, वहां वे भी गए। यीशु भीड़ का स्वागत करते हैं। यद्यपि उन्होंने अपने प्रेरितों के साथ अकेले रहने की योजना बनाई थी, तब भी उन्होंने उन्हें जाने के लिए नहीं कहा। यीशु उन्हें परमेश्वर के राज्य के बारे में शिक्षा देना और बीमारों को चंगा करना शुरू करते हैं।

बाद में सूर्यास्त के समय, उस समय जब लोग सामान्यत: अपना शाम का भोजन करते थे, वे 12 शिष्य यीशु के पास जाते हैं और भीड़ को विदा करने के लिए कहते हैं। यह एक असभ्य अनुरोध नहीं था, लेकिन शिष्य चाहते थे कि यीशु अपने शिक्षण से लोगों को मुक्त करें ताकि वे अपने घर लौट सकें। शिष्य चाहते थे कि भीड़ आसपास के गांवों या खेतों में जाए और रात के लिए भोजन और आश्रय प्राप्त करे। वे चाहते थे कि भीड़ को विदा कर दिया जाए क्योंकि यीशु जहां शिक्षा दे रहे थे, कोई भी व्यक्ति वहां के करीब नहीं रहता था।

यीशु अपने शिष्यों से कहते हैं कि उन्हें भीड़ को खाने के लिए कुछ देना चाहिए। शिष्य यह संकेत देते हैं कि यह एक असंभव अनुरोध है क्योंकि उनके पास केवल पांच रोटियां

और दो मछलियां ही थीं। रोटी का संदर्भ, जई के आटे से बनी हुई छोटी, गोल चपाती से है। मछली उन मछलियों को संदर्भित करती है जो पहले से ही पकाई या नमकीन की गई होती है।

रुकें और अपनी टीम को यहूदी संस्कृति में रोटी और पकी हुई मछलियों की तस्वीरें दिखाएं। अपनी टीम के साथ चर्चा करें: जब कोई असंभव लगने वाला अनुरोध करता है, तो आपके समुदाय में लोग किस तरह प्रतिक्रिया करते हैं?

शिष्य कहते हैं कि भीड़ को खिलाने का एकमात्र तरीका भोजन खरीदना है। लेकिन शिष्य यह नहीं सोचते कि यह कुछ ऐसा था जो यीशु उनसे कराना चाहते हैं। उनके पास हर किसी को खिलाने के लिए पर्याप्त धन नहीं था।

उसके बाद लूका शिष्यों की प्रतिक्रिया को समझाने के लिए पृष्ठभूमि की जानकारी देते हैं। वे हमें बताते हैं कि भीड़ में 5,000 लोग थे। इसमें उन महिलाओं और बच्चों को शामिल नहीं किया गया है जो वहां मौजूद थे।

यीशु शिष्यों को 50 के समूहों की भीड़ में बैठने के लिए कहते हैं। उसके बाद यीशु रोटी और मछली लेते हैं और स्वर्ग की ओर या उस स्थान की ओर देखते हैं जहां परमेश्वर रहते हैं। प्रार्थना करते समय लोगों द्वारा स्वर्ग की ओर ऊपर की ओर देखना यहूदी संस्कृति में आम बात थी। यीशु भोजन के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं और उसके बाद मछलियों और रोटी के टुकड़े करने लगते हैं। यीशु टुकड़ों को उनके शिष्यों के हाथों में देते हैं ताकि वे लोगों के समूहों को भोजन दे सकें। जब यीशु समापन करते हैं तो पूरी भीड़ ने मन भर कर खा लिया होता है। वहां इतना भोजन बचा था कि उससे 12 टोकरियां भरी गईं।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 9:1–17

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य कल्पांकित करने में समूह की मदद करेंगे। आप कहानी के दृश्यों, विन्यास और पात्रों को परिभाषित करने में समूह की मदद करेंगे।

इस कहानी में पांच दृश्य हैं।

पहला दृश्य: यीशु अपने 12 शिष्यों को इकट्ठा करते हैं, जिन्हें कभी-कभी प्रेरित या भेजे गए भी कहा जाता है। वे उन्हें दुष्टात्माओं को निकालने और बीमारों को चंगा करने की सामर्थ्य और अधिकार देते हैं। यीशु उन्हें परमेश्वर के राज्य के बारे में लोगों को बताने के लिए विभिन्न शहरों की यात्रा करने के लिए विशिष्ट निर्देश देते हैं।

दूसरा दृश्य: शिष्य आज्ञा पालन करते हैं। वे अपने साथ कुछ नहीं लेते और विभिन्न शहरों में सुसमाचार प्रसारित करते और बीमारों को चंगा करते हैं।

तीसरा दृश्य: यीशु की आज्ञा का पालन करने के बाद, हेरोदेस यीशु और प्रेरित जो कर रहे होते हैं, उसके बारे में सुनते हैं। वे यह सवाल करने लगते हैं कि यीशु कौन हैं। हेरोदेस यीशु से मिलना चाहते हैं।

चौथा दृश्य: शिष्य यीशु के पास लौट जाते हैं और जो हुआ वह उन्हें बताते हैं। अकेले रहने के लिए यीशु उन्हें बैतसैदा की ओर ले जाते हैं। भीड़ उन्हें पाती है और यीशु उन्हें शिक्षा देने लगते हैं।

पांचवां दृश्य: बाद में जब सूर्यास्त हो रहा होता है, तो शिष्य भीड़ को घर भेजना चाहते हैं क्योंकि वे ऐसे स्थान पर होते हैं जहां कुछ ही लोग रहते थे। यीशु शिष्यों को भीड़ को खिलाने के लिए कहते हैं। शिष्य कहते हैं कि उनके पास पर्याप्त धन नहीं है। उनके पास जो भी भोजन था उसे यीशु लेते हैं और परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं। वे उसे टुकड़ों में तोड़ते हैं और शिष्यगण उसे 50 के समूहों में भीड़ को खिलाते हैं। 5,000 से अधिक लोग खाना खा कर संतुष्ट होते हैं और 12 टोकरियां भर कर भोजन बच जाता है।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- 12 प्रेरित
- गलील के शासक, हेरोदेस
- भीड़

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल (ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप इधर उधर रख सकते हैं जैसे पत्थर, लकड़ियां, बच्चों के खिलौने) का इस्तेमाल करे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि इस कथा के होने से पहले हेरोदेस ने पहले ही यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर कलम कर दिया था। पिछली बार जब लूका ने यूहन्ना का उल्लेख किया था तो वे जेल में थे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि अपने पैरों की धूल को झाड़ना, किसी नगर की अस्वीकृति को दर्शाने की एक यहूदी प्रथा थी। यह इस बात का प्रतीक था कि वे लोग परमेश्वर के लोग नहीं थे और यह कि परमेश्वर उनका न्याय करेंगे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु अपने शिष्यों को बैतसैदा के नगर की ओर ले जा रहे थे, लेकिन नगर में नहीं। इसके बजाय वे अकेले रहने के लिए एक एकांत स्थान पर जा रहे थे। हम यह जानते हैं क्योंकि ऐसा कहा गया है कि वे ऐसे स्थान पर थे जहां कुछ लोग रहते थे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि जब लूका 5000 लोग कहते हैं, तो इसका मतलब यह नहीं है कि केवल पुरुष ही यीशु की बात सुन रहे थे।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 9:1–17

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी में पांच दृश्य हैं।

इस कहानी में पात्रों में ये शामिल हैं:

- यीशु
- 12 प्रेरित
- गलील के शासक, हेरोदेस
- भीड़

मण्डली से कहानी का दो बार अभिनय करवाएं। पहली बार टीम से बिना रूके कहानी का अभिनय करवाएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है तब उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, तब कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

यह सुनिश्चित करें कि टीम यीशु के अधिकार के साथ जो कुछ वे कर पाने में सक्षम थे, उसके बारे में 12 प्रेरितों या शिष्यों के उत्साहित होने का अभिनय करे।

यह सुनिश्चित करें कि जब हेरोदेस यीशु के बारे में यह पूछते हैं कि "यह आदमी कौन है?" तो टीम हेरोदेस द्वारा वास्तविक रुप से जिज्ञासु होने का अभिनय करें।

यह सुनिश्चित करें कि जब यीशु शिष्यों को भीड़ को खिलाने के लिए कहते हैं, तो टीम उन शिष्यों का उलझन में पड़ने का अभिनय करें।

दूसरी बार जब मण्डली इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

यीशु द्वारा शिष्यों को अपने साथ कुछ न ले जाने के लिए कहने का अभिनय करें। यीशु उन्हें उस व्यक्ति के साथ रहने के लिए कहते हैं, जो सर्वप्रथम उनकी मेजबानी करने की पेशकश करता है। वे उन्हें उनके संदेश को अस्वीकार करने वाले शहरों से उनके पैरों की धूल को झाड़ने के लिए भी कहते हैं। **अभिनय को बंद करें।** शिष्यों की भूमिका निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "डरा हुआ हूं।" क्या होगा अगर लोग हिंसक हो उठें और हमारे संदेश को अस्वीकार करें?" "मैं उत्साहित हूं कि यीशु मुझे बाहर भेज रहे हैं और उनकी सामर्थ्य और अधिकार दे रहे हैं।" या "बैचेन हूं। क्या होगा अगर हमारे पास पर्याप्त भोजन न हो तो।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु के बारे में जो बातें उन्होंने सुनी थीं उसके बारे में हेरोदेस का उलझन में पड़ जाने का अभिनय करें। लोग कह रहे थे कि वे बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना या एलिय्याह थे। अन्य लोगों ने सोचा कि वे एक भविष्यद्वक्ता थे जो मरे हुओं में से वापस आए थे। हेरोदेस का कहना है कि वे बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना नहीं हो सकते क्योंकि उन्होंने यूहन्ना का सिर कलम कर दिया था। हेरोदेस ने कहा कि उन्होंने यीशु के बारे में कितनी कहानियां सुनी थीं। हेरोदेस पूछते हैं कि "यह व्यक्ति कौन है?" हेरोदेस यीशु को देखना चाहते हैं।

अभिनय बंद कर दें। हेरोदेस का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "पशोपेश में हूं। जो काम यीशु कर रहे हैं, वह कौन कर सकता है?" "डरा हुआ हूं?", मैंने यूहन्ना का सिर कलम करके गलत किया है।" "मुझे यीशु के बारे में स्वयं के लिए पता लगाने की जरूरत है।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

शिष्यों द्वारा वापस आने का और उन्होंने जो कुछ भी किया था उसे यीशु को बताने का अभिनय करें। यीशु चुपचाप बारह शिष्यों को दूर ले जाते हैं। भीड़ ने पता लगा लिया था कि वे कहां जा रहे थे और वह उनके पीछे गई। यीशु ने भीड़ का स्वागत किया और उन्हें परमेश्वर के राज्य के बारे में और बीमारों को चंगा करने के बारे में शिक्षा दी। **अभिनय बंद कर दें।** शिष्यों का किरदार निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "थके हुए हैं?, हमें यीशु के साथ सिर्फ कुछ समय की जरूरत है।" "परेशान हैं, यीशु उन्हें विदा क्यों नहीं करते हैं?" या "यीशु कितने सदय हैं?" वे किस तरह लगातार कर्म करते रहते हैं?"

भीड़ का किरदार निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें। "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मैं प्रिय होना अनुभव करता हूं। यीशु ने हमारे लिए समय निकाला। "मैं मूल्यवान महसूस करता हूं। यीशु सचमुच मेरी जरूरतों पर ध्यान देते हैं।" या "मैं विस्मयाभिभूत हूं। यीशु अद्भुत बातें कह रहे हैं और हमारे बीच आश्चर्यजनक कार्य कर रहे हैं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

बाद में शिष्य यीशु को कहते हैं कि चूंकि वे एक दूरदराज के स्थान पर हैं, इसलिए लोगों को भोजन और आवास के लिए रवाना कर दिया जाए। यीशु अपने शिष्यों को उन्हें खिलाने के लिए कहते हैं। शिष्य जवाब देते हैं कि उनके पास केवल पांच रोटियां और दो मछलियां ही है। शिष्य यीशु से पूछते हैं कि क्या उन्हें जाकर सभी के लिए पर्याप्त भोजन खरीदने की जरूरत है। वहां 5,000 लोग थे। **अभिनय बंद कर दें।** शिष्यों से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मैं भ्रमित महसूस करता हूं। इतने लोगों के लिए हम पर्याप्त भोजन कैसे ला सकते हैं?" "मैं उत्सुक हूं कि यीशु किस तरह लोगों को खिलाने में हमारी मदद करेंगे।" या "मैं

भूखा हूं और आराम करने के लिए तैयार हूं। यीशु लोगों को घर ही क्यों नहीं जाने देते हैं?" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु द्वारा मछली और रोटी पर प्रार्थना करने का अभिनय करें। यीशु शिष्यों को 50 के समूहों में भीड़ को बैठाने का निर्देश देते हैं। उसके बाद यीशु इसे टुकड़ों में तोड़ते हैं और सभी लोगों में बांटने के लिए शिष्यों को देते हैं। **अभिनय को बंद करें।** भीड़ का किरदार निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "जिज्ञासु हूं। यीशु भोजन के साथ क्या कर रहे हैं?" "भूखा हूं" या "बेचैन हूं?" हम नीचे क्यों बैठे हैं? मुझे यहां से जाने और रात के लिए कहीं रहने की जरूरत है।"

शिष्यों का किरदार निभा रहे अभिनेताओं से पूछें, आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मुझे नहीं पता कि यह किस तरह काम करेगा, लेकिन मैं यीशु की आज्ञा का पालन करूंगा।" "भोजन कहां से आता है?" शर्मिंदा। मुझे खेद है कि मैंने संदेह किया था।" या "विस्मयाभिभूत हूं। यीशु द्वारा किसी न किसी सामर्थ्य के कार्य के लिए मुझे हमेशा तैयार रहना चाहिए।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

अंत में शिष्यों ने बचे हुए खाने की बारह टोकरियां उठाईं।

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 9:1–17

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु **बारह** को एक साथ बुलाते हैं। बारह का संदर्भ **प्रेरितों** या यीशु के चुने हुए प्रतिनिधियों से है। ये लोग वे ही हैं, जो बारह शिष्य कहलाते हैं। प्रेरितों का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने लूका के पिछले अंशों में किया है। प्रेरित शब्द प्रधान शब्दावली में है। यीशु उन्हें सामर्थ्य या कुछ करने की क्षमता, अधिकार या कुछ **करने** की पात्रता प्रदान करते हैं। इस मामले में यह लोगों को चंगा करना और दुष्टात्माओं को बाहर निकालना था। अधिकार का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। अधिकार शब्द प्रधान शब्दावली में है।

दुष्टात्माओं का संदर्भ उन बुरी आत्माओं से है जो लोगों के विचारों और कार्यों को नियंत्रित करती हैं। दुष्टात्माओं का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। दुष्टात्मा शब्द प्रधान शब्दावली में है। यीशु प्रेरितों **को परमेश्वर के राज्य का** प्रचार करने के लिए भेजते हैं। परमेश्वर के राज्य का संदर्भ परमेश्वर द्वारा लोगों के दिलों पर शासन करने से है। परमेश्वर के राज्य का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पिछले अंशों में किया है। परमेश्वर का राज्य प्रधान शब्दावली में है।

यीशु उन्हें बाहर भेजने से पहले अपने प्रेरितों को विशिष्ट निर्देश देते हैं। वे उन्हें कहते हैं कि वे न तो लाठी ले जाएं, न ही छड़ी लें और न ही कुरता। कुरता एक **प्रकार** की कमीज़ होता है। कुरता का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जैसा कि आपने पिछले अंशों में किया है। कुरता शब्द प्रधान शब्दावली में है।

चतुरादिदारुक हेरोदेस यीशु के बारे में सुनते हैं। चतुरादिदारुक का मतलब है कि वे एक राज्य के चौथे भाग के शासक थे। हेरोदेस सुनते हैं कि यीशु एक **भविष्यद्वक्ता** या परमेश्वर के दूत हो सकते हैं। भविष्यद्वक्ता का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। भविष्यद्वक्ता शब्द प्रधान शब्दावली में है।

जब लूका कहते हैं कि यीशु अपने **शिष्यों** या अनुयायियों से बात करते हैं, तो यह विशेष रूप से प्रेरितों से संदर्भित है। शिष्यों का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने लूका के पिछले अंशों में किया है। शिष्य शब्द प्रधान शब्दावली में हैं।

यीशु **स्वर्ग** की ओर या उस स्थान पर देखते हैं जहां परमेश्वर रहते हैं और प्रार्थना करते हैं। स्वर्ग का अनुवाद उसी तरह से करें जैसा कि आपने पहले भी किया है। स्वर्ग शब्द प्रधान शब्दावली में है।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 9:1–17

Audio Content

webm zip (3619835 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (6172926 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 9:18–27

सुनना और मनन करना

सुनें और हृदय

लूका 9:18–27

लूका 9:18–27 सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे इस कथा को सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 9:18–27

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

गलील के शासक हेरोदेस यह सवाल उठा रहे थे कि यीशु कौन थे। यीशु ने अपने सामर्थ्य को दिखाया और 5000 से अधिक लोगों को भोजन कराकर एक अलौकिक कर्म किया। अब यीशु अपने शिष्यों या अनुयायियों के साथ भीड़ से दूर एक वार्तालाप करते हैं। यीशु उनसे पूछते हैं कि उनके विचार से वे कौन हैं। यीशु उन्हें बताते हैं कि उनके साथ क्या होने वाला है। उसके बाद वे बताते हैं कि किसी व्यक्ति को उनका अनुयायी बनने के लिए क्या करना चाहिए.

जब लूका "अब ऐसा हुआ" या "एक बार" जैसे वाक्यांशों का उपयोग करते हैं, तो एक नया विषय शुरू करने का यह उनका तरीका होता है। लूका हमें यह नहीं बताते कि यह कथा कब होती है, लेकिन वे यीशु द्वारा प्रार्थना करने या भीड़ से दूर परमेश्वर से बात करने पर ध्यान देते हैं। यीशु अपने शिष्यों के एक छोटे समूह या करीबी अनुयायियों के साथ अकेले होते हैं। यीशु प्रार्थना करने का अंत करते हैं और अपने शिष्यों से पूछते हैं कि उनके विचार में वे कौन थे। यीशु यह नहीं पूछ रहे थे क्या वे उनके नाम या उनके गृहनगर को जानते थे। इसके बजाय, वे यह पूछ रहे थे कि लोगों के विचार में परमेश्वर की योजना में उनकी भूमिका क्या थी।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में जब कोई यह पूछता है कि उसे दूसरों द्वारा किस तरह देखा जाता है, तो लोग कैसे प्रतिक्रिया करते हैं?

अनुयायी उसी जानकारी के साथ प्रत्युत्तर देते हैं जो हेरोदेस ने सुनी थी। लोगों ने कहा कि यीशु यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले हो सकते हैं। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को परमेश्वर द्वारा यीशु के

लिए लोगों को तैयार करने के लिए भेजा गया था। यूहन्ना ने लोगों को बपतिस्मा देकर या पानी का उपयोग करने वाले एक विशेष संस्कार को क्रियान्वित कर तैयार किया था जो इस बात का प्रतीक था कि लोग उनके पापों से मुक्त हो गए थे। शिष्य यीशु को बताते हैं कि कुछ लोग सोचते हैं कि वे एलिय्याह या एक प्रसिद्ध यहूदी भविष्यद्वक्ता हैं, जो कभी मरे नहीं लेकिन सीधे स्वर्ग में या उस स्थान पर गए जहां परमेश्वर रहते हैं। शिष्य कहते हैं कि अन्य लोग ऐसा सोचते हैं कि यीशु एक यहूदी भविष्यद्वक्ता, या प्राचीन युग के परमेश्वर के संदेशवाहक हैं, जिनका बहुत पहले निधन हुआ था और वे अब यीशु के व्यक्ति के रूप में जीवित हो गए थे।

यीशु उनके जवाब का प्रत्युत्तर इससे देते हैं, "लेकिन आप क्या कहते हैं कि मैं कौन हूं?" यह पूछ कर, यीशु अपने शिष्यों से यह पूछकर कि उनके विचार में वे कौन हैं, उनकी पहचान के बारे में उन उत्तरों को अस्वीकार करते हैं। पतरस जवाब देते हैं कि यीशु परमेश्वर के मसीह या मसीहा हैं। मसीह का संदर्भ ऐसे व्यक्ति से है जिसे परमेश्वर द्वारा एक विशेष कार्य के लिए नियुक्त किया गया था। यीशु उनके शिष्यों को आदेश देते हैं कि वे किसी को न बताएं कि वे मसीहा थे। पतरस का जवाब सच था, परंतु यह लोगों द्वारा जानने का सही समय नहीं था।

यीशु बताते हैं कि मनुष्य के पुत्र को कष्ट उठा कर मरना चाहिए, और इसके पहले कि लोग जान पाएं कि वे मसीहा थे, उन्हें तीसरे दिन पुन: जीवित होना चाहिए। यीशु उन बातों के बारे में बात कर रहे हैं जो भविष्य में उनके साथ घटित होंगी। ये बातें इसलिए आवश्यक थीं क्योंकि वे परमेश्वर की योजना का एक हिस्सा थे। यीशु स्वयं को संदर्भित करने के लिए मनुष्य के पुत्र उपाधि का उपयोग करते हैं। यीशु पुरनियों, मुख्य याजकों और शास्त्रियों का उल्लेख करते हैं - ये तीनों समूह यहूदी नेतृत्व का प्रतिनिधित्व करते थे। यीशु कहते हैं कि वे उन्हें मसीहा के रूप में स्वीकार न करके उन्हें नकार देंगे।

उसके बाद यीशु केवल शिष्यों के अपने छोटे समूह से ही बात करने के स्थान पर उन सभी लोगों से संबोधित होते हैं जो उनका अनुसरण करना चाहते थे। यह अंतर्निहित है कि निकट ही एक भीड़ थी। अपने शिष्यों और वहां मौजूद अन्य लोगों को यीशु बताते हैं कि उनका शिष्य बनने के लिए किस व्यक्ति को क्या करना चाहिए। वे तीन आज्ञाएं देते हैं: नकारो, क्रूस उठाओ और पीछे चलो। जो व्यक्ति यीशु का शिष्य बनना चाहता है, उसे तीनों ही करना होंगे। यीशु कहते हैं कि जो लोग उनके पीछे चलना चाहते हैं, उन्हें खुद को नकारना या खुद को खुश करने से इनकार करना होगा। एक शिष्य वही करता है जो उसका स्वामी चाहता है, भले ही वह शिष्य ऐसा करना न चाहे।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में खुद को नकारना कैसा होता है? यीशु के अनुयायी के रूप में आप किन रीतियों या रिवाजों में हिस्सा नहीं ले सकते हैं?

यीशु कहते हैं कि संभावित अनुयायियों को अपना क्रूस उठाना चाहिए। एक क्रूस कीलों से साथ जुड़ी हुई लकड़ी की दो शहतीरें होती हैं। रोमन संस्कृति में एक दोषी अपराधी को लकड़ी के क्रूस को उठाकर उस स्थान पर ले जाना होता था जहां उसे मारा जाना नियत था। उसके बाद रोमी लोग अपराधियों को मरने के लिए क्रूस पर ठोंक देते थे। यीशु वास्तव में कह रहे थे कि जो कोई भी उनका अनुसरण करना चाहता है, उसे प्रतिदिन स्वयं को आमोदित करने के नकारना होगा। यीशु की शिक्षाओं को मानने के लिए उन्हें कष्ट उठाने के लिए तत्पर होना चाहिए।

रुकें और अपनी टीम को रोमी सूलियों के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले लकड़ी के क्रूस की तस्वीर दिखाएं। [आपके समुदाय में अपराधियों को किस तरह सज़ा दी जाती है? इन प्रकार की सज़ाओं में से कौन सा दंड सार्वजनिक तौर पर किया जाता है?]{.mark}

यीशु कहते हैं कि जो कोई भी अपना प्राण बचाना चाहता है, वह उसे खोएगा, लेकिन जो कोई मेरे लिए अपना प्राण खोएगा, वह उसे बचाएगा। प्राण इस दुनिया में किसी व्यक्ति के जीवन जीने के अपने तरीके को संदर्भित करता है। "उसे" शब्द परमेश्वर के साथ किसी व्यक्ति के सच्चे जीवन को संदर्भित करता है। जो व्यक्ति यीशु के लिए अपना प्राण खोता है, वह अपने जीवन के अपने तरीके पर चलने के अधिकार को त्याग देता है और उसके बजाय यीशु का अनुसरण करता है। अगर कोई "अपने प्राण को बचाएगा" या यीशु के लिए कष्ट उठाने के लिए इच्छुक नहीं होगा, तो वह अंततः मर जाएगा और पृथ्वी पर या स्वर्ग में परमेश्वर के साथ सच्चा जीवन जीने का अवसर खो देगा।

उसके बाद यीशु पूछते हैं "किसी व्यक्ति के लिए पूरी दुनिया को हासिल करना और फिर भी अपने आप को खो देने या नष्ट कर देने में क्या लाभ?" पूरी दुनिया को हासिल करना शाब्दिक तौर पर पूरी दुनिया का मालिक होना है। यह बहुत सफल होने और बहुत धन कमाने को संदर्भित करता है, ताकि किसी व्यक्ति के पास कई भौतिक वस्तुएं हों। अगर कोई व्यक्ति अपने आप को खो देता है, तो इसका मतलब है कि वह अपने प्राण या अपने व्यक्तित्व का ऐसा हिस्सा खो देता है, जो कभी मरता नहीं। यीशु यह प्रश्न इस बात पर ज़ोर देने के लिए पूछते हैं कि परमेश्वर के साथ हमेशा के जीवन को छोड़ने की तुलना में पूरी दुनिया पर्याप्त रूप से मूल्यवान नहीं है। यीशु को इस प्रश्न का जवाब पाने की उम्मीद नहीं थी।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति प्राण या किसी व्यक्ति के ऐसे हिस्से के बारे में किस तरह बात करती है जो कभी मरता नहीं है? प्राण के बारे में सांस्कृतिक विश्वास क्या हैं?

उसके बाद यीशु कहते हैं कि जो कोई भी उनके पीछे नहीं चलने का विकल्प चुनता है, क्योंकि वे इस जीवन में शर्मिंदा होना या दूसरों के मज़ाक का पात्र बनना नहीं चाहते हैं, तो वे अंतिम न्याय पर शर्मिंदा होंगे। वे कह रहे हैं कि लोगों के वर्तमान क्षण के चुनाव परमेश्वर के साथ उनके भविष्य में संबंध को प्रभावित करते हैं। यीशु इस बात का हवाला दे रहे हैं कि जो व्यक्ति उनका अनुयायी नहीं है, उसका मरने के बाद क्या होगा है। यीशु फिर से अपने आप को मनुष्य के पुत्र के रूप में संदर्भित करते हैं और कहते हैं कि जो उनकी शिक्षाओं को स्वीकार नहीं करता है, उसके विषय में वे शर्मिंदा होंगे। इसका मतलब यह नहीं है कि यीशु लज्जित होंगे। इसके बजाय, [यीशु जब पृथ्वी पर वापस आएंगे और लोगों को स्वयं में परमेश्वर की महानता और सामर्थ्य को दिखाएंगे तो वे इस बात से इंकार करेंगे कि ऐसा व्यक्ति उनका है। पवित्र स्वर्गदूत भी या परमेश्वर के प्रति समर्पित स्वर्गदूत भी परमेश्वर की महानता और सामर्थ्य को दर्शाते हैं। जब वे स्वर्ग से लौट कर पृथ्वी पर आएंगे तो यीशु यह सब सामर्थ्य और महानता दिखाएंगे।]{.mark}

यीशु कहते हैं, "मैं आपको सच कहता हूं।" इस वाक्यांश में इस बात पर जोर दिया गया है और उसका अर्थ है कि यीशु चाहते हैं कि उनके श्रोता करीब से ध्यान दें। इसका मतलब यह भी है कि यीशु जो कहने वाले थे, वह महत्वपूर्ण और पूरी तरह से विश्वसनीय था। यीशु कहते हैं कि उनके कुछ शिष्य परमेश्वर के राज्य को देखे बिना मृत्यु का स्वाद नहीं चखेंगे या मरेंगे नहीं। यद्यपि कई व्याख्याएं हैं, लेकिन परमेश्वर के राज्य का एक सामान्य तरीके से अनुवाद करना सबसे अच्छा है क्योंकि यीशु सटीक घटनाओं का उल्लेख नहीं करते हैं। परमेश्वर के राज्य का अर्थ है कि शिष्य परमेश्वर को उनके लोगों पर एक नए तरीके से राजा के रूप में शासन करते देखेंगे।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 9:18–27

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य कल्पांकित करने में समूह की मदद करेंगे। आप कहानी के दृश्यों, विन्यास और पात्रों को परिभाषित करने में ग्रुप की मदद करेंगे।

इस कहानी में तीन दृश्य हैं।

पहला दृश्य: यीशु निजी तौर पर प्रार्थना कर रहे हैं। जब वे समापन करते हैं, तो यीशु अपने शिष्यों से पूछते हैं कि लोग क्या कहते हैं कि वे कौन हैं। शिष्य यीशु को बताते हैं कि भीड़ क्या कहती है। उसके बाद यीशु पूछते हैं कि शिष्य क्या कहते हैं कि यीशु कौन हैं। पतरस जवाब देते हैं कि यीशु परमेश्वर के मसीह या परमेश्वर द्वारा भेजे गए प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता हैं।

दूसरा दृश्य: यीशु अपने शिष्यों को बताते हैं कि वे किसी को न बताएं। यीशु कहते हैं कि वे कष्ट झेलेंगे, उन्हें अस्वीकार किया जाएगा, मार डाला जाएगा परंतु तीसरे दिन उन्हें पुन: जीवित कर दिया जाएगा।

तीसरा दृश्य: उसके बाद यीशु उनके आसपास के सभी लोगों से बात करते हैं। यीशु बताते हैं कि एक शिष्य होना क्या होता है। यीशु तीन शर्तें देते हैं, स्वयं को नकारना, यीशु के लिए मरने के लिए तैयार होना और यीशु का अनुसरण करना। यीशु बताते हैं कि कोई व्यक्ति अगर यीशु के लिए अपना जीवन खोता है, तो वह लाभकर है। यीशु बताते हैं कि अगर वह व्यक्ति यीशु के बारे में शर्म करता है तो उस व्यक्ति को परमेश्वर के समक्ष शर्मिंदा होना पड़ेगा।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- पतरस
- अन्य शिष्यगण
- भीड़

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल (ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप इधर उधर रख सकते हैं जैसे पत्थर, लकड़ियां, बच्चों के खिलौने) का इस्तेमाल करे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि पूर्व के एक अंश में हम देखते हैं कि हेरोदेस यह जानना चाहते हैं कि यीशु कौन हैं। लूका ने अभी तक हेरोदेस के प्रश्न को अनुत्तरित रखा था।

यह स्मरण रखना आवश्यक है कि यीशु द्वारा 5000 लोगों को खिलाने के चमत्कार के बाद ऐसा होता है।

यीशु एकांतवास में प्रार्थना कर रहे हैं। वे समापन करते हैं और अपने शिष्यों से पूछते हैं कि लोग क्या कहते हैं कि वे कौन हैं। उसके बाद यीशु अपने शिष्यों से पूछते हैं कि वे क्या कहते हैं कि वे कौन हैं। पतरस जवाब देते हैं, "वादा किए गए उद्धारकर्ता, मसीह।" यीशु उन्हें आदेश देते हैं कि वे किसी को न बताएं।

यह ध्यान देना महत्व का है कि यीशु द्वारा अपने शिष्यों को किसी को पतरस के उत्तर के बारे में न बताने को कहने का अर्थ यह नहीं है कि वह गलत उत्तर था। उसका मतलब केवल इतना ही है कि लोगों को यह जानने का सही समय नहीं था।

यीशु बताते हैं कि मनुष्य के पुत्र का क्या होगा: वह कष्ट उठाएगा, मर जाएगा और तीसरे दिन फिर से जीवित हो जाएगा। उसके बाद यीशु समूची भीड़ की ओर मुड़ते हैं और उसने बात करते हैं।

यह याद रखना महत्व का है कि जब मसीह, मसीहा, या मनुष्य के पुत्र का उल्लेख यहां किया जाता है, तो वह यीशु को संदर्भित करता है।

यीशु पूछते हैं, "अगर आप ही खो जाएं या नष्ट हो जाएं तो पूरी दुनिया को हासिल करने का क्या लाभ?"

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि जब यीशु इस प्रश्न को पूछते हैं, तो इसका उपयोग इस बात पर जोर देने के लिए किया जाता है कि परमेश्वर के साथ शाश्वत जीवन को पूरी दुनिया की वस्तुओं को हासिल करने से बेहतर है।

यीशु अपने शिष्यों को बताते हैं, "कुछ लोग तब तक नहीं मरेंगे जब तक वे परमेश्वर के राज्य को नहीं देखेंगे।"

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि जब यह इसका उल्लेख करता है, तब परमेश्वर के राज्य को देखने के कई भावार्थ होते हैं। [सामान्य तौर पर, जो लोग परमेश्वर के राज्य को देखते हैं, वे देखते हैं कि परमेश्वर अपने लोगों पर एक नए तरीके से शासन करते हैं। वर्तमान के शिष्य और लोग अब भी परमेश्वर के राज्य के कुछ हिस्सों को देखते हैं।]{.mark}

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 9:18–27

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी में तीन दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- पतरस
- अन्य शिष्यगण
- भीड़

मण्डली से कहानी का दो बार अभिनय करवाएं। पहली बार टीम से बिना रूके कहानी का अभिनय करवाएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है तब उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

दूसरी बार जब मण्डली इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

यीशु द्वारा एकांतवास में प्रार्थना करने का अभिनय करें। उनके शिष्य उनके साथ हैं। यीशु प्रार्थना करना समाप्त करते हैं और शिष्यों से पूछते हैं कि लोग क्या कहते हैं कि वे कौन हैं। उनके शिष्यों ने जवाब दिया, "यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला, अन्य लोग कहते हैं आप एलिय्याह हैं, और कुछ कहते हैं कि आप प्राचीन काल के एक भविष्यद्वक्ता हैं, जो पुन: जीवित हो गए हैं।" उसके बाद यीशु उनसे पूछते हैं, "आपके विचार से मैं कौन हूं?" पतरस जवाब देते हैं, "आप परमेश्वर के मसीह हैं।"

अभिनय को बंद करें। शिष्यों की भूमिका निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे, "घबराया हुआ हूं, क्या यह एक परीक्षण है?" "पशोपेश में हूं, लोग उनके बारे में क्या सोचते हैं, क्या यीशु उसकी परवाह करते हैं?" "शायद लोग सही हैं।" "उत्साहित हूं।" यीशु ही हैं वह जन जिसका हम इंतजार करते रहे हैं।" और "खुश हैं कि हम मुक्त होंगे।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु द्वारा उन्हें यह बात किसी को न बताने के लिए कहने का अभिनय करें। यीशु उन्हें बताते हैं कि मनुष्य का पुत्र कष्टों से गुजरेगा, नकार दिया जाएगा और मार दिया जाएगा। लेकिन तीसरे दिन वह पुन: जीवित हो जाएगा।

अभिनय को बंद करें। पतरस का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे, "निराश हूं कि उन्होंने ऐसी बातों को क्यों कहा?" "उलझन में हूं, क्या यीशु खुद के बारे में बात कर रहे हैं?" और "नाराज़ हूं, मैं विश्वास नहीं कर सकता कि वे कष्ट उठाएंगे, मैं ऐसा होने नहीं दूंगा।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु द्वारा पूरे जनसमूह को यह सिखाने का अभिनय करें कि यदि कोई उनका अनुयायी बनने का निर्णय करता है, तो उस व्यक्ति को स्वयं को नकारना, मरने के लिए तैयार होना और सक्रिय रूप से यीशु का अनुसरण करना होगा। यीशु ऐसा कहते हुए यह वर्णित करना निरंतर रखते हैं, "अगर कोई अपने प्राण बचाने की कोशिश करेगा, तो वह उसे खो देगा।" यीशु बताते हैं कि जो कोई भी यीशु के लिए अपना प्राण खोएगा, वह अपने प्राण बचाएगा। किसी व्यक्ति के लिए खुद को खोकर पूरी दुनिया को हासिल करने का कोई लाभ नहीं है। यदि कोई यीशु और उनके वचनों से लज्जित होगा, तो यीशु परमेश्वर और स्वर्गदूतों के समक्ष उनके विषय में लज्जित होंगे।

अभिनय को बंद करें। भीड़ का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे, "मैं उदास अनुभव करता हूं, यीशु का अनुसरण करना कितना कठिन प्रतीत होता है।" "निराश हूं, मुझे पता है कि मुझमें ऐसा करने का बल नहीं है।" "उम्मीद से भरा हूं, यीशु ने यह दिखाया है कि वे असंभव भी कर सकते हैं। मैं उनकी मदद से उनका अनुसरण कर सकता हूं।" और "मैं नहीं चाहता कि वे परमेश्वर के समक्ष मुझ पर लज्जित हों।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु द्वारा अंत में भीड़ को यह बताने का अभिनय करें, "आप में से कुछ लोग मरने से पहले परमेश्वर के राज्य को देखेंगे।" **अभिनय बंद कर दें।** शिष्यों का किरदार निभा रहे

अभिनेताओं से पूछें, आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "उत्साहित हूं, मैं परमेश्वर के राज्य को देख पाऊंगा।" "प्रोत्साहित हूं कि मैं परमेश्वर के राज्य को देखने के लिए, खुद को नकार सकता हूं।" और "अचम्भित हूं कि यह एक महान वादा है। मुझे कौतुहल है कि क्या मैं राज्य को देखूंगा?"

भीड़ का किरदार निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे, "मैं परमेश्वर के राज्य को देखना चाहता हूं।" "यह असंभव लगता है।" और "उलझन में हूं, क्या मुझे परमेश्वर के राज्य को देखने के लिए उनका शिष्य बनना ज़रूरी है?"

.

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 9:18–27

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

प्रार्थना करने के बाद, या परमेश्वर से बात करने के बाद, यीशु अपने **शिष्यों** या करीबी अनुयायियों से बात करते हैं। प्रार्थना और शिष्यों का अनुवाद उसी तरह से करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। दोनों शब्द प्रधान शब्दावली में हैं।

यीशु पूछते हैं कि भीड़ क्या कहती है कि वे कौन हैं। उनमें से एक उत्तर था, **एक भविष्यद्वक्ता** या परमेश्वर के दूत। भविष्यद्वक्ता का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने लूका के पिछले अंशों में किया है। भविष्यद्वक्ता शब्द प्रधान शब्दावली में है। लेकिन पतरस को पता है कि यीशु कौन हैं। वे कहते हैं कि यीशु **मसीह** या वह व्यक्ति हैं जिन्हें परमेश्वर ने एक विशेष कार्य के लिए नियुक्त किया है। मसीह का अनुवाद उसी तरह करें जिस तरह आपने पहले के अंशों में किया है। मसीह शब्द प्रधान शब्दावली में है।

यीशु स्वयं को **मनुष्य का पुत्र** या ऐसा व्यक्ति कहते हैं जिसे परमेश्वर ने सारा सामर्थ्य और अधिकार प्रदान किया था। मनुष्य के पुत्र को उसी तरह अनुवादित करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। मनुष्य का पुत्र शब्द प्रधान शब्दावली में है।

यीशु का कहना है कि उन्हें **पुरनियों**, मुख्य **याजकों** और **कानून के शिक्षकों** द्वारा या यहूदी नेतृत्व द्वारा अस्वीकृत कर दिया जाएगा। बड़े लोगों को समुदाय में अग्रणी होने का सम्मान दिया जाता था। मुख्य याजक अन्य यहूदी याजकों के नेता थे, जो लोगों की ओर से परमेश्वर को बलिदान करते थे। कानून के शिक्षक ऐसे शास्त्री होते थे, जो मूसा के कानून का अध्ययन और व्याख्या करते थे। पुरनियों, याजकों और कानून के शिक्षकों का अनुवाद उसी तरह से करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पिछले अंशों में किया है। तीनों शब्द प्रधान शब्दावली में पाए जा सकते हैं।

यीशु कहते हैं कि उनका अनुसरण करने वाले लोगों को प्रतिदिन अपना **क्रूस** उठाना चाहिए। क्रूस का संदर्भ लकड़ी की साथ में जुड़ी हुई दो शहतीरों से होता है। रोमी लोग अपराधियों को मारने के लिए क्रूस का इस्तेमाल करते थे। रोम की सेना अपराधियों के दोनों पैरों और बाजुओं को शहतीरों पर फैला कर उसमें कीले ठोंक देती थी। कुछ घंटों बाद सांस न ले पाने के कारण कैदी की मृत्यु हो जाती थी। इस प्रकार की मृत्यु को सूली पर चढ़ाना कहा जाता था। क्रूस शब्द प्रधान शब्दावली में है।

रुकें और अगर आपने पहले से ऐसा नहीं किया है, तो अपनी टीम को क्रूस की तस्वीर दिखाएं।

यीशु कहते हैं कि जब वे अपनी महिमा में लौट आएंगे, तो वे ऐसे लोगों पर लज्जित होंगे, जो पृथ्वी पर उन पर लज्जित थे। **महिमा** का संदर्भ परमेश्वर के सामर्थ्य और महानता से है - चकाचौंध करने वाली चमक में उनकी उपस्थिति से है। महिमा शब्द प्रधान शब्दावली में है। यीशु कहते हैं कि वे परमेश्वर और **पवित्र स्वर्गदूतों** या संदेशवाहकों के समान ही महिमा में आएंगे जो उनके उद्देश्यों के लिए समर्पित हैं। पवित्र और स्वर्गदूत का अनुवाद उसी तरह से करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। दोनों ही शब्द प्रधान शब्दावली में हैं।

यीशु कहते हैं कि कुछ शिष्य **परमेश्वर के राज्य को** या परमेश्वर द्वारा अपने लोगों के दिलों में राजा के रूप में शासन करना देखने से पहले नहीं मरेंगे। परमेश्वर के राज्य का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पिछले अंशों में किया है। परमेश्वर का राज्य प्रधान शब्दावली में है।

मीडिया संसाधन सूची:

- एक क्रूस की तस्वीर

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था,

जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 9:18–27

Audio Content

webm zip (3715855 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (6437721 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 9:28–36

सुनना और मनन करना

लूका 9:28–36

लूका 9:28–36 को सुनें और उसे अपने हृदय में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे इस कथा को सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करनालूका 9:28–36

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

पिछले अंशों में यीशु ने अपने शिष्यों से बात की कि वे किस तरह कष्ट उठाएंगे, मरेंगे, और पुन: जीवित किए जाएंगे। यीशु ने उन्हें यह भी बताया कि वे स्वर्ग से पृथ्वी पर लौटेंगे ओर लोग उनकी महिमा देखेंगे। लगभग आठ दिन बाद, यीशु अपने शिष्यों में से पतरस, याकूब और यूहन्ना नामक तीन शिष्यों को प्रार्थना करने के लिए एक पहाड़ पर ले जाते हैं। परमेश्वर थोड़े समय के लिए यीशु में अपनी महिमा व्यक्त करते हैं, यानी अपने सामर्थ्य और प्रताप को दिखाते हैं। स्वर्ग से मूसा और एलिय्याह भी यीशु से बात करने के लिए प्रकट होते हैं।

किस तरह यीशु के माध्यम से परमेश्वर अपनी सामर्थ्य और महिमा प्रकट करेंगे, और यीशु का शिष्य बनने का क्या अर्थ होता है, यह बताए जाने के लगभग आठ दिन बाद यह कथा घटित होती है। यीशु पतरस, याकूब, और यूहन्ना को प्रार्थना करने के लिए एक पहाड़ पर ले जाते हैं। लूका प्रार्थना करने और परमेश्वर द्वारा उनकी इच्छा को प्रकट करने के बीच के संबंध को दर्शाते हैं। यीशु पतरस, याकूब और यूहन्ना के साथ एक ऊंचे पहाड़ पर चढ़ते हैं। कई विद्वानों का मानना है यह हेर्मोन पर्वत था, इसलिए यह एक खड़ी चढ़ाई रही होगी। हेर्मोन पर्वत 9320 फीट या 2814 मीटर ऊंचा है और लेबनान की सीमा पर स्थित है। यहूदी संस्कृति में पहाड़ आमतौर पर दिव्य प्रकाशन के स्थान थे। विशेष रूप से, इस कथा में और निर्गमन की पुस्तक में सीनै पर्वत पर परमेश्वर के साथ मूसा की मुलाकात के बीच कई समानताएं हैं।

रुकें और अपनी टीम को हेर्मोन पर्वत की चोटी की और वह मानचित्र पर कहां स्थित है, इसकी एक तस्वीर दिखाएं।

जब यीशु प्रार्थना कर रहे होते हैं, तो उनका चेहरा बदल जाता है और अलग दिखता है। वह चमकने लगता है। यीशु के वस्त्र चमचमाने लगते हैं और चमकीले श्वेत हो जाते हैं। लूका और प्रेरितों की पुस्तकों में लूका किसी की सामाजिक स्थिति को दर्शाने के लिए वस्त्रों का उपयोग करते हैं। चमकीले कपड़े स्वर्ग की महिमा या परमेश्वर का सामर्थ्य और प्रताप दिखाते हैं। शिष्यों ने अभी भी यह नहीं समझा था कि यीशु कौन हैं, कि वे ही मसीह या प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता हैं। यहां यीशु जो भीतर हैं, वह बाहर शिष्यों को दिखाई देते हैं।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में अलौकिक या स्वर्गीय प्राणियों का वर्णन किस तरह किया जाता है? आपकी संस्कृति में महत्वपूर्ण लोग किस तरह की पोशाक पहनते हैं? यह आम लोगों से किस तरह भिन्न है?

अचानक मूसा और एलिय्याह प्रकट होते हैं। वे भविष्यद्वक्ता या परमेश्वर के संदेशवाहक थे, जो यीशु के समय से बहुत पहले जीवित थे। परमेश्वर उन्हें यीशु से बात करने के लिए पहाड़ पर लाए। मूसा एक ऐसा व्यक्ति था जो बहुत पहले जीवित था। परमेश्वर मूसा से एक पहाड़ पर मिले और उनके लोगों के लिए उन्होंने अपना कानून दिया। बाद में एलिय्याह एक और प्रसिद्ध यहूदी भविष्यद्वक्ता हुए, जिन्होंने परमेश्वर की सामर्थ्य के माध्यम से कई सामर्थ्य कर्म किए थे। एलिय्याह मरे नहीं थे परंतु परमेश्वर द्वारा स्वर्ग ले जाए गए थे। जब वे प्रकट हुए तो मूसा और एलिय्याह भी चमकीले प्रकाश से घिरे थे। उन्होंने यीशु से दुनिया से उनके प्रस्थान या निर्गमन के बारे में बात की, यह यीशु की आने वाली मृत्यु को संदर्भित करता है। यह उनके पुनरूत्थान या परमेश्वर द्वारा उन्हें पुन: जीवित करने का उल्लेख भी कर सकता है। यीशु उस विशेष कार्य को पूरा करने या सिद्ध करने ही वाले थे, जिसे परमेश्वर ने उन्हें करने के लिए भेजा था। इसका अर्थ है यीशु की मृत्यु (और पुनरूत्थान) परमेश्वर की योजना का एक हिस्सा था। यीशु की मृत्यु यहूदी धार्मिक राजधानी यरूशलेम के शहर में होगी।

जब यीशु मूसा और एलिय्याह से बात कर रहे थे तब यीशु के तीन शिष्य, पतरस और याकूब और यूहन्ना सो रहे थे। जब वे उठने लगे, तो उन्होंने मूसा और एलिय्याह को यीशु के साथ देखा। पतरस, याकूब और यूहन्ना ने कभी मूसा या एलिय्याह को नहीं देखा था, लेकिन किसी तरह शिष्यों ने दोनों को पहचान लिया / शिष्यों ने यीशु को एक स्वर्गीय प्राणी की तरह महिमा में चमकते देखा। जब पतरस ने अपनी बात कही, तब मूसा और एलिय्याह वहां से रवाना होने ही वाले थे। पतरस यीशु को स्वामी कहते हैं जो एक सम्मान दर्शाने वाली उपाधि है। इसका तात्पर्य है कि अपने आध्यात्मिक अग्रणी के रूप में पतरस का यीशु के साथ एक करीबी संबंध था। पतरस कहते हैं कि यह अच्छा है कि वे और अन्य शिष्य इस तरह की एक अद्भुत घटना के प्रत्यक्षदर्शी बने। पतरस यह सुझाव देते हैं कि वे, याकूब और यूहन्ना, यीशु, मूसा, और एलिय्याह के लिए तीन मण्डप बनाएं। ये मण्डप वे पहाड़ पर मिलने वाली जो भी सामग्री होती, उससे बनाते। पतरस सो रहे होते हैं और जो कुछ उन्होंने कहा उसके बारे में कोई पूर्वविचार नहीं किया। पतरस ने यीशु को मूसा और एलिय्याह के समतुल्य बनाने की भूल भी की, लेकिन वे समतुल्य नहीं थे। मूसा और एलिय्याह परमेश्वर के चुने हुए सेवक थे, लेकिन यीशु परमेश्वर के चुने हुए एकमात्र पुत्र थे।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। जब आपके घर में कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति मिलने आता है तो आप क्या प्रबंध करते हैं? क्या उन्हें सत्कारित अनुभव कराने के लिए आप कुछ विशेष करते हैं? किसी और के घर में रहने की आपकी इच्छा को आप किस तरह व्यक्त करते हैं?

जब पतरस बोल रहे होते हैं, तो एक बादल प्रकट होता है ओर उन्हें ढंक लेता है। वह बादल परमेश्वर की उपस्थिति का प्रतिनिधित्व करता है। शिष्य भयभीत थे। बादल से परमेश्वर की वाणी आती है और कहती है, "यह मेरा पुत्र है, जिसे मैंने चुना है। उसकी बात सुनो।" परमेश्वर ने यीशु को चुना और उन्हें एक विशेष उद्देश्य के लिए नियुक्त किया। केवल यीशु ही उस उद्देश्य को पूरा कर सकते थे क्योंकि वे परमेश्वर के एकमात्र पुत्र थे। परमेश्वर के पुत्र का संदर्भ परमेश्वर और यीशु के बीच के संबंधों से है। यह मानव पिता और पुत्र के संबंधों के समान है। लेकिन यीशु हमेशा से ही पुत्र के रूप में परमेश्वर के साथ अस्तित्व में रहे हैं। परमेश्वर इस बात पर जोर देते हैं कि शिष्यों को केवल यीशु की बात सुनना चाहिए, न कि मूसा या एलिय्याह की। इस मामले में, सुनने का अर्थ न केवल सुनना है बल्कि उसका पालन भी करना है।

परमेश्वर के बात करने के बाद, शिष्यों ने देखा कि यीशु अकेले थे और मूसा और एलिय्याह चले गए थे। उन्होंने पहाड़ पर जो कुछ देखा और सुना था, उसे शिष्यों ने किसी को नहीं बताया। मत्ती और मरकुस के सुसमाचार यह कहते हैं कि यीशु ने

विशेष रूप से उन्हें यह बताया कि जब तक वे मर कर वापिस जीवित नहीं हो जाते, तब तक किसी को न बताएं। इसलिए शिष्यों ने उस समय किसी को नहीं बताया।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। ऐसे समय के बारे में एक कहानी बताएं, जब आपको एक लंबे समय तक कोई रहस्य गोपनीय रखना था।

लूका इस कथा का उपयोग यीशु की पहचान और प्रयोजन की पुष्टि करने के लिए करते हैं। विशेष रूप से, शिष्य यह देखते और सुनते हैं कि यीशु कौन हैं। मूसा परमेश्वर के कानून का प्रतिनिधित्व करते हैं और एलिय्याह भविष्यद्वक्ताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। परमेश्वर के चुने हुए पुत्र के रूप में यीशु का ध्येय मूसा और एलिय्याह के माध्यम से प्रारंभ किए गए परमेश्वर के कार्य को जारी रखना था। यीशु एक ऐसा जीवन जी रहे थे, जो परमेश्वर के कानून को सम्पूर्ण तरह से पूरा करता और सभी भविष्यद्कथनों को सच सिद्ध करता था। यीशु ने यह परमेश्वर की योजना के एक हिस्से के रूप में किया।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 9:28–36

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य कल्पांकित करने में समूह की मदद करेंगे। आप कथा के दृश्यों, विन्यास और पात्रों को परिभाषित करने में समूह की मदद करेंगे।

इस कहानी के चार दृश्य हैं।

पहला दृश्य: यीशु प्रार्थना करने के लिए एक पहाड़ पर जाते हैं। वे पतरस, याकूब और यूहन्ना को उनके साथ ले जाते हैं।

दूसरा दृश्य: जब यीशु प्रार्थना कर रहे होते हैं, उस समय तीनों शिष्य सो रहे होते हैं। परमेश्वर की महिमा को दर्शाने के लिए यीशु का चेहरा और स्वरूप परिवर्तित हो जाते हैं। मूसा और एलिय्याह प्रकट होते हैं और यीशु से उनकी आने वाली मृत्यु के बारे में बात करने लगते हैं।

तीसरा दृश्य: तीनों शिष्य जाग जाते हैं और परमेश्वर की महिमा में यीशु, मूसा और एलिय्याह को चमकते हुए देखते हैं। पतरस बिना सोचे समझे कहते हैं कि उन्हें उनके लिए तीन मण्डपों का निर्माण करना चाहिए। परमेश्वर की उपस्थिति उन्हें एक बादल में ढंक देती है। परमेश्वर कहते हैं, "यह मेरा पुत्र है, जिसे मैंने चुना है। उसकी बात सुनो।"

चौथा दृश्य: शिष्य यह देखते हैं कि यीशु अकेले हैं। जो कुछ भी हुआ उसे उस समय किसी को न बताने के लिए यीशु उन्हें कहते हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- पतरस
- याकूब
- यूहन्ना
- मूसा
- एलिय्याह
- परमेश्वर

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल (ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप इधर उधर रख सकते हैं जैसे पत्थर, लकड़ियां, बच्चों के खिलौने) का इस्तेमाल करे।

यह याद रखना महत्व का है कि यहूदी इतिहास में पहाड़ एक ऐसा स्थान था जहां परमेश्वर स्वयं को प्रकट करते थे।

यीशु प्रार्थना करने के लिए एक पहाड़ पर जाते हैं। वे पतरस, याकूब और यूहन्ना को उनके साथ ले जाते हैं। दूसरा दृश्य: यीशु के प्रार्थना करते समय तीनों शिष्य सो रहे होते हैं। परमेश्वर की महिमा को दर्शाने के लिए यीशु का चेहरा और स्वरूप परिवर्तित हो जाते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यहूदी संस्कृति में कपड़े किसी की सामाजिक स्थिति को दर्शाने का एक तरीका हैं। यीशु का चेहरा और वस्त्र रूपांतरित हो जाते हैं। यह परमात्मा के पुत्र के रूप में यीशु की वास्तविक स्थिति को दर्शाता है।

मूसा और एलिय्याह प्रकट होते हैं और यीशु से उनकी आने वाली मृत्यु के बारे में बात करने लगते हैं। तीनों शिष्य जाग जाते हैं और परमेश्वर की महिमा में यीशु, मूसा और एलिय्याह को चमकते हुए देखते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यहूदी इतिहास में मूसा और एलिय्याह बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं। प्रेरितों से कई वर्षों पहले वे पृथ्वी पर रहते थे। मूसा उस कानून का प्रतिनिधित्व करते हैं जो परमेश्वर ने उनके लोगों को दिया था। एलिय्याह उन भविष्यद्वक्ताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनका उपयोग परमेश्वर ने उनके लोगों को संदेश देने के लिए किया था। पतरस, याकूब और यूहन्ना ने कभी मूसा या एलिय्याह को देखा नहीं था, परंतु किसी तरह पतरस, यूहन्ना और याकूब ने उन दोनों को पहचान लिया।

पतरस बिना सोचे समझे बोलते हैं। वे कहते हैं कि उन्हें उनके लिए तीन मण्डपों का निर्माण करना चाहिए। परमेश्वर की उपस्थिति उन्हें एक बादल में ढंक देती है। शिष्य भयभीत होते हैं।

यह ध्यान देना महत्व का है कि घटनाओं के बीच परिवर्तन बहुत शीघ्रता से होता है। जब मूसा और एलिय्याह जाने वाले

होते हैं, तो पतरस उनके लिए मण्डप बनाने का प्रस्ताव करते हैं। जब पतरस अभी बोल ही रहे होते हैं, तो बादल आता है और परमेश्वर शिष्यों से बात करते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यहूदी संस्कृति में बादल परमेश्वर की उपस्थिति का प्रतिनिधित्व करते हैं। यहूदी यह जानते थे कि वे परमेश्वर की उपस्थिति में खड़े नहीं हो सकते थे, इसलिए वे भयभीत हो गए।

बादल में से एक स्वर बोलता है और कहता है, "यह मेरा पुत्र है, जिसे मैंने चुना है। उसकी बात सुनो।"

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि वह वाणी बादल से आती है। यहूदी यह जानते थे कि ये शब्द परमेश्वर की वाणी हैं।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 9:28–36

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी के चार दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- पतरस
- याकूब
- यूहन्ना
- मूसा
- एलिय्याह
- परमेश्वर

मण्डली से कहानी को दो बार अभिनीत करवाएं। पहली बार टीम से बिना रूके कहानी का अभिनय करवाएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है तब उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, तब कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

यह सुनिश्चित करें कि टीम यीशु, मूसा और एलिय्याह के बीच हो रहे वार्तालाप के दौरान पतरस, याकूब और यूहन्ना के सोए होने और उनिंदे होने का अभिनय करे। पतरस, याकूब और यूहन्ना ने वास्तव में यरूशलेम में यीशु के होने वाले प्रस्थान के बारे में नहीं सुना था।

यह सुनिश्चित करें कि जब मूसा और एलिय्याह पहाड़ से रवाना हो रहे होते हैं तो टीम पतरस के पूरी तरह से जाग जाने का अभिनय करे। पतरस, उस क्षण को बनाए रखने के प्रयास में यह प्रस्तावित करते हैं कि शिष्यों को तीन मण्डपों का निर्माण करना चाहिए।

यह सुनिश्चित करें कि टीम पतरस, याकूब और यूहन्ना का उस समय भयातुर होने का अभिनय करे, जब बादल उन पर उतर आता है। बादल से आने वाली वाणी परमेश्वर की वाणी है।

दूसरी बार जब मण्डली इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

यीशु द्वारा पतरस, याकूब और यूहन्ना के साथ पहाड़ पर जाने का अभिनय करें। यीशु प्रार्थना कर रहे हैं, और पतरस, याकूब और यूहन्ना सोए हुए या बमुश्किल जागे हुए होते हैं। **अभिनय को बंद करें।** यूहन्ना के अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मैं यीशु के साथ प्रार्थना करने के लिए एक पहाड़ पर जाने के लिए उत्साहित हूं।" "मैं बहुत थका हुआ महसूस करता हूं।" और "मुझे लगता है कि मैं यीशु को निराश कर रहा हूं, मैं खुद को जगा हुआ नहीं रख पा रहा हूं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु के चेहरे के रूपांतरित होने का अभिनय करें। उनके कपड़े चमकदार श्वेत हो जाते हैं। मूसा और एलिय्याह यरूशलेम में होने वाले यीशु के प्रस्थान के बारे में यीशु के साथ बात कर रहे होते हैं। **अभिनय को बंद करें।**

मूसा का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "यह अद्भुत है कि परमेश्वर ने अपने एकमात्र पुत्र को एक पूर्ण जीवन जीने के लिए भेजा।" "यीशु उनके अनुयायियों के लिए एकदम धैर्यवान नेता हैं।" "अंतत:! ऐसा कोई जो परमेश्वर के मानकों पर खरा उतरता है!"

एलिय्याह का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "यह अद्भुत है कि अंतत: परमेश्वर की योजना घटित हो रही है।" "उदास हूं, यीशु के लिए यह एक कठिन यात्रा प्रतीत होती है। अस्वीकृत होना क्या होता है मुझे यह पता है।" "अंतत:! लोगों के लिए स्वतंत्रता, मृत्यु से मुक्ति!" अभिनय को फिर से शुरू करें।

पतरस, याकूब और यूहन्ना के पूर्ण रूप से जाग जाने का अभिनय करें, वे यीशु की महिमा देखते हैं, और वे यीशु के बगल में दो लोगों को खड़े हुए भी देखते हैं। मूसा और एलिय्याह जाने लगते हैं। पतरस जल्दी से बोलते हैं। पतरस को यह नहीं पता था कि वे क्या कह रहे थे। पतरस यीशु से कहते हैं, "हे स्वामी, यह अद्भुत है कि हम यहाँ हैं। आइए हम तीन मण्डप बनाते हैं, एक आपके लिए, एक मूसा के लिए और एक एलिय्याह के लिए।" **अभिनय को बंद करें।**

पतरस का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मैं उत्साहित हूं कि यीशु के साथ दो महान भविष्यद्वक्ताओं से मिलने के लिए मुझे यहां आने का मौका मिला।" "मैं नहीं

चाहता कि यह क्षण समाप्त होए।" और "मैं तीनों को सम्मानित करने के लिए कुछ करना चाहता हूं।"

यूहन्ना का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मैं यीशु के साथ इतने महत्वपूर्ण समय पर यहां होने में सम्मानित अनुभव कर रहा हूं।" "मुझे नहीं पता कि ऐसे समय में पतरस के पास ऐसा बोलने का इतना साहस कैसे आया।" और "जो हुआ उसे दूसरों को बताने के लिए मैं अधीर हूं।"

याकूब का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मैं विस्मयाभिभूत हूं, यीशु कितने अलग दिखते हैं।" "उत्साहित हूं, पतरस का विचार बढ़िया है, यहीं रहते हैं।" और "मुझे शांति महसूस होती है, हम यहां मूसा और एलिय्याह के साथ हैं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

जब पतरस अभी बात कर ही रहे होते हैं, तो एक बादल उन्हें ढंक देता है, और वे बहुत भयभीत होते हैं। बादल में से आने वाली एक वाणी ने कहा, "यह मेरा पुत्र है, मेरा चयनित, उसकी बात सुनो।" वाणी द्वारा बोलना समाप्त होने के बाद। यीशु अकेले थे। शिष्यों ने किसी को इसके बारे में कुछ नहीं कहा। **अभिनय को बंद करें।**

परमेश्वर की वाणी का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मुझे अपने पुत्र पर गर्व है।" "मुझे उनके अविश्वास को सहन करना होगा।" और मेरी योजनाओं को समझने के लिए उन्हें यीशु की बात सुनना आवश्यक है।"

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 9:28–36

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु अपने **तीन शिष्यों** या अनुयायियों को एक पहाड़ पर ले जाते हैं। शिष्यों का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जैसा कि आपने पिछले अंशों में किया है। शिष्य शब्द प्रधान शब्दावली में हैं। यीशु पहाड़ पर **प्रार्थना** करने या परमेश्वर के साथ संवाद करने के लिए जाते हैं। प्रार्थना का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। प्रार्थना शब्द प्रधान शब्दावली में है।

मूसा और एलिय्याह प्रकट होते हैं और **यरूशलेम** में या यहूदियों की धार्मिक राजधानी में उनकी होने वाली मृत्यु के बारे में यीशु से बात करते हैं। यरूशलेम का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जैसा कि आपने पिछले अंशों में किया है। यरूशलेम प्रधान शब्दावली में हैं।

जब पतरस और अन्य शिष्य जागते हैं, तो वे यीशु को उनकी **महिमा** में देखते हैं। महिमा परमेश्वर के सामर्थ्य और प्रताप या परमेश्वर की उपस्थिति को संदर्भित करती है। महिमा का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जैसे आपने पहले भी किया है। महिमा शब्द प्रधान शब्दावली में है।

मूसा और एलिय्याह यीशु के साथ बातें करने के लिए प्रकट होते हैं। मूसा वे व्यक्ति थे जिन्हें परमेश्वर ने बहुत पहले अपना कानून दिया था। एलिय्याह एक भविष्यद्वक्ता थे जिन्होंने कई वर्षों पहले परमेश्वर की सामर्थ्य के माध्यम से कई चमत्कार किए थे। एलिय्याह कभी मरे नहीं लेकिन परमेश्वर द्वारा सीधे स्वर्ग ले जाए गए थे। जब पतरस मूसा और एलिय्याह को देखते हैं, तो वे सुझाव देते हैं कि शिष्य तीनों के लिए **मण्डप** बनाएं। मण्डप शाखाओं, पत्तियों और अन्य आसानी से उपलब्ध होने वाली वस्तुओं से बने अस्थायी निवास स्थान होते थे। उन्हें छाया के लिए और वायु को रोकने हेतु उपयोग किया जाता था।

पतरस यीशु को स्वामी कहते हैं। **स्वामी** एक शीर्षक है जो उच्च पद के किसी व्यक्ति के लिए सम्मान दर्शाता है। स्वामी का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। स्वामी शब्द प्रधान शब्दावली में है।

जब बादल प्रकट होते हैं और परमेश्वर उसमें से शिष्यों से बात करते हैं, तो परमेश्वर यीशु को अपना पुत्र कहते हैं। परमेश्वर का पुत्र यीशु को संदर्भित करता है और परमेश्वर के साथ उनके विशेष संबंध को दर्शाता है। यीशु के पास परमेश्वर के समान ही चरित्र और स्वरूप है। परमेश्वर के पुत्र का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने उसे पिछले अंशों में किया है। परमेश्वर का पुत्र प्रधान शब्दावली में है।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 9:28–36

Audio Content

webm zip (3474544 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (5950002 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 9:37–45

सुनना और मनन करना

सुनें और हृदय

लूका 9:37–45

लूका 9:37–45 सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे इस कथा को सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 9:37–45

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु ने अपने शिष्यों को दुष्टात्माओं को निकालने और रोगों से चंगा करने का सामर्थ्य दिया। जब उन्होंने एक ऊंचे पहाड़ पर पतरस, याकूब और यूहन्ना को अपनी महिमा प्रकट की, तो यीशु अगले दिन पहाड़ से नीचे लौटते हैं और वहां उनका इंतज़ार करती हुई भीड़ को पाते हैं। एक व्यक्ति यीशु से उनके एकमात्र पुत्र में से दुष्टात्माओं को निकालने के लिए कहता है क्योंकि जो शिष्य पहाड़ पर नीचे ठहरे थे, वे ऐसा करने में असमर्थ रहे थे। यीशु दुष्टात्मा को निकाल देते हैं और लोग विस्मयाभिभूत होते हैं। यीशु लोगों को विश्वास न करने के लिए फटकारते हैं और शिष्यों को याद दिलाते हैं कि वे उन्हें छोड़ कर जाने वाले हैं।

[यीशु और उनके करीबी तीन शिष्य, पतरस, याकूब और यूहन्ना एक ऊंगचे पहाड़ पर प्रार्थना करने के लिए रात गुज़ारने के बाद लौट आते हैं।]{.mark}

रुकें और हेर्मोन पर्वत की तस्वीर दिखाएं।

सुबह जब वे लौटे तो उन्हें पहाड़ के नीचे यीशु की प्रतीक्षा करती हुई एक भीड़ मिली। भीड़ में एक व्यक्ति जोर से

पुकारकर बोलता है ताकि यीशु उसे सुन सकें। वह व्यक्ति यीशु को एक शिक्षक कहता है, जो यहूदी धार्मिक नेताओं के लिए एक सम्मानजनक उपाधि थी। वह व्यक्ति यीशु से उसके पुत्र को चंगा करने की, या उस दुष्टात्मा या बुरी आत्मा को जो उसे नियंत्रित कर रही थी, उसे निकालने की विनती करता है। यहूदी संस्कृति में दुष्ट आत्मा बालक को परमेश्वर की सेवा के लिए अशुद्ध या अनुपयुक्त बनाती थी।

वह लड़का उस व्यक्ति का एकमात्र पुत्र है। यह यहूदी संस्कृति में महत्वपूर्ण था क्योंकि यदि लड़का ठीक न हुआ तो व्यक्ति को अपनी विरासत आगे बढ़ाने और अपनी वंशावली को जारी रखने वाला कोई नहीं रहता। वह व्यक्ति अपने पुत्र की स्थिति का और उसे नियंत्रित करने वाली दुष्टात्मा क्या करती थी उसका वर्णन करता है। हर बार जब दुष्ट आत्मा उस लड़के पर नियंत्रण करती थी, तो वह चिल्लाता था और उस पर दौरे पडने लगते थे। दौरे लड़के को जमीन पर लुढ़का देते थे, वह बेकाबू हो जाता था और उसके मुंह से झाग उत्पन्न होने लगते थे। वह दुष्टात्मा अधिकांश समय उस लड़के पर नियंत्रण करती थी और वह उसे बुरी तरह चोट पहुंचा रही थी।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। उस लड़के जैसे लक्षण प्रदर्शित करने वाले किसी व्यक्ति को नियंत्रित करने या उसका इलाज करने के लिए लोग क्या करते हैं? आपकी संस्कृति में दूसरों द्वारा उनके साथ किस प्रकार व्यवहार किया जाता है? वे किस तरह की बातें नहीं कर पाते थे।

वह व्यक्ति यीशु को बताता है कि उसने उनके शिष्यों से मदद की विनती की थी लेकिन वे उस दुष्टात्मा को बाहर नहीं निकाल पाए। इसका तात्पर्य यह है कि शेष नौ शिष्यों ने उस लड़के को छोड़ने के लिए दुष्ट आत्मा को आदेश देने की कोशिश की थी, लेकिन वे सफल नहीं हुए थे। आपको याद होगा कि यीशु ने पहले ही अपने शिष्यों को सभी दुष्टात्माओं को निकालने और बीमार लोगों को चंगा करने की सामर्थ्य और अधिकार दे दिया था।

उसके बाद यीशु न केवल उनके शिष्यों या भीड़ से, बल्कि उनकी बात सुन रहे सभी लोगों से बात करते हैं। यीशु उन्हें "अविश्वासी और भ्रष्ट पीढ़ी कहते हैं।" भ्रष्ट होने का मतलब ऐसे तरीकों का अनुसरण करना है जो नैतिक रूप से गलत हों। इस वाक्यांश का इस्तेमाल मूसा ने इस्राएलियों या यहूदी लोगों को वर्णित करने के लिए व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में किया था। जंगल में जब इस्राएल निवासी मूसा के साथ थे, तो वे कई बार परमेश्वर पर विश्वास और भरोसा करने में विफल रहे थे। यीशु यह संकेत दे रहे थे कि लोग उनके पूर्वजों की तरह थे। इस संदर्भ में लोगों में इस विश्वास का अभाव था कि परमेश्वर यीशु के माध्यम से चंगा कर सकते थे और अलौकिक कर्म कर सकते थे।

उसके बाद यीशु एक सवाल पूछते हैं जिसके जवाब की उम्मीद उन्हें नहीं थी। यीशु पूछते हैं कि उन्हें उनके साथ और कब तक रह कर उनके अविश्वास को सहना होगा। यीशु लोगों से निराश थे क्योंकि उन्हें न तो परमेश्वर पर भरोसा था और न ही उन पर। यीशु उस व्यक्ति को लड़के को लाने के लिए कहते हैं जो 6 से 13 साल की उम्र के बीच का एक पुत्र रहा होगा। जब लड़का पहुंचता है, तो दुष्ट आत्मा उस लड़के को जमीन पर हिंसक रूप से गिरने और दौरा पड़ने का कारण बनती है। यीशु कड़ाई के साथ उस लड़के को छोड़ने और उसकी आज्ञा मानने के लिए दुष्ट आत्मा को आदेश देते हैं। यीशु उस लड़के को उसके पिता को प्रस्तुत करते हैं। भीड़ इस बात से चकित होती है कि यीशु ने परमेश्वर की सामर्थ्य को किस तरह दिखाया था।

उसके बाद लूका उनकी आने वाली मृत्यु के बारे में यीशु और उनके शिष्यों के बीच हुई बातचीत का वर्णन करते हैं। उस लड़के को चंगा करने के चमत्कार के बाद लूका सीधे इस बातचीत को स्थान देते हैं। लोगों द्वारा अलौकिक कर्म के उस चमत्कार पर अचम्भे और यीशु की स्वयं की जानकारी कि वह किस तरह के कष्ट को भोगने जाने वाले थे, इनकी परस्पर तुलना करने के लिए ऐसा किया जाता है।

यीशु उनके शिष्यों को ध्यान से सुनने के लिए कहते हैं। यीशु खुद को मनुष्य का पुत्र या ऐसा व्यक्ति कहते हैं जिसे परमेश्वर सारा सामर्थ्य और अधिकार प्रदान करते हैं। यीशु कहते हैं कि उन्हें धोखा दिया जाएगा, या किसी अन्य के सामर्थ्य में सौंप दिया जाएगा जो उन्हें नुकसान पहुंचाएगा। यीशु कुछ ऐसी बात का जिक्र कर रहे हैं जो भविष्य में घटित होगी।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में लोग बुरी खबर कैसे पहुंचाते हैं?

हालांकि लेख यह नहीं कहता कि यीशु को कौन धोखा देगा, बाद के अंशों से हमें पता है कि यह यीशु के शिष्यों में से एक यहूदा हैं। यह परमेश्वर की योजना को पूरा करेगा। आपको यहां परमेश्वर या यहूदा का उल्लेख करने की जरूरत नहीं है। लेकिन यीशु के शब्दों का अर्थ शिष्यों से छिपा हुआ था और वे समझ नहीं पाए। शिष्य इतने डरे हुए थे कि यीशु से उस बात का क्या मतलब था यह भी नहीं पूछते हैं।

लूका यह दर्शाते हैं कि यीशु दुनिया से उनके जाने या निर्गमन की तैयारी कर रहे हैं। उन्होंने पहले ही अपने शिष्यों को यह बता दिया था कि वे कष्ट झेलेंगे, मर जाएंगे और उन्हें वापस जीवित किया जाएगा। अब वे उन्हें बताते हैं कि उन्हें धोखा दिया जाएगा। भले ही यीशु ने शिष्यों को सामर्थ्य और अधिकार दिया हो, लेकिन वे यीशु को जाने देने के लिए अभी भी तैयार नहीं हैं।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 9:37–45

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य कल्पांकित करने में समूह की मदद करेंगे। आप कथा के दृश्यों, विन्यास और पात्रों को परिभाषित करने में समूह की मदद करेंगे।

इस कहानी के चार दृश्य हैं।

पहला दृश्य: जब यीशु और पतरस और याकूब और यूहन्ना प्रार्थना करने गए तब बाकी शिष्य पहाड़ के नीचे ही रहे। वहां एक भीड़ होती है। भीड़ में एक व्यक्ति शिष्यों को एक दुष्टात्मा से अपने एकमात्र पुत्र को चंगा करने के लिए विनती करता है। शिष्य उस दुष्टात्मा को जाने की आज्ञा देने की कोशिश करते हैं, लेकिन दुष्टात्मा नहीं सुनती और उस लड़के को कष्ट पहुंचाती रहती है।

दूसरा दृश्य: यीशु, पतरस, याकूब और यूहन्ना पहाड़ से नीचे लौट आते हैं। एक भीड़ और अन्य शिष्य भी उनका इंतजार कर रहे होते हैं। एक व्यक्ति ज़ोरों से पुकारकर यीशु से अपने पुत्र को चंगा करने के लिए विनती करता है। वह व्यक्ति यीशु को यह बताता है कि शिष्य उन्हें चंगा नहीं कर पाए थे।

तीसरा दृश्य: यीशु यह पूछते हैं कि उन्हें लोगों के अविश्वास को कब तक सहना होगा। यीशु उस व्यक्ति को उसके पुत्र को लाने के लिए कहते हैं। जब वह आ रहा होता है तो दुष्टात्मा लड़के को जमीन पर फेंक देती है। यीशु उस दुष्टात्मा को बाहर निकालते हैं। यीशु उस लड़के को उसके पिता को प्रस्तुत करते हैं और लोग चकित होते हैं।

चौथा दृश्य: यीशु केवल उनके शिष्यों से ही बात करते हैं। यीशु उन्हें यह चेतावनी देते हैं कि वह समय आने वाला है जब उन्हें उनके शत्रुओं के हाथों धोखे से पकड़वा दिया जाएगा। उनके शिष्य समझते नहीं हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- पतरस
- याकूब
- यूहन्ना
- पहाड़ के नीचे छोड़े गए अन्य शिष्य
- भीड़
- वह व्यक्ति जो मदद मांगता है।
- उस व्यक्ति का पुत्र
- वह दुष्टात्मा जो पुत्र को नियंत्रित कर रही होती है।

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल (ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप इधर उधर रख सकते हैं जैसे पत्थर, लकड़ियां, बच्चों के खिलौने) का इस्तेमाल करे।

यीशु पतरस, याकूब और यूहन्ना के साथ प्रार्थना करने के लिए पहाड़ पर जाते हैं। अन्य शिष्य पहाड़ के नीचे रहते हैं। भीड़ में से एक व्यक्ति शिष्यों को उसके एकमात्र पुत्र से एक दुष्टात्मा को बाहर निकालने के लिए विनती करता है। शिष्य कोशिश करते हैं और ऐसा नहीं कर पाते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु ने गांवों में भेजने से पहले ही अपने बारह शिष्यों को सभी रोगों को चंगा करने और सभी दुष्टात्माओं को बाहर निकालने का सामर्थ्य और अधिकार दिया था।

यीशु और उनके तीनों शिष्य पहाड़ से नीचे आते हैं। एक बड़ी भीड़ यीशु से मिलती है। एक व्यक्ति यीशु की मदद मांगता है। वह व्यक्ति यह बताता है कि एक दुष्ट आत्मा उसके पुत्र को नियंत्रित करती है। उस व्यक्ति ने कहा कि उन्होंने यीशु के शिष्यों से मदद मांगी थी लेकिन वे उस दुष्ट आत्मा को बाहर नहीं निकाल सके थे।

यीशु कहते हैं, अविश्वासी और भ्रष्ट पीढ़ी, मुझे और कब तक तुम्हारे साथ रहना और तुम्हें सहन करना होगा। उसके बाद यीशु ने उस लड़के को देखने के लिए कहा। यीशु उस दुष्ट आत्मा को फटकारते हैं और उस लड़के को चंगा करते हैं। यीशु उस लड़के को उसके पिता को वापस देते हैं। सभी परमेश्वर की सामर्थ्य पर चकित थे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि इस अंश में लूका यीशु द्वारा दुष्टात्मा को निकालने पर विस्मयाभिभूत लोगों और यीशु द्वारा अपने शिष्यों को यह याद दिलाना कि कोई उन्हें धोखा देगा, के मध्य परस्पर तुलनात्मक अंतर दिखाते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु स्वयं को संदर्भित करने के लिए मनुष्य के पुत्र उपाधि का उपयोग करते हैं। यीशु उन्हें धोखा दिए जाने को संदर्भित करने के लिए 'पकड़वाया जाना' कहते हैं।

जबकि सभी लोग चकित थे, यीशु ने उनके शिष्यों से कहा, "मेरी बातों को अच्छी तरह सुनो, मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वा दिया जाएगा।"

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि शिष्य यीशु के वचन समझ गए लेकिन वे उसका अर्थ नहीं समझे क्योंकि अर्थ उन से छिपा हुआ था।

यीशु ने जो कहा, उसे शिष्य समझ नहीं पाए। वे यीशु से यह पूछने से डरते थे कि उनका क्या अर्थ था।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 9:37–45

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी के चार दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- पतरस
- याकूब
- यूहन्ना
- पहाड़ के नीचे छोड़े गए अन्य शिष्य
- भीड़
- वह व्यक्ति जो मदद मांगता है।
- उस व्यक्ति का पुत्र
- वह दुष्टात्मा जो पुत्र को नियंत्रित कर रही थी।

मण्डली से कहानी का दो बार अभिनय करवाएं। पहली बार टीम से बिना रूके कहानी का अभिनय करवाएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है तब उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, तब कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

यह सुनिश्चित करें कि टीम यीशु का पतरस, याकूब और यूहन्ना के साथ उस समय पहाड़ पर होने का अभिनय करे, जबकि उनके बाकी शिष्य पहाड़ के नीचे रहते हैं।

यह सुनिश्चित करें कि टीम यीशु के शिष्यों से मदद मांगने वाले एक व्यक्ति का अभिनय करे। यीशु के आने से पहले यीशु के शिष्यों ने अशुद्ध आत्मा को बाहर निकालने की कोशिश की, लेकिन वे असफल रहे।

यह सुनिश्चित करें कि टीम यीशु द्वारा न केवल भीड़ को और न केवल शिष्यों को, वरन् सभी को संबोधित करने का अभिनय करे।

यह सुनिश्चित करें कि टीम, पुत्र को नियंत्रित करने वाली दुष्टात्मा का अभिनय करे। दुष्टात्मा का किरदार निभाने वाले अभिनेता को उस लड़के के कार्यकलापों को नियंत्रित करने वाला होना चाहिए। दुष्टात्मा वह होनी चाहिए जो लड़के को भूमि पर फेंक देती है।

यह सुनिश्चित करें कि टीम दुष्टात्मा द्वारा पुत्र को छोड़े जाने का और यीशु द्वारा दुष्टात्मा की उपस्थिति के बिना पुत्र को उसके पिता को वापिस देने का अभिनय करे।

यह सुनिश्चित करें कि जब लोग अचम्भित हो रहे होते हैं तब यीशु द्वारा भीड़ से अलग हटकर अपने शिष्यों से बात करने का टीम अभिनय करे। यीशु उन्हें उस विश्वासघात के बारे में बताते हैं जिससे यीशु को गुज़रना होगा।

यीशु से इस विषय के बारे में पूछने से शिष्य डरते हैं, टीम द्वारा इसका अभिनय किया जाना सुनिश्चित करें।

दूसरी बार जब मण्डली इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

ऊंचे पहाड़ पर यीशु, पतरस, याकूब और यूहन्ना का अभिनय करें। पहाड़ के नीचे एक भीड़ होती है। एक व्यक्ति अपने पुत्र के लिए मदद मांगता हुआ आता है। उसका पुत्र दुष्ट आत्माओं द्वारा नियंत्रित होता है। यह व्यक्ति पहाड़ के नीचे रहे यीशु के शिष्यों से मदद मांगता है। शिष्य लड़के की मदद नहीं कर पाते।

अभिनय को बंद करें। यीशु के शिष्यों का पात्र निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मैं निराश हूं, मुझे लगा था कि यीशु ने हमें दुष्टात्माओं को निकालने का अधिकार दिया था।" "मैं शर्मिंदा हूं। यीशु क्या कहेंगे?" और "पता नहीं भीड़ हमारे बारे में क्या सोचती है?" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु, याकूब, पतरस, और यूहन्ना पहाड़ से नीचे आते हैं। वह व्यक्ति यीशु से अपने पुत्र को चंगा करने की विनती करता है। वह व्यक्ति कहता है कि शिष्य उसे चंगा नहीं कर पा रहे थे। यीशु कहते हैं "विश्वासहीन और भ्रष्ट पीढ़ी।" यीशु लड़के के पिता से लड़के को लाने के लिए कहते हैं।

अभिनय को बंद करें। भीड़ का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मैं अपमानित महसूस करता हूं। यीशु ने हमें ऐसा क्यों कहा?" "मैं उदास हूं कि यीशु ने हमें विकृत कहा।" और "मैं आशान्वित महसूस करता हूं। यीशु ने लड़के को लाने के लिए कहा।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

लड़का यीशु से मिलने के लिए रास्ते पर है। दुष्टात्मा उसे जमीन पर फेंक देती है और लड़के को दौरा पड़ता है। यीशु दुष्टात्मा को जाने के लिए आदेश देते हैं और यीशु लड़के को चंगा करते हैं। यीशु उस लड़के को उसके पिता को वापस देते हैं। सभी चकित हो जाते हैं।

अभिनय को बंद करें। पिता का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मुझे खुशी है कि यीशु ने मेरे पुत्र की मदद की।" "यह इतनी प्रतीक्षायोग्य था।" और "यीशु ही वास्तव में उत्तर थे।"

पुत्र का पात्र अदा करने वाले कलाकारों से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "राहत महसूस कर रहा हूं।" मैं उस दुष्टात्मा से मुक्त हूं।" "अब मैं अपने परिवार के करीब हो सकता हूं।" और "मैं इतना

आभारी हूं कि यीशु ने मेरी मदद की।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

लोग जब अचम्भित होते हैं, यीशु अलग से अपने शिष्यों से कहते हैं कि उन्हें मनुष्यों के हाथों धोखा दिया जाएगा। शिष्य इसे समझ नहीं पाते। शिष्य यीशु से इस बारे में पूछने से डरते हैं।

अभिनय को बंद करें। यीशु की भूमिका निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "वे अभी भी मेरे ध्येय को समझ नहीं पाते। मैंने उन्हें यह बात एक से अधिक बार बताई है।" "वे पूछने से डरते क्यों हैं? मैं उनके सवालों का जवाब दूंगा।" और "आप कब तक मुझ पर भरोसा नहीं करेंगे?"

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 9:37–45

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु अपने तीनों शिष्यों के साथ पहाड़ से वापिस लौटते हैं। एक भीड़ वहां उनका इंतजार कर रही होती है। भीड़ में से एक व्यक्ति बाहर आकर उन्हें "**गुरु**" कह कर पुकारता है। गुरु शब्द यहूदी धार्मिक नेताओं के लिए एक सम्मानजनक उपाधि होती है। शिक्षक का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जैसा कि आपने पिछले अंशों में किया है। शिक्षक शब्द प्रधान शब्दावली में है।

वह व्यक्ति यीशु से दुष्टात्मा द्वारा नियंत्रित अपने पुत्र को चंगा करने के लिए कहता है। यहां **आत्मा** का संदर्भ किसी दुष्ट आत्मा या बुरी आत्मा से है। दुष्टात्माएं अशुद्ध आत्मिक प्राणी होती हैं जो शैतान की सेवा करती हैं। वे किसी व्यक्ति के कार्यों और विचारों को नियंत्रित कर सकती हैं। दुष्ट आत्मा या बुरी आत्मा का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया था। बुरी आत्मा या दुष्टात्मा शब्द को प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

वह व्यक्ति यीशु से कहता है कि उनके **शिष्य** या करीबी अनुयायी दुष्ट आत्मा को बाहर नहीं निकाल पाए। इसका मतलब यह है कि उन्होंने दुष्ट आत्मा को छोड़ने की आज्ञा दी थी और वे सफल नहीं हुए थे। शिष्य का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। शिष्य शब्द प्रधान शब्दावली में हैं।

उसके बाद यीशु उन सभी से बात करते हैं जो सुन रहे होते हैं, जिनमें उनके शिष्य और भीड़ शामिल होती हैं। वे उन्हें एक अविश्वासी और भ्रष्ट **पीढ़ी** कहते हैं। पीढ़ी का अर्थ उन लोगों से है जो समान समयकाल में रहते हैं। पीढ़ी शब्द प्रधान शब्दावली में है।

यीशु दुष्टात्मा को जाने का आदेश देते हैं और लड़के को स्वस्थ करते हैं। भीड़ अचम्भित होते हैं। यीशु स्वयं **को मनुष्य का पुत्र** कहते हैं और अपने शिष्यों से कहते हैं कि भविष्य में उन्हें उनके शत्रुओं के हाथों धोखे से पकड़वा दिया जाएगा। मनुष्य का पुत्र एक उपाधि है जिसे यीशु स्वयं को एक ऐसे जन के रूप में वर्णित करने के लिए उपयोग करते हैं जिन्हें परमेश्वर ने सारा सामर्थ्य और अधिकार प्रदान किया था। मनुष्य के पुत्र का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। मनुष्य का पुत्र शब्द प्रधान शब्दावली में है।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 9:37–45

Audio Content

webm zip (3155262 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (5429746 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 9:46–62

सुनना और मनन करना

लूका 9:46–62 सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे इस कथा को सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 9:46–62

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु द्वारा दुष्टात्मा ग्रस्त लड़के को चंगा करने के बाद शिष्य यह तर्क देते हैं कि उनमें सबसे महान कौन है, और यीशु उन्हें नम्रता के बारे में शिक्षा देते हैं। लूका हमें यह नहीं बताते कि यह बातचीत कहां होती है, हालांकि मरकुस ने इसे कफरनहूम में घटित हुआ होना बताया होता है। उसके बाद यीशु और उनके शिष्य गलील के क्षेत्र से यरूशलेम की यात्रा शुरू करते हैं। यीशु यह शिक्षा देते हैं कि उनके पीछे चलने की लागत क्या होती है।

शिष्य यह तर्क दे रहे होते हैं कि उनमें सबसे बड़ा कौन है, या उनमें से किसे सर्वोच्च दर्जा प्राप्त था, लेकिन यीशु ने उनके विचार जान लिए थे। एक बच्चा जो उनके पास ही था, यीशु उसे लाते हैं। छोटे बच्चे के लिए यूनानी शब्द का अर्थ एक बच्चे या बच्ची से होता है जो दस साल से कम उम्र का हो। यीशु यह बताते हैं कि जो कोई भी इस तरह एक बच्चे को ग्रहण करता है, या उसे स्वीकार करता है, वह यीशु का सम्मान करता है। रोम की दुनिया में बच्चों की सामाजिक स्थिति बहुत निम्न होती थी। आमतौर पर बच्चों को किसी मेहमान के पांव धोने जैसे आतिथ्य के कार्य करना होते थे। [यीशु बच्चे का उपयोग यह दिखाने के लिए करते हैं कि वे चाहते हैं कि उनके शिष्य ऐसे लोगों का सम्मान करें जिनकी कोई भी सामाजिक स्थिति न हो।]{.mark} यीशु कहते हैं कि उनका स्वागत करना या सम्मान करना ठीक वैसा ही है जैसा कि उन्हें भेजे जाने वाले, या परमेश्वर का स्वागत करना होता है। लोग किस प्रकार सोचते हैं बनाम परमेश्वर कैसे सोचते हैं, इसके तुलना के बारे में यीशु यह बात करते हैं। लोग यह सोच सकते हैं कि कोई सबसे कम महत्वपूर्ण है, लेकिन परमेश्वर के लिए वे सबसे महान हो सकते हैं।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में लोग किस तरह से एक उच्च सामाजिक स्थिति रखते हैं? किन लोगों की सामाजिक स्थिति निम्न होती है? उनके साथ व्यवहार में किस तरह के अंतर होते हैं?

याकूब के भाई और यीशु के एक शिष्य यूहन्ना यीशु को स्वामी कहकर उत्तर देते हैं। यह एक सम्मानजनक उपाधि थी जिसका उपयोग उच्च स्थिति के किसी व्यक्ति के लिए किया जाता था। यूहन्ना कहते हैं कि एक व्यक्ति है जो 12 शिष्यों में से नहीं था, लेकिन जो यीशु के नाम से लोगों में से बुरी आत्माओं को निकाल रहा था। [वे यीशु के सामर्थ्य और अधिकार का उपयोग करने की कोशिश कर रहे थे।]{.mark} शिष्यों ने उस व्यक्ति को दुष्टात्माओं को बाहर निकालने से रोकने की कोशिश की, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। शिष्यों ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उनके विचार से उस व्यक्ति की स्थिति उनके समतुल्य नहीं थी, जो उन्होंने स्वयं को यीशु के शिष्य के रूप में दी थी। यीशु कहते हैं कि ऐसा कोई व्यक्ति जो यीशु के नाम से अच्छी बातें कर रहा है, उसे रोकना नहीं चाहिए। यीशु कहते हैं कि जो भी शिष्यों का विरोध नहीं करता वह उनकी ओर था।

[कहानी की दिशा यहां से बदलती है। यीशु यहूदी धार्मिक राजधानी यरूशलेम की ओर यात्रा करना शुरू करते हैं। यीशु यरूशलेम जाने के लिए दृढ़ हैं, भले ही वे यह जानते थे कि वे वहां कष्ट झेलेंगे।]{.mark} [परमेश्वर ने पहले से ही उस सटीक समय की योजना बनाई थी जब वे यीशु को स्वर्ग में ले जाएंगे, जहां वे रहते हैं। समय निकट आ रहा है।]{.mark} [अगले अनुभाग में हम यीशु का अनुसरण करने की विभिन्न प्रतिक्रियाएं देखते हैं, कुछ सकारात्मक और कुछ नकारात्मक प्रतिक्रियाएं।]{.mark} लोगों को उनके आने के लिए तैयार करने के लिए यीशु कुछ लोगों को अपने आगे भेजते हैं। वे सामरियों के एक गांव में पहुंचते हैं।

रूकें और अपनी टीम को गलील, यहूदा, सामरिया और यरूशलेम के शहर समेत इस्राएल का एक नक्शा दिखाएं।

सामरिया गलील और यहूदा के बीच एक जिला था। सामरी लोग आंशिक रूप से यहूदी और आंशिक रूप से अन्यजाति या गैर-यहूदी थे। सामरी लोग परमेश्वर की उपासना यहूदियों से अलग तरह से करते थे। यरूशलेम में मन्दिर में पूजा करने के बजाय, वे गिरिज्जीम पर्वत के पास एक पहाड़ पर उपासना करते थे।

सामरी लोग नहीं चाहते थे कि यरूशलेम में उपासना करने के लिए यहूदी उनके गांव से होकर यात्रा करें, इसलिए वे यीशु को अस्वीकार करते हैं।

यीशु और उनके शिष्य सड़क पर चल रहे होते हैं। जब याकूब और यूहन्ना सामरियों की प्रतिक्रिया के बारे में सुनते हैं, तो वे यीशु से पूछते हैं कि क्या वे चाहते हैं कि वे सामरियों को नष्ट करने के लिए स्वर्ग में परमेश्वर से आग नीचे आने की आज्ञा दें। यीशु उनकी ओर मुड़ते हैं और उन्हें फटकारते हैं, या यह स्पष्ट करते हैं कि शिष्य जो करना चाहते थे, वह गलत था। इसके बजाय, वे अगले गांव की ओर यात्रा करते हैं।

हालांकि सामरियों ने उन्हें अस्वीकार कर दिया था, यीशु तीन ऐसे लोगों से मिलते हैं जो यरूशलेम की सड़क पर उनका अनुसरण करना चाहते हैं। यीशु पहले व्यक्ति को यह कहकर जवाब देते हैं कि उनका शिष्य होना कितना कठिन है। यीशु कहते हैं कि लोमड़ियों को सोने के खोह और पक्षियों के घोंसले होते हैं, लेकिन मनुष्य के पुत्र के पास सिर रखने के लिए भी कोई जगह नहीं है। लोमड़ियां जंगली जानवर होते हैं जो छोटे कुत्तों की तरह दिखती हैं। वे एक जगह से दूसरी जगह जाते हैं लेकिन जमीन या गुफाओं में प्राकृतिक आश्रयों में रहते हैं।

रुकें और अपनी टीम को लोमड़ी की तस्वीर दिखाएं।

लेकिन यीशु कहते हैं कि उन्हें, मनुष्य के पुत्र और उनके शिष्यों के पास घर कहने और नियमित रूप से सोने के लिए कोई जगह नहीं है। नासरत के लोगों, सामरियों और कई अन्य लोगों ने यीशु को पहले ही अस्वीकार कर दिया था।

अगले उदाहरण में, यीशु एक व्यक्ति को आने और शिष्य के रूप में उनसे सीखने के लिए कहते हैं। लेकिन वह व्यक्ति पुत्र के रूप में अपने कर्तव्य को पूरा करना और अपने पिता को पहले दफनाना चाहता था। हम नहीं जानते कि उसके पिता मर रहे थे, मर चुके थे या मरने जा रहे थे, हम केवल इतना ही जानते हैं कि उस व्यक्ति को लगा कि उनका कर्तव्य पूरा होने तक रहना उनकी जिम्मेदारी है।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में अंतिम संस्कार करने के लिए बच्चों की उनके माता पिता के प्रति क्या जिम्मेदारियां होती हैं? आपकी संस्कृति में अंतिम संस्कार किस तरह दिखते हैं?

यीशु कहते हैं कि मरे हुओं को अपने मुरदे गाड़ने दें। यहां उनका मतलब शाब्दिक रूप से नहीं है क्योंकि मरे हुए लोग वास्तव में मरे हुओं को दफना नहीं सकते हैं। यीशु कह रहे थे कि जो लोग आध्यात्मिक रूप से मरे हुए हैं, या परमेश्वर के साथ जिनके सच्चे संबंध नहीं थे, वे ऐसे लोगों को दफना सकते थे जो शारीरिक रूप से मरे हुए थे। यीशु उस व्यक्ति से कहते हैं कि सबसे महत्वपूर्ण काम जो वह कर सकता है, वह है जाकर लोगों को परमेश्वर का उन पर राजा के रूप में शासन करने के लिए आने का शुभ समाचार बताना।

तीसरा व्यक्ति भी यीशु का एक नियमित शिष्य बनना चाहता है। लेकिन शिष्य बनने से पहले वह व्यक्ति अपने परिवार को अलविदा कहना चाहता है। इसमें दावतों और मिलने-जुलने के कई दिन शामिल हो सकते थे। यीशु खेती में हल चलाने के एक उदाहरण के साथ जवाब देते हैं। हल, लकड़ी का एक धारदार उपकरण होता है जिसका उपयोग बीज लगाने के लिए मिट्टी को जोतने के लिए किया जाता है। इसे घोड़े या बैलों

द्वारा खींचा जाता था और किसान हल को सीधी रेखा में जाने के लिए दबा कर रखता था।

रुकें और अपनी टीम को एक हल का वीडियो और जमीन में जो पंक्तियां वह बनाता है, उसे दिखाएं। आपकी संस्कृति में लोग बीज के लिए जमीन कैसे तैयार करते हैं? क्या आपके संदर्भ में इसी प्रकार की खेती की तुलना हो सकती है?

जो व्यक्ति हल चलाते हुए पीछे देखेगा, वह जमीन पर टेढ़ी-मेढ़ी पंक्तियां बना देगा। उसी तरह एक व्यक्ति जो यह कहता है कि वह यीशु का अनुसरण करेगा, लेकिन उसके बाद अपने पूर्वकालिक जीवन जीने की ओर लौटना चाहता है, वह परमेश्वर के राज्य में उपयोगी काम नहीं कर सकता। [वह परमेश्वर की सेवा और आज्ञापालन अच्छे से नहीं कर सकता। वह लोगों को परमेश्वर के राज्य के बारे में सुसमाचार नहीं बता सकता।]{.mark}

कई विद्वान लूका के इस अनुभाग को यात्रा आख्यान कहते हैं क्योंकि लूका यरूशलेम की यात्रा करने के लिए यीशु के चुनाव पर ध्यान केंद्रित करते हैं। यीशु को पता था कि सभी लोगों के लिए परमेश्वर की उद्धार की योजना को पूरा करने और उसके कारण अस्वीकार किए जाने का वह समय था। [शमौन की भविष्यवाणी याद रखें कि यीशु लोगों के हृदय को प्रकट करेंगे? हम अब यह देखना शुरू करते हैं कि कुछ लोग यीशु को अस्वीकार कर देंगे। यीशु जब अपने शिष्यों को छोड़ कर जाएंगे, उस समय के लिए यीशु द्वारा उन्हें तैयार करने की कोशिश करते हुए भी हम उन्हें देखना शुरू करते हैं।]{.mark}

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 9:46–62

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य कल्पांकित करने में समूह की मदद करेंगे। आप कथा के दृश्यों, विन्यास और पात्रों को परिभाषित करने में समूह की मदद करेंगे।

इस कहानी के चार दृश्य हैं।

पहला दृश्य: शिष्य यह विवाद करते हैं कि उनमें सबसे बड़ा कौन है। यीशु एक बच्चे का उदाहरण दे कर नम्रता की शिक्षा देते हैं। यीशु उन्हें कहते हैं कि उनमें से सबसे छोटा है वही सबसे महान है।

दूसरा दृश्य: यूहन्ना उस व्यक्ति को रोकने की अनुमति मांगते हैं जो यीशु के नाम का उपयोग कर दुष्टात्माओं को निकाल रहा होता है। यीशु यूहन्ना से कहते हैं कि उसे रोका न जाए क्योंकि जो भी आपके खिलाफ नहीं है, वह आपके पक्ष में है।

तीसरा दृश्य: यीशु और उनके शिष्य यरूशलेम की सड़क पर हैं। सामरियों का एक गांव यीशु को अस्वीकार करता है और वह नहीं चाहता कि वे उनके शहर से होकर यात्रा करें। याकूब और यूहन्ना यीशु से पूछते हैं कि क्या उन्हें गांव को भस्म करने के लिए स्वर्ग से आग नीचे बुलानी चाहिए। यीशु याकूब और यूहन्ना को फटकारते हैं।

चौथा दृश्य: यीशु अपने संभावित अनुयायियों के साथ तीन वार्तालाप करते हैं। यीशु बताते हैं कि उनका शिष्य होना कठिन है।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- शिष्यगण
- बच्चा
- यूहन्ना
- वह व्यक्ति सफलतापूर्वक दुष्टात्माओं को निकालता है।
- संदेशवाहक
- सामरी लोग
- याकूब
- तीन व्यक्ति जो यीशु का अनुसरण करना चाहते हैं।

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल (ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप इधर उधर रख सकते हैं जैसे पत्थर, लकड़ियां, बच्चों के खिलौने) का इस्तेमाल करे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि लूका ने पहाड़ पर यीशु की महिमा के बारे में बताया और एक दुष्टात्माग्रस्त व्यक्ति को यीशु द्वारा चंगा किए जाने का वर्णन किया। दोनों मामलों में गवाह चकित थे। [इसके बाद, यीशु ने उनकी आने वाली मृत्यु और विश्वासघात की घोषणा की, लेकिन शिष्य समझ नहीं पाए। उन्होंने सोचा कि यीशु धोखा दिए जाने और मरने के लिए बहुत महान हैं।]{.mark}

शिष्य यह तर्क करने लगे कि उनमें से सबसे महान कौन है।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि उस समयकाल में कोई बच्चा सामाजिक स्थिति के पैमाने पर बहुत नीचे रहा होगा। जब यीशु बच्चे को अपनी ओर ले जाते हैं, तो वे बच्चे को सम्मान की स्थिति में रख रहे होते हैं।

यीशु यह जानते थे कि शिष्य क्या सोच रहे थे। यीशु एक बच्चे को उनकी ओर रखते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि समाज में लोग केवल किसी ऐसे व्यक्ति का ही स्वागत करते थे जो उसी स्थिति का या उससे अधिक का हो। सो यीशु उन्हें कह रहे हैं कि उन्हें यीशु

लूका *9:46–62*

का स्वागत करने के लिए नीचे दर्जे का या बच्चे के समान निम्न स्थिति का होना चाहिए। जो भी यीशु का स्वागत करता है, वह पिता परमेश्वर का स्वागत करता है।

उसके बाद यीशु ने कहा कि जो भी मेरी ओर से इस बच्चे का स्वागत करता है, वह मेरा स्वागत करता है, और जो भी मेरा स्वागत करता है, वह मेरे भेजे गए पिता का स्वागत करता है। जो भी आप में सबसे छोटा है, वह सबसे महान है।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि शिष्यों का एक समूह था जो हमेशा यीशु के साथ होता था। शिष्यों ने यह संभावना नहीं समझी कि परमेश्वर उनके स्वयं के समूह से बाहर काम कर रहे थे।

यूहन्ना ने यीशु से कहा कि कोई दुष्टात्माओं को निकालने के लिए यीशु के नाम का उपयोग कर रहा है और यीशु के शिष्यों ने उन्हें रुकने के लिए कहा था। यीशु ने यह कहते हुए जवाब दिया कि उसे रोका न जाए क्योंकि जो भी आपके खिलाफ नहीं है, वह आपके लिए है।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु ने पहले ही अपने शिष्यों को उनकी आने वाली मृत्यु और विश्वासघात के बारे में बताया था जिसका कि वे यरूशलेम में सामना करेंगे। यीशु यह जानते हैं कि परमेश्वर की योजना को पूरा करने का समय आ रहा है।

यीशु के स्वर्ग जाने का समय निकट है, इसलिए यीशु यरूशलेम जाने का चुनाव करते हैं। इसलिए यीशु ने सामरियों के एक गांव में उनके आगमन की तैयारी के लिए दूत भेजे थे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि सामरी यहूदी नहीं थे, वे आधे यहूदी और आधे अन्यजाति, या गैर-यहूदी थे। सामरी यहूदियों की तुलना में एक अलग तरीके से परमेश्वर की पूजा करते थे। यहूदी यरूशलेम के मन्दिर में परमेश्वर की उपासना करते थे और सामरी लोग पहाड़ पर। सामरी लोग आमतौर पर यरूशलेम में उपासना करने के लिए अपने गांव से जा रहे यहूदियों के प्रति आक्रोश रखते थे।

लेकिन सामरी लोगों ने यीशु को अस्वीकार कर दिया क्योंकि वे यरूशलेम जा रहे थे। याकूब और यूहन्ना ने यीशु से पूछा कि उन्हें भस्म करने के लिए क्या उन्हें स्वर्ग से आग नीचे बुलानी चाहिए। यीशु ने उन्हें फटकारा। उसके बाद वे अगले गांव की ओर बढ़ते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु यरूशलेम की ओर यात्रा कर रहे होते हैं और मार्ग पर कुछ लोग ऐसे हैं जो उनका अनुसरण करना चाहते हैं। पहला व्यक्ति जहां भी यीशु जाते, वहां जाने को उत्सुक होता है, लेकिन यीशु [उन्हें कहते हैं कि यीशु का अनुसरण करना कठिन होगा।]{.mark} अगले दो लोग किसी पारिवारिक कर्तव्य का निर्वाह करना चाहते हैं जिसकी वजह से यीशु का अनुसरण करने में उन्हें देरी होगी।

यीशु सड़क पर हैं और एक व्यक्ति उन्हें कहता है कि जहां भी आप जाएंगे मैं आपके पीछे रहूंगा। यीशु इस व्यक्ति को कहते हैं कि जानवरों के पास रहने के लिए स्थान हैं, लेकिन यीशु के पास विश्राम करने के लिए कोई स्थान नहीं है।

उसके बाद यीशु एक अन्य व्यक्ति को यह कहते हुए बुलाते हैं, मेरे पीछे चलो। वह व्यक्ति पहले अपने पिता को दफनाना चाहता है।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि ऐसे लोग जो उनके पीछे नहीं चलते हैं, उन्हें यीशु आध्यात्मिक रूप से मरे हुए कहते हैं।

यीशु यह कहकर उत्तर देते हैं, "मरे हुओं को अपने मुरदे दफनाने दें। तुम जाकर परमेश्वर के राज्य की घोषणा करो।"

उसके बाद एक अन्य व्यक्ति ने कहा, "मैं प्रभु के पीछे चलूंगा, लेकिन मुझे जाकर अपने परिवार को अलविदा कहने दो।"

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि अगर कोई व्यक्ति भूमि को हल से जोतते समय मुड़ कर देखता तो पौधों के लिए जो पंक्तियां वह बना रहा है वे सीधी नहीं होंगी।

यीशु जवाब देते हैं, "कोई भी जो हल पर हाथ रखता है और पीछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं।"

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 9:46–62

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी के चार दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- शिष्यगण
- बच्चा
- यूहन्ना
- वह व्यक्ति सफलतापूर्वक दुष्टात्माओं को निकालता है।
- संदेशवाहक
- सामरी लोग
- याकूब
- तीन व्यक्ति जो यीशु का अनुसरण करना चाहते हैं।

मण्डली से कहानी का दो बार अभिनय करवाएं। पहली बार टीम से बिना रूके कहानी का अभिनय करवाएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है तब उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, तब कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

यह सुनिश्चित करें कि जब यीशु बच्चे को अपने पास लेते हैं, तो टीम शिष्यों के आश्चर्यचकित होने का कार्य करे।

दूसरी बार जब मण्डली इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

शिष्यों द्वारा यह तर्क देने का काम करें, कि सबसे महान कौन है। उनके विचार जानकर यीशु एक छोटे बच्चे को अपने पास लेते हैं। यीशु उन्हें कहते हैं कि जो भी यीशु की ओर से उस बच्चे को ग्रहण करता है, वह यीशु को ग्रहण कर रहा है। वे यह भी कहते हैं कि जो भी यीशु को ग्रहण करता है, वह यीशु को भेजे गए पिता को ग्रहण करता है।

अभिनय को बंद करें। बच्चे का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "प्रसन्न। यीशु मुझमें रुचि रखते हैं।" "सम्मानित यीशु ने मुझे अपने पक्ष में रखा।" और "वे सभी मुझे इस तरह क्यों देख रहे हैं?" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यूहन्ना यीशु से कहते हैं कि उन्होंने किसी ऐसे व्यक्ति को देखा जो यीशु के नाम पर दुष्टात्माओं को निकाल रहा था। यूहन्ना ने कहा कि वे उन्हें रोकने की कोशिश कर रहे थे क्योंकि वह व्यक्ति शिष्यों की तरह उनका अनुयायी नहीं था। यीशु यह कहते हुए उत्तर देते हैं कि जो उनके खिलाफ नहीं है, वह उनके लिए है।

अभिनय को बंद करें। यूहन्ना का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे, "शर्मिंदगी, मुझे उसे रोकने की चाह नहीं करनी चाहिए थी।" "उलझन में हूं, क्या यीशु ने दूसरे लोगों को भी सामर्थ्य और अधिकार प्रदान किया था?" और "मैंने सोचा कि हम ही एकमात्र ऐसे थे जो यीशु का अनुसरण करते थे।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु के स्वर्ग जाने का दिन निकट था। यीशु यरूशलेम जाने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ थे। यीशु ने अपने आगे संदेशवाहक भेजे। ये संदेशवाहक यीशु के आगमन की तैयारी करने के सामरियों के एक गांव में पहुंचे।

अभिनय को बंद करें। संदेशवाहक का पात्र निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "सब कुछ तैयार होगा।" "हम तैयारी करने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करेंगे।" और "यीशु का उनके साथ होना वे पसंद करेंगे।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

सामरी गांव के लोगों ने यीशु को ग्रहण नहीं किया क्योंकि वे यरूशलेम जाने के लिए दृढ़ थे। याकूब और यूहन्ना ने यह देखा और यीशु से पूछा, "क्या हम उन्हें भस्म करने के लिए स्वर्ग से आग बुलाएं?" यीशु ने उन्हें फटकारा और वे अगले गांव में गए।

अभिनय को बंद करें। याकूब का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "गुस्सा हूं।" उनकी हिम्मत कैसे हुई यीशु को अस्वीकार करने की!" "भ्रमित हूं, क्या उन्होंने सुना नहीं कि यीशु क्या कर सकते हैं?" और "शर्मिंदा हूं।" मुझे यीशु की तरह सदय होना चाहिए था।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु और उनके शिष्य मार्ग पर थे। एक व्यक्ति यीशु से कहता है कि जहां भी आप जाएंगे मैं आपके पीछे रहूंगा। यीशु जवाब देते हैं कि पक्षियों और लोमड़ियों के पास विश्राम करने के लिए एक स्थान है, लेकिन यीशु के पास विश्राम करने के लिए कोई स्थान नहीं है।

यीशु एक व्यक्ति को उनके पीछे चलने के लिए कहते हैं। यह व्यक्ति कहता है, "हे प्रभु, पहले मुझे जाकर अपने पिता को दफनाने दें।" यीशु जवाब देते हैं "मरे हुओं को अपने मुरदे दफनाने दें, लेकिन तुम जाकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करो।"

अभिनय को बंद करें। पुरुष का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "व्याकुल हूं। लेकिन मुझे पहले अपने पिता का ध्यान रखना होगा!" "भ्रमित हूं, मरे हुओं को मुरदे दफनाने देने से यीशु का क्या मतलब है?" और "मुझे यीशु का अनुसरण करने से पहले उनकी शिक्षाओं को बेहतर समझने की जरूरत है।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

एक अन्य व्यक्ति यीशु से कहता है, "मैं आपके पीछे रहूंगा, लेकिन मुझे अपने परिवार को अलविदा कहने दें।" यीशु यह कहते हुए जवाब देते हैं कि "कोई भी जो हल पर हाथ रखता है और पीछे मुड़ कर देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के लिए योग्य नहीं है।"

अभिनय को बंद करें। शिष्यों का पात्र अदा करने वाले कलाकारों से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "यीशु बहुत सीधी बात कहते हैं। क्या वे और अधिक अनुयायी नहीं बनाना चाहते?" "परमेश्वर का राज्य पारिवारिक कर्तव्यों से अधिक महत्वपूर्ण है।" और "हमने सब कुछ पीछे छोड़ दिया है। मुझे लगता है कि हम परमेश्वर के राज्य के लिए योग्य हैं।"

यीशु की भूमिका निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "वे यह नहीं समझते कि मेरे पीछे चलना कितना कठिन है।" "मुझे जो करने की जानकारी है उसके बारे में मैं उदास महसूस करता हूं" और "मुझे पता है कि मैं ही एकमात्र ऐसा हूं जो अपने पिता की योजना को पूरा कर सकता हूं।"

लूका *9:46–62*

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 9:46–62

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु अपने **शिष्यों** या करीबी अनुयायियों के साथ हैं। शिष्यों का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पिछले अंशों में किया है। शिष्य शब्द प्रधान शब्दावली में हैं। शिष्य इस बात पर बहस करने लगे कि उनमें सबसे बड़ा कौन है। यीशु यह प्रदर्शित करते हैं कि परमेश्वर की दृष्टि में महान होने के लिए नम्रता एक तरीका है।

यूहन्ना प्रत्युत्तर **देते** हैं और यीशु को स्वामी कहते हैं। यह एक उपाधि थी जो उच्च पद के किसी व्यक्ति के लिए सम्मान दर्शाती थी। स्वामी का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। स्वामी शब्द प्रधान शब्दावली में है। यूहन्ना कहते हैं कि उन्होंने यीशु के नाम पर एक ऐसे व्यक्ति को रोकने की कोशिश की जो **दुष्टात्माओं या बुरी आत्माओं** को बाहर निकाल रहा था। निकालने का मतलब है जाने के लिए आदेश देना। दुष्टात्मा का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। दुष्टात्मा शब्द प्रधान शब्दावली में है। यीशु उन्हें कहते हैं कि जो भी उनके खिलाफ नहीं है, वह उनके लिए है।

यीशु के लिए **स्वर्ग** या वह स्थान जहां परमेश्वर रहते हैं, वहां लौट जाने का समय निकट आ रहा था। यह वाक्यांश यीशु के आरोहण को, या उस समय को संदर्भित करता है जब परमेश्वर यीशु को स्वर्ग वापस ले जाएंगे। स्वर्ग का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। स्वर्ग शब्द प्रधान शब्दावली में है। इसलिए यीशु **यरूशलेम** या यहूदी धार्मिक राजधानी की ओर अपनी यात्रा शुरू करने का फैसला करते हैं, जहां के विषय में उन्हें पता था कि वे वहां मरेंगे और पुन: जीवित हो जाएंगे। यरूशलेम प्रधान शब्दावली में हैं।

जब एक सामरी गांव यरूशलेम के मार्ग पर यीशु को अस्वीकार करता है, तो याकूब और यूहन्ना यीशु **को प्रभु** कहते हैं और यह पूछते हैं कि क्या वे सामरियों को जला कर मारने के लिए स्वर्ग में परमेश्वर से निवेदन करें। प्रभु एक सम्मानजनक उपाधि थी जिसे शिष्य यह दर्शाने के लिए उपयोग करते थे कि यीशु परमेश्वर थे और उनपर अधिकार रखते थे। प्रभु का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने उसे पिछले अंशों में किया है। प्रभु शब्द प्रधान शब्दावली में हैं। यीशु उन्हें फटकारते हैं या यह स्पष्ट करते हैं कि उन्होंने जो सुझाव दिया वह गलत था।

जब कोई व्यक्ति यीशु का अनुसरण करना और उनका शिष्य बनना चाहता है, तो यीशु यह बताते हैं कि उसकी लागत क्या होगी। यीशु स्वयं **को मनुष्य का पुत्र** कहते हैं, एक ऐसी उपाधि जिसे उन्होंने स्वयं के लिए उपयोग किया था जो यह दर्शाती है कि उनके पास सभी सामर्थ्य और अधिकार हैं। मनुष्य के पुत्र का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने उसे पिछले अंशों में किया है। मनुष्य का पुत्र शब्द प्रधान शब्दावली में है।

एक अन्य व्यक्ति यीशु का अनुसरण करना चाहता है, लेकिन कहता है कि उसे तब तक इंतज़ार करना होगा यीशु उन्हें कहते हैं, मरे हुओं को अपने मुरदों को दफनाने दें, लेकिन आप जाकर **परमेश्वर के राज्य की घोषणा करें**। यीशु उस व्यक्ति को कह रहे थे कि मसीह या प्रसिद्ध उद्धारकर्ता के रूप में यीशु में उनके विश्वास के माध्यम से परमेश्वर द्वारा लोगों के दिलों पर राज्य करने के बारे सार्वजनिक रूप से बताना उनके लिए बेहतर है। परमेश्वर के राज्य का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पिछले अंशों में किया है। परमेश्वर का राज्य प्रधान शब्दावली में है।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 9:46–62

Audio Content

webm zip (4182317 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (7148422 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 10:1–16

सुनना और मनन करना

लूका 10:1–16

लूका 10:1–16 सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे इस कथा को सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 10:1–16

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

इससे पहले यीशु ने अपने 12 शिष्यों को विशिष्ट निर्देश देकर विभिन्न नगरों में चंगा करने और परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने के लिए भेजा था। [उसके बाद यीशु ने अपने शिष्यों को शिक्षा दी कि उनका शिष्य होने का क्या मतलब होता है।]{.mark} अब, यीशु 72 शिष्यों के एक बड़े समूह को कई शहरों में यह पता लगाने के लिए भेजते हैं कि कौनसा नगर यीशु को ग्रहण करेगा। यीशु इन शिष्यों को यरूशलेम की ओर यात्रा करते हुए अपने मार्ग पर भेजते हैं।

[जिन शहरों की यात्रा करने की वे योजना बना रहे थे, वहां अपने आगे जाने के लिए यीशु अपने अन्य शिष्यों में से 72 शिष्यों को चुनते हैं। हालांकि हम जानते हैं कि यीशु शायद खुद उन 36 नगरों में नहीं जाएंगे, लेकिन यीशु यह देखना चाहते हैं कि कौन से नगर परमेश्वर के राज्य के उनके संदेश को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं।]{.mark} लूका यीशु के लिए प्रभु शीर्षक का उपयोग करते हैं। इसका मतलब है स्वामी या एक ऐसा व्यक्ति जिसके पास दूसरों पर अधिकार होता है। यीशु अपने शिष्यों को दो-दो के समूहों में बाहर भेजते हैं। दो शिष्यों का जोड़ा एक अलग ऐसे शहर में गया जहां यीशु ने जाने की योजना बनाई थी। जाने से पहले यीशु उन्हें विशिष्ट निर्देश देते हैं।

[यीशु परमेश्वर के राज्य की तुलना फसलों की कटाई के साथ करते हैं।]{.mark} यीशु कहते हैं कि एक बड़ी फसल काटे जाने या एकत्रित करने के लिए तैयार है, लेकिन खेत में फसल की कटाई करने के लिए महदूर कम हैं। फसल उन लोगों का प्रतिनिधित्व करती है जिन्हें यीशु का संदेश सुनने की आवश्यकता है। मज़दूर उन लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो यीशु का संदेश दूसरों को बताते हैं। [यीशु अपने शिष्यों को एक खेत में से फसल इकट्ठा करने वाले मजदूरों की तरह

होने के लिए भेज रहे थे। यीशु के शिष्य नए शिष्यों को इकट्ठा करेंगे।]{.mark}

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में एक खेत की कटाई कैसी लगती है? आमतौर पर एक बड़े खेत की फसल काटने के लिए कितने लोग लगते हैं? अगर फसल तेजी से इकट्ठी नहीं की गई हो तो क्या होगा?

यीशु उन्हें अधिक कामगारों को भेजने के लिए, फसल के प्रभु से विनती करने या प्रार्थना करने के लिए कहते हैं। फसल के प्रभु के दो अर्थ हैं। फसल का प्रभु वह स्वामी था जो फसल की कटाई के लिए श्रमिकों को लाने का जिम्मेदार था। लेकिन मालिक या स्वामी के लिए यूनानी शब्द वही शब्द था जो यहूदी परमेश्वर का उल्लेख करने के लिए इस्तेमाल करते थे। हालांकि लूका ने प्रभु की उपाधि का उपयोग पहले यीशु को संदर्भित करने के लिए किया था, इस उदाहरण में प्रभु का संदर्भ परमेश्वर से है। परमेश्वर की तुलना फसल के खेत के मालिक से की जाती है। खेत के मालिक से और अधिक मज़दूरों को फसल की कटाई के लिए भेजने की विनती करने के लिए यीशु अपने शिष्यों को कहते हैं। इसका मतलब है कि यीशु चाहते हैं कि शिष्य परमेश्वर से प्रार्थना करें और उन्हें अधिक लोगों को यीशु के बारे में बताने में मदद करने के लिए भेजने के लिए कहें।

यीशु शिष्यों को चेतावनी देते हैं कि वे भेड़ के मेमने या छोटी असहाय भेड़ों की तरह हैं। कुछ लोग भेड़िये, या जंगली कुत्तों की तरह होते हैं। वे शिष्यों का विरोध करेंगे और उन्हें उसी तरह नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे जिस तरह भेड़िया छोटे जानवरों को नुकसान पहुंचाने की कोशिश करता है।

रुकें और अपनी टीम की एक भेड़ और भेड़िये की तस्वीरें दिखाएं। अगर आपकी संस्कृति में ऐसे जानवर नहीं होते हैं, तो आप आप ऐसे किन पशुओं का उपयोग करेंगे जो एक असुरक्षित जानवर और एक खतरनाक शिकारी जानवर का वर्णन करते हों?

यीशु 72 शिष्यों को वही निर्देश देते हैं जो उन्होंने अपने 12 शिष्यों को बाहर भेजने से पहले दिया था। यीशु उन्हें उनकी यात्रा के लिए उनके साथ अतिरिक्त कुछ भी न ले जाने के लिए कहते हैं।

उसके बाद यीशु 72 शिष्यों को सड़क पर किसी को भी नमस्कार न करने के लिए कहते हैं क्योंकि अभिवादन में काफी समय लगता था। यीशु नहीं चाहते थे कि वे उन शहरों में पहुंचने में देरी करें जहां उन्होंने उन्हें भेजा था। जब शिष्य एक ऐसे घर पहुंचे जहां वे रहना चाहते थे, तो यीशु चाहते थे कि कुछ भी करने से पहले वे पहले घर को आशीर्वाद दें। "इस घर को शांति मिले" एक सामान्य यहूदी अभिवादन था जिसका निहितार्थ है कि वक्ता परमेश्वर से घर में लोगों को शांति देकर आशीष देने के लिए कह रहे हैं। यहूदी संस्कृति में शांति का मतलब युद्ध की अनुपस्थिति और सुरक्षा, स्वास्थ्य और समृद्धि की स्थिति दोनों ही हैं। परमेश्वर उन सभी लोगों के लिए उन सभी चीजों का स्रोत हैं जो उनके साथ संबंध में हैं।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। जब आप किसी के घर में प्रवेश करते हैं, तो आपकी संस्कृति में किस तरह का आशीर्वाद या अभिवादन कहा जाता है? [आपकी संस्कृति में किसी का घर में स्वागत करने के लिए लोग क्या करते हैं?]{.mark}

यीशु अपने शिष्यों को कहते हैं कि अगर घर का कर्ता [परमेश्वर के साथ शांति चाहने वाला व्यक्ति है, तो शिष्यों का आशीर्वाद उसे मिलेगा और वह शिष्यों को अपने घर में रहने की अनुमति देगा।]{.mark} अगर घर के कर्ता ने शिष्यों को स्वीकार नहीं किया तो उस घर के लोग परमेश्वर की शांति और आशीर्वाद नहीं प्राप्त करेंगे। जब शिष्यों को शांति वाला कोई व्यक्ति मिले तो यीशु चाहते थे कि उस शहर में रहने के पूरी अवधि में वे रात में उसके घर में सोएं। "एक मज़दूर को अपनी मजदूरी का हक होता है" शायद यीशु के समय में एक आम कहावत थी। यीशु इसका उपयोग यह संकेत देने के लिए करते हैं कि उनके शिष्यों को अपने मेहमान से भोजन और पेय पदार्थ नि:शुल्क प्राप्त करना उचित था क्योंकि वे शहर की सेवा कर रहे थे।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आप अपनी संस्कृति में शांति के किसी पुरुष या महिला की पहचान कैसे करेंगे? शांति के लोग आपकी संस्कृति में क्या करते हैं जिससे यह पता चलता है कि वे शांति से प्रेम करते हैं?

यीशु अपने शिष्यों को कहते हैं कि अगर कोई नगर उन्हें खुशी से ग्रहण करता है, तो लोग उन्हें जो भी दे उसे वे खा लें और उस शहर में बीमार लोगों को चंगा करें। यीशु चाहते थे कि उनके शिष्य शहर के लोगों को यह बता[एं कि परमेश्वर जल्द ही उनके दिलों में शासन करने के लिए आ रहे थे।]{.mark} [यीशु ने अपने शिक्षण और सामर्थ्य कर्म के माध्यम से परमेश्वर के सामर्थ्य को दिखाया। इससे यह पता चला कि परमेश्वर का राज्य आ चुका था!]{.mark} इसके विपरीत, ऐसे समय जब कोई नगर उन्हें अस्वीकार कर दे तो यीशु नगर के एक ऐसे सार्वजनिक हिस्से में जाने के लिए कहते हैं जहां कई लोग उन्हें सुन सकें। यीशु कहते हैं कि उन्हें उस शहर की धूल को अपने पैरों से झाड़ देना चाहिए। [यह प्रतीक एक चेतावनी था - अगर वे अपने तरीके नहीं बदलेंगे और परमेश्वर का अनुसरण नहीं करेंगे तो परमेश्वर नगर का न्याय करने के लिए नहीं आएंगे।]{.mark}

अब यीशु यह समझाने लगते हैं कि उस दिन उन नगरों का क्या होगा जो परमेश्वर द्वारा दुनिया का न्याय करने के लिए आने वाले दिन उन्हें अस्वीकार करते हैं। कई साल पहले, अब्राहम के समय सदोम नगर के गैर-यहूदी लोग बहुत पाप करते थे। लेकिन अगर नगरों के लोग अब यीशु को अस्वीकार करते हैं, तो सदोम की तुलना में उनका न्याय और भी कठोर रूप से किया जाएगा। सूर और सैदा जैसे अन्य गैर-यहूदी

नगरों ने भी बहुत पाप किए लेकिन यीशु कहते हैं खुराजीना और बैतसैदा के यहूदी नगरों को और कठोर रूप से सजा दी जाएगी! यीशु उदास हैं क्योंकि उन्होंने खुराजीना और बैतसैदा में सामर्थ्य कर्म किए और शिक्षण दिया और उन्होंने तब भी प्रायश्चित नहीं किया या अपने पापों से मन नहीं फिराया। लेकिन यदि यीशु ने सूर और सैदा में सामर्थ्य कर्म किए तो वे पश्चाताप करेंगे। वे टाट ओढ़कर और अपने सिरों पर राख मलकर यह दिखाते कि वे दुखी हैं, कि वे पाप करते हैं।

रुकें और एक टाट के कपड़े की एक तस्वीर दिखाएं। आपकी संस्कृति में लोग बाहर से किस तरह दुख और शोक को दिखाते हैं? वे क्या पहनते हैं?

यहां तक कि कफरनहूम शहर के लोग भी यह समझते हैं कि परमेश्वर स्वर्ग में उनका सम्मान करेंगे। लेकिन यीशु कहते हैं कि क्योंकि वहां के कई लोग उन पर विश्वास नहीं करते थे, इसलिए वे अधोलोक या नरक में नीचे फेंक दिए जाएंगे। इसका मतलब है कि परमेश्वर उन्हें दंडित करेंगे और अपमानित करेंगे।

[यीशु अपने शिक्षण का सारांश देते हैं। वे कहते हैं कि अगर कोई शिष्यों को स्वीकार करता है, तो यह उनके द्वारा यीशु को स्वीकार करने समान ही होगा। अगर वे यीशु को अस्वीकार करते हैं, तो यह ऐसी ही बात होगी मानो वे परमेश्वर को अस्वीकार करते हैं।]{.mark} जब यीशु इन निर्देशों को देना समाप्त करते हैं, तो 72 शिष्य उनकी बात मान कर अपनी यात्रा पर चले जाते हैं।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 10:1–16

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य बनाने में समूह की मदद करेंगे। आप कहानी के दृश्यों, विन्यास और पात्रों को परिभाषित करने में समूह की मदद करेंगे।

इस कहानी में पांच दृश्य हैं।

पहला दृश्य: यीशु और उनके शिष्य यरूशलेम के मार्ग पर हैं। यीशु अपने 72 शिष्यों को उन नगरों में आगे भेजने के लिए एकत्रित करते हैं जिनमें यीशु यात्रा करना चाहते थे। जाने से पहले यीशु उन्हें विशिष्ट निर्देश देते हैं।

दूसरा दृश्य: यीशु शिष्यों के ध्येय को फसल कटाई के एक उदाहरण का उपयोग करते हुए बताते हैं। यीशु अपने शिष्यों की तुलना भेड़ियों की उपस्थिति में जा रही भेड़ों के साथ करते हैं।

तीसरा दृश्य: यीशु शिष्यों को यह निर्देश देते हैं कि उन्हें क्या नहीं ले जाना चाहिए और जब वे किसी घर में स्वीकार किए जाएं तो उन्हें क्या करना चाहिए।

चौथा दृश्य: यीशु बताते हैं कि जब उन्हें अस्वीकार किया जाता है, तो उन्हें क्या करना चाहिए। यीशु उन्हें अस्वीकार करने वाले नगरों की तुलना यहूदी इतिहास के सुप्रसिद्ध शहरों के साथ करते हैं।

पांचवां दृश्य: यीशु अपने शिष्यों को कहते हैं कि ऐसे लोग जो उनकी बात सुनते हैं, वे यीशु को सुनते हैं, और वे लोग जो उन्हें अस्वीकार करते हैं, यीशु को और परमेश्वर को अस्वीकार करते हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- एक क्षेत्र में कार्यकर्ता
- खेत का मालिक
- मेमना
- भेड़िये
- 72 शिष्य
- शांतिपूर्ण घर में लोग
- अशांत घर में लोग
- स्वीकार करने वाले नगर में लोग
- अस्वीकार करने वाले नगर में लोग

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल (ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप इधर उधर रख सकते हैं जैसे पत्थर, लकड़ियां, बच्चों के खिलौने) का इस्तेमाल करे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि उनके शिष्य होने का क्या मतलब होता है, यीशु ने यह पहले ही समझाया होता है।

यीशु अपने 72 शिष्यों को इकट्ठा करते थे और उन्हें उन नगरों और स्थानों में आगे भेजते हैं जहां यीशु जाने वाले थे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु निर्देश देकर और कटाई के मौसम के एक उदाहरण का उपयोग करते हुए शुरू करते हैं, जहां फसल के प्रभु का संदर्भ परमेश्वर से है।

यीशु कहते हैं कि कटाई के लिए बहुत बड़ी फसल होती है, लेकिन ऐसा करने के लिए कुछ ही मज़दूर होते हैं। यीशु अपने शिष्यों को निर्देश देते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि मेमने छोटे जानवर होते हैं जिन पर मौका पाकर भेड़िये आक्रमण करते हैं। यीशु अपने शिष्यों की तुलना मेमने के साथ करते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि लोगों का अभिवादन न करने का कह कर यीशु उन्हें असभ्य नहीं कह रहे हैं। इसके बजाय, यीशु उन्हें कह रहे हैं कि अपने रास्ते पर लोगों का अभिवादन कर के उन्हें विलम्ब नहीं करना चाहिए। जो काम उन्होंने उन्हें दिया था वह अविलंब करना आवश्यक था।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु अब यह निर्देश देते हैं कि जब शिष्यों को स्वीकार किया जाए तब क्या करना चाहिए। यीशु खेतों में काम करने की तुलना का वापस हवाला देते हैं।

यीशु उन्हें कहते हैं कि जो भी उपलब्ध कराया जाए, उसे ही खाते-पीते हुए उसी घर में रहना चाहिए। यीशु कहते हैं कि मजदूर को अपनी मजदूरी का हक है।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु उस समय के लिए निर्देश देते हैं जब किसी गांव में शिष्य को अस्वीकार कर दिया जाएगा।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि पैरों से धूल को झाड़ना, यदि वे नहीं बदलते हैं तो उस शहर पर आने वाले परमेश्वर के न्याय का प्रतीक है।

यीशु उन्हें कहते हैं कि अगर कोई नगर आपको ग्रहण नहीं करता है, तो सड़कों पर जाकर कहो, "हमारे पैरों पर जो धूल है वह आपके सामने झाड़ रहे हैं। तब भी परमेश्वर का राज्य निकट है।"

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यहूदी सदोम की कथा को जानते थे। उनके इतिहास में सदोम एक ऐसा नगर था जो बहुत पाप करता था। ऐसा कहना यीशु के अपमान को सदोम के पाप से भी बदतर बना देता है।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि जब यीशु कहते हैं "उस दिन" तो वे ऐसे दिन की बात कर रहे होते हैं जब परमेश्वर सभी लोगों का न्याय करेंगे।

यीशु उन्हें कहते हैं कि उस दिन सदोम का पाप उस नगर की तुलना में, जिसने यीशु को अस्वीकार कर दिया है, उससे अधिक सहने योग्य होगा।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु ऐसे दो नगरों का उल्लेख करते हैं जहां कि यात्रा उन्होंने की थी। बैतसैदा के पास यीशु ने पांच हजार लोगों को भोजन कराया था। यीशु सूर और सैदा नामक दो गैर यहूदी नगरों का उल्लेख भी करते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु यह नहीं कह रहे हैं कि सूर और सैदा न्याय का सामना नहीं करेंगे, लेकिन बैतसैदा और खुराजीना को और अधिक दंड का अनुभव होगा क्योंकि उन्होंने यीशु और उनके शिष्यों को अस्वीकार कर दिया था।

लूका *10:1–16*

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि कफरनहूम ऐसा पहला नगर था जहां यीशु ने सामर्थ्य कर्म किए थे। नगर के कई लोग अभी भी यीशु को परमेश्वर के प्रतिज्ञा किए जाने वाले उद्धारकर्ता के रूप में नहीं मानते थे।

यीशु कहते हैं, "कफरनहूम, क्या तुम्हें स्वर्ग तक ऊंचा किया जाएगा? तुम्हें तो दंड के स्थान तक नीचे लाया जाएगा।"

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि जब वे बोलते हैं, तब यीशु अपने शिष्यों को अपना अधिकार दे रहे होते हैं। यह भी याद रखना महत्वपूर्ण है कि जिस ने यीशु को भेजा था, वह परमेश्वर है।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 10:1–16

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी में पांच दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- खेत में मज़दूर
- खेत का मालिक
- मेमना
- भेड़िये
- 72 शिष्य
- शांतिपूर्ण घर में लोग
- अशांत घर में लोग
- स्वीकार करने वाले नगर में लोग
- अस्वीकार करने वाले नगर में लोग

मण्डली से कहानी का दो बार अभिनय करवाएं। पहली बार टीम से बिना रूके कहानी का अभिनय करवाएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है तब उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

दूसरी बार जब मण्डली इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

टीम यीशु के निर्देश देने का अभिनय करना चाह सकती है। जब यीशु निर्देश देते हैं, तो टीम उस स्थिति का अभिनय कर सकती है जिसे यीशु पृष्ठभूमि में समझा रहे होते हैं।

यीशु द्वारा अपने शिष्यों को उस समय निर्देश देने का अभिनय करें जब टीम जो निर्देश वे देते हैं उसका अभिनय करती है।

खेत में एक कामगार द्वारा एक बड़ी उपज को देखने और खेत के मालिक से और अधिक मज़दूरों को भेजने के लिए कहें, क्योंकि वहां करने के लिए इतना काम होता है। अगर हो सके तो भेड़िये के बीच जाने वाली कुछ भेड़ों का अभिनय करें। शिष्यों द्वारा धन की थैलियां, यात्रा के झोले और अतिरिक्त पादुकाओं को पीछे छोड़कर जाने का अभिनय करें। जब शिष्य सड़क पर जाते हैं, तो वे लोगों का अभिवादन करने के लिए नहीं रूकते हैं।

अभिनय को बंद करें। खेत में कामगार का पात्र निभाने वाले व्यक्ति से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "खुश हैं, खेत विशाल है और फसल के लिए तैयार है।" "हतोत्साहित, हमारे पास खेत की फसल में मदद करने के लिए पर्याप्त कामगार नहीं हैं।" और "विश्वास करें कि खेत का मालिक और भी कामगारों को भेजेगा।"

ऐसा शिष्य जो सभी वस्तुओं को पीछे छोड़कर जाता है, उसका किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मुझे उम्मीद है कि मुझे इन वस्तुओं की जरूरत नहीं पड़ेगी।" "मुझे विश्वास है कि परमेश्वर प्रावधान करेंगे।" और "मैं यीशु की आज्ञा मानने के लिए उत्साहित हूं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

शिष्यों द्वारा एक घर में यह कहते हुए प्रवेश करने का अभिनय करें, तुम्हें शांति मिले। घर में रहने वाले लोग शांतिपूर्ण हैं, शांति उनके साथ रहती है। शिष्यों की एक अन्य जोड़ी ऐसे घर में जाने का अभिनय करें जहां घर में लोग शांतिपूर्ण नहीं हैं। उनका आशीर्वाद स्वीकार नहीं किया जाता है और घर शांतिपूर्ण नहीं होता है। शिष्यों द्वारा एक घर से दूसरे घर नहीं जाने का परंतु ऐसे व्यक्ति का आतिथ्य स्वीकार करने का अभिनय करें, जिसने सबसे पहले पेशकश की हो। जो कुछ भी प्रस्तुत किया गया हो उस भोजन को शिष्यों द्वारा अपने भुगतान के एक तरीके के रूप में स्वीकार करने का अभिनय करें।

अभिनय को बंद करें। अशांत घर में लोगों का किरदार निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "वे क्या चाहते हैं?" "मेरे पास आगंतुकों के लिए समय नहीं है।" और "क्या वे अन्य नगरों में समस्याएं पैदा करने वाले के अनुयायी नहीं हैं?"

शांतिपूर्ण घर में लोगों का किरदार निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मुझे यह सुनकर खुशी हो रही है कि यीशु के अनुयायियों का क्या कहना है।" "मैं उनके आशीर्वाद के लिए आभारी हूं।" और "अब मैं यह समझता हूं कि परमेश्वर ने यीशु को प्रसिद्ध उद्धारकर्ता के रूप में भेजा है।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

शिष्यों द्वारा एक नगर में प्रवेश करने का अभिनय करें। नगर के लोग उन्हें ग्रहण करते हैं। जो भी उनके सामने परोसा जाता है, उसे शिष्य खाते हैं। शिष्य बीमारों को चंगा करते हैं और लोगों को यह कहते हैं कि परमेश्वर का राज्य निकट है। अन्य शिष्यों द्वारा किसी ऐसे नगर में जाने का अभिनय करें जो उन्हें अस्वीकार करता है। वे सड़कों पर जाते हैं और कहते हैं, "हम अपने पैरों की धूल को यह दिखाने के लिए झाड़ रहे हैं कि हम आपको परमेश्वर के न्याय के लिए छोड़ते हैं, लेकिन आपको यह जानने की जरूरत है कि परमेश्वर का राज्य निकट है।"

अभिनय को बंद करें। स्वीकार करने वाले नगर में लोगों का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "यह एक बड़ी खबर है। मैं यीशु से मिलने को बेताब हूं।" "हम वर्षों से इसका इंतज़ार कर रहे हैं।" और "परमेश्वर ने हमारी प्रार्थना सुनी है, लोग चंगे हो रहे हैं।"

अस्वीकार करने वाले नगर में लोगों का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "इन लोगों को झूठ बोलने के लिए दंडित करने की जरूरत है।" "यह यीशु एक उपद्रवी के अलावा कुछ नहीं है।" और "जब तक कि धार्मिक नेता नहीं मानते मैं उस पर विश्वास नहीं करूंगा।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु द्वारा अपने शिष्यों को यह कहकर अपने निर्देश समाप्त करने का अभिनय करें, कि किस तरह न्याय के दिन, सदोम उस नगर से बेहतर होगा जो उन्हें अस्वीकार करता है। यीशु कहते हैं खुराजीना और बैतसैदा के लोग उदास होंगे। वे कहते हैं कि अन्यजाति या गैर यहूदी लोगों के नगरों में यदि यीशु के सामर्थ्य कर्म किए जाते तो उन नगरों के लोगों ने परमेश्वर की ओर मन फिरा लिया होता। सूर और सैदा जो अन्यजाति के नगर हैं, न्याय के दिन बेहतर होंगे। यीशु कहते हैं कि कफरनहूम के पास सम्मानित होने का कोई कारण नहीं है, लेकिन इसके स्थान पर वह मरे हुओं के स्थान पर जाएगा।

अभिनय को बंद करें। शिष्यों की भूमिका निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मैंने सोचा था कि परमेश्वर का राज्य सभी यहूदियों के लिए है।" "लेकिन सदोम एक बहुत ही पापपूर्ण नगर था। मुझे उम्मीद है कि नगर हमें अस्वीकार नहीं करेंगे।" और "मैं सूर और सैदा को परमेश्वर की ओर फिरने की कल्पना भी नहीं कर सकता। अन्यजाति हमारे लोगों से कम पापपूर्ण कैसे हो सकती है?"

यीशु का पात्र निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मुझे

दुख है कि उन्होंने परमेश्वर की सामर्थ्य देखी लेकिन अभी भी मुझ पर विश्वास नहीं करते।" "मुझे और क्या करना होगा कि वे मुझ पर विश्वास करें?" और "मुझे अपने पिता पर भरोसा करना होगा।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु द्वारा अपने शिष्यों को यह बताने का अभिनय करें, कि जो भी उनके संदेश को स्वीकार करता है, वह यीशु को स्वीकार कर रहा होता है। जो भी शिष्यों को अस्वीकार करता है, वह यीशु को अस्वीकार करता है, और जो कोई यीशु को अस्वीकार करता है, वह परमेश्वर को अस्वीकार करता है, क्योंकि परमेश्वर ही वे हैं जिन्होंने यीशु को भेजा था।

अभिनय को बंद करें। यीशु का पात्र निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मुझे पता है कि वे मेरी तरह ही उत्पीड़न का सामना करेंगे।" "अस्वीकार मुश्किल हो सकता है, लेकिन वे मेरे पिता से शांति प्राप्त करेंगे।" और "मैं उन कुछ लोगों के लिए आभारी हूं जो मेरा संदेश स्वीकार करेंगे।"

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 10:1–16

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

प्रभु या यीशु एक विशेष कार्य के लिए 72 **शिष्यों** या अनुयायियों को चुनते हैं। यीशु को संदर्भित करने के लिए लूका प्रभु उपाधि का इस्तेमाल करते हैं। प्रभु और शिष्यों का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने लूका के पिछले अंशों में किया है। दोनों शब्द प्रधान शब्दावली में हैं।

यीशु उन्हें अधिक कामगारों को भेजने के **लिए**, फसल के प्रभु से विनती करने या प्रार्थना करने के लिए कहते हैं। यहां विनती करने का अर्थ निवेदन या प्रार्थना करने से हो सकता है। एक ऐसे सामान्य शब्द का उपयोग करना सबसे अच्छा रहेगा जिसका अर्थ दोनों हो सकता है।

जिन नगरों में यीशु यात्रा करने की योजना बना रहे थे, वहां उनके आगे जाने से पहले यीशु 72 शिष्यों को विशेष निर्देश देते हैं। उन में से एक निर्देश था कि किसी घर में रहने के लिए प्रवेश करने से पहले शिष्य ऐसा कहें, "इस घर को **शांति मिले**"। किसी के घर में प्रवेश करते समय यह एक पारंपरिक यहूदी अभिवादन था। इसका तात्पर्य यह है कि वक्ता परमेश्वर से घर के अंदर रहने वाले लोगों को शांति प्रदान करने के लिए कह रहे हैं। शांति की यहूदी अवधारणा का अर्थ युद्ध की अनुपस्थिति और एक कल्याण, सुरक्षा, स्वास्थ्य और समृद्धि की स्थिति दोनों हैं। उन सभी लोगों के लिए जो उनके साथ सही संबंध में हैं, परमेश्वर उन सभी चीजों का स्रोत हैं। ऐसे शब्द का उपयोग करना सुनिश्चित करें जिसमें "शांति" शब्द के यथासंभव विभिन्न अर्थ शामिल हों। शांति शब्द प्रधान शब्दावली में है।

यीशु अपने शिष्यों को कहते हैं कि वे बीमारों को **चंगा** करें, और लोगों को यह बताएं, **कि परमेश्वर का राज्य** उनके पास आया है। यहां चंगा करने का अर्थ है शारीरिक रूप से बीमार लोगों को फिर से चंगा करना। परमेश्वर का राज्य यीशु में उनके विश्वास के माध्यम से अपने लोगों के दिलों में शासन करने वाले परमेश्वर को संदर्भित करता है। चंगा करना और परमेश्वर के राज्य का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। परमेश्वर का राज्य प्रधान शब्दावली में है।

उन नगरों के लिए जिन्होंने उन्हें अस्वीकार किया था, यीशु अपने दुख को व्यक्त करते हैं। भले ही उन्होंने यीशु के **चमत्कार** देखे हों, लेकिन वे अभी भी उन पर विश्वास नहीं करते थे। चमत्कार उन सामर्थ्यशाली कार्यों को कहते हैं जो केवल परमेश्वर ही कर सकते हैं। सामर्थ्य कर्म का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जैसा कि आपने पिछले अंशों में किया है। सामर्थ्य कर्म शब्द प्रधान शब्दावली में है। यीशु कहते हैं कि यदि गैर यहूदी नगरों ने वे चमत्कार देखे होते तो उन्होंने बहुत पहले **ही पश्चाताप किया** होता। पश्चाताप करने का अर्थ है पाप करना बंद करना और परमेश्वर की आज्ञा मानना। प्रायश्चित का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। प्रायश्चित शब्द प्रधान शब्दावली में है।

शोक प्रदर्शित करने के एक तरीके के लिए यीशु टाट शब्द का उल्लेख करते हैं। **टाट** का संदर्भ ऐसे कड़े कपड़े से है जिसे पहनना बहुत असहज था। यह आमतौर पर पशु के बालों से बनाया जाता था।

यदि आपने पहले से ऐसा नहीं किया है, तो टाट के कपड़े का एक चित्र दिखाएं।

यीशु कफरनहूम के बारे में बात करते हैं, वह स्थान जहां उन्होंने गलील में अपने सेवाकार्य का अधिकांश कार्य किया था। वे कहते हैं कि वे **ऐसा** सोचते थे कि वे स्वर्ग या उस स्थान पर जहां परमेश्वर रहते हैं, उठा लिए जाएंगे। इसके बजाय, यीशु कहते हैं कि उन्हें अधोलोक या नरक में उतारा जाएगा। **अधोलोक** का संदर्भ मरे हुओं के स्थान, दंड के स्थान या अधर्मी मृतकों के स्थान से हो सकता है। इस संदर्भ में यह स्वर्ग और सम्मान के विपरीत है और संभवत: इसका अर्थ नरक है, एक ऐसा स्थान जहां अविश्वासियों को मरने के बाद दंडित और अपमानित किया जाता है। स्वर्ग का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जैसा कि आपने पिछले अंशों में किया है। स्वर्ग और अधोलोक प्रधान शब्दावली में हैं।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 10:1–16

Audio Content

webm zip (4353970 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (7497900 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 10:17–24

सुनना और मनन करना

लूका 10:17–24

लूका 10:17–24 सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे इस कथा को सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 10:17–24

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु अपने शिष्यों के साथ यरूशलेम की सड़क पर यात्रा कर रहे होते हैं, जहां उन्हें पता है कि वे मर जाएंगे और वापस जीवित होंगे। यीशु ने अपने 72 शिष्यों या अनुयायियों को उन नगरों में जाने के लिए विशेष निर्देश के साथ भेजा जहां वे जाने वाले थे। यह कहानी तब शुरू होती है जब विभिन्न नगरों में जो हुआ उसे यीशु को बताने के लिए शिष्य हर्ष के साथ वापस लौटते हैं।

यीशु के आगे विभिन्न नगरों की यात्रा करने के बाद 72 शिष्य यीशु के पास वापिस लौटते हैं। उनकी यात्राओं में जो कुछ हुआ था उससे वे बहुत खुश थे। वे यीशु को कहते हैं कि वे जहां भी गए थे वहां वे दुष्टात्माओं या बुरी आत्माओं को निकाल सकते थे, क्योंकि उन्होंने यीशु के नाम का उपयोग किया था। इसका अर्थ है कि यीशु द्वारा अपने शिष्यों को दिए गए अधिकार को दुष्टात्माओं ने पहचाना था। जब शिष्यों ने दुष्टात्माओं को जाने के लिए बताने के लिए यीशु के नाम के सामर्थ्य का उपयोग किया, तो दुष्टात्माओं को आज्ञा पालन करना पड़ा।

यीशु शिष्यों को जवाब देते हैं और इसका निहितार्थ है कि उनके पास पहले से ही शैतान या सभी दुष्टात्माओं के नेता पर अधिकार है। [यीशु कहते हैं, "मैंने देखा कि शैतान स्वर्ग या आकाश से बिजली की तरह गिर रहा है।" यीशु कह रहे हैं कि जैसे शिष्य यीशु के नाम पर दुष्टात्माओं को निकालते हैं, उन सभी दुष्ट आत्माओं का नेता शैतान अपनी सामर्थ्य खो देता है। इस कहानी में शैतान अपने सामर्थ्य को जमीन पर मार करने वाली बिजली की गति से खो देता है।]{.mark}

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। दुष्ट आत्माओं के प्रधान को आपकी संस्कृति में कैसे देखा जाता है? इस नेता से अधिक सामर्थ्यवान कौन है? और/या उसे कैसे रोका जा सकता है?

यीशु अपने शिष्यों को कहते हैं कि यात्रा पर जाने से पहले उनका प्रतिनिधित्व करने और ऐसे काम करने के लिए जो वे स्वयं नहीं कर पा रहे थे, उन्होंने उन्हें अधिकार दिए थे। उन बातों में से एक थी जहरीले सांप और बिच्छू पर कदम रखना। शैतान को संदर्भित करने के लिए कई बार बाइबल में सांप का उपयोग किया जाता है। बिच्छु छोटे और कड़ी खाल वाले प्राणी होते हैं जो 20 सेंटीमीटर या 8 इंच लंबे नाप के हो सकते हैं। उनके आठ पैर और पूंछ पर एक डंक होता है जो गंभीर दर्द पैदा कर सकता है। यीशु इन जानवरों का उपयोग शिष्यों द्वारा दुष्टात्माओं को कुचलने या पराजित करने के लिए करते हैं। सांप और बिच्छू की तरह दुष्टात्माएं खतरनाक होती हैं और लोगों को हानि पहुंचाती हैं।

रुकें और अपनी टीम को बिच्छु और सांप की एक तस्वीर दिखाएं। अगर आपके क्षेत्र में बिच्छू नहीं होते तो आप "खतरनाक डंक वाले जीव" जैसे एक सामान्य वाक्यांश का उपयोग कर सकते हैं।

यीशु अपने शिष्यों को यह भी कहते हैं कि उन्होंने उन्हें ऐसा सामर्थ्य दिया जो शत्रु या शैतान के सामर्थ्य से अधिक था। शैतान को शत्रु कहा जाता है क्योंकि वह परमेश्वर, यीशु और उनके सभी अनुयायियों का विरोध करता है। क्योंकि यीशु ने उन्हें यह सामर्थ्य दिया था, इसलिए शत्रु शिष्यों को हानि नहीं पहुंचाएगा।

उसके बाद यीशु दो बातों की तुलना करते हैं जिसके विषय में उन्हें हर्षित या प्रसन्न होना चाहिए। जब यीशु शिष्यों को कहते हैं कि "आत्मा तुम्हारे वश में है, इस बात पर हर्षित नहीं होना चाहिए।" वे यह नहीं कह रहे होते हैं कि दुष्टात्माओं ने उनका आज्ञा पालन किया था, इस कारण शिष्यों को प्रसन्न नहीं होना चाहिए। इसके बजाय, यीशु कह रहे हैं कि उन्हें इस बात की अधिक प्रसन्नता होनी चाहिए कि उनके नाम स्वर्ग या उस स्थान में जहां परमेश्वर रहते हैं, लिखे गए थे। इस अभिव्यक्ति का अर्थ है कि शिष्यों के नाम परमेश्वर द्वारा दर्ज किए जाते हैं। [परमेश्वर ने उनके नाम स्वर्ग में लिखे हैं। इसका अर्थ है कि परमेश्वर ने ऐसे सभी लोगों के नाम कहीं लिखे हैं जो उनके साथ सदा के लिए रहेंगे।]{.mark}

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में अधिकारी या नेता किसी समुदाय में रहने वाले लोगों का लेखा-जोखा कैसे रखते हैं?

उसी दौरान जब यीशु अपने शिष्यों से बात कर रहे होते हैं, तब परमेश्वर की आत्मा यीशु को हर्षपूर्ण होने या बहुत प्रसन्न होने का कारण बनती है।

यीशु परमेश्वर से बात करते हैं और उन्हें पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु और हर वस्तु के राजा कह कर संबोधित करते हैं। परमेश्वर के राज्य के बारे में लोगों को, जो नम्र और साधारण लोग होते हैं, जो एक प्रकार से छोटे बच्चे होते हैं, उन्हें सच्चाई दिखाने के लिए यीशु प्रसन्न होते और परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं। ये नम्र और साधारण लोग 72 शिष्य हैं जो बाहर गए थे। वे यीशु के शिक्षण को सुनने के लिए तैयार थे, इसलिए परमेश्वर ने उन्हें ज्ञान दिया। लेकिन परमेश्वर ने अपने राज्य के बारे में उन्हें ज्ञान नहीं दिया, जो सोचते थे कि वे बुद्धिमान हैं।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में बच्चे किस तरह देखे जाते हैं? उनकी सामाजिक स्थिति किस तरह की होती है? आपकी संस्कृति में एक बच्चे के साथ तुलना करने का अर्थ क्या होता है?

उसके बाद यीशु अपने शिष्यों और वहां के अन्य लोगों को संबोधित करते हैं। यीशु कहते हैं कि परमेश्वर ने उन्हें वह सारा ज्ञान, सामर्थ्य, और ऐसा अधिकार दिया जो स्वयं परमेश्वर के पास है। इसने यीशु को यह ज्ञान और अधिकार उनकी इच्छानुसार किसी भी व्यक्ति को प्रकट करने या साझा करने की गुंजाइश दी। यीशु कहते हैं कि उनके पिता को छोड़कर

कोई भी परमेश्वर के साथ उनके संबंध पूरी तरह समझ नहीं पाता है। और केवल यीशु जो पुत्र है, वह वास्तव में जानता है, कि उनके पिता कौन है। तब भी, पुत्र के रूप में यीशु परमेश्वर को किसी भी ऐसे व्यक्ति को प्रकट या ज्ञात करा सकते हैं जिसका चुनाव वे करते हैं।

एक बार फिर यीशु अपने दर्शकों को बदल देते हैं और केवल शिष्यों से बात करते हैं। इसका अर्थ यह हो सकता है कि उन्होंने भीड़ से मुड़कर मद्धम स्वर में बात की। यीशु उन्हें कहते हैं कि वे आशीषित हैं, या कि उन्हें परमेश्वर से बड़ा सम्मान प्राप्त हुआ है। वे धन्य हैं क्योंकि वे पूरे समय यीशु के साथ यात्रा कर रहे थे, और उन्होंने सभी सामर्थ्य कर्म देखे होते हैं। अतीत के महत्वपूर्ण नेता, जैसे राजा या भविष्यद्वक्ता या परमेश्वर के दूतों के पास भी यीशु को देखने का अवसर नहीं था। ये नेता यीशु को देखना और उनकी शिक्षाओं को सुनना चाहते थे, क्योंकि वे मसीहा या परमेश्वर के प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता थे। लेकिन यीशु के जन्म से बहुत समय पहले ही वे मर गए थे।

इस मार्ग से शिष्यों के बड़े समूह को यीशु के ध्येय का एक हिस्सा बनने को दर्शाया गया है। वे उनके अधिकार के साथ और उनके प्रतिनिधियों के रूप में कार्य करते हैं। वे सभी को परमेश्वर के राज्य के बारे में बताने के महत्व को समझते हैं, भले ही फिर यीशु के संदेश को स्वीकार किया जाए या अस्वीकार किया जाए।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 10:17–24

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य बनाने में समूह की मदद करेंगे। आप कथा के दृश्यों, विन्यास और पात्रों को परिभाषित करने में समूह की मदद करेंगे।

इस कहानी के चार दृश्य हैं।

पहला दृश्य: 72 शिष्यों ने यीशु की आज्ञा का पालन किया और वापिस आ गए। शिष्य हैरान होते हैं क्योंकि दुष्टात्माओं ने यीशु के नाम के अधिकार को पहचाना। यीशु उन्हें कहते हैं कि यीशु ने शैतान को गिरते हुए देखा था। यीशु उन्हें उस अधिकार के बारे में बताते हैं, जो यीशु ने उन्हें दिया था। यीशु उन्हें कहते हैं कि उन्हें चोट नहीं पहुंचेगी। यीशु उन्हें कहते हैं कि शिष्यों को इस तथ्य में हर्ष नहीं होना चाहिए कि दुष्टात्माओं ने उनकी आज्ञा का पालन किया, लेकिन इस में कि परमेश्वर ने उनके नाम दर्ज किए हैं।

दूसरा दृश्य: यीशु इन बातों को बुद्धिमान और चालाक लोगों से छिपाने और उन्हें बच्चों के समान लोगों पर प्रकट करने के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं।

तीसरा दृश्य: यीशु भीड़ को कहते हैं कि कोई भी पुत्र को नहीं जानता बल्कि पिता, और कोई भी पिता को नहीं जानता बल्कि पुत्र जानता है और जिसे पुत्र पिता को दिखाने के लिए चुनता है।

चौथा दृश्य: जब वे अकेले होते हैं तब यीशु उनके शिष्यों की ओर मुड़ते हैं और उन्हें कहते हैं कि वे धन्य हैं क्योंकि उन्होंने वह देखा जो राजा और भविष्यद्वक्ता देखना चाहते थे, लेकिन जो वे कर नहीं पाए।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- शिष्य
- पवित्र आत्मा
- दुष्ट आत्माएं
- बिच्छू और सांप द्वारा प्रतिनिधित्व की गईं दुष्ट आत्माएं
- भीड़

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल (ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप इधर उधर रख सकते हैं जैसे पत्थर, लकड़ियां, बच्चों के खिलौने) का इस्तेमाल करे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि शिष्यों को भेजा गया था और जो आज्ञा यीशु ने उन्हें दी थी वही उन्होंने किया। शिष्यों द्वारा यीशु के नाम पर दुष्टात्माओं को लोगों से बाहर निकलने के आदेश देने का अभिनय टीम कर सकती है। बिना हानि या चोट के दुष्टात्माओं, जो सांपों और बिच्छुओं द्वारा प्रतिनिधित्व होती हैं, के मध्य शिष्यों के चलने का टीम अभिनय कर सकती है।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि जब शिष्य कहते हैं कि उन्होंने यीशु के नाम का उपयोग किया, तो शिष्यों ने यीशु के अधिकार पर बल दिया।

बहत्तर लोग हर्ष के साथ वापस आए और कहा कि दुष्टात्माओं ने यीशु के नाम पर आज्ञा मानी।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि सांप और बिच्छू बुराई, शैतान और दुष्टात्माओं का प्रतीक हैं। यीशु का अर्थ यह नहीं है कि उनके पास शैतान और दुष्टात्माओं को नष्ट करने की सामर्थ्य है, लेकिन यह कि वे बिना चोट खाए उन पर काबू पा लेंगे।

लूका *10:17–24*

यीशु उन्हें कहते हैं कि उन्होंने शैतान को अचानक बिजली की तरह गिरते हुए देखा। यीशु उन्हें कहते हैं कि उन्होंने उन्हें शत्रु के सारे सामर्थ्य पर अधिकार दिया था, और यह भी कि जब वे सांपों और बिच्छुओं के बीच चलते हैं, तब वे उन्हें कुचल देंगे। यीशु उन्हें यह भी कहते हैं कि कुछ भी उन्हें चोट नहीं पहुंचाएगा।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि जब यीशु कहते हैं कि उनके नाम स्वर्ग में लिखे गए हैं, तो इसका अर्थ है कि परमेश्वर के पास उनके नामों का लेखा जोखा है।

यीशु उन्हें यह भी कहते हैं कि उन्हें इस बात से आनन्दित नहीं होना चाहिए कि दुष्ट आत्माएं उनकी आज्ञा मानती हैं, लेकिन इस बात से कि उनके नाम स्वर्ग में लिखे गए हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि जब यीशु आनन्दित होते हैं, तो पहला भाग यीशु द्वारा अपने पिता से स्वर्ग में बात करने का होता है। उसके बाद यीशु अपने दर्शकों को समझाते हैं कि यीशु इस बात का चुनाव करते हैं कि वे पिता को किस पर प्रकट करेंगे। परमेश्वर की आत्मा यीशु को हर्ष प्रदान करती है और वे अपने पिता से प्रार्थना करते हैं। यीशु उनके ज्ञान को, उन लोगों से छिपाने के लिए जो सोचते हैं कि वे समझदार हैं, और उन पर प्रकट करने के लिए जो बच्चों की तरह हैं, परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं। यीशु अपने दर्शकों को यह समझाते हैं कि केवल वे ही जानते हैं कि वास्तव में परमेश्वर कौन है, और केवल परमेश्वर ही यीशु को अपने पुत्र के रूप में पूरी तरह से समझते हैं। यीशु इसका चुनाव करते हैं कि वे परमेश्वर को किस पर प्रकट करेंगे।

जब यीशु अपने शिष्यों के साथ अकेले थे, तो यीशु उन्हें कहते हैं कि शिष्य धन्य हैं, क्योंकि उन्होंने वह देखा जो भविष्यद्वक्ता और राजा देखना चाहते थे, लेकिन देख न पाए।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 10:17–24

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी के चार दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- शिष्य
- पवित्र आत्मा
- दुष्ट आत्माएं
- बिच्छू और सांप द्वारा प्रतिनिधित्व की गईं दुष्ट आत्माएं
- भीड़

मण्डली से कहानी का दो बार अभिनय करवाएं। पहली बार टीम से बिना रूके कहानी का अभिनय करवाएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है तब उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, तब कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

यह सुनिश्चित करें कि टीम यीशु के नाम का उपयोग करके दुष्टात्माओं को बाहर निकालने का अभिनय करे।

यह सुनिश्चित करें कि टीम सांप और बिच्छू के बीच शिष्यों के चलने का अभिनय करे। सांप और बिच्छू का प्रतिनिधित्व अदाकारों द्वारा ऐसी दुष्टात्माओं का अभिनय करने के लिए किया जा सकता था जो शिष्यों पर हमला करने की कोशिश कर रही थीं, लेकिन उन्हें चोट पहुंचाने में असमर्थ थीं।

यह सुनिश्चित करें कि टीम यीशु को पिता से प्रार्थना करने के लिए पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित किए जाने का अभिनय करे। टीम यह निर्णय कर सकती है कि इस स्थिति को किस तरह प्रस्तुत किया जाए। अगर यह संभव हो तो यीशु द्वारा प्रार्थना करते समय एक व्यक्ति पवित्र आत्मा द्वारा उनके कान में फुसफुसाने का अभिनय भी कर सकता है।

दूसरी बार जब मण्डली इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

शिष्यों द्वारा यीशु के आदेशों का पालन करने और उसके बाद हर्ष के साथ वापस आने का अभिनय करें। वे उन्हें बताते हैं कि जब उन्होंने यीशु के नाम का उपयोग किया तो दुष्टात्माओं ने उनकी आज्ञा कैसे मानी।

अभिनय को बंद करें। यीशु का पात्र निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मैं इस बात पर प्रोत्साहित हूं कि उनके पास विश्वास था।" "वे इतने खुश हैं, मुझे उम्मीद है कि जो आने वाला है उसके लिए उन्हें तैयार होने में इससे मदद मिलेगी।" "मुझे उम्मीद है कि वे यह नहीं भूलेंगे कि उन्हें शत्रु द्वारा नुकसान नहीं पहुंचाया गया था।"

शिष्यों की भूमिका निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे

"हमारे पास जो सामर्थ्य थी, उस पर मैं हैरान हूं।" "मैं प्रसन्न हूं कि अपने महत्वपूर्ण ध्येय में मदद करने के लिए यीशु ने मेरा चुनाव किया।" "मैं इस बात से उत्साहित हूं कि लोग यह देखना शुरू कर रहे हैं कि यीशु कौन हैं।"

अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु द्वारा उन्हें उस अधिकार के बारे में बताने का अभिनय करें, कि किस तरह उनके पास शत्रु की सारी सामर्थ्य है, और किस तरह वे बिच्छू और सांप द्वारा घायल नहीं होंगे।

अभिनय को बंद करें। दुष्टात्मा का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "वे इतने सामर्थ्यशाली कैसे हैं?" "मैं उनके आदेशों का विरोध नहीं कर सकता।" और "मुझे इस बात से नाराज़गी है कि मुझे जाना होगा।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु द्वारा अपने शिष्यों को यह बताने का अभिनय करें कि उन्हें इस कारण हर्षित नहीं होना चाहिए कि दुष्ट आत्माएं उनकी आज्ञा पालन कर रही थीं, लेकिन इसलिए क्योंकि उनके नाम स्वर्ग में लिखे हैं।

अभिनय को बंद करें। शिष्यों का किरदार निभा रहे अभिनेताओं से पूछें, आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "यीशु सही हैं। परमेश्वर के साथ हमेशा के लिए रहने से बेहतर कुछ नहीं है।" "मैं स्वर्ग पहुंचने के लिए बेताब हूं।" और "मुझे खुशी है कि यीशु हमेशा जो सबसे महत्वपूर्ण है, उसकी याद दिलाते हैं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

पवित्र आत्मा के हर्ष से प्रेरित होने के बाद यीशु द्वारा प्रार्थना करने का अभिनय करें। यीशु परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं क्योंकि परमेश्वर इन बातों को उन लोगों से छिपा देते हैं जो खुद को बुद्धिमान और चतुर मानते हैं। परमेश्वर ने इन बातों को उन पर खुलासा करने के लिए चुना है जो बच्चों की तरह हैं।

अभिनय को बंद करें। पवित्र आत्मा का किरदार निभाने वाले कलाकार से पूछें, "आपकी अनुभूतियां क्या हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मैं इस बात से बहुत खुश हूं कि यीशु परमेश्वर की योजना के लिए शिष्यों को तैयार कर रहे हैं।" "मैं पिता परमेश्वर और यीशु के साथ संबंधित होने पर प्रसन्न हूं।" और "यीशु द्वारा स्वयं को विनम्र करने और दूसरों को परमेश्वर के बारे में सिखाने पर मुझे गर्व है।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु द्वारा अपने आसपास के लोगों को यह बताने का अभिनय करें, कि उनके पिता ने उन्हें सभी ज्ञान और अधिकार दिए हैं। यीशु उन्हें कहते हैं कि कोई भी पुत्र को नहीं जानता लेकिन पिता। उनका कहना है कि कोई भी पिता को नहीं जानता लेकिन पुत्र और ऐसे लोग भी जिन्हें पुत्र पिता को प्रकट करने के लिए चुनता है।

अभिनय को बंद करें। श्रोताओं का किरदार निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मैं भ्रमित हूं।" "मैं चाहता हूं कि यीशु मुझे पिता को दिखाएं।" और "यीशु हमेशा पहेलियों में ही क्यों बोलते हैं?" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु द्वारा अपने शिष्यों के साथ अकेले होने का और उन्हें यह बताने का अभिनय करें, कि वे धन्य हैं, क्योंकि उन्होंने जो देखा और सुना था वह ऐसा था जो राजा और भविष्यद्वक्ता देखना और सुनना चाहते थे, लेकिन वे ऐसा नहीं कर पाए।

अभिनय को बंद करें। शिष्यों का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "सम्मानित हैं।" "मैं विश्वास नहीं कर सकता कि यीशु ने मुझे चुना है।" और "यह सच है! शास्त्रों ने हमेशा प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता के बारे में बात की है।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 10:17–24

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु द्वारा बाहर भेजे जाने के बाद 72 **शिष्य** या यीशु के अनुयायी हर्ष के साथ वापस लौटते हैं। शिष्यों का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जैसा कि आपने पिछले अंशों में किया है। शिष्य शब्द प्रधान शब्दावली में हैं। शिष्य उत्साहित हैं और यीशु को **प्रभु** कहते हैं। इस सम्मानित उपाधि का अर्थ स्वामी या जिसके पास अधिकार हों, के समान ही है। यह वही शब्द है जिसका उपयोग यहूदी परमेश्वर को संबोधित करने के लिए करते हैं। प्रभु का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। प्रभु शब्द प्रधान शब्दावली में हैं।

शिष्य इसलिए उत्साहित हैं क्योंकि जब उन्होंने यीशु के सामर्थ्**यशाली** नाम का उपयोग किया तब दुष्टात्माएं या बुरी आत्माएं उनके वश में आ गईं। दुष्टात्मा का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। दुष्टात्मा शब्द प्रधान शब्दावली में है।

यीशु यह कहते हुए जवाब देते हैं कि उन्होंने **शैतान** को **स्वर्ग** से बिजली की तरह गिरते हुए देखा था। शैतान सभी दुष्ट आत्माओं का प्रधान होता है और स्वर्ग वह स्थान है जहां परमेश्वर रहते हैं। इस संदर्भ में स्वर्ग वह आकाश है जहां से बिजली गिरती है। शैतान और स्वर्ग का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जैसा कि आपने पिछले अंशों में किया है। दोनों शब्द प्रधान शब्दावली में हैं। यीशु कह रहे हैं कि उन्होंने शैतान को जल्दी पराजित होते हुए देखा था।

लूका *10:17–24*

यीशु कहते हैं कि उन्होंने विभिन्न नगरों में जाने के पहले शिष्यों को **अधिकार** या कार्य करने का इख़्तियार दिया। अधिकार का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। अधिकार शब्द प्रधान शब्दावली में है। यीशु कहते हैं कि शिष्यों के नाम **स्वर्ग** में लिखे गए हैं। यहां वे उस स्थान का उल्लेख कर रहे हैं जहां परमेश्वर रहते हैं। स्वर्ग का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। स्वर्ग शब्द प्रधान शब्दावली में है।

लूका कहते हैं कि यीशु **पवित्र आत्मा** के हर्ष से भरे थे। पवित्र आत्मा परमेश्वर की आत्मा को संदर्भित करता है। परमेश्वर की आत्मा लोगों को विशेष ज्ञान, सामर्थ्य और असाधारण कार्य करने के अधिकार दे सकती है। पवित्र आत्मा का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले किया है। पवित्र आत्मा प्रधान शब्दावली में है।

यीशु अपने शिष्यों को **धन्य** कहते हैं क्योंकि उन्होंने उन्हें सामर्थ्य कर्म करते देखा और उनकी शिक्षाएं सुनी थीं। धन्य का अर्थ है कि परमेश्वर ने उनके प्रति अपने समर्थन को दिखाया। धन्य का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। धन्य शब्द प्रधान शब्दावली में है। यीशु कहते हैं कि कई **भविष्यद्वक्ता** या परमेश्वर के दूत और राजा, जो देखा और सुना गया है उसे देखना और सुनना चाहते थे। भविष्यद्वक्ता का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने लूका के पिछले अंशों में किया है। भविष्यद्वक्ता शब्द प्रधान शब्दावली में हैं।

जब यीशु परमेश्वर के बारे में अपने पिता के रूप में बात करते हैं, तो वे खुद को पुत्र कहते हैं। यह **परमेश्वर के पुत्र** को संदर्भित करता है। इस शीर्षक से यह पता चलता है कि यीशु के पास परमेश्वर के समान ही स्वभाव और चरित्र है। परमेश्वर के पुत्र को उसी तरह अनुवादित करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। परमेश्वर का पुत्र प्रधान शब्दावली में है।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 10:17–24

Audio Content

webm zip (3682934 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (6287062 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका *10:25–37*

लूका 10:25–37

सुनना और मनन करना

लूका 10:25–37

लूका 10:25–37 को सुनें और उसे अपने हृदय में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें परमेश्वर या यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे इस कथा को सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 10:25–37

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

[पिछले अंश में 72 शिष्य अपने मिशन से लौटे और जो कुछ हुआ उसकी सूचना उन्होंने यीशु को दी। यीशु और उनके शिष्य यरूशलेम की ओर यात्रा करते रहते हैं।]{.mark} रास्ते में यीशु कुछ लोगों को पढ़ाने के लिए ठहरते हैं और यहूदी धार्मिक कानून में एक विशेषज्ञ के साथ चर्चा करते हैं। यीशु व्यक्ति के प्रश्न का जवाब देने के लिए एक दृष्टांत या विशेष कहानी का उपयोग करते हैं।

लूका "एक बार" या कुछ अनुवाद में "और देखो" के साथ शुरू करते हैं। ये वाक्यांश एक नई घटना का परिचय देते हैं जिस पर लूका जोर देना चाहते हैं और यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि उनके श्रोता ध्यान दे रहे हैं। लूका कानून के विशेषज्ञ को कहानी में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति के रूप में पेश कर रहे हैं। कानून का विशेषज्ञ कोई ऐसा व्यक्ति था जिसने परमेश्वर के कानून का अध्ययन किया, वर्णन किया, और लोगों को परमेश्वर का कानून पढ़ाया। परमेश्वर का कानून पुराने नियम की पहली पांच पुस्तकों को संदर्भित करता है जिसमें परमेश्वर ने मूसा को कानून के बारे में बताया था। कानून का यह विशेषज्ञ लोगों के उसी समूह का था जिसे लूका "कानून का शिक्षक" कहते हैं।

यीशु लोगों के समूह को शिक्षा दे रहे होते हैं जब यह शिक्षक खड़ा हुआ। आमतौर पर छात्र शिक्षक को सुनते समय बैठते थे। जब कोई प्रश्न पूछना चाहता था, तो वे खड़े होते थे।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में एक सम्मानित शिक्षक और उनके श्रोताओं के लिए सामाजिक मानदंड क्या होते हैं? शिक्षक जो कह रहे होते हैं उस पर कोई प्रश्न करने का या चुनौती देने का उचित तरीका क्या होता है?

विशेषज्ञ परमेश्वर के कानून को पढ़ाने और समझाने की यीशु की क्षमता का परीक्षण करना चाहते हैं। विशेषज्ञ यीशु को "शिक्षक कहते हैं। यह किसी यहूदी धार्मिक नेता के लिए एक विनम्रतापूर्ण उपाधि थी। वह व्यक्ति जानना चाहता है कि परमेश्वर के साथ शाश्वत जीवन को विरासत में पाने के लिए उन्हें क्या करना चाहिए। यह परमेश्वर के साथ सदा के लिए स्वर्ग में या परमेश्वर जिस स्थान पर रहते हैं वहां रहने को संदर्भित करता है।

यीशु उस व्यक्ति के प्रश्न का जवाब दूसरे प्रश्न से देते हैं। यीशु पूछते हैं, "कानून में क्या लिखा गया है?" जब यीशु पूछते हैं, "आप इसे कैसे पढ़ते हैं?" वे उस व्यक्ति को यह समझाने के लिए कह रहे हैं कि परमेश्वर का कानून इस मुद्दे के बारे में क्या कहता है, इस बारे में वे क्या सोचते हैं। विशेषज्ञ कानून की एक पुस्तक से उद्धरण देकर जवाब देते हैं। वे कहते हैं कि आपको प्रभु अपने परमेश्वर से अपने पूरे हृदय, आत्मा, बल और मन से पूरी तरह प्रेम करना चाहिए। [जब कोई परमेश्वर से अपने पूरे हृदय, आत्मा, बल और मन से प्रेम करता है, तो वह परमेश्वर से अपनी सभी क्षमताओं से प्रेम करता है।]{.mark} यह सभी यहूदी लोगों के लिए एक आदेश था। प्रभु परमेश्वर का व्यक्तिगत नाम था। प्रभु आपका परमेश्वर ऐसे परमेश्वर को संदर्भित करता है जो लोगों के साथ संबंध रखता है।

विशेषज्ञ कानून की एक अन्य पुस्तक व्यवस्थाविवरण से भी उद्धृत करते हैं। [यह कानून कहता है कि आपको अपने पड़ोसी से, या जो भी करीबी हों, उसी तरह से प्रेम करना चाहिए जिस तरह आप स्वयं से प्रेम करते हैं।]{.mark} [कई यहूदी सोचते थे कि पड़ोसी का अर्थ केवल अन्य यहूदियों से था।]{.mark}

यीशु जवाब देते हैं और कहते हैं कि उस व्यक्ति ने सही उत्तर दिया है। यीशु उस व्यक्ति को कहते हैं कि वह उन आज्ञाओं का पालन करे, जो उन्होंने उद्धृत किए हैं और परिणामस्वरूप वे परमेश्वर के साथ हमेशा के लिए रहेंगे। वह व्यक्ति यीशु से सहमत था, लेकिन वह खुद को बुद्धिमत्तापूर्ण होना प्रकट करना चाहता था, इसलिए उसने एक अन्य प्रश्न पूछा। "मेरा पड़ोसी कौन है?" वह व्यक्ति जानना चाहता था

कि यीशु के विचार से उससे किसके प्रति प्रेम दिखाने की उम्मीद की गई थी।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में कोई व्यक्ति खुद को अधिक बुद्धिमान कैसे प्रकट करता है? एक बुद्धिमान व्यक्ति के पास किस तरह का ज्ञान या अनुभव होता है?

यीशु उस व्यक्ति के प्रश्न का जवाब एक दृष्टांत बताकर देते हैं। एक दृष्टांत एक विशेष प्रकार की कहानी होती है, जो यीशु परमेश्वर के गहरे अर्थ सिखाने के लिए कहते थे। जब तक लोग वास्तव में सुने नहीं, तब तक दृष्टांतों को समझना कठिन था। यीशु की कहानी एक ऐसे व्यक्ति के बारे में है जो यरूशलेम से यरीहो की यात्रा कर रहा था। यरीहो, यरूशलेम से 27 किलोमीटर या 17 मील की दूरी पर था और यरदन नदी के पास स्थित था। यरूशलेम एक पहाड़ी पर था। सड़क की यात्रा करने वाले किसी भी व्यक्ति को पहाड़ से नीचे उतरने की आवश्यकता थी। यरीहो को सड़क खड़ी चढ़ाई वाली थी और चट्टानी, निर्जन क्षेत्रों से होकर गुज़रती थी, जहां चोर छिप कर यात्रियों पर हमला करने का इंतजार करते थे।

रूकें और अपनी टीम को यरूशलेम से यरीहो के लिए मार्ग का एक नक्शा दिखाएं। चट्टानी निर्जन सड़क का एक चित्र दिखाएँ।

जब लुटेरों ने उस पर हमला किया, तो वह व्यक्ति यरीहो की ओर जा रहा था। उन्होंने उसे पीटा और उसके कपड़े सहित सब कुछ उस से ले लिया। वह सड़क के किनारे बमुश्किल जिंदा पड़ा था। सबसे पहले एक पुजारी सड़क को पार करता है, और दूसरी ओर गुजरता है। उसके बाद एक लेवी जो याजकों की सहायता करने वाला धार्मिक कार्यकर्ता था, वह भी दूसरी ओर से गुज़रता है। ये दोनों पुरुष उच्च स्थिति के धार्मिक कार्यकर्ता थे। इस कहानी को सुनने वाले कुछ लोग इस बात पर सहमत होते रहे होंगे कि इन महत्वपूर्ण पुरूषों को संकट में पड़े एक व्यक्ति की मदद करने के लिए रुकने की आवश्यकता नहीं थी।

उसके बाद एक सामरी व्यक्ति सड़क पर आया। सामरी और यहूदी एक दूसरे से नफरत करते थे, क्योंकि सामरी उन यहूदियों के वंशज थे, जिन्होंने विदेशियों से विवाह किया था।

[जब सामरी व्यक्ति ने घायल मनुष्य को देखा, तो उसने उसके लिए खेद महसूस किया]{.mark}। सामरी व्यक्ति उस मनुष्य के पास पहुंचा और उसके घावों का इलाज किया। इसका अर्थ है कि उसने उसके घावों पर तेल और दाखरस डाला। उस समय में लोग जैतून के तेल और दाखरस का उपयोग दवा के रूप में करते थे। दाखमधु में जो मदिरा थी, वह उसके घाव को शुद्ध करती थी। उसके बाद उसने उसके घावों के चारों ओर कपड़े की पट्टियां बांधी।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में लोग घावों का इलाज किस तरह करते हैं? आप जहां रहते हैं वहा यदि लोग तेल और दाखमधु का उपयोग नहीं करते हैं, तो लोग किन वैकल्पिक दवाओं का उपयोग करते हैं?

उसके बाद सामरी ने घायल व्यक्ति को उसके गदहे पर उठा कर रखा। एक गदहा ऐसा पशु होता है जो सामान या व्यक्ति को ढो सकता है।

जहां आप रहते हैं वहां यदि आपके पास ये पशु नहीं है तो रुकें और एक गदहे का चित्र दिखाएं।

उसके बाद सामरी उस गदहे को एक सराय या अतिथि गृह में ले गया। एक सराय ऐसा स्थान था जहां यात्री भुगतान कर भोजन और विश्राम कर सकते थे। सामरी उस सराय में उस व्यक्ति की देखभाल करता रहा। [सामरी ने वहां रात बिताई और उसके बाद घायल]{.mark} व्यक्ति की देखभाल जारी रखने के लिए सराय के कार्यवाहक या मालिक को भुगतान किया। सामरी ने सराय के कार्यवाहक को दो दीनार या चांदी के दो रोमी सिक्के दिए। यह दो दिन के काम की मजूरी के बराबर था। सामरी को यह पता नहीं था कि क्या सराय का कार्यवाहक उस व्यक्ति की देखभाल करने के लिए दो से अधिक सिक्के खर्च करेगा। उसने सराय के कार्यवाहक को बताया कि जब वह वापस आएगा तो जो भी अतिरिक्त खर्च किया गया था, उसके लिए भी वह उसे भुगतान कर देगा। यह दृष्टांत का समापन करता है।

उसके बाद यीशु उस विशेषज्ञ से पूछते हैं कि उन तीनों में से कौन सा व्यक्ति घायल व्यक्ति का पड़ोसी था। विशेषज्ञ नें जवाब दिया कि असली पड़ोसी वह व्यक्ति था, जो सामरी था, जिसने पीड़ित या जरूरतमंद लोगों के प्रति दया या करुणा का प्रदर्शन किया। यीशु विशेषज्ञ को यह कहते हैं कि वह जाए और सामरी व्यक्ति की तरह ही कर्म करे।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 10:25–37

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य कल्पांकित करने में समूह की मदद करेंगे। आप कथा के दृश्यों, विन्यास और पात्रों को परिभाषित करने में समूह की मदद करेंगे।

इस कहानी में छ: दृश्य हैं।

पहला दृश्य: यीशु और उनके शिष्य यरूशलेम के मार्ग पर हैं। यीशु एक भीड़ को सिखाने के लिए रुक जाते हैं। कानून का एक विशेषज्ञ भीड़ का एक हिस्सा होता है।

दूसरा दृश्य: विशेषज्ञ खड़ा होता है और यीशु को उनका परीक्षण करने के लिए एक प्रश्न पूछता है। यीशु एक दूसरे

सवाल के साथ जवाब देते हैं। विशेषज्ञ का जवाब सही होता है और वे दोनों सहमत होते हैं। उसके बाद विशेषज्ञ पूछते हैं कि "मेरा पड़ोसी कौन है?" यीशु एक दृष्टांत कह कर जवाब देते हैं।

तीसरा दृश्य: एक यात्री यरूशलेम से यरीहो के लिए सड़क पर चल रहा होता है जब उस पर हमला किया जाता है, उसे मार दिया जाता है और लूट लिया जाता है। चोर उसे बुरी तरह घायल अवस्था में सड़क पर बिना कपड़ों के छोड़ देते हैं।

चौथा दृश्य: [एक यहूदी पुजारी घायल व्यक्ति के पास से गुज़रता है, सड़क पार करता है और उसकी मदद नहीं करता है। उसके बाद एक लेवीय भी ऐसा ही करता है।]{.mark} अंत में एक सामरी उस व्यक्ति को देखता है, उसकी मदद करता है और उसे एक सराय में ले जाता है।

पाँचवाँ दृश्य: सामरी सराय के भीतर पहुंचता है। वह घायल व्यक्ति के साथ रात भर रहता है। अगले दिन वह उस व्यक्ति की देखभाल करने के लिए सराय के कार्यवाहक को भुगतान करता है।

छठा दृश्य: यीशु उस विशेषज्ञ से पूछते हैं कौनसा व्यक्ति एक अच्छा पड़ोसी था। विशेषज्ञ जवाब देते हैं, "ऐसा व्यक्ति जिसने दया दिखाई।" यीशु उसे भी जाने और उसी तरह काम करने के लिए कहते हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- शिष्य
- भीड़
- कानून का विशेषज्ञ
- यात्री
- याजक
- लेवी
- सामरी
- सराय का कार्यवाहक

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल (ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप इधर उधर रख सकते हैं जैसे पत्थर, लकड़ियां, बच्चों के खिलौने) का इस्तेमाल करे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यहूदी संस्कृति में जब कोई शिक्षक शिक्षा दे रहा हो तो नम्रता और सीखने की उत्सुकता प्रदर्शित करने के लिए लोग बैठते थे।

लूका *10:25–37*

यीशु अपने शिष्यों के साथ होते हैं। वे भीड़ को पढ़ाने के लिए रुक जाते हैं। वे वहां उन्हें सुनने के लिए बैठे होते हैं जब कानून का एक विशेषज्ञ खड़ा होता है और यीशु से पूछता है कि परमेश्वर के साथ शाश्वत जीवन जीने के लिए उसे क्या करना होगा।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि कानून का विशेषज्ञ उसी समूह का हिस्सा था, जिसका हिस्सा कानून के शिक्षक थे। धार्मिक नेताओं का यह समूह परमेश्वर के कानून का अध्ययन करता था, उसकी व्याख्या करता था, और उसे पढ़ाता था। लूका ने हमें पहले ही चेतावनी दी कि लोगों का यह समूह यीशु के अस्वीकार और पीड़ित होने का कारण होगा।

यीशु उनसे पूछते हैं, "परमेश्वर का कानून क्या कहता है?" विशेषज्ञ परमेश्वर के कानून को उद्धृत करके यीशु को जवाब देते हैं। यीशु कहते हैं कि उन्होंने सही जवाब दिया। लेकिन क्योंकि विशेषज्ञ बुद्धिमान प्रकट होना चाहता था, वह यीशु से पूछता है कि उसका पड़ोसी कौन है। यीशु एक दृष्टांत कह कर जवाब देते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु परमेश्वर के बारे में गहरे अर्थ सिखाने के लिए दृष्टांत या छोटी कहानियों का उपयोग करते थे। यीशु विशेषज्ञ के प्रश्न का जवाब देने के लिए दृष्टांत बताते हैं। लोगों को सही अर्थों में समझने के लिए यीशु के दृष्टांतों को ध्यान से सुनना आवश्यक था।

यीशु का दृष्टांत एक यात्री के बारे में है, जिसपर यरूशलेम से यरीहो जाते समय डाकू हमला करते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यरूशलेम से यरीहो के लिए सड़क ढलुआ और खतरनाक है।

एक पुजारी और एक लेवी घायल व्यक्ति को देखते हैं, लेकिन पहले सड़क पार करते हैं, उसके बाद बिना किए उसके बाजू से चले जाते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यरूशलेम वह स्थान है, जहां उपासना का मंदिर या यहूदी स्थान स्थित है। इसका अर्थ यह है कि याजक और लेवी मंदिर में अपने कर्तव्यों का निर्वाह करने के बाद शायद सड़क पर यात्रा कर रहे थे।

एक सामरी उसी सड़क पर यात्रा कर रहा था। जब उन्होंने उस व्यक्ति को देखा, तो उसने घावों पर पट्टी बांधी और तेल तथा दाखमधु डाल कर उनका इलाज किया। उस व्यक्ति ने घाव पर तेल और दाखमधु डालने के बाद पट्टी लगाई होगी। आपके लिए घटनाक्रम को पुन:व्यवस्थित करना आसान हो सकता है, ताकि सामरी व्यक्ति ने उस व्यक्ति का ध्यान किस क्रम में रखा था, यह समझना आसान हो सके।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि लोग तेल और दाखरस का उपयोग दवा के रूप में करते थे। सामरी ने घाव के चारों ओर पट्टी के रूप में कपड़ा लपेटने से पहले उन्हें साफ करने के लिए तेल और दाखरस घावों पर डाला।

सामरी व्यक्ति उस व्यक्ति को अपने गदहे पर एक अतिथि गृह में ले जाता है। वह रात वहीं रहता है। अगली सुबह सामरी उस व्यक्ति की देखभाल करने के लिए सराय के कार्यवाहक को भुगतान करता है। वह कहता है कि वह वापस लौटेगा और जो धन उसने दिया था, अगर वह उस व्यक्ति की मदद के लिए पर्याप्त नहीं था, तो वह सराय के कार्यवाहक को और अधिक भुगतान करेगा।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि दृष्टांत यहां रुक जाता है। अब, यीशु कहानी बताना बंद करते हैं और धार्मिक विशेषज्ञ से पूछते हैं, "इन तीनों में से कौन एक अच्छा पड़ोसी था?"

यीशु विशेषज्ञ से पूछते हैं कि इस कहानी में एक अच्छा पड़ोसी कौन था। विशेषज्ञ जवाब देते हैं, "वह व्यक्ति जिसने दया दिखाई थी।"

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 10:25–37

कथा को एक बार फिर सबसे आसानी से समझ आने वाले प्रारूप में सुनें।

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी में छः दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- शिष्य
- भीड़
- कानून का विशेषज्ञ
- यात्री
- याजक
- लेवी
- सामरी
- सराय का कार्यवाहक

मण्डली से कहानी का दो बार अभिनय करवाएं। पहली बार टीम से बिना रूके कहानी का अभिनय करवाएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है तब उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, तब कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

जब यीशु जब एक विशेषज्ञ के प्रश्न का उत्तर एक कहानी बता कर देते हैं उस समय वे भीड़ को शिक्षा देने का कार्य कर रहे होते हैं, इस अभिनय टीम द्वारा किया जाना सुनश्चित करें। जब यीशु इसे भीड़ को दृष्टांत बता रहे होते हैं और विशेषज्ञ अभी भी देख रहा होता है तब अभिनेता दृष्टांत को नाटक का रूप दे सकते हैं।

जब यीशु की कहानी में सामरी का उल्लेख किया गया है तो आप भीड़ द्वारा जुगुप्सा और नापसंदगी की प्रतिक्रिया का अभिनय कराना टीम द्वारा सुनिश्चित करें। उसके बाद जब सामरी व्यक्ति उस व्यक्ति की मदद करने के लिए रुक जाता है तो उनके आश्चर्य प्रकटन का अभिनय करे।

जब सामरी उस व्यक्ति के घावों की देखभाल करता है तो टीम उसके कार्यकलापों को दोबारा से कालक्रमित करना चाह सकती है। पहले उसने घावों पर तेल और दाखरस डाला, उसके बाद उसने घावों के चारों ओर कपड़े लपेटे।

दूसरी बार जब मण्डली इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

यीशु का अपने शिष्यों के साथ यात्रा करने का अभिनय करें। वे भीड़ को पढ़ाने के लिए रुक जाते हैं। जब कानून का एक विशेषज्ञ खड़ा होता है, तो वे उनकी बात सुन रहे होते हैं। वह यीशु को परखता है और उनसे पूछता है कि परमेश्वर के साथ हमेशा का जीवन जीने के लिए उसे क्या करना होगा।

अभिनय को बंद करें। विशेषज्ञ का पात्र निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मुझे उम्मीद है कि वह ऐसा कुछ कहेगा जिससे लोग देखेंगे कि वह गलत है।" "मैं आखिरकार यीशु को गड़बड़ करने के लिए फंसा सकूं।" और "मुझे उत्सुकता है कि वह क्या कहेगा"। अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु उनसे पूछते हैं, "परमेश्वर का कानून क्या कहता है?" विशेषज्ञ परमेश्वर के कानून को उद्धृत करके यीशु को जवाब देते हैं। यीशु कहते हैं कि उन्होंने सही जवाब दिया। लेकिन क्योंकि विशेषज्ञ बुद्धिमान प्रकट होना चाहता था, वह यीशु से पूछता है कि उसका पड़ोसी कौन है। यीशु एक यात्री के बारे में कहानी सुनाकर जवाब देते हैं। यरूशलेम से यरीहो जाने वाली सड़क पर डाकू यात्री पर हमला करते हैं। एक पुजारी और एक लेवी घायल व्यक्ति को देखते हैं लेकिन बिना मदद के उसके पास से गुज़र जाते हैं।

अभिनय को बंद करें। शिष्यों की भूमिका निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मुझे पता था कि यह सड़क खतरनाक थी! मुझे चलते रहने की जरूरत है।" "असुविधा हुई। मैं उसे छूकर अशुद्ध नहीं बनना चाहता हूं।" और "बेचारा मुझे यकीन है कि कोई और उसकी मदद करेगा।"

सड़क के किनारे उस व्यक्ति का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "व्याकुल हूं। निश्चित रूप से वे मेरी

मदद करना चाहते हैं!" "नाउम्मीद हूं, कोई मेरी मदद करने वाला नहीं है।" और "घायल और डरा हुआ हूं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

एक सामरी उसी सड़क पर यात्रा कर रहा था। जब उसने उस व्यक्ति को देखा, तो उसने उसके घावों पर पट्टी बांध दी और उनका इलाज तेल और दाखमधु से किया।

अभिनय बंद कर दें। सामरी का किरदार निभाने वाले अदाकार से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मुझे उसके लिए खेद महसूस होता है। उसे मदद की जरूरत है।" "मुझे दुख है कि इस सड़क पर इतने लोग घायल होते हैं।" और "मुझे उम्मीद है कि वह बेहतर हो जाएगा।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

सामरी व्यक्ति उस व्यक्ति को अपने गदहे पर एक अतिथि गृह में ले जाता है। वह रात रुकता है, उसके बाद उस व्यक्ति की देखभाल करने के लिए सराय के कार्यवाहक को भुगतान करता है। वह कहता है कि वह वापस लौटेगा और जो धन उसने दिया था, अगर वह उस व्यक्ति की मदद के लिए पर्याप्त नहीं था, तो वह सराय के कार्यवाहक को और अधिक भुगतान करेगा।

अभिनय को बंद करें। भीड़ का पात्र निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मैं किसी की मदद करने के लिए इच्छुक किसी सामरी की कल्पना भी नहीं कर सकता हूं।" "यीशु क्या कहने की कोशिश कर रहे हैं?" और "मुझे विश्वास नहीं होता है कि यीशु एक सामरी की प्रशंसा कर रहे हैं।"

विशेषज्ञ का पात्र निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "हताश हूं। मुझे पता है कि यीशु क्या कहने जा रहे हैं।" "यीशु जिस तरह से चाहते हैं मैं कैसे उस प्रकार से उत्तर न दूं?" और "जब वे बोलते हैं तो यीशु बहुत सावधान रहते हैं।" अभिनय को दोबारा प्रारंभ करें।

यीशु विशेषज्ञ से पूछते हैं कि इस कहानी में एक अच्छा पड़ोसी कौन था। विशेषज्ञ जवाब देते हैं, वह व्यक्ति जिसने दया दिखाई थी।

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 10:25–37

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु यरूशलेम की सड़क पर हैं। वे एक भीड़ को शिक्षा दे रहे होते हैं। **कानून का एक विशेषज्ञ** यीशु से एक प्रश्न पूछने के लिए खड़ा होता है। कानून का विशेषज्ञ कोई ऐसा व्यक्ति था जिसने परमेश्वर के कानून का अध्ययन किया, भावार्थ किया, और लोगों को परमेश्वर का कानून पढ़ाया। परमेश्वर का कानून पुराने नियम की पहली पांच पुस्तकों को संदर्भित करता है[, जिसने वे कानून दिए जो परमेश्वर ने यहूदी लोगों के लिए मूसा को दिए थे।]{.mark} इस विशेषज्ञ की उपस्थिति से यह पता चलता है कि वह वहां यह देखने के लिए थे कि क्या यीशु परमेश्वर के कानून को सही ढंग से पढ़ाते थे। कानून के ये विशेषज्ञ उन लोगों के उसी समूह से थे जिन्हें कानून के शिक्षक कहा जाता था। कानून का शिक्षक प्रधान शब्दावली में पाया जा सकता है।

कुछ अनुवाद कानून के विशेषज्ञ के बजाय विधिवक्ता शब्द का उपयोग करते हैं। यह ध्यान रखें कि यह विशेषज्ञ वर्तमान समय के वकील से अलग है क्योंकि कानून का संदर्भ धार्मिक कानून या मूसा के कानून से है।

भले ही विशेषज्ञ यीशु का परीक्षण करना चाहते हैं, लेकिन वे अभी भी यीशु को "**शिक्षक**" कहते हैं, जो यहूदी धार्मिक नेताओं के लिए एक विनम्र शीर्षक था। शिक्षक का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जैसा कि आपने पिछले अंशों में किया है। शिक्षक शब्द प्रधान शब्दावली में है।

विशेषज्ञ यीशु से पूछते हैं कि **शाश्वत जीवन** प्राप्त करने के लिए उन्हें क्या करना चाहिए। शाश्वत जीवन का अर्थ है एक ऐसा जीवन जो कभी समाप्त नहीं होता है। यहां इसका विशेष अर्थ है कि जहां परमेश्वर रहते हैं, उस स्वर्ग में उनके साथ हमेशा के लिए रहना। शाश्वत जीवन प्रधान शब्दावली में है।

यीशु विशेषज्ञ से पूछते हैं कि **कानून** उनके प्रश्न के बारे में क्या कहता है। कानून का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। कानून शब्द प्रधान शब्दावली में है।

विशेषज्ञ जवाब देते हैं कि आप **प्रभु** अपने परमेश्वर से अपने **सारे हृदय, पूरी आत्मा, पूरे बल और सम्**पूर्ण मन से प्रेम करें या अपने पूरे अस्तित्व से परमेश्वर से प्रेम करें। ये चार शब्द किसी व्यक्ति के विशिष्ट हिस्सों का वर्णन करने के लिए नहीं हैं। इसके बजाय, वे एक व्यक्ति के व्यक्तित्व और क्षमता के रूप में एक साथ कार्य करते हैं।

आपकी भाषा में इस बात का वर्णन करने के लिए किसी व्यक्ति के चार से कम भाग हो सकते हैं। अपनी भाषा में स्वाभाविक महसूस होने वाली एक अभिव्यक्ति का उपयोग करना सुनिश्चित करें। इसका महत्वपूर्ण हिस्सा यह जताना है कि एक व्यक्ति को अपने पूरे अस्तित्व के साथ परमेश्वर से प्रेम करना चाहिए।

यहां **प्रभु** परमेश्वर का व्यक्तिगत नाम है। प्रभु का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने उसे पिछले अंशों में किया है। **प्रभु** शब्द प्रधान शब्दावली में हैं।

विशेषज्ञ अपने **पड़ोसी** से प्यार करने के लिए भी कहते हैं। पड़ोसी का अर्थ निकट में रहने वाले किसी भी व्यक्ति से हो सकता है। यह उसी सामाजिक समूह के लोगों को भी संदर्भित

कर सकता है जो एक ही भाषा बोलते हैं। यहूदी सोचते थे कि इसका संदर्भ केवल साथी यहूदियों से होता है। इसका अर्थ था कि उन्होंने केवल यह सोचा कि उन्हें अन्य यहूदियों से प्यार करने की आवश्यकता थी। हालांकि, यीशु अपने दृष्टांत में प्रकट करते हैं कि एक पड़ोसी किसी अन्य व्यक्ति का संदर्भ दे सकता है। पड़ोसी का अनुवाद सामान्य रूप से करना सुनिश्चित करें।

अपनी कहानी में यीशु **यरूशलेम** से यरीहो की यात्रा करने वाले एक व्यक्ति का वर्णन करते हैं जब उस पर डाकुओं द्वारा हमला किया जाता है। यरूशलेम यहूदी धार्मिक राजधानी है, जहां मंदिर स्थित है। यरूशलेम का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जैसा कि आपने पिछले अंशों में किया है। यरूशलेम प्रधान शब्दावली में हैं।

यीशु कहते हैं कि **एक याजक** घायल व्यक्ति के पास से गुज़रता है और उसकी मदद नहीं करता है। वह याजक मंदिर में अपने कर्तव्यों का निर्वाह करने के बाद शहर से बाहर यात्रा कर रहा था। याजक का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने उसे पिछले अंशों में किया है। याजक शब्द प्रधान शब्दावली में है।

एक **लेवी** भी बिना मदद किए उस व्यक्ति के पास से गुजरता है। लेवी धार्मिक कार्यकर्ता होते थे जो मंदिर में याजकों की मदद करते थे। वे इस्राएल के 12 गोत्रों में से एक थे जिन्हें लेवी कहा जाता है। लेवी याकूब के बेटे लेवी के वंशज थे। यहूदी संस्कृति में लेवियों का उच्च दर्जा होता था, लेकिन एक याजक के समान नहीं।

कहानी में एक सामरी घायल व्यक्ति पर दया करता है और उसकी मदद करता है। वह उस व्यक्ति को एक **सराय** या अतिथि गृह में ले जाता है। सराय का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जैसा कि आपने पिछले अंशों में किया है। सराय शब्द प्रधान शब्दावली में है। सामरी उस व्यक्ति की देखभाल करने के लिए सराय के कार्यवाहक को दो चांदी के सिक्के या दीनार के साथ भुगतान करता है। **दीनार** का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जैसा कि आपने पिछले अंशों में किया है। दीनार शब्द प्रधान शब्दावली में हैं।

जब यीशु ने विशेषज्ञ से पूछा कि अच्छा पड़ोसी कौन है, तो विशेषज्ञ ने जवाब दिया कि ऐसा व्यक्ति जिसने दया दिखाई थी। **दया** का अर्थ है पीड़ित या ज़रूरतमंद लोगों पर दया करना। दया का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जैसा कि आपने पिछले अंशों में किया है। दया शब्द प्रधान शब्दावली में है।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 10:25–37

Audio Content

webm zip (4255100 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (7334495 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 10:38–42

सुनना और मनन करना

लूका 10:38–42

लूका 10:38–42 सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे इस कथा को सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 10:38–42

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

पिछली कहानी में यीशु ने कानून के एक विशेषज्ञ को शिक्षा दी न केवल यहूदी बल्कि हम व्यक्ति हमारा पड़ोसी हैं। बाद में यीशु और उनके शिष्य या अनुयायी यरूशलेम जाने के लिए एक नगर से दूसरे नगर की यात्रा करना निरंतर रखते रहे। अपनी यात्रा के दौरान वे मार्था और मरियम नामक दो बहनों के घर जाते हैं।

लूका *10:38–42*

यीशु और उनके शिष्य यरूशलेम की राह पर होते हैं जब वे एक घर में रुकते हैं। हम यूहन्ना के सुसमाचार से जानते हैं कि मार्था का घर बैतनिय्याह में स्थित था।

रुकें और अपनी टीम को बैतनिय्याह जहां नक्शे पर यरूशलेम के संबंध में स्थित है, उसे दिखाएं।

मार्था ने यीशु और उनके शिष्यों को मेहमान के रूप में अपने घर में रहने के लिए आमंत्रित किया। यीशु और उनके शिष्य मार्था के साथ रहते हैं ठीक उसी तरह जैसे यीशु ने अपने शिष्यों को बाहर भेजने के दौरान ऐसा करने की शिक्षा दी थी। मार्था की मरियम नाम की एक छोटी बहन थी जो उसी घर में रहती थी। हम यूहन्ना के सुसमाचार से यह भी जानते हैं कि उनके एक भाई का नाम लाज़र था। मार्था तुरंत उनके लिए भोजन तैयार करने लगती है। जब वह सेवा कर रही थी, तब यीशु अपने शिष्यों सहित घर में लोगों को शिक्षा देते थे। मरियम यीशु के चरणों में बैठकर उनकी शिक्षाएं सुनती थीं। लूका यीशु को इस कहानी में प्रभु कहते हैं। यहां प्रभु यीशु के लिए एक शीर्षक है जिसका अर्थ स्वामी या अधिकार वाला कोई व्यक्ति है। यहूदी संस्कृति में छात्र या शिष्य एक शिक्षक के चरणों में नम्रता और सीखने की उत्सुकता दिखाने के लिए बैठते थे।

लूका "लेकिन" शब्द का उपयोग दोनों बहनों के बीच तुलना करने के लिए करते हैं। दोनों बहनों ने अलग अलग बातें महत्वपूर्ण मानी थी। जहां मरियम यीशु की बात सुनने के लिए बैठी थीं, वहीं मार्था उन सभी कार्यों के साथ चिंतित और व्यस्त थीं, जिन्हें करने की आवश्यकता थी। इस काम में अपने मेहमानों को सम्मानित करने के लिए भोजन की तैयारी और परोसना भी शामिल होगा। उनकी व्यस्तता के कारण मार्था यीशु की शिक्षाओं को नहीं सुन पा रही थी।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में किसी की मेजबानी करते समय महिलाओं की जिम्मेदारी क्या होती है? अगर कोई व्यक्ति अप्रत्याशित रूप से उनके घर में आ जाता है तो घर की उस महिला को कैसा महसूस होता है?

मार्था यीशु के पास आकर एक प्रश्न पूछती है जिसका जवाब पाने के वे कोई उम्मीद नहीं कर रही थीं। वे कुछ समय से खुद ही सारा काम कर रही थीं। मार्था यीशु को प्रभु या स्वामी करती है, और उनसे पूछती है कि क्या वे इस बात की परवाह करते हैं कि मरियम काम से उनकी मदद नहीं कर रही थी। मार्था यह प्रश्न उनकी हताशा दिखाने के लिए कहती है कि उनकी बहन को काम में मदद नहीं करने देने की अनुमति यीशु दे रहे हैं। मार्था को लगता है कि यह अनुचित है और वे यीशु से मरियम को काम में मदद करने के लिए कहने की उम्मीद करती है। यह सुनिश्चित करें कि आपका अनुवाद एक विनम्र अनुरोध की अभिव्यक्ति करे, न कि मार्था द्वारा यीशु को कुछ करने का आदेश दिए जाने की।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में [जब कोई किसी अधिकार सम्पन्न व्यक्ति से शिकायत करता है तो आप ऐसे लोगों के बारे में कैसा महसूस करते हैं?]{.mark}

यीशु मार्था का नाम दो बार पुकारकर जवाब देते हैं। भले ही वे उन्हें धीमे से उनकी बात में सुधार कर रहे थे, लेकिन वे इस संबोधन से उनके प्रति परवाह और स्नेह भी दिखाते हैं। यीशु उन्हें यह कहते हैं कि वे कई बातों के बारे में चिंतित और परेशान हैं। ऐसा होने पर भी, यीशु कहते हैं कि किसी भी व्यक्ति के जीवन में वास्तव में महत्वपूर्ण बात एक ही होती है। हालांकि यीशु यह स्पष्ट नहीं करते कि यह बात क्या है, यह संदर्भ यह दिखाता है कि मरियम ने क्या करना चुना था - परमेश्वर के राज्य और परमेश्वर द्वारा अपने लोगों के दिलों में एक नए तरीके से शासन करने के बारे में यीशु की शिक्षा को। [यीशु कहते हैं कि मरियम ने काम करने से पहले उन्हें पहले सुनने का चयन किया है। यह करना अच्छी बात है। यीशु की बात सुनना एक सौभाग्य की बात है और किसी को भी मरियम से यह छिनना नहीं करना चाहिए।]{.mark} इसका अर्थ है कि जब मरियम उनकी बात सुन रही हो तब यीशु मरियम को काम में मदद करने को नहीं कहेंगे।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 10:38–42

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य बनाने में समूह की मदद करेंगे। आप कहानी के दृश्यों, विन्यास और पात्रों को परिभाषित करने में ग्रुप की मदद करेंगे।

इस कहानी में तीन दृश्य हैं।

पहला दृश्य: यीशु और उनके शिष्य यरूशलेम के मार्ग पर हैं। वे मार्था के घर रुकते हैं। मार्था यीशु और उनके शिष्यों का स्वागत उनके मेहमानों के रूप में करती है। मार्था की बहन मरियम भी उसी घर में रहती है।

दूसरा दृश्य: यीशु घर में लोगों को शिक्षा देते हैं जबकि मार्था काम करती है और एक बड़ा भोजन तैयार करती है। मरियम यीशु के चरणों में उनकी शिक्षाओं को सुन रही होती है।

तीसरा दृश्य: मार्था कुंठित होती है। मार्था यीशु से यह पूछती है कि क्या वे यह परवाह करते हैं कि उनकी बहन उनकी मदद नहीं कर रही है। यीशु उन्हें यह कहकर जवाब देते हैं कि मरियम ने अच्छी बात चुनी है।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- शिष्य
- मरियम
- मार्था

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल (ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप इधर उधर रख सकते हैं जैसे पत्थर, लकड़ियां, बच्चों के खिलौने) का इस्तेमाल करे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि हालांकि लूका इस बात का उल्लेख नहीं करते हैं, लेकिन शिष्य अभी भी यीशु के साथ ही रहते हैं।

यीशु यरूशलेम की सड़क पर हैं। वे मार्था के घर रुकते हैं। मार्था यीशु और उनके शिष्यों का स्वागत उनके मेहमानों के रूप में करती है। मार्था की बहन मरियम भी उसी घर में रहती है।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु ने अभी अभी अपने शिष्यों को यह सिखाया होता है कि जब कोई घर पर उनका स्वागत करता है तो उन्हें क्या करना चाहिए। मार्था यीशु और उनके शिष्यों का स्वागत करने वाले घर का एक उदाहरण है।

यीशु घर में लोगों को शिक्षा देते हैं जबकि मार्था काम करती है और एक बड़ा भोजन तैयार करती है। मरियम यीशु की शिक्षाओं को सुन रही थीं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि जब वे घर में समूह को शिक्षा दे रहे होते हैं तब मरियम शायद उनके चरणों के पास ही घर में बैठी होती है।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि एक साथ भोजन करना यहूदी आतिथ्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। यीशु जैसे विशेष मेहमानों को सम्मानित करने का यह एक तरीका था।

मार्था कुंठित होती है। मार्था यीशु से यह पूछती है कि क्या वे यह परवाह करते हैं कि उनकी बहन उनकी मदद नहीं कर रही है।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि मार्था यीशु से यह प्रश्न इसलिए पूछती हैं क्योंकि वे यीशु से मरियम को काम में मदद करने का कहने की उम्मीद करती हैं।

यीशु उन्हें यह कहकर जवाब देते हैं कि मरियम ने सबसे महत्वपूर्ण बात चुनी है। मरियम ने यीशु के लिए काम करने की चिंता करने के बजाय उनकी बात सुनने का चयन किया है।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 10:38–42

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी में तीन दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- शिष्य
- मरियम
- मार्था

मण्डली से कहानी का दो बार अभिनय करवाएं। पहली बार टीम से बिना रूके कहानी का अभिनय करवाएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है तब उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, तब कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

यह सुनिश्चित करें कि जब मार्था उन्हें मेहमानों के रूप में आमंत्रित करती है तब शिष्यों द्वारा यीशु के साथ घर में जाने और प्रवेश करने का अभिनय टीम द्वारा किया जाए।

मार्था अपने सम्मानित अतिथि के लिए एक बड़े भोजन की तैयारी करने के लिए कड़ी मेहनत करती है जबकि मरियम यीशु के चरणों में बैठी उनके हर शब्द को सुन रही होती है, इस बात का अभिनय करना सुनिश्चित करें।

दूसरी बार जब मण्डली इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

यीशु और उनके शिष्यों द्वारा यरूशलेम की यात्रा किए जाने का अभिनय करें। वे एक घर में रुकते हैं। घर की मालिक मार्था मेहमानों के रूप में घर के अंदर उनका स्वागत करती है। **अभिनय को बंद करें।** मार्था का पात्र निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मैं इतनी उत्साहित हूं कि यीशु मेरे घर में हैं!" "मैं एक बड़ा भोजन पकाकर उनका सम्मान करना चाहती हूं।" और "मुझे एक ही समय में इतने लोगों को कराने में व्यस्त होना आवश्यक है। मैं उनके आने के लिए तैयार नहीं थी।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु घर में लोगों को शिक्षा देते हैं जबकि मर्था काम करती है और एक बड़ा भोजन तैयार करती है। मार्था की बहन मरियम मदद नहीं कर रही है। इसके बजाय, वे यीशु के चरणों में बैठकर उनके द्वारा कहे जाने वाले हर शब्द को सुन रही होती है।

अभिनय को बंद करें। मरियम का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस करती हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मैंने कभी यीशु की तरह सिखाने वाले किसी को नहीं सुना है।" "निश्चित ही, वे वही होना चाहिए जिनका हम इंतजार कर रहे हैं। परमेश्वर के प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता।" और "उनकी मौजूदगी में मैं कितनी धन्य हूं। जहां भी वे जाएं वहां मैं उनके पीछे जाना चाहती हूं।"

मार्था का पात्र निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "हताश हूं। मरियम मेरी मदद क्यों नहीं कर रही है?" "तनाव में आ गई। मुझे उम्मीद नहीं थी कि इतने सारे लोग मेरे घर में आएंगे" और "परेशान हूं। मैं भी यीशु की बात सुनना चाहती हूं, लेकिन किसी को तो सारा काम करना होगा।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

मार्था कुंठित होती है। मार्था यीशु से यह पूछती है कि क्या वे यह परवाह करते हैं कि उनकी बहन उनकी मदद नहीं कर रही है। यीशु उन्हें यह कहकर जवाब देते हैं कि मरियम ने सबसे महत्वपूर्ण बात चुनी है। मरियम ने यीशु के लिए काम करने की चिंता करने के बजाय उनकी बात सुनने का चयन किया है।

अभिनय को बंद करें। मार्था का पात्र निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "शर्मिंदा हूं।" यीशु सही हैं मैं उनकी सेवा करने की कोशिश में बहुत व्यस्त थी कि उनके आगमन का आनंद नहीं ले रही थी।" "शर्मिंदा हूं।" मैंने बहुत जल्दी बोल दिया, लेकिन जब यीशु ने मुझे जवाब दिया तब वे बहुत सदय थे।" और "शायद मुझे यीशु को और अधिक बार सुनने की जरूरत है।"

यीशु का पात्र निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मुझे पता है कि मार्था मेरी सेवा करना चाहती है लेकिन मैं नहीं चाहता कि वे चिंता करें।" "मैं आभारी हूं कि मार्था ने हमें अपने घर में स्वीकार किया।" और "मैं चाहता हूं कि मार्था यह समझे कि सबसे महत्वपूर्ण क्या है।"

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 10:38–42

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु और उनके **शिष्य** या अनुयायी यात्रा करते समय एक घर में रुकते हैं। यह घर मार्था नाम की एक महिला का था। शिष्यों का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले किया है। शिष्य शब्द प्रधान शब्दावली में हैं। वे

यरूशलेम, यहूदियों की राजधानी, की ओर यात्रा कर रहे होते हैं, जहां मंदिर है। यरूशलेम प्रधान शब्दावली में हैं।

मार्था **अपने घर** में उनका सत्कार करती हैं या उन्हें उनके घर में स्वागतपूर्ण तरीके से लाती हैं और भोजन बनाकर उनकी सेवा करना शुरु करती हैं। उनकी एक बहन है जिसका नाम मरियम है। जब यीशु घर में शिक्षा दे रहे होते हैं तो मरियम प्रभु के चरणों में बैठकर भोजन करती हैं। **प्रभु** का संदर्भ यीशु से है और इसका अर्थ है स्वामी या एक ऐसा व्यक्ति जिसे अधिकार हों। प्रभु का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। प्रभु शब्द प्रधान शब्दावली में हैं।

जब मार्था इस बात पर कुंठित होती है कि मरियम उनकी मदद नहीं कर रही हैं। यीशु उन्हें कहते हैं कि "**केवल एक ही बात की जरूरत है**।" संदर्भ का निहितार्थ है कि यीशु मार्था को यह कह रहे हैं कि जो सबसे महत्वपूर्ण काम एक व्यक्ति कर सकता है वह है उनकी बात सुनना। यीशु का मतलब है कि उनकी बात सुनना चिंता करने और दूसरे बहुत से काम करने से अधिक महत्वपूर्ण है।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 10:38–42

Audio Content

webm zip (2400412 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (4140217 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 11:1–13

सुनना और मनन करना

लूका 11:1–13

लूका 11:1–13 सुनें और इसे अपने दिल में बसा लें। कथा को तीन बार सुनें (अगर हो सके, तो तीन अलग-अलग अनुवादों में)। फिर एक टीम के तौर पर नीचे दिये गये सवालों पर चर्चा करें:

- आपको इस कथा में क्या पसंद है?
- आपको क्या पसंद या समझ में नहीं आया?
- यह कथा हमें यीशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कथा हमारे दैनिक जीवन पर कैसे असर डालती है?
- आपकी जानकारी में ऐसा कौन है, जिसे इस कथा को सुनने की आवश्यकता हो सकती है?

मंच तैयार करना

रंगमंच को तैयार करना

लूका 11:1–13

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

पिछली कहानी में यीशु और उनके शिष्य या अनुयायी मार्था और मरियम के घर में रुके। यीशु ने मार्था को उनकी शिक्षाओं को सुनने का महत्व सिखाया। अब, यीशु अपने शिष्यों को प्रार्थना के बारे में शिक्षा देते हैं।

लूका हमें यह नहीं बताते कि यह कहानी कहां या कब होती है। यीशु प्रार्थना कर रहे होते हैं या परमेश्वर से बात कर रहे होते हैं। क्योंकि यीशु ने इतने नियमित रूप से प्रार्थना की थी, इसलिए उनके शिष्य चाहते थे कि वे उन्हें प्रार्थना करना सिखाएं। यहूदी संस्कृति में अपने छात्रों को अक्सर उपयोग करने के लिए एक साधारण प्रार्थना सिखाना एक धार्मिक शिक्षक के लिए सामान्य बात थी। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने अपने अनुयायियों को शिक्षा दी थी कि वे किस तरह प्रार्थना करें, इसलिए यीशु के शिष्य चाहते हैं कि वे उन्हें प्रार्थना करना सिखाएं। यीशु उन्हें एक आदर्श प्रार्थना देकर जवाब देते हैं। यह उन तरह की बातों का एक उदाहरण था, जिनके बारे में यीशु के शिष्यों को प्रार्थना करनी चाहिए। कई लोग इस प्रार्थना का उल्लेख "प्रभु की प्रार्थना" के रूप में करते हैं। यही प्रार्थना मत्ती के सुसमाचार में भी मिल सकती है, लेकिन लूका का संस्करण छोटा है।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में लोग प्रार्थना कैसे करते हैं?

यीशु परमेश्वर को पिता कहकर उनकी प्रार्थना शुरू करते हैं। यीशु परमेश्वर के लिए इस उपाधि का उपयोग केवल उन लोगों के लिए एक आदर्श के रूप में करते हैं, जो उनका अनुसरण करते हैं। केवल यीशु और उनके अनुयायियों को परमेश्वर के लिए इस उपाधि का उपयोग करने का सौभाग्य और अधिकार है। तब यीशु प्रार्थना करते हैं कि "आपका नाम पवित्र माना जाए।" पवित्र होने का अर्थ है किसी वस्तु को पवित्र बनने का कारण बनाना। यहूदी संस्कृति में किसी व्यक्ति के नाम को सम्मानित करना उसी तरह है, जैसा कि खुद उस व्यक्ति को सम्मानित करना। यीशु चाहते हैं कि परमेश्वर उनके नाम को सम्मानित और पवित्र मानने का कारण बनें। पवित्र का अर्थ है उनके सृजन से भिन्न होना और नैतिक रूप से पूर्ण होना। परमेश्वर लोगों को यह प्रकटन कर कि वे पवित्र हैं, उनका नाम पवित्र बना देते हैं। लोग परमेश्वर का नाम उनका पालन करके और उपासना करके पवित्र बनाते हैं।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में लोग परमेश्वर के बारे में कैसे बात करते हैं? परमेश्वर को वर्णित करने के लिए वे किस शीर्षक या शब्द का उपयोग करते हैं?

यीशु प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर का राज्य आएगा। हम पिछले अंशों से जानते हैं कि परमेश्वर के राज्य का संदर्भ लोगों के दिलों में शासन करने वाले परमेश्वर से है। यह कुछ ऐसा था जो वर्तमान में हो रहा था, क्योंकि लोगों ने यीशु को प्रसिद्ध उद्धारकर्ता माना था। लेकिन यीशु इसके बारे में भी बात कर रहे हैं कि भविष्य में क्या आएगा, जब परमेश्वर सारी पृथ्वी पर अपना शासन स्थापित करेंगे। तब यीशु प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर प्रत्येक दिन के लिए आवश्यक भोजन प्रदान करेंगे। यहूदी संस्कृति में रोटी सभी भोजन का प्रतिनिधित्व करती है।

यीशु परमेश्वर से "हमारे पापों को क्षमा करें" की विनती करते हैं। यह उनके शिष्यों के लिए एक आदर्श है क्योंकि यीशु ने कभी पाप नहीं किए। ऋण शब्द आमतौर पर किसी व्यक्ति द्वार धन के कर्ज को दर्शाने का संदर्भ देता है, लेकिन कई बार यहूदी उसी बात का अर्थ पाप मानते हैं। किसी के पाप को क्षमा करने का अर्थ है कि परमेश्वर किसी के द्वारा किए गए बुरे कामों के लिए उन्हें दंडित न करने का चयन करते हैं। परमेश्वर उस व्यक्ति के अपराध या ऋण को रद्द करते हैं और उसके साथ ऐसा व्यवहार करते हैं जैसे कि उन्होंने कभी उनकी अवज्ञा नहीं की हो। यीशु का अर्थ है कि उनके अनुयायी विश्वासपूर्वक परमेश्वर से क्षमा की मांग कर सकते हैं क्योंकि पापी लोग भी दूसरों को क्षमा कर देते हैं।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में किसी ऐसे व्यक्ति के साथ किस तरह व्यवहार करते हैं जो किसी का कर्जदार हो। यदि कोई व्यक्ति उनके ऋण को वापस भुगतान करने में असमर्थ हो तो क्या होता है?

यीशु परमेश्वर से उनकी रक्षा करने के लिए या उन स्थितियों से दूर करने के लिए उनका मार्गदर्शन करने के लिए कहते हैं जो उन्हें पाप करने के लिए प्रलोभित करेगा। इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर स्वयं लोगों को प्रलोभित करते हैं।

यीशु उनकी प्रार्थना का अंत करते हैं और उनके शिष्यों को एक कहानी बताते हैं। यूनानी में "मान लो आप में से कोई एक" वास्तव में एक प्रश्न है। यीशु एक प्रश्न के साथ कहानी की शुरुआत करते हैं और उसके जवाब की उम्मीद नहीं करते

हैं। यह परिचय इस बात का संकेत देता है कि यीशु जो कहानी कह रहे हैं वह वास्तव में घटित नहीं हुई। यीशु अपने दोस्त से रोटी मांगने वाले एक व्यक्ति के बारे में बताते हैं। उस व्यक्ति के घर एक अप्रत्याशित आगंतुक आया जो उनके घर में रहने की योजना बना रहा था। उसके पास अपने मेहमान को देने के लिए पर्याप्त भोजन नहीं था। यहूदी संस्कृति में मेजबान अपने मेहमानों को भोजन कराने के लिए बाध्य थे। यीशु उनके शिष्यों से पूछते हैं कि क्या घर के अंदर का व्यक्ति यह कहकर जवाब देगा, "मुझे परेशान मत करो।" शिष्यों को पता था कि इसका जवाब "नहीं" है। घर के अंदर का दोस्त उस व्यक्ति को वह देता है जिसे उसने आधी रात के होते हुए भी मांगा। आमतौर पर यहूदी परिवार एक ही कमरे में चटाईयों पर सोते थे। रात में द्वार खोलना, जब सभी पहले से ही सो रहे हो, एक बड़ी असुविधा थी। यीशु कहते हैं कि भले ही घर के अंदर का व्यक्ति दोस्ती के कारण मदद नहीं करे, तो भी वह शर्मनाक रूप से कृत्य करने से बचने के लिए मदद ज़रुर करेगा। किसी ज़रुरतमंद पड़ोसी जिसे अपने मेहमान की मेजबानी करने के लिए भोजन की जरूरत हो, उसकी मदद न करना शर्म की बात होगी। यह पूरे शहर के लिए शर्म का कारण होगा।

यहां रुकें और अपनी टीम के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में एक मेजबान से अपने मेहमानों के लिए क्या प्रावधान करने की उम्मीद की जाती है? अपने मेहमानों को भोजन देने के लिए वे कहां से भोजन मांगने के लिए जा सकते हैं?

यीशु इस वाक्यांश का उपयोग "मैं आप से कहता हूं" जोर देने के लिए करते हैं। वे चाहते हैं कि उनके शिष्य ध्यान दें। यीशु अपने शिष्यों को बताते हैं कि शिष्य इस कहानी से क्या सीखें, उस विषय में वे क्या चाहते हैं। यीशु तीन अलग तरीकों से यह अर्थ देते हैं कि जब वे प्रार्थना के माध्यम से परमेश्वर से मांग करेंगे तो परमेश्वर उन्हें उनकी ज़रुरत के अनुसार देंगे। "दस्तक दो और द्वार आपके लिए खुलेगा" वाक्यांश परमेश्वर से मांगने की तुलना किसी द्वार पर दस्तक देने के लिए करता है। यहूदी संस्कृति में किसी के घर पहुंचने पर लोग उनके द्वार पर दस्तक देते थे। यीशु कहते हैं कि परमेश्वर द्वार खोलेंगे या दस्तक देने वालों की प्रार्थनाओं का जवाब देंगे।

यीशु एक मानवीय पिता और उसके बच्चे के दो उदाहरण देते हैं। यीशु प्रश्न पूछ कर ये उदाहरण देते हैं जिनके जवाब की उन्हें उम्मीद नहीं होती क्योंकि जवाब स्पष्ट है। अगर कोई बच्चा अपने मानवीय पिता से खाने के लिए कुछ अच्छा मांगे तो वह अपने बच्चे को सांप या बिच्छू की तरह कुछ हानिकारक नहीं देगा। सांप और बिच्छू खतरनाक होते थे और खाने के लिए अच्छे नहीं होते थे।

यदि आपके क्षेत्र में ये जानवर नहीं रहते हैं तो रुकें और सांप और बिच्छू की एक तस्वीर दिखाएं।

यीशु कहते हैं कि जो लोग पाप करते हैं उन्हें पता होता है कि उनके बच्चों को अच्छे उपहार कैसे देना चाहिए। तो परमेश्वर जो स्वर्गीय पिता है, उनके मांगने वालों को और भी अच्छे उपहार देने के लिए तत्पर है। स्वर्ग का मतलब वह स्थान है जहां परमेश्वर रहते हैं। परमेश्वर उनसे पूछने वालों को सबसे अच्छा उपहार देने के लिए तैयार हैं - उनकी अपनी आत्मा।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों को परिभाषित करना

लूका 11:1–13

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

इस सत्र में आप इस कथा के दृश्य बनाने में समूह की मदद करेंगे। आप कथा के दृश्यों, विन्यास और पात्रों को परिभाषित करने में समूह की मदद करेंगे।

इस कहानी के चार दृश्य हैं।

पहला दृश्य: यीशु प्रार्थना कर रहे हैं। यीशु प्रार्थना करना समाप्त करते हैं और एक शिष्य उनके पास आता है। शिष्य यीशु से उन्हें प्रार्थना करना सिखाने के लिए कहता है। यीशु उन्हें प्रार्थना का उदाहरण देते हैं।

दूसरा दृश्य: यीशु एक दोस्त से रोटी मांगने वाले व्यक्ति का उदाहरण देते हैं क्योंकि वह किसी की मेजबानी कर रहा होता है। भले ही यह असुविधाजनक हो, लेकिन वह व्यक्ति उसका दोस्त जो मांगता है, उसे देता है।

तीसरा दृश्य: यीशु जिस उदाहरण को देते हैं उसका एक निष्कर्ष देते हैं। यीशु इस निष्कर्ष को तीन अलग तरीकों से दोहराते हैं।

चौथा दृश्य: यीशु बताते हैं कि पापी पिता भी अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देते हैं। यीशु कहते हैं कि स्वर्ग में पिता उन लोगों को जो उनसे पूछते हैं, पवित्र आत्मा देंगे।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- यीशु के शिष्य
- रोटी मांगने वाला व्यक्ति
- आगंतुक
- मित्र जिसके पास रोटी है
- रोटी वाले मित्र का परिवार
- मांगने, ढूंढने और दस्तक देने वाला व्यक्ति
- एक पिता
- मछली और अंडा मांगने वाला एक बच्चा

इस सत्र में, समूह स्टोरीबोर्ड ले, कथा और उसके घटनाक्रम को कल्पांकित करने के लिए रेखाचित्र बनाए या इस तरह के किसी रचनात्मक फेरबदल (ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप इधर उधर रख सकते हैं जैसे पत्थर, लकड़ियां, बच्चों के खिलौने) का इस्तेमाल करे।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि शिष्य प्रार्थना करने के लिए कोई सूत्र नहीं बल्कि ऐसी एक प्रार्थना के बारे में पूछ रहे होते हैं जो यीशु के शिष्यों के लिए विशिष्ट हो। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने भी अपने शिष्यों को एक विशिष्ट प्रार्थना सिखाई थी।

अधिक संभावना इस बात की है कि यीशु एक एकांत क्षेत्र में प्रार्थना कर रहे होते हैं। यीशु प्रार्थना करना समाप्त करते थे और उनका एक शिष्य उनसे शिष्यों को प्रार्थना करना सिखाने के लिए कहता है।

जब यीशु कहते हैं "आपको प्रार्थना करनी चाहिए" तो यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु आप का प्रयोग बहुवचन में करते हैं। अभिनय करते समय एक ऐसे शब्द, हाथ के संकेत या कृत्य का उपयोग करें जो यह दर्शाता हो कि यह सभी शिष्यों के लिए लागू होता है।

उसके बाद यीशु उनके लिए प्रार्थना कैसे करते हैं इसका आदर्श देते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि जब यीशु कहते हैं हमें हमारे पाप क्षमा करें तो यीशु व्यक्तिगत तौर पर क्षमा नहीं मांग रहे हैं क्योंकि यीशु पाप नहीं करते थे।

जब यीशु अपने अनुयायियों को प्रार्थना करना सिखाते हैं तो पिता शब्द पर दिए गए जोर को याद करना महत्वपूर्ण है। यीशु प्रार्थना को बेहतर ढंग से समझाने के लिए पितृत्व के उदाहरण का उपयोग करते हैं। यीशु के अनुयायी परमेश्वर को "पिता" कह सकते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि इस प्रार्थना के तीन भाग हैं। यीशु पिता को सम्मान देते हैं। यीशु राज्य को जल्द ही आने के लिए कहते हैं। यह राज्य परमेश्वर के राज्य के वर्तमान प्रसार का उल्लेख करता है, लेकिन भविष्य का भी जब परमेश्वर सभी लोगों पर शासन करेंगे। अंत में यीशु तीन मानवीय आवश्यकताओं का उल्लेख करते हैं - भोजन, क्षमा और प्रलोभन के खिलाफ सुरक्षा।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि दर्शक यहूदी आतिथ्य नियमों के बारे में जानते हैं। एक मेजबान को एक मेहमान के लिए कुछ खाने के लिए होना आवश्यक था।

यीशु द्वारा बताए गए कहानी के पहले भाग को संभवत: टीम पुन: कालक्रमित करना चाहे। कल्पना करें कि एक मित्र अपने शिष्यों में से एक से मिलने के लिए आता है। शिष्य क्षेत्र के अपने एक मित्र के पास जाता है और बताता है कि उनके यहां एक मेहमान आया है। शिष्य वर्णित करता है कि उसके पास खाने के लिए कुछ नहीं है। शिष्य तीन रोटी उधार लेने की मांग करता है।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि आमतौर पर पूरा परिवार एक ही कमरे में चटाई पर सोता है। रात में द्वार खोलना, जब सभी पहले से ही सो रहे थे किसी के लिए एक बड़ी असुविधा थी।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु मांगने, ढूंढने और दस्तक देने के लिए आदेश नहीं दे रहे हैं, बल्कि ऐसा करने के लिए एक निमंत्रण दे रहे हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु यह दर्शाते हैं कि एक पिता अपने बच्चों की देखभाल कैसे करेगा।

अंत में यीशु बताते हैं कि किस तरह परमेश्वर एक स्वर्गिक पिता हैं।

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को एक मूर्त आकार देना

लूका 11:1–13

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

इस सत्र में मण्डली, कहानी को नाटक के रूप में पेश करेगी।

इस कहानी के चार दृश्य हैं।

इस कथा के पात्रों में शामिल हैं:

- यीशु
- यीशु के शिष्य
- रोटी मांगने वाला व्यक्ति
- आगंतुक
- मित्र जिसके पास रोटी है
- रोटी वाले मित्र का परिवार
- मांगने, ढूंढने और दस्तक देने वाला व्यक्ति
- एक पिता
- मछली और अंडा मांगने वाला एक बच्चा

मण्डली से कहानी का दो बार अभिनय करवाएं। पहली बार टीम से बिना रूके कहानी का अभिनय करवाएं। मण्डली जब दूसरी बार कथा को अभिनीत करती है तब उन्हें कहानी के विभिन्न बिंदुओं पर रोकें।

जब मण्डली कथा को पहली बार पेश करती है, तब कथा के संवाद, प्रवाह, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

यह सुनिश्चित करें कि टीम यीशु द्वारा शुरू खुद ही प्रार्थना करने का अभिनय करे।

यह सुनिश्चित करें कि केवल एक ही शिष्य होता है जो यीशु से शिष्यों को प्रार्थना करना सिखाने के लिए कहता है।

यह सुनिश्चित करें कि टीम यीशु द्वारा अपने शिष्यों को प्रार्थना का आदर्श देने का अभिनय करे। सुनिश्चित करें कि यह समझा जाए कि यीशु अपने पापों के लिए क्षमा नहीं मांग रहे होते हैं क्योंकि उन्होंने कभी पाप नहीं किया था। इसके बजाय, यीशु अपने शिष्यों को क्षमा किस तरह मांगी जाए यह दिखा रहे हैं।

यह सुनिश्चित करें कि टीम रोटी वाले व्यक्ति का, और उसका पूरा परिवार जमीन पर चटाई पर इस तरह फैल कर सोया होता है कि उसके लिए रोटी देना मुश्किल हो जाता है, इनका अभिनय करे।

यह सुनिश्चित करें कि टीम एक पिता के पास अपने ही बच्चे को मछली या सांप देने का विकल्प मौजूद हो, इसका अभिनय करे। पिता मछली देते हैं। इसी तरह एक पिता के पास अंडा या बिच्छू देने के विकल्प होते हैं। पिता अपने बच्चे को अंडा देते हैं।

दूसरी बार जब मण्डली इस कहानी पर अभिनय करे, तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोक दें।

यीशु द्वारा प्रार्थना किए जाने का अभिनय करें। एक शिष्य यीशु के पास आता है। शिष्य ने कहा कि यूहन्ना ने अपने शिष्यों को प्रार्थना करना सिखाया था। तो वे यीशु से उन्हें प्रार्थना करना सिखाने के लिए कहते हैं। **अभिनय को बंद करें।** शिष्यों की भूमिका निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मैं जानना चाहता हूं कि परमेश्वर से बात किस तरह करना चाहिए।" "यीशु हमेशा प्रार्थना करते रहते हैं। हम यीशु की तरह होना चाहते हैं और "यीशु ने हमें अभी तक प्रार्थना करना क्यों नहीं सिखाया?" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु उन्हें बताते हैं कि उन्हें किस तरह प्रार्थना करनी चाहिए।

अभिनय को बंद करें। यीशु का पात्र निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मुझे खुशी है कि वे सीखना चाहते हैं।" "उन्हें प्रार्थना के लिए सही रवैया जानने की जरूरत है।" और "मैं चाहता हूं कि वे यह जानकर विश्वास महसूस करें कि परमेश्वर उनके पिता हैं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु उन्हें एक कहानी कहकर प्रार्थना के बारे में अधिक शिक्षा देते हैं। वे अपने शिष्यों से यह कल्पना करने को कहते हैं कि उनमें से एक के पास एक मित्र आने वाला है और शिष्य अपने क्षेत्र में अपने मित्र के पास जाता है। शिष्य बताता है कि उसके पास अपने आगंतुक के लिए कोई भोजन नहीं है। शिष्य उसके मित्र से तीन रोटी मांगता है।

अभिनय को बंद करें। शिष्य का पात्र निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मैं व्याकुल हूं, मेरे पास अपने मेहमान के लिए कोई भोजन नहीं है।" "मुझे शर्म आती है, अगर मैं उन्हें नहीं खिलाऊंगा, तो मेरे मेहमान मेरे बारे में क्या सोचेंगे?" और "मुझे उम्मीद है। मुझे लगता है कि मेरा मित्र मेरी मदद कर सकेगा।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

शिष्य का मित्र उस घर में से जवाब देता है कि दरवाजा बंद है और हर कोई बिस्तर में है। मित्र कहता है कि वह मदद नहीं कर सकता। शिष्य जब तक उसे न मिल जाए तब तक रोटी मांगता रहता है, उसी समय यीशु कहानी बता रहे होते हैं कि यदि वह लंबे समय तक दस्तक देता रहे तो भले ही दोस्ती के कारण नहीं बल्कि शर्मनाक काम न करना चाहने के कारण शिष्य रोटी दे देगा।

अभिनय को बंद करें। दोस्त का किरदार निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस करती हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मुझे गुस्सा आता है, यह एहसान मांगने का समय नहीं है।" "कुठित हूं।" मेरा परिवार पहले से ही सो रहा है, ये उन्हें जगाने वाला है।" और "अगर मैं इस दोस्त की मदद नहीं करता हूं, तो आगंतुक यह सोचेगा कि हम बुरे मेजबान हैं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु बताते हैं कि एक व्यक्ति को मांगते रहना, ढूंढते रहना और दस्तक देते रहना चाहिए क्योंकि वह व्यक्ति प्राप्त करेगा, खोज लेगा, और दरवाज़ा खोल दिया जाएगा।

अभिनय को बंद करें। शिष्यों की भूमिका निभाने वाले अभिनेताओं से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप ऐसी

बातें सुन सकते हैं जैसे "मुझे खुशी हो रही है कि हम यह पूछ सकते हैं।" "परमेश्वर मेरे पिता मेरे प्रति बहुत धैर्यवान होंगे।", और "मुझे सम्मानित महसूस होता है कि परमेश्वर मेरी प्रार्थनाओं को सुनते हैं।" अभिनय को फिर से शुरू करें।

यीशु एक पिता के व्यवहार को यह कहते हुए बताते हैं कि यदि कोई बच्चा मछली या अंडा मांगता है, तो कोई मानवीय पिता जो पाप करता है, वह भी सांप या बिच्छू नहीं देगा। यहां तक कि वे भी अच्छे उपहार देना जानते हैं। जो कोई उनसे मांगता है उसे स्वर्गिक पिता पवित्र आत्मा अवश्य ही देंगे।

अभिनय को बंद करें। यीशु का पात्र निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप ऐसी बातें सुन सकते हैं जैसे "मैं प्रोत्साहित हूं कि वे प्रार्थना के बारे में सीखना चाहते हैं।" "मैं चाहता हूं कि मेरे अनुयायी यह जानें कि परमेश्वर उनके भी पिता हैं।" और "मैं चाहता हूं कि वे यह समझें कि पवित्र आत्मा परमेश्वर से प्राप्त की जाने वाली सर्वश्रेष्ठ भेंट है।"

अंतराल को भरना

कुछ आवश्यक जानकारी

लूका 11:1–13

कथा को एक बार सबसे आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में सुनें।

यीशु परमेश्वर के साथ **प्रार्थना** या संवाद कर रहे हैं। प्रार्थना का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। प्रार्थना शब्द प्रधान शब्दावली में है। यीशु अपने **शिष्यों** या अनुयायियों के साथ हैं। शिष्य का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। शिष्य शब्द प्रधान शब्दावली में हैं।

शिष्य यीशु को **प्रभु** कहते हैं और उनसे प्रार्थना कैसे करना चाहिए यह पूछते हैं। प्रभु किसी ऐसे व्यक्ति के लिए सम्मान की उपाधि है जिसके पास अधिकार हो। प्रभु का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। प्रभु शब्द प्रधान शब्दावली में हैं।

यीशु प्रार्थना करते समय अपने शिष्यों को पालन करने का एक आदर्श प्रदान करते हैं। वे परमेश्वर पिता को पुकारते हैं और कहते हैं कि आपका नाम पवित्र हो। **पवित्र** होने का **अर्थ** पावन किए जाने से है। जब पवित्र का संदर्भ परमेश्वर से हो तो इसका अर्थ नैतिक रूप से पूर्ण होने और उनके सामर्थ्य और प्रताप को संदर्भित करता है। पवित्र का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जैसा कि आपने पिछले अंशों में किया है। पवित्र शब्द प्रधान शब्दावली में है।

यीशु प्रार्थना करते हैं कि आपका राज्य आए। राज्य **परमेश्वर के राज्य या** अपने लोगों के दिलों में शासन करने वाले परमेश्वर को संदर्भित करता है। विशेष रूप से यीशु अपने मृत्यु और पुनरूत्थान के बाद के भविष्य का उल्लेख कर रहे हैं। एक दिन यीशु परमेश्वर के पूर्ण राज्य में पूरी पृथ्वी पर वापस आकर शासन करेंगे। और कोई कष्ट या बुराई नहीं होगी और सभी लोग उनकी आज्ञा मानेंगे। परमेश्वर के राज्य का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पिछले अंशों में किया है। परमेश्वर का राज्य प्रधान शब्दावली में है।

जब यीशु कहते हैं कि हमें हमारी दैनिक **रोटी** दें, तो उसका अर्थ भोजन है। यहूदी संस्कृति में रोटी शब्द का उपयोग सामान्य रूप से भोजन के लिए किसा जाता था क्योंकि रोटी अक्सर खाई जाती थी।

यीशु प्रार्थना करते हैं कि "हमें हमारे **पापों** या परमेश्वर के प्रति अवज्ञा के लिए **क्षमा करें**।" जब किसी के पात्र होने पर भी दंडित न करने का चयन करते हैं तो परमेश्वर उन्हें क्षमा करते हैं। परमेश्वर के साथ उन सभी लोगों को क्षमा उपलब्ध है जो बुराई का रास्ता छोड़कर परमेश्वर की ओर मुड़ जाते हैं। परमेश्वर के तब उनके संबंध बहाल हो जाते हैं। यहूदी संस्कृति में जब कोई पाप करता है या किसी अन्य व्यक्ति के प्रति कुछ गलत करता है, तो वे उस व्यक्ति के प्रति कर्जदार होते हैं। जब कोई व्यक्ति दूसरे को माफ करता है, तो वह व्यक्ति जिसे माफ कर दिया जाता है, वह अब कर्जदार नहीं रहता है। क्षमा और पाप का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले भी किया है। दोनों ही शब्द प्रधान शब्दावली में हैं।

क्षमा को बेहतर समझने के लिए अपनी अनुवाद टीम से एक ऐसे दृश्य का अभिनय कराने की कोशिश करें जहां कोई किसी को क्षमा करता है। देखें कि क्षमा को दिखाने के लिए वे क्या कृत्य करते हैं। क्राफ़्टर्स से कहें कि वे दृश्य में हर पात्र की भावदशाओं को समझाएँ।

यीशु अपने पड़ोसी से तीन रोटी मांगने वाले एक व्यक्ति के बारे में **एक** कहानी बताते हैं। यहां रोटी का उल्लेख सपाट पाव से है जो आमतौर पर भोजन का मुख्य हिस्सा थे। यह सामान्य रूप से भोजन को संदर्भित नहीं करता है।

यीशु कहते हैं कि घर का व्यक्ति द्वार पर आए व्यक्ति को उसके **साहस** और बेशर्मी के कारण जो उसने मांगा था वह दे देगा। कुछ विद्वान सोचते हैं कि यह शब्द दस्तक देने वाले व्यक्ति पर और दस्तक देने की उसकी निरंतरता पर लागू होता है। हालांकि, यहूदी संस्कृति के अनुसार इस बात की अधिक संभावना है कि बेशर्मी घर में रहने वाले व्यक्ति को बयान कर रही है क्योंकि वह लज्जा शर्मिंदा होने से बचना चाहता था। एक व्यक्ति के आतिथ्य का प्रतिनिधित्व पूरे यहूदी समुदाय के आतिथ्य का प्रतिनिधित्व करता है। तो अगर अंदर का व्यक्ति अपने दोस्त की रोटी नहीं देता तो उसके शहर के सभी लोग उसे शर्मिंदगी के कारण के रूप में देखते। अपने मित्र को उसके मेहमान के अच्छे मेजबान होने में मदद न करके वह शर्म को आमंत्रित करेगा।

यीशु कहते हैं कि पाप करने वाले लोग भी अपने बच्चों को**, जब** वे खाना मांगते हैं तो सांप और **बिच्छू** जैसे हानिकारक उपहार नहीं देते। सांप जहरीले होते थे और बिच्छू छोटे और बख्तरबंद प्राणी होते हैं जिनकी पूंछ पर एक डंक होता है। दोनों जानवर खतरनाक होते हैं और खाने के लिए अच्छे नहीं होते।

रुकें और यदि आपने पहले से ही ऐसा नहीं किया है तो अपनी टीम को सांप और बिच्छू की तस्वीर दिखाएं।

यीशु मानवीय पिता की तुलना स्वर्गिक पिता या **स्वर्ग** में रहने वाले परमेश्वर से करते हैं। स्वर्ग वह स्थान है जहां परमेश्वर रहते हैं। स्वर्ग शब्द प्रधान शब्दावली में है। यीशु कहते हैं कि परमेश्वर **पवित्र आत्मा** या परमेश्वर की आत्मा उसे देंगे जो मांगते हैं। पवित्र आत्मा का अनुवाद उसी तरह करना सुनिश्चित करें जिस तरह आपने पहले किया है। पवित्र आत्मा प्रधान शब्दावली में है।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

लूका 11:1–13

Audio Content

webm zip (4190320 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (7304587 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

लूका 11:14–32

सुनना और मनन करना

लूका 11:14–32

लूका 11:14–32 को सुने और इसे अपने दिल में बसा ले। इस भाग को तीन बार सुने (यदि संभव हो तो तीन अलग अनुवादों में इसे पढ़ें)। फिर एक समूह के रूप में दिए गए प्रश्नों पर चर्चा करें:

- आपको इस कहानी में क्या पसंद आया है?
- आपको क्या पसंद नहीं आया या समझ में नहीं आया है?
- यह कहानी हमें यशु के बारे में क्या बताती है?
- यह कहानी हमें लोगों के बारे में क्या बताती है?
- यह कहानी हमारे रोज के जीवन को कैसे प्रभावित करती है?
- आप ऐसे किस व्यक्ति को जानते हैं जिसे इस कहानी को सुनने की जरूरत है?

मंच तैयार करना

मंच तैयार करना

लूका 11:14–32

समझने में आसान ऐसे संस्करण में एक बार इस भाग को सुने।

यीशु और उनके शिष्य या अनुयाई यरूशलेम की ओर यात्रा कर रहे हैं। पिछली कहानी में, यीशु ने अपने शिष्यों को प्रार्थना के बारे में सिखाया। अब, यीशु भीड़ में के एक आदमी में से दुष्टात्मा को निकालते हैं और लोग सोचते हैं कि वह शैतान की शक्ति का उपयोग कर रहे हैं। अन्य लोग संकेत मांगते हैं। तब यीशु एक कहानी सुनाते हैं और उनकी सोच को सुधारते है जिससे यह पता चलता है कि वह शैतान से अधिक शक्तिशाली है। यीशु योना का चिन्ह देते हैं।

लूका हमें यह नहीं बताता की यह कहानी कब और कहां घटित हुई है। एक दुरात्मा या दुष्टात्मा थी जिसने एक मनुष्य को अपने काबू में कर रखा था और उसे गूंगा या बोलने में असमर्थ बना रखा था। यीशु ने दुष्टात्मा को बाहर निकाला और वह आदमी फिर से बोलने लगा। भीड़ में शामिल लोग तरह-तरह की प्रतिक्रियाएं दे रहे थे। पहले की तरह, कुछ लोग आश्चर्यचकित हो गए लेकिन दूसरे लोगों ने कहा कि यीशु दुष्टात्मा को बाहर निकालने के लिए बालजबुल या शैतान की शक्ति का उपयोग कर रहे हैं। इसका अर्थ यह होगा की यीशु एक झूठे भविष्यवक्ता थे और परमेश्वर की शक्ति का उपयोग नहीं करते थे। भीड़ में अन्य लोग यीशु को परखना चाहते थे या उसे गलत साबित करने की कोशिश करना चाहते थे। उन लोगों ने वैसा करने के लिए स्वर्ग से या उस स्थान से जहां परमेश्वर निवास करते हैं कोई संकेत मांगा। इस मामले में, स्वर्ग स्वयं परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करता है। वह लोग चाहते थे कि उनकी शक्ति परमेश्वर की ओर से है यह साबित करने के लिए यीशु चमत्कार करें।

रुके और अपने समूह के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में आध्यात्मिक दुनिया में सबसे शक्तिशाली कौन है? उस समय की कहानी बताओ जब किसी को किसी चीज के बारे में ईश्वर से संकेत मिला हो। लोग किस प्रकार की चीजों को ईश्वर का "संकेत" मानते हैं?

यीशु जानते थे कि लोग क्या कह रहे थे और उनके अनकहे इरादे क्या थे । यीशु ने यह कह कर अपनी बाजू रखी कि यदि वह शैतान की शक्ति का उपयोग कर रहे होते तो शैतान अपने ही दुष्टात्माओं से लड़ रहा होता क्योंकि शैतान सभी दुष्टात्माओं का नेता है। यह विभाजन शैतान के घर या राज्य को नष्ट करने वाला होता। जब यशु पूछते हैं कि शैतान का राज्य कैसे बना रह सकता है?" तब यीशु यह पूछ रहे हैं कि शैतान का शासन कैसे बना रह सकता है। यीशु की यह उम्मीद नहीं थी कि उनके सवाल का जवाब दिया जाए।

यीशु कहते हैं कि यदि वह शैतान की शक्ति का उपयोग कर रहे थे तो उन पर आरोप लगाने वालों को यह बताना जरूरी होगा कि वह अपने अनुयायियों पर आरोप क्यों नहीं लगा रहे थे जो शैतान की शक्ति का उपयोग करके दुष्टात्माओं को निकालते थे। मत्ती के अनुसार, यीशु पर आरोप लगाने वाले फरीसी या धार्मिक नेता थे। यीशु शायद धार्मिक नेताओं के अनुयायियों की बात कर रहे थे। वह अनुयायी दुष्टात्माओं को उस तरह से निकाल रहे है जिस तरह से धार्मिक नेताओं ने उन्हें दिखाया है और यीशु भी ऐसा ही कर रहे हैं। फिर यदि नेता कहते हैं कि यह शैतान की शक्ति से है तो उनके अनुयाई धार्मिक नेताओं का भी उसी तरह से न्याय करेंगे जैसे नेता यीशु का न्याय कर रहे हैं।

रुके और अपने समूह के साथ चर्चा करें। आपके संस्कृति में किस प्रकार के लोगों के पास दुष्टात्माओं पर अधिकार है?

यीशु कहते हैं कि अगर वह परमेश्वर की उंगली से दुष्टात्माओं को बाहर निकाल रहे हैं तो परमेश्वर का राज्य लोगों के करीब आ गया है। परमेश्वर की उंगली यह सामान्य रूप से इस्तेमाल किया जाने वाला एक मुहावरा था जिसका अर्थ है "परमेश्वर की कार्यशील शक्ति।" यीशु कह रहे थे कि जिन लोगों से वह बात कर रहे थे उनके दिलों में परमेश्वर ने पहले से ही राज्य करना शुरू कर दिया है। परमेश्वर यीशु के द्वारा अपनी शक्ति और अधिकार का उपयोग कर रहे थे और यही कारण था कि यीशु दुष्टात्मा को निकाल सके।

यीशु अपने खुद के और शैतान के बारे में सिखाने के लिए दो शक्तिशाली पुरुषों के रूप में बताते हैं। यीशु शैतान की तुलना हथियारों का कवच पहने हुए एक शक्तिशाली व्यक्ति से करते हैं। वह उन लोगों की रक्षा करता है जिन पर उसका अधिकार है।

रुके और शस्त्रधारी कवच की एक तस्वीर दिखाएं अगर यह आपके संस्कृति में एक सामान्य संकल्पना नहीं है तो।

यीशु अपनी तुलना एक बलवान व्यक्ति से करते हैं जो कि दूसरे बलवान व्यक्ति से लड़कर जीत जाता हैं। वह उस बलवान व्यक्ति के कवच और हथियार छीन लेता है और उस

पराजित शत्रु की लूट या संपत्ति को बांट देता है। उसी तरह, यीशु लोगों पर से शैतान की शक्ति को छीन लेते हैं। दुष्टात्माओं को निकालने के द्वारा येशु ने दिखा दिया कि वह दुष्टात्माओं और उनके नेता शैतान से अधिक शक्तिशाली थे। दुष्टात्मा के जाने के बाद यीशु उस व्यक्ति के लिए आशीष लेकर आते हैं। इस तुलना का उपयोग करने में यीशु का तात्पर्य यह है कि जो कोई यीशु का मित्र नहीं है वह शैतान का मित्र है। यीशु बटोरने और बिखेरने के उदाहरण का भी उपयोग करते हैं उस बात पर से वह यह कहते हैं कि जो लोग दूसरे लोगों को परमेश्वर के पास इकट्ठा लाने में उनकी मदद नहीं करते हैं वह वास्तव में उन्हें परमेश्वर से दूर धकेल रहे हैं।

फिर यीशु ने दुष्टात्माओं से छुड़ाए गए लोगों के बारे में बात की। जब एक दुष्टात्मा एक व्यक्ति को छोड़कर चली जाती है, तो वह सुनसान जगहों पर भटकती रहती है और वह चैन से रह नहीं पाती। लेकिन उसके बजाय, वह दुष्टात्मा उस व्यक्ति के पास लौटना चाहती है जिसे उसने पहले काबू में रखा था। यीशु एक साफ-सुथरे घर की तुलना एक ऐसे व्यक्ति से करते हैं जो आध्यात्मिक रूप से खाली है और आत्मा के लिए उपलब्ध है, चाहे वह अच्छी या बुरी आत्मा हो। जब वह दुष्टात्मा उस व्यक्ति के पास लौटती है जिसमें वह पहले रहती थी और उस व्यक्ति को आध्यात्मिक रूप से खाली पाती है, तब वह जाती है और सात और आत्माएं ले आती है जो उससे भी अधिक दुष्ट हैं। वह सभी आठ आत्माएं उस व्यक्ति को अपने काबू में ले लेती है या घर में रहती है और वह उस ग्रस्त व्यक्ति के साथ और भी बुरी चीजें होने देती है।

रुके और अपने समूह के साथ चर्चा करें। आपकी संस्कृति में लोग आत्माओं के बारे में क्या विश्वास करते हैं? आत्माएं कहां रहती है? आत्माएं किस प्रकार की होती है और वह लोगों से क्या करवाती है?

जब यशु सिखा रहे थे तब एक स्त्री ने जोर से पुकार कर कहा कि यीशु की माता धन्य है, या उन पर परमेश्वर का अनुग्रह है। वह यीशु की स्तुति कर रही थी। यीशु ने उस बात से इनकार नहीं किया लेकिन क्या अधिक महत्वपूर्ण था यह सम्मान पूर्वक बताकर उसे सही किया - "वह लोग जो परमेश्वर के संदेश को सुनते हैं और उसका पालन करते हैं वह धन्य है।"

अधिक से अधिक लोग यीशु को सुनने आते थे। जिन्होंने उससे वह परमेश्वर की ओर से है यह प्रमाणित करने के लिए संकेत मांगा, यीशु ने उन लोगों को दुष्ट कह कर जवाब दिया। भले ही यीशु उनके लिए कई चमत्कार कर चुके थे, फिर भी लोगों ने विश्वास नहीं किया कि वह परमेश्वर की ओर से आए हैं। यीशु कहते हैं कि परमेश्वर उन्हें उनके अविश्वास के लिए दंड देंगे। यीशु योना का चिन्ह देते हैं। योना परमेश्वर का भविष्यवक्ता था जो यीशु से बहुत पहले आया था। एक बड़ी मछली ने उसे निगल लिया था, परंतु तीन दिन के बाद परमेश्वर ने ऐसा होने दिया कि वह मछली योना को जमीन पर उगल दे। मत्ती का सुसमाचार यह कहता है कि योना का अनुभव, भविष्य में यीशु के साथ जो होगा उसकी तुलना है। यीशु मरेंगे और फिर से जीवित होने से पहले तीन दिन तक गाडे जाएंगे। योना के अनुभव ने नीनवे के लोगों के लिए यह साबित किया कि उस का संदेश परमेश्वर की ओर से था। यीशु योना की तुलना अपने आप से याने मनुष्य के पुत्र से करते हैं। परमेश्वर ने योना को मरने से बचाया और परमेश्वर यीशु को फिर से जीवित करके बचाएंगे। यह चमत्कार वह संकेत थे कि योना और यीशु ने परमेश्वर के अधिकार से बातें की थी।

यीशु ने उन्हें याद दिलाया कि शीबा की रानी सुलेमान के शब्दों को केवल सुनने और उसका जवाब देने के लिए परदेश से आई थी। सुलेमान एक यहूदी राजा था जो अपनी बुद्धिमानी के लिए जाना जाता था। उस रानी को अपने देश से बहुत दूर जाना पड़ा था।

रुके और अपने समूह को इज़राइल, नीनवे और शिबा का नक्शा दिखाएं।

यीशु कहते हैं की न्याय के दिन, दुनिया के अंत के समय में, जब परमेश्वर हर किसी का न्याय करेंगे तब रानी और नीनवे के लोग उन लोगों पर दोष लगाने के लिए खड़े होंगे जिन्होंने यीशु पर विश्वास नहीं किया था। यीशु के समय के लोगों को परमेश्वर को और भी बड़े तरीके से स्वयं को प्रकट होते देखने का सौभाग्य मिला था, परंतु फिर भी उन्होंने विश्वास नहीं किया।

दृश्यों को परिभाषित करना

दृश्यों का वर्णन करना

लूका 11:14–32

समझने में आसान ऐसे संस्करण में एक बार इस भाग को सुने।

इस सत्र में, आप समूह को इस कहानी को दृश्य रूप देने में मदद करेंगे। आप समूह को कहानी के दृश्य, बनावट और पात्रों का वर्णन करने में मदद करेंगे।

इस कहानी में चार दृश्य है।

पहला दृश्य: यीशु और उनके शिष्य यरूशलेम की और यात्रा कर रहे है। तब एक भीड़ जमा हो जाती है। एक दुष्टात्मा मनुष्य को अपने काबू में कर लेती है और उसे बोलने में असमर्थ कर देती है। यीशु ने उस दुष्टात्मा को बाहर निकाला और वह मनुष्य फिर से बोलने लगता है। भीड़ में तीन अलग-अलग प्रतिक्रियाएं होती है।

दूसरा दृश्य: यीशु उन लोगों को जवाब देते हैं जो सोचते हैं कि यीशु शैतान की शक्ति का उपयोग कर रहे हैं। यीशु दो शक्तिशाली व्यक्तियों का उदाहरण देते हैं।

तीसरा दृश्य: यीशु उन लोगों के बारे में बात करते हैं जो दुष्टात्माओं के काबू में हुआ करते थे। एक दुष्टात्मा एक व्यक्ति

में से जंगल में चली जाती है। वह उस व्यक्ति के पास लौटती है जिसे उसने काबू में रखा था, वह उसे साफ सुथरा पाती है, फिर सात और दुष्टात्माओं को वह उस व्यक्ति के पास ले आती है। एक महिला चिल्लाती है और यीशु की शिक्षाओं की प्रशंसा करती है। यीशु उसे बताते हैं कि क्या अधिक महत्वपूर्ण है।

चौथा दृश्य: यीशु योना के चिन्ह के बारे में बात करते हैं। योना नीनवे के लोगो के पास जाता है और वह उसका संदेश सुनते हैं। शीबा की रानी सुलेमान के पास जाती है और वह उसका संदेश सुनती है। यीशु लोगों से बात करते हैं परंतु वह उसके संदेश को नहीं सुनते।

इस कहानी के पात्रों में यह लोग शामिल है:

- यीशु
- शिष्य
- भीड़
- दुष्टात्मा ग्रसित आदमी
- दुष्टात्मा
- अनेक धार्मिक नेता
- धार्मिक नेताओं के अनुयायी
- जो संकेत मांग रहे हैं वह लोग
- शैतान
- आठ दुष्टात्माएं
- वह मनुष्य जिसके पास दुष्ट आत्मा लौटती है
- पुकारने वाली स्त्री
- नीनवे के लोग
- योना
- सुलेमान
- शीबा की रानी

इस सत्र में कहानी और उसमें होने वाली गतिविधियों को दृश्य में लाने के लिए संभव चित्र बनाने के लिए बोर्ड बनाएं, उस पर चित्र बनाएं या कुछ प्रकार की वस्तुएं (ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप इधर-उधर हिला सकते हैं जैसे छोटे पत्थर, छडिया, बच्चों के खिलौने) का उपयोग करें।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि दुष्टात्मा के कारण मनुष्य बोल नहीं सकता है।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि दूसरा दृश्य यीशु के साथ शुरू होता है, यीशु जानते है कि लोग क्या सोच रहे हैं। यीशु उन्हें समझाते हैं कि एक घर या राज्य को अपने आपके विरुद्ध विभाजित नहीं किया जा सकता हैं। फिर यीशु "अब" जैसे शब्द का उपयोग यह दिखाने के लिए करते हैं कि वह विषय बदल रहे हैं। यीशु बोलते हैं कि यदि वह सोचते हैं कि वह दुष्टात्माओं को निकालने के लिए शैतान की शक्ति का उपयोग कर रहे है तो उन्हें भी दुष्टात्माओं को निकालने के लिए किसी प्रकार की शक्ति का उपयोग करना होगा। वह शक्ति कौन प्रदान कर रहा है जिसका उपयोग वे दुष्टात्माओं को निकालने के लिए कर रहे हैं? दुष्टात्माओं को निकालने वाले धार्मिक नेताओं के अनुयायी यह प्रमाणित करेंगे की धार्मिक नेता यीशु के बारे में जो कहते हैं वह गलत है। फिर यीशु बात को बदलने वाले शब्द के साथ एक बात पर आते हैं और कहते हैं: लेकिन यदि मैंने परमेश्वर की शक्ति से दुष्टात्माओं को निकाला है तो परमेश्वर का राज्य आ गया है।

यहां रुके और यीशु के तर्क को सुनें। आप अपनी भाषा में कैसे दिखाते हैं कि तर्क में कोई नई बात कह रहा है?

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि जब यीशु दो शक्तिशाली व्यक्तियों के बारे में बात करते हैं तो वह शैतान की तुलना स्वयं से कर रहे हैं। यीशु का उदाहरण दो प्रतिस्पर्धी राज्यों, शैतान के राज्य और परमेश्वर के राज्य की बात करता है। शैतान को शैतानी ताकतों के सेनापति के रूप में चित्रित किया गया है और यीशु को युद्ध के मैदान में पराजित करने वाले के रूप में चित्रित किया गया है, जो उसकी संपत्ति को लूट रहा है। यीशु दिखाते हैं की अंत में परमेश्वर के राज्य या घर की जीत होगी।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि जो लोग संकेत माँगते हैं वे यीशु की परीक्षा लेना चाहते हैं। वे वास्तव में विश्वास नहीं करते कि यीशु परमेश्वर की शक्ति का उपयोग कर रहे हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु एक व्यक्ति के अंदर की तुलना एक घर से करते हैं। यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर के आत्मा का घर नहीं है तो वह व्यक्ति दुष्टात्माओं का घर बन सकता है।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है की इससे पहले कि जब परमेश्वर ने मछली को तट पर योना को उगलने के लिए प्रेरित किया योना ने समुद्र के तल पर एक बड़ी मछली के अंदर तीन दिन बिताए। भविष्य में, परमेश्वर द्वारा यीशु को फिर से जीवन देने से पहले यीशु तीन दिनों तक कब्र में रहेंगे। यह योना की निशानी है।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि नीनवे के लोग और शीबा की रानी अन्यजाति या गैर-यहूदी थे। नीनवे के लोगों और शीबा की रानी के बारे में बात करने के लिए यीशु उसी विवरण का उपयोग करते हैं। दोनों ही मामलों में वे न्याय के लिए उठेंगे और यीशु कहते हैं यहां कोई और उनसे महान है।"

पाठ को मूर्त आकार देना

पाठ को मूर्त रूप देना

लूका 11:14–32

समझने में आसान ऐसे संस्करण में एक बार उस भाग को सुनें।

इस सत्र में समूह कहानी का नाट्य रूपांतरण करेगा।

इस कहानी में चार दृश्य है।

इस कहानी के पात्रों में यह लोग शामिल है:

- यीशु
- शिष्य
- भीड़
- दुष्टात्मा ग्रसित आदमी
- दुष्टात्मा
- अनेक धार्मिक नेता
- धार्मिक नेताओं के अनुयायी
- संकेत मांगने वाले लोग
- शैतान
- आठ दुष्टात्माएं
- वह मनुष्य जिसके पास दुष्टात्मा लौट आई
- पुकारने वाली स्त्री
- नीनवे के लोग
- योना
- सुलेमान
- शीबा की रानी

समूह को कहानी पर दो बार अभिनय करने को कहें। पहली बार समूह को बिना रुके कहानी पर अभिनय करने को कहें। दूसरी बार जब समूह कहानी पर अभिनय करेगा, तो उन्हें कहानी के अलग-अलग बिंदुओं पर रोके।

जब समूह पहली बार कहानी पर अभिनय करेगा तब कहानी के संवाद, प्रभाव, कथानक और कालक्रम पर ध्यान दें।

यह निश्चित करें कि जब यीशु भीड़ के सामने उनका वर्णन करते हैं तो समूह उदाहरणों पर अभिनय करता है। उदाहरण के लिए, जब यीशु भीड़ से बात कर रहे होते हैं तो समूह दो शक्तिशाली व्यक्तियों के लड़ने का अभिनय कर सकता है। वे उस दुष्टात्मा का अभिनय कर सकते हैं जिसे अभी ही एक व्यक्ति से निकाला गया था। दुष्टात्मा जंगल में जाती है और उस व्यक्ति के पास वापस आती है। फिर वह उस व्यक्ति को काबू में करने के लिए और सात दुष्टात्माएं लाती है। अंत में, समूह योना को नीनवे के लोगों को उपदेश देने और वह लोग परमेश्वर की ओर मुड़ने का और राजा सुलेमान को सुनने के लिए बहुत दूर यात्रा करने वाली शीबा की रानी का अभिनय कर सकता है।

निश्चित करें कि जब यीशु यहां सुलेमान से महान किसी के होने की बात करते हैं तो वह भीड़ की ओर मुड़ते हैं।

जब समूह अभिनय करता है तब वह कहानी का कालक्रम फिर से बदलना चाह सकता है क्योंकि वास्तव में जो हुआ उसके बारे में वे अधिक विचारात्मक होने के लिए कार्य करते हैं। समूह उस आदमी को दिखा सकता है जो दुष्टात्मा ग्रस्त है और बोलने में असमर्थ है। यीशु ने दुष्टात्मा को बाहर निकाला और वह मनुष्य अब फिर से बोल सकता है। भीड़ की मिश्रित प्रतिक्रियाएं होती है और यीशु उन्हें सिखाना शुरू करते हैं।

दूसरी बार जब समूह इस कहानी पर अभिनय करता है तो उन्हें कुछ बिंदुओं पर रोके।

एक दुष्टात्मा ग्रसित व्यक्ति का अभिनय करें जो बोलने में असमर्थ है। यीशु मनुष्य में से दुष्टात्मा को निकालते हैं और वह मनुष्य फिर से बोल सकता है। भीड़ में से कुछ लोग हैरान हो जाते हैं। दूसरे सोचते हैं कि यीशु शैतान की शक्ति का उपयोग कर रहे हैं। और वह चाहते हैं कि यीशु यह साबित करने के लिए एक संकेत दे कि वह परमेश्वर की शक्ति का उपयोग कर रहे हैं।

अभिनय करना बंद करे। बोल सकने वाले किसी अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप इस तरह की बातें सुन सकते हैं, "मैं आखिर दुष्टात्मा की शक्ति से मुक्त हो गया हूं", "वे कैसे सोच सकते हैं कि यीशु शैतान की शक्ति का उपयोग करते हैं? मैं शैतान की शक्ति को जानता हूं और यीशु की शक्ति की तुलना में वह कुछ भी नहीं है।" और "मै आभारी हू। यीशु ने जो किया है उसके लिए मैं परमेश्वर की स्तुति करूंगा।" अभिनय करना फिर से शुरू करें।

यह अभिनय करे जब यीशु ने अपनी बाजू रखने के लिये यह कहा कि यदि घर में रहने वाले लोग आपस में लड़ रहे हों तो एक घर खड़ा नहीं हो सकता। यीशु कहते हैं कि शैतान के लिए अपने दुष्टात्माओं के खिलाफ लड़कर अपने राज्य को बांटने में कोई मतलब नहीं है। यीशु सवाल करते हैं कि धार्मिक नेता अपने अनुयायियों पर जो शैतान की शक्ति का उपयोग करके दुष्टात्माओं को निकालते है उन पर आरोप क्यों नहीं लगाते हैं।

अभिनय करना बंद करे। आरोप लगाने वाले की भूमिका निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप इस तरह की बातें सुन सकते हैं, "निराशा। यीशु के पास हमेशा हर बात का जवाब होता है!" "मैंने सोचा था कि निश्चित रूप से लोग विश्वास करेंगे कि वह शैतान की शक्ति का उपयोग कर रहे थे।" और "मैं जानता हूँ कि मेरे अनुयायी परमेश्वर की शक्ति का उपयोग करते हैं। मैं नहीं चाहता कि वह मुझसे सवाल करें।" अभिनय करना फिर से शुरू करें।

लड़ने वाले बलवान पुरुष का उदाहरण देने वाले यीशु का अभिनय करें। बलवान पुरुष कवच और अस्त्र-शस्त्र वाले मनुष्य के विरुद्ध जीत जाता है। वह जिन लोगों की रखवाली कर रहा था वे मुक्त हो गए। यीशु कहते हैं कि जो उसके साथ नहीं है वे उसके खिलाफ हैं।

अभिनय करना बंद करे। मुक्त हुए लोगों की भूमिका निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" तो आप इस तरह की बातें सुन सकते हैं, "आनंदपूर्ण! आखिर हम मुक्त हो गये हैं!" "मैंने कभी नहीं सोचा था कि शैतान से ज्यादा ताकतवर कोई हो सकता है," और "मैं बलवान आदमी का अनुसरण करना चाहता हूं। मैं उसके साथ सुरक्षित महसूस करता हूं।" अभिनय करना फिर से शुरू करें।

एक व्यक्ति से निकाले गए दुष्टात्मा का उदाहरण देते हुए यीशु का अभिनय करें। दुष्टात्मा जंगल में जाती है, लौटती है, फिर सात और ज्यादा दुष्टात्माओं को उसी व्यक्ति के पास वापस लाती है जिसमें वह रहती थी। अब वह व्यक्ति पहले से भी बदतर है।

अभिनय करना बंद करे। दुष्टात्मा ग्रस्त व्यक्ति की भूमिका निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस करते हैं?" आप इस तरह की बातें सुन सकते हैं, "मैं यह कल्पना नहीं कर सकता, वह उस दुष्टात्मा से भी बदतर है जो मुझमें रहा करती थी" "मै डरा हुआ था। मैं नहीं चाहता कि दुष्टात्मा मेरे पास लौटें।" और " मै बहुत निराश हू और मैं परमेश्वर की आत्मा पाना चाहता हूँ। वह शैतान से बहुत अधिक शक्तिशाली है।" अभिनय करना फिर से शुरू करें।

एक महिला को चिल्लाते हुए अभिनय करें कि यीशु की माँ धन्य है। यीशु उससे कहते हैं कि परमेश्वर के वचन को सुनना और उसका पालन करना अधिक महत्वपूर्ण है। यीशु उन दुष्ट लोगों को बुलाते है जो संकेत माँगते हैं और वह उन्हें योना का संकेत देते है। यीशु कहते हैं कि योना और सुलैमान से यहां कोई और महान है।

अभिनय करना बंद करे। भीड़ की भूमिका निभाने वाले अभिनेता से पूछें, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" आप इस तरह की बातें सुन सकते हैं, "मै परेशान हुआ। यीशु ने हमें दुष्ट क्यों कहा?" "गुस्सा आया। परमेश्वर में विश्वास करने के लिए यीशु गैर-यहूदियों कि प्रशंसा कैसे कर सकते हैं?" और "गडबड लगी। इस्राएल के सबसे बुद्धिमान राजा से बड़ा कौन हो सकता है? यीशु किस संकेत की बात कर रहे है?

अंतराल को भरना

खाली जगह भरना

लूका 11:14–32

समझने में आसान ऐसे संस्करण में एक बार उस भाग को सुने।

लूका *11:14–32*

यीशु एक व्यक्ति से जो गूंगा है, उसमे से दुरात्मा या **दुष्टात्मा** को निकालते है। दुष्टात्मा का उसी तरह से अनुवाद करना निश्चित करें जैसे आपने पिछले भागो में किया है। दुष्टात्मा यह शब्द मुख्य शब्दावली में है। भीड़ ने यीशु के चमत्कार पर मिश्रित प्रतिक्रियाएं दी। कुछ लोगों ने सोचा कि यीशु **दुष्टात्माओं के राजकुमार, बालजबुल** की शक्ति का उपयोग कर रहे थे। बालजबुल एक मूर्तिपूजक देवता को संदर्भित करता है, लेकिन लोग उसे **शैतान** से संदर्भित करते थे, जो सभी बुरी आत्माओं का मुखिया और परमेश्वर का दुश्मन है। शैतान का उसी तरह से अनुवाद करना निश्चित करें जैसे आपने पहले किया था। शैतान यह शब्द मुख्य शब्दावली में है।

अपने अनुवादकों के साथ चर्चा करें कि आपकी भाषा में शैतान के लिए बालजबुल यह शब्द बदलना आसान होगा क्या?

भीड़ में से अन्य लोगों ने यीशु की परीक्षा ली और **स्वर्ग** से या उस स्थान से जहाँ परमेश्वर रहते है, वह एक **संकेत** माँग रहे थे। इस संदर्भ में, स्वर्ग स्वयं परमेश्वर को संदर्भित करता है। एक संकेत, एक चिन्ह या निशान है कि कुछ सच है या होगा। वह लोग चाहते थे कि यीशु यह साबित करने के लिए चमत्कार करे कि वह परमेश्वर की शक्ति का उपयोग कर रहे थे। संकेत और स्वर्ग का उसी तरह से अनुवाद करना निश्चित करें जैसे आपने पिछले भागो में किया है। यह दोनों शब्द मुख्य शब्दावली में हैं।

यीशु एक ऐसे **राज्य** के बारे में बात करते हैं जो अपने ही विरुद्ध बटा हुआ है। यह एक ऐसे देश को संदर्भित कर सकता है जहां देश के विभिन्न समूह एक-दूसरे के खिलाफ लड़ते हैं। लेकिन यीशु किसी राजा द्वारा शासित देश की बात नहीं कर रहे हैं। इसके बजाय वह सामान्य शब्दों में बोल रहे हैं। कोई भी देश या जाति जो खुद के खिलाफ लड़ती है बर्बाद हो जाएगी, या उस देश में कुछ ही लोग जीवित रहेंगे। शैतान का राज्य, उसकी शक्ति और सभी दुष्टात्माओं पर उसके शासन को दर्शाता है। यदि शैतान अपनी दुष्टात्माओं से लड़ता है, तो वह अपने ही राज्य का बँटवारा कर रहा है। राज्य का उसी तरह से अनुवाद करना निश्चित करें जैसे आपने पिछले भागो में किया है। राज्य यह शब्द मुख्य शब्दावली में है।

यीशु कहते हैं कि यदि वह लोग परमेश्वर की शक्ति का उपयोग कर रहे हैं, तो **परमेश्वर का राज्य** उनके निकट आ गया है। यहाँ, परमेश्वर का राज्य परमेश्वर के लोगों के दिलों में उनके विश्वास के माध्यम से वादा किए गए उद्धारकर्ता के रूप में शासन करने के लिए संदर्भित करता है। परमेश्वर के राज्य का उसी तरह से अनुवाद करना निश्चित करें जैसा आपने पहले किया था। परमेश्वर का राज्य यह शब्द मुख्य शब्दावली में है।

यीशु कहते हैं, **जो मेरे साथ नहीं बटोरता वह बिखेरता** है। यीशु का शाब्दिक अर्थ यह नहीं था बल्कि इसके बजाय यह

तात्पर्य था कि जो कोई भी लोगों को परमेश्वर के पास नहीं बुला रहा था, वह वास्तव में उन्हें परमेश्वर से दूर कर रहा था।

अपने अनुवादकों के साथ इस कल्पना का अनुवाद करने के सबसे अच्छे तरीके के बारे में चर्चा करें। आप अधिक विशिष्ट उदाहरण का उपयोग कर सकते हैं जैसे भेड़ या फसल इकट्ठा करना। या अधिक सामान्य रूप से इकट्ठा करने का अनुवाद का सबसे अच्छा तरीका यह हो सकता है, जैसे, "जो मेरे साथ काम नहीं कर रहा है वह मेरे खिलाफ काम कर रहा है।"

जब यीशु **अशुद्ध आत्मा** कहते हैं, यह फिर से एक दुरात्मा या दुष्टात्मा को संदर्भित करता है, जिसे यहूदी संस्कृति में अशुद्ध या परमेश्वर की सेवा के लिए अनुपयुक्त माना जाता था। यीशु कहते हैं कि जब दुष्टात्मा उस व्यक्ति के पास लौटती है जिसे उसने पहले काबू में कर रखा था तो वह घर को **साफ-सुथरा** पाती है। घर में झाड़ू लगाने का अर्थ है झाड़ू से झाडकर फर्श को साफ करना।

भीड़ में से एक महिला पुकारती है और कहती है कि यीशु की माता **धन्य है**, या उस पर परमेश्वर का अनुग्रह है। धन्य का अनुवाद उसी तरह से करना निश्चित करें जैसे आपने पहले किया था। धन्य यह शब्द मुख्य शब्दावली में है। यीशु ने यह कहकर उसे सही किया कि जो लोग **परमेश्वर के वचन** को सुनते हैं और उसका पालन करते हैं वे धन्य हैं। परमेश्वर का वचन उस संदेश को संदर्भित करता है जिसे परमेश्वर ने यीशु और लिखित शास्त्रों के माध्यम से पाहुचाया है। परमेश्वर का वचन का उसी तरह से अनुवाद करना निश्चित करें जैसे आपने पहले किया था। परमेश्वर का वचन यह शब्द मुख्य शब्दावली में है।

यीशु ने कहा, "यह एक दुष्ट **पीढ़ी** है।" यहाँ, पीढ़ी उन लोगों को संदर्भित करती है जो एक ही समय में एक दूसरे के रूप में रहते हैं। पीढ़ी का उसी तरह अनुवाद करना निश्चित करें जैसे आपने पिछले भागो में किया है। पीढी यह शब्द मुख्य शब्दावली में है।

यीशु योना के बारे में बात करते है, जिसे **नीनवे के लोगों**, या नीनवे शहर में रहने वाले लोगों को प्रचार करने के लिए भेजा गया था। नीनवे, असीरिया की राजधानी थी और इज़राइल के उत्तर-पूर्व में स्थित थी। यीशु कहते हैं कि जैसे योना नीनवे के लोगों के लिए एक संकेत के रूप में था वैसे हि **मनुष्य का पुत्र** उनकी पीढ़ी के लिए एक संकेत होंगे। यीशु ने मनुष्य का पुत्र की उपाधि का प्रयोग खुद के लिए किया है जिनके पास सारी शक्ति और अधिकार है। मनुष्य का पुत्र का उसी तरह से अनुवाद करना निश्चित करें जैसा आपने पिछले भागो में किया है। मनुष्य का पुत्र यह शब्द मुख्य शब्दावली में है।

यीशु ने **दक्षिण की रानी** या शिबा की रानी का भी उल्लेख किया है। वह लगभग 1000 साल पहले रहती थी और इज़राइल के दक्षिण में स्थित एक देश पर शासन करती थी। वह शायद उस देश में शासन करती थी जो अब वर्तमान में इथियोपिया है। जब यीशु कहते हैं कि वह **पृथ्वी के छोर से** आई है, तो उसका सीधा सा मतलब यह है कि वह बहुत दूर से आई है।

रुकें और अपने समूह को इज़राइल, नीनवे और शिबा का नक्शा दिखाएं, अगर आपने पहले नहीं दिखाया है तो।

वह, राजा सुलैमान की **बुद्धिमानी** या उसके सच्चे विचारों को सुनने आई थी। केवल परमेश्वर ही इंसान को बुद्धिमानी दे सकते है। बुद्धिमानी यह शब्द मुख्य शब्दावली में है।

वचन बोलना

वचन कहना

पाठ्यांश का एक ऐसा ऑडियो संस्करण सुनें जो आसानी से समझ आने वाले अनुवाद में हो।

इस सत्र में, एक समूह के रूप में आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को पुन: कहें।

सर्वप्रथम पूरे समूह को आपकी अपनी भाषा में पाठ्यांश को बताने का अभ्यास करना चाहिए। उन बातों को सम्मिलित करना याद रखें, जिन्हें आपने पिछले चरणों में तय किया था, जैसे कालक्रम, शब्द, वाक्यांश, भावनाएं या ऐसा और कुछ भी जिसकी चर्चा आपने की हो।

समूह के एक सदस्य को पाठ्यांश के कुछ वाक्यों को कह कर थमना चाहिए। समूह के दूसरे सदस्य को पाठ्यांश के अगले हिस्से को कह कर थमना चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि समूह पूरे पाठ्यांश का पुन:कथन न कर दे। समूह के सदस्य इस चरण में एक दूसरे को संशोधित कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

इसके बाद समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक बार बिना व्यवधान के पूरा पाठ्यांश कहना चाहिए। समूह के सदस्य पाठ्यांश को याद रखने में मदद करने के लिए यादृच्छिक वस्तुओं, संकेतों या उनके स्टोरीबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह यह तय कर सकता है कि पाठ्यांश का कौन सा संस्करण आपको सबसे अधिक पसंद है। आप यह तय कर सकते हैं कि आपको समूह के एक सदस्य द्वारा एक दृश्य को बताए जाना वाला तरीका पसंद आया, लेकिन समूह के एक अन्य सदस्य द्वारा किसी दूसरे दृश्य को बताने का तरीका पसंद आया। इस ऑडियो को यहां रोकें।

उसके बाद समूह पाठ्यांश के एक ऐसे अंतिम संस्करण को एक साथ मिला सकता है जिसके बारे में हर कोई सहमत हो। समूह के हर एक सदस्य को पाठ्यांश के इस अंतिम संस्करण को बताने का अभ्यास करना चाहिए।

यह रिकार्डिंग का अंत है।

 लूका *11:14–32*

लूका 11:14–32

Audio Content

webm zip (5554585 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6

mp3 zip (9238612 KB)

- FIA Step 1
- FIA Step 2
- FIA Step 3
- FIA Step 4
- FIA Step 5
- FIA Step 6